विद्यापति-गीत-समग्र

विद्यापति-गीत-समग्र

सम्पादक

पं. गोविन्द झा

भारतीय भाषा संस्थान

मैसूर

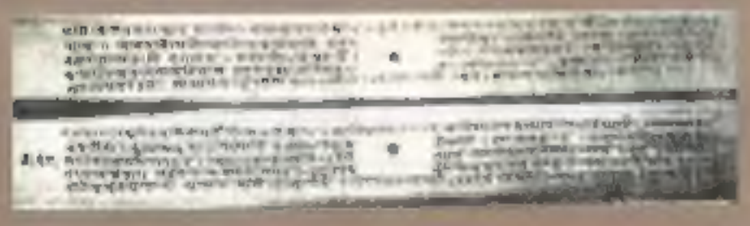

विद्यापति-गीत-समग्र

विद्यापति-गीत-समग्र

CIIL

विद्यापति-गीत-समग्र

© भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

प्रकाशन संख्या: 1025

विद्यापति-गीत-समग्र
सम्पादक : पं. गोविन्द झा
प्रकाशक : भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर
प्रथम संस्करण 2012
मूल्य :
मुद्रक : भारतीय भाषा संस्थान प्रेस, मैसूर।

विद्यापति-गीत-समग्र

सम्पादक
पं. गोविन्द झा

भारतीय भाषा संस्थान
मैसूर

Vidyapati-Gita-Samagra (Collection of the songs of Vidyapati)
Compiled by Pt. Govinda Jha

First Published: July 2012
Asharha 1933

© Central Institute of Indian Languages, Mysore 2012

This material may not be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic, or mechanical, including photocopy, recording, or any information storage and retrieval system, without permission in writing from:

Dr. S.N. Sarman
Director in charge
Central Institute of Indian Languages
Manasagangotri, Mysore – 570 006, INDIA

Phone: 0091-821-2515820 (Director)
E-mail:barman_ashokbari@rediffmail.com

Fax: 0091-821-2515032
PABX: 0091821-2345000
Website: http://www.cil.org

For further information contact:
Dr.K. Kapfo
Head, Press & Publications
E-mail: kapfo@cil.stpmy.soft.net

ISBN-978-81-7343-124-1

Price. ₹ 700/-

Published by
Dr. S.N.Barman, Director in charge
Central Institute of Indian Languages, Mysore

Printed at
CIIL Printing Press,
Manasagangotri,
Mysore-570 006, India

Cover Design: H. Manohar

आमुख

विद्यापतिक प्रेम आ' विरह-गाथा कें जे क्यो आजुक समयो मे पढ़ैत छथि, हुनक मन मे कृष्ण-भक्ति तरंगक स्थान पर राधा-विरहक भावे अधिक प्रकट भऽ उठैत छनि। श्याम-नाम मे राधा एतेक तल्लीन भेल छथि जे हुनका लागनि - हुनक शरीरक पंच-तत्व मे जे भौतिक अंश छनि से मिला जाइक ओहि भौतिक संग आहि पर सँ कृष्ण चलैत छथि, हुनक शरीरक भीतर जे आगि सदा धधकि रहल छनि सेहो मिला जाइक दर्पणक आलोक मे जतय कृष्ण अपना कें कहियहु क्षणहु निहारैत छथि, शरीरक भीतर जतेक जलराशि उमड़ि-घुमड़ि कए बहैत रहैत अछि से सबटा बाहर आबि कए ओहि नदी-पुष्करिणी मे मिला जाइक जतय श्रीकृष्ण अवगाहन करैत छथि आ' राधायेन भीतरक सबटा प्राण-वायु बाहर भऽ कए मिला जाइक प्रकृतिक वायु-पुंज मे जकर मधुर प्रवाह सँ कृष्णक अंग-अंग शीतल भऽ जाइत छनि निदारुण ग्रीष्म मे। एहन राधा जे एहि सेहन आकाश बनि पड़ैत छथि जे तकर भीतर सँ श्याम-मेघक यातायात चलैत रहत युग-युग सँ - तहि राधा केर मनो-व्यथा कें जँ क्यो अपन अजर लेखनी सँ अमरत्व प्रदान बैमे छथि त ओ आर क्यो नहि, यहि-कोकिल विद्यापतिए छथि। विद्यापतिक राधा छथि सामान्या नारी, माटि-पानी केर शरीर सँ जनिक शरीर-मानक अन्वय बनल छनि, जनिक प्रेम-भाव, प्रेम-भावना आ' प्रेम-भुवन हुनका अन्यसम्भवा बना देने छनिन्हि। जखन मंगल-काव्यक युग मे बंगालक कवीश्वर कवि कृष्ण-जीवन पर, नहि त हुनक लीलामयत्व पर, नहि त राधा-कृष्ण प्रेमक उन्मादता पर आ' ने किछु त देह-तत्व पर ओर देने छलाह, तखनहि विद्यापति मानवीक ईश्वर-प्रेम मे जे आनन्द आ' विभोरक छवि प्रस्फुट भ' उठैछ तकरहि काव्य-दर्पण प्रस्तुत कैने छलाह - एतहि ओ बाकी सब मध्ययुगीन कवि सँ भिन्न छलाह। एहन पूर्णांग अध्ययन संवलन संकलन आई धरि भेल नहि छल जाहि दुरूह कार्य मे पंडित

गोविन्द झा अत्यन्त साहसक संग अशीतिपरक अवस्था मे हाथ देने छथि जकर परिणाम आई पाठकक समक्ष **विद्यापति-समग्र**क रूप मे प्रस्तुत अछि।

जाहि नाट्य-रचनाक लेल मिथिलाक मध्य-युगक मंच प्रख्यात छल, ताहि नाटकीयताक छाप सेहो विद्यापतिक रचनामे हमरा भेटत। जाहि वर्णन-रत्नाकरक गद्यमय विश्लेषण आ' सामाजिक व्याख्यान सँ मध्य-युगक ज्ञान-चर्चा समृद्ध भेल छल, ताहि तरहक अलोक-वर्तिका हाथ मे धैने विद्यापतिक रचना डेग-डेग बढैत गेल छल, जकर उत्कृष्ट उदाहरण मात्र 'भू-परिक्रमण' ग्रन्थे मे नहि, हुनक सृजनी साहित्य मे सेहो पाओल जायत। तर्क-वितर्क, भाव-विभाव, वाद-विसंवाद - सभक स्थान भेल छल कवि-कोकिलक कुहू-स्वरमे। एम्हर Harcourt Brace Custom केर पोथी 'Reading about the World'(1999) ग्रन्थक पहिल खंड मे (जकर संपादन कैनै छलाह कतेको प्रख्यात साहित्यशास्त्री मिलि कए, जाहि मे छलाह- Paul Brians, Mary Gallway, Douglas Hughes, Arfar Hussain, Richard Law, Michael Myers, Michael Neville, Roger Schleinger, Alice Spitzer आओर Susan Swan प्रमुख) अत्यन्त गूढ वर्णन मे एहि तथ्य कें व्यक्त कैनै छलथिन्ह- "In the well-known tradition of the influential early Indian poem called *Gita-Govinda* by Jayadeva, Vidyapati's love-songs re-create and reveal the world of Radha and Krishna, the major erotic figures of Indian mythology and literature. Such poems convey the devotion of Krishna's worshippers through the metaphor of human erotic love. While Jayadeva's poem celebrates Krishna's love and pays comparatively little attention to Radha the woman, Vidyapati is primarily concerned with the intense passion of Radha's love."

सभसँ पैघ पार्थक्य विद्यापति आ' हुनक युगक तथा बादहुक अन्य कवि सभ मे ई छलनि जे हुनक कविता कें ने मात्र 'वैष्णव पदावली'केर दर्जा देल जा सकैत छनि आ' ने 'शाक्त पदावली'केर। कोना एक विद्यापति एमग्रे राधाक संग कृष्णक प्रेमक संगहि हर-पार्वतीक अन्योन्य अन्त:संबंध कें सेहो अपन काव्य मे प्रस्फुटित क' सकलाह सेहो शोधकर्ता लोकनिक लेल आई आश्चर्यक विषय छनि।

मुदा एहन सब तरहक शंका-समाधान भऽ जायत गोविन्द बाबूक एहि महान सम्पादकीय कृतिक माध्यमे।

ताहू सँ महत्वपूर्ण बात ई जे जतेक श्रम सँ विद्यापति कविसरक रचनाक पांडुलिपि आई धरि शोध-कर्ता लोकनि कें प्राप्त भेल छनि, जेना कि समग्रपुर आ' तरौनी मे तालपत्र मे, खंडित रूप मे सही- से सभटा समेटि कए सम्पादक एहि महा-संकलन मे लऽ अनने छथि, जे कि अत्यन्त श्रम-साध्य कार्य छल। ताहि मे शिव-मजुमदार तथा नेपाल-पोथी सभटा प्रतिफलित भेल अछि उपयुक्त टीका-टिप्पणी केर संग। आई जँ नगेन्द्रनाथ गुप्त द्वारा संकलित संपूर्ण पदावली रहितै, त एहि तरहें खंडित रूप कें जोडबाक दु:साध्य कार्यक आवश्यकता नहि होइतैक।

अस्तु, देर अवश्य भेल मुदा तैयहु जे काज भारतीय भाषा संस्थानक अनुकूलन्य सँ मैथिली प्रेमी विद्यापतिक पाठक-वर्गक समक्ष आई आबि रहल अछि, तकर श्रेय सम्पादक-प्रकाशक पाठक राय कें जाइत छनि। एतेक शतकक बादो विद्यापति कें अविस्मरणीय बना देबाक श्रेय भारिसक हुनक प्रकाश-क्षमता कें जाइत छनि जे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश सँ लऽ कए मैथिली- सबटा माध्यम मे अनुशीलनीय साहित्यक सृजेक छलाह। हुनक पदावली समग्र कें जन-समक्ष मे आनि कए संस्थानक वर्तमान प्रशासन हमरा सभक दिशि सँ साधुवादक पात्र बनल छथि। आ' प. गोविन्द झाजीक विषय मे न जतेक लिखब थोड बाजब, से कमे हैत। एहन कर्मयोगी मिथिला मे होइत रहलाह, तैं मैथिली टिकल रहि सकलीह, एतबहि कहैत संस्थानक प्रेस, कापी एडिटर, प्रकाशन-विभाग सँ लऽ कए वर्तमान निदेशक, सभ कें हम अभिनन्दन ज्ञापन करै छियनि।

प्रो. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"
रवीन्द्र भवन, विश्व-भारती तथा
भूतपूर्व निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान,
मैसूर।

शांतिनिकेतन
1 जुलाई, 2012

विषय-क्रम

[दि. – बाम दिसक अंक ○ सोतक क्रमांक चिक आ दहिन दिसक गीतांक चिक]

आमुख v

प्रस्तावना ix

संकेतव्याख्या xxxi

भाग एक - गीतांक 1 सँ

प्राचीन सोतक गीत – (1) रामभद्रपुर-तालपत्र 1 सँ; (2) नेपाल-तालपत्र 95 सं; (3)तरौनी-तालपत्र 333 सँ; (4) रागतरङ्गिणी 506 सँ; (5) भाषागीतसंग्रह 536 सँ; (6)हरगौरीविवाह 567 सँ; (7) गोरक्षविजय 573 सँ; (7) प्रकीर्ण 599 सँ।

भाग दू - गीतांक 612 सँ

अर्वाचीन सोतक गीत – (1) गिरजानंद 612 सँ; (2) भोला झा 669 सँ; (3) सीताराम झा 693 सँ; (4) नगेन्द्रनाथ गुप्त 712 सँ।

भाग तीन - गीतांक 793 सँ

बंगाल सोतक गीत– (1) नगेन्द्रनाथ गुप्त 793 सँ (2) पण्डित बाबा 849 सँ (3) बेनीपुरी 855 सँ (4) मजूमदार 866 सँ।

परिशिष्ट (पृष्ठ 527)[दि. – दहिन दिसक अंक पृष्ठक चिक]

(1) विद्यापतिक वंशावली पृष्ठ 507; (2) विद्यापति पंजीमे पृष्ठ 599; (3) शिव सिंहक वंशावली पृष्ठ 601; (4) भनिताम अएल नाम पृष्ठ 604; (5) सन्दर्भ ग्रन्थ पृष्ठ 607; (6) गीतक अनुक्रमणी पृष्ठ 608।

प्रस्तावना

रूपरेखा ओ स्रोत

महाकवि विद्यापति मैथिल समाजक आ' विशेषतः मैथिली भाषा आ साहित्यक गौरवध्वज थिकाह। हिनक अर्चा-चर्चा तँ उचिते खूब धूमधामसँ होइत रहल अछि, परन्तु खेदक विषय जे हिनक समग्र गीतक संग्रह आइ धरि मैथिलो जगतमे प्रकाशित नहि भए सकल अछि। बंगला, अंग्रेजी आ' हिन्दीमे जे प्रकाशित अछि तकरा तँ पूर्ण कहि सकैत छी, मे सन्तोषजनक, विषय तँ एहि सभमे गीतक पाठ बहुत बिगड़ल अछि तथा अर्थहु मे बहुतो भ्रान्ति अछि। तँ हमरा आवश्यक बुझाएल जे विद्यापतिक समग्र प्रामाणिक गीत, बिगड़ल पाठ आ' अर्थकेँ सुधारि, सहज सुबोध व्याख्यासुघटक संग एकत्र प्रकाशित करबल जाए। एही आवश्यकताक पूर्तिक प्रथम प्रयास थिक ई *विद्यापति-गीत-समग्र*।

विद्यापतिक प्रामाणिक गीत कतेक उपलब्ध अछि से कहब कठिन। तथापि प्रस्तुत संग्रहक नाममे समग्र शब्द एक विशेष अर्थमे राखल अछि – समग्र अर्थात् प्राचीन हस्तलेखमे मिथिला ओ नेपालमे पाओल गेल समस्त गीत। एहन प्राचीन हस्तलेख आठ गोट जात अछि – (1) रामभद्रपुर-तालपत्र, (2) नेपाल-तालपत्र, (3) तरौनी तालपत्र, (4) भाषागीतसंग्रह, (5) रागतरङ्गिणी, (6) हरगौरीविवाह नाटक, (7) गोरक्षविजय नाटक, तथा (8) नाजारागगीत। दुइ-चारि गीत विशुद्ध आनहु प्राचीन स्रोतसँ लेल गेल अछि।

उक्त आठहु हस्तलेखमे बहुतो सम्पत्ति सुरक्षित अछि। जे बाँचल अछि तेहो अपना अँखिएँ देखबाक सौभाग्य हमरा नहि भेल। अतः निम्नलिखित प्रकाशनहि के आधार स्रोत बनबए पड़ल :

(1) विद्यापति विशुद्ध पदावली – सम्पादक शिवनन्दन ठाकुर।

(2) Songs of Vidyapati – सम्पादक सुभद्र झा।

(3) विद्यापति-पदावली – प्रकाशक बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्।

(4) भाषागीतसंग्रह – सम्पादक रसानाथ झा।

(5) हरगौरी विवाह – सम्पादक रामदेव झा।

(6) गोरक्षविजय – सम्पादक शशिनाथ झा।

(7) मैथिली प्राचीन गीतावली – सम्पादक सुरेन्द्र झा।

एहि स्रोत सभक गीतक अतिरिक्त विद्यापतिक अनिसाबाना शतश: गीत आधुनिक लिखित आ' मौखिक स्रोतमे, विशेषत: वंगालक वैष्णव पदावली सभमे भेटैत अछि। एकरा समक प्रामाणिकता तँ बड़ सन्दिग्ध अछि, तैओ नाममे 'समग्र' शब्दक सार्थकताक हेतु एहनो गीत सभ दू भागमे दए देल अछि – *अर्वाचीन स्रोतक गीत* आ' *वंगाल स्रोतक गीत*। पहिल भागमे समग्रता राखल अछि। द्वितीय भागक गीत सभमे बड़-बड़ समस्या अछि। व्यावहारिक दृष्टिएँ वंगालक स्रोतवला बहुतो गीत छाँटि देबए पड़ल। पूर्वोक्त सम्पादकलोकनि एहि प्रकारक छटनी करैत अएलाह अछि।

अर्वाचीन स्रोतक गीत लगभग सभ आधुनिक लोकमुखी मैथिलीमे रचित अछि आ' एकर भाषो लोकप्रसिद्ध आ' सौम्य अछि। तैं एकर सभ गीतक सम्पूर्ण छायानुवाद देब अनावश्यक बुझल। अवश्यकतानुसार यत्र-तत्र संक्षिप्त टिप्पणी आब दए देल अछि। सरल-सुबोध होएबाक कारणे पाठो अधिकतर स्वत: शुद्ध अछि। तैं एहि भागमे पाठोद्धारो व्यर्थिते करए पड़ल अछि।

विद्यापतिक गीत कोन कर्में राखल जाए इहो एक गम्भीर प्रश्न छल। पूर्वोक्त कलोक सम्पादक लोकनि गीतके विषयानुसार सजओलनि,

कलोक स्रोतक अनुसार। विमान विहारी मजूमदार रचनाक्रमें वा ऐतिहासिक दृष्टिएँ विन्यास कएल। प्राचीन हस्तलेख सभमे कतहु रागक्रम लक्षित होइत अछि। हम गीतक्रम स्रोतानुसार राखल अछि आ' स्रोतक्रम कालक्रमानुसार राखल। एहिमे हमरा एक सुलभ ई सूझल जे अध्येताकेँ स्पष्ट आभास भेटतनि जे विद्यापतिक भाषा आ' भाव कोना-कोना एहि छओ-सात सए वर्षमे घटलैत गेल अछि।

पाठोद्धारक प्रयास

सिद्धान्तत: स्रोतगत पाठमे कोनहु प्रकारक परिवर्तन करब अनधिकार चेष्टा मानल जाइत अछि। प्राय: सेह सोचि पूर्वोक्त सातो संस्करण मे सामान्यत: अविकल राखल गेल अछि। एक विद्वान् तँ स्पष्ट शब्दमे कहिओ देलनि अछि :

[आवर ग्रन्थे जे पद जे भावे पाया गियाछे सेई भावेइ छापा हइल। छन्द ओ बानान संशोधनेर कोनओ चेष्टा करा हय ना।]

परन्तु आलोच्य हस्तलेख सभक दुस्थितिकेँ देखैत हमरा ई आवश्यक आ' व्यावहारिक बुझाएल जे गीतक पाठमे मुख-परम्परया, प्रतिलिपि-परम्परया वा अज्ञानवश जे वर्तनी, व्याकरण, छन्द आदिक अशुद्धि स्पष्टत: लक्षित होइत अछि तकरा मूलमे संशोधित कए देल जाए। विद्वान् सम्पादक लोकनि बहुतो जिगड़ल पाठक्रम प्राचीन हस्तलेख सभक सम्पादन एही विधिएँ करैत अएलाह अछि। से नहि कएने प्रकाशन व्यवहारोपयोगी नहि भए शुष्क शोधकर्ममे भए जाएत आ' सामान्य पाठक गीतक वास्तविक स्वरूप जानबासँ वंचित रहि जाएत। मूलक जे अंश बदलत से पाद-टिप्पणीमे यथावत् देखाए देल अछि, जाहिसँ मूल पाठकेँ सुनि करबाक दोषी नहि होइ। हँ, व्याकरण, वर्तनी, अक्षराशुद्धि आदिक सुधार पादटिप्पणीमे देखाएब अनावश्यक बुझल।

परिवर्द्धित पाठ दू प्रकारक अछि। पहिल जे अन्य स्रोतमे भेटल आ' अधिक उपयुक्त बुझाएल। दोसर जे हम तर्क द्वारा स्वयं गढल। नीक होइत जे ई बात सूचित कए देल जाइत आ' इहो स्पष्ट कए देल जाइत जे मूल पाठसँ विचलन कोन कारणेँ कएल गेल। परन्तु से कएने पोथी मोटाए जाइत तेँ विचलनक स्पष्टीकरण एहि प्रस्तावनहिमे एकत्र कए देब व्यावहारिक बुझल।

मूल हस्तलेख आ' पूर्वक संस्करण सभमे जे पाठविकृति पाओल गेल अछि तकर अनेक कारण अछि। विद्यापतिक गीतक जतेक हस्तलेख पाओल गेल अछि से सभटा हुनक समयसँ कमसँ कम एक सए वर्ष पश्चातिक मानल जाइत अछि। एहि अवधिमे स्वभावतः हुनक भाषाक स्वरूप बदलल होएत आ' गीत सभ पर अनुलेखनकालीन भाषाक प्रभाव पड़ल होएत। तखन मूल अवस्था पर आनब बहुत अनुसन्धानसापेक्ष अछि। सौभाग्यवश गीत प्रचुर मात्रामे उपलब्ध अछि आ' ओहि सभमे टुटलो-फुटलो रूपमे विद्यापति-कालक भाषाक स्वरूप झलकैत अछि आओर ताहि आधारपर पाठोद्धार बहुत किछु सम्भव अछि। पूर्वक सम्पादकलोकनि ई काज नहि कएल। तखैन नहि, ओ लोकनि मूल स्रोतक पाठहिकेँ परम प्रामाणिक मानि ओहमे हस्तक्षेप करबासँ विरत रहलाह। अपरञ्च मुद्रांकित संस्करण (क्रिटिकल एडिशन) मे मूलपाठमे हस्तक्षेप नहि कएल जाइत अछि, परन्तु व्याख्यामे आ' टिप्पणीमे मूलपाठक भ्रान्ति आ' तकर निराकरण देखाओल जाइत अछि। पाठोद्धार नहि कए पाठ्य तेँ क्लिष्ट थिक, परन्तु प्रत्यक्षतः विगडल, सन्दर्भहीन, अप्रासंगिक आ' दुर्बोध पाठकेँ परम प्रामाणिक मानि असाधारण बुद्धिक बलेँ छीपि-तीपिकेँ अर्थ वैसाए देब कथमपि समीचीन नहि कहल जाएत।

ई बात नहि जे पूर्वक संस्करण सभमे पाठोद्धारक प्रयास एकदम नहि कएल गेल। सुधार उत्तरोत्तर होइत गेल अछि। तैओ बहुत विकृति रहि

गेल, जकर मुख्य कारण हमरा जनैत हस्तलेखक मूल पाठकेँ अधिक श्रद्धासँ देखब थिक। एहिसँ अतिरिक्त पाठ-विकृतिक मोटा-मोटी पाँच गोट कारण लक्षित होइत अछि :

(क) **लिपिवाचन-भ्रम** – अनुलिपिकर्ता अपन आदर्श हस्तलेखक अक्षर चिन्हबामे बहुत चुकलाह अछि। कखनहु अक्षर अस्पष्ट छल तेँ भ्रम। अधिकतर भ्रम एहि कारणेँ भेलनि अछि जे विसदृशताक बहुत अक्षरक आकृतिमे परस्पर साम्य अछि। एहना स्थितिमे प्रासंगिक अर्थ बुझलहि पर अक्षर ठीक-ठीक चीन्हल जाए सकैत अछि आ' तकर प्रयास अनुलिपिकर्ता विशेषतः व्यवसायी अनुलिपिकर्ता नहि करैत छथि। आना तेँ विभिन्न अक्षरमे साम्य सभ लिपिमे होइत अछि, परन्तु मिथिलाक्षरमे से किछु अधिक देखि पड़ैत अछि, जेना (1) *र, ब* तथा *व* मध्य ; (2) *त, न, ग* तथा *व* मध्य ; (3) *ए, ल, क* तथा *र* मध्य ; (4) *सु, औ, ए, उ* तथा *त* मध्य ; (5) *सु* तथा *अ* मध्य, इत्यादि। किछु उदाहरण देखल जाए :

संकेत – तिर्यक् थिक शुद्ध रूप आ' अंक थिक गीतांक।

(1) *ब* ⇔ *र* – बापु बहीरि : <u>बापुर</u> हारि (97) ; शबद : <u>शरद</u> (180); घराबहि घरे: <u>रभाबहि आबे</u> (223) ; देउब: <u>देउर</u> (245) ; रे वथा: <u>बेवथा</u> (137) ; बाज : <u>राज</u> (170) ; राति नवमि: <u>बाति</u> <u>लहाए</u> (171) ; रिस: <u>बिस</u> (278).

(2) *तु* ⇔ *त* तथा *सु* ⇔ *अ* – तुअ : <u>तसु</u> (101, 173, 121) ; अनाइति : <u>सुनाइबि</u> (268) ; अथिरे: <u>सुथिरे</u> (175)।

(3) *तु* ⇔ *औ* – आर : <u>आतुर</u> (96) ; बरिसओ सार : <u>बरिस</u> <u>तुसार</u> (35)

(4) न ◇ न – *नोत* : *सोत* [168] ; *दुर लए: दुरुए* [209] ; *कलोने* : *कलोंने* [275]।

एहन ठाम अर्थ बुझलहि पर अक्षर ठीक-ठीक चीन्हल जाए सकैत अछि। अर्थ सोचबाक कष्ट कमे अनुलिपिकार करैत होएताह।

(ख) लिप्यन्तरणजन्य विकृति – आलोच्य हस्तलेख सब लिखुतामे अछि। उपरुक्त क्रममे तकर नागरी लिप्यन्तरण कराओल गेल। एहू क्रममे बहुत पाठ बिगड़ल अछि। समान लिपिसँ अनुलिपि करबामे एकटा विशेष सुविधा रहैत छैक – जँ पढ़ल नहि भेल तँ आदर्शतुल्य रैखिक आकृति बनाए दिअौक, अभिज्ञ पाठक ठीक-ठीक पढ़ि लेताह। ई सुविधा लिप्यन्तरणमे नहि छैक। तेँ लिखुतासँ नागरीमे उतारल लेखमे आएल पाठविकृतिक उद्धार करबामे ओकर मूल लिखुताक आकृतिक ध्यान करए पड़ैत छैक। जेना, नागरी पाठ अछि *तु अभिमानी*, किन्तु तु प्रसंगमे बैसैत नहि अछि, तेँ एकर लिखुत रूपक ध्यान कएल, तखन बुझाएल जे ई *तु* नहि, *ओ* थिक – *ओ अभिमानी* भातिज जे लिखुतामे *तु* आ' *ओ* दूनूक आकृतिमे बहुत साम्य अछि। एहि प्रकारक लिप्यन्तरणजन्य पाठ-विकृति बहुत पाओल जाइत अछि।

(ग) छन्द नहि जानब – विद्यापतिकालीन गीतमे दू प्रकारक छन्द चलैत छल। पहिल वर्णवृत्त, जाहिमे वर्णक संख्या नियत रहैत छल। दोसर मात्रावृत्त, जाहिमे मात्रक संख्या नियत रहैत छल। पहिलुका त्रिपिठकामे वर्णवृत्तक उठाप भए गेल तँ बंगालमे मात्रावृत्तक। यथा, कृत्तिवासक बंगला रामायण आ' बलरामदासक महाभारत चौदह वर्णबला पयार नामक छन्दमे अछि तँ चन्द्रावतीक *मैथिली रामायण* आ' मनबोधक *कृष्णजन्म* सोलह या पलरह मात्रक चौपाइ छन्दमे अछि। लगैत अछि हमर आलोच्य सम्पादक औकनिकेँ, उठाप भए जएबाक कारणेँ, वर्णवृत्तक

ज्ञान नहि रहलनि आ' तहिँ पयारकेँ चौपाइ बूझि, सोलह-पलरह मात्रा पुरएबाक फेरमे किछु जोड़ैत शुद्धो पाठकेँ अशुद्ध करैत गेलाह। ई जोड़ कतहु मूल पाठहिमे कोनहु बीच राखल भेटैत अछि तँ कतहु पादटिप्पणीमे। एतए एक-दूटा उदाहरण देखल जाए। सभसँ प्राचीन हस्तलेख राम. मे पाठ अछि – *हृदअ मोहर जानि न मोना* [12]। ई एगारह वर्णक छन्द मे रचल अछि। एतए सुभ. आ' राप. दूनू सम्पादक *न* केँ *नहि* कए छन्द तोड़ि देलनि अछि। एही गीतक चारिम चरण अछि *न मुख बचन न चित थीरे* (एगारह वर्ण)। एहिमे सुभ. *रह* जोड़ि छन्द तोड़ि देल – *न मुख बचन न चित (रह) थीरे।* एहिना पाँचम चरण *पर गुरुजन लड़का* मे सुभ. आ' राप. दूनू *दुजन* केँ *दुरजन* बनाए छन्द तोड़ल।

(घ) व्याकरण नहि जानब – विद्यापतिकालीन भाषाक व्याकरण नहि जनबाक कारणहु कतहु-कतहु पाठ बिगड़ल अछि। राम. गीतसं. 194 मे पाठ अछि *सिसिर मासिपति दाहे कापि लेल राजा भेल बसन्तू।* एहिमे *कापि लेल* नहि, *कापि कहुँ* चाही, जाहिक तेँ समापी क्रियापद *भेल* आगाँ अछिए। ई *कहुँ* अव्यय सम्पत्ति कें भए गेल अछि। एहिना [16] मे *पहि कए नहि*, *पहि कहुँ* चाही, विद्यापतिक भाषामे एहन क्रम कए नहि चलैत छल। एही गीतमे *कुसुमे पूरि मलयानिल पूरलि* मे *मलयानिलें* चाही, कर्मवाच्यक बलेँ -ए लगैत अछि। सुभ. हिन्दी – *मलयानिल से कुसुमपूरि भरी।* गीत [71] मे *किछु दोष नहिक हमारि, हृदयहु चाहह बिचारि,* एतए दोष पुलिंग थिक, तेँ *हमारि* नहि *हमर* चाही। शुद्ध पाठ होएत *किछु नहि दोख हमर, हिरदए करह बिचार।*

(ङ) अर्थ नहि जानब – अधिकतर पाठविकृतिक कारण थिक अर्थ बुझबाक चिन्ता नहि करब। एही कारणेँ अक्षर चिन्हबामे भ्रम होइत अछि। उदाहरण अछि *कामदेव अहेतनी (अगेतनी चाही) ; तब रतियति*

नव परिमल लागए (6) *(नव रितुपति नव परिमल लागए भाई)* : *थिर निसाचर* केर स्थानमे *निचर निसाचर* भए गेल (11)।

वर्तनी ओ शब्दस्वरूप

पाठोद्धारक समय एकटा इहो प्रश्न उपस्थित भेल जे भिन्न-भिन्न ठाम पाओल गेल भिन्न-भिन्न वर्तनीमे कोनो एक अपनाओल जाए आकि एकरूपता अनबाक आग्रह छाड़ि हस्तलेखमे जे जहिना अछि तहिना रहए देल जाए? इहो प्रश्न विचारणीय जे वर्तनी प्रतिलिपिकारक अपन थिक कि कविक? जँ कविक तखन तँ यथावत् राखब समीचीन। जँ से नहि तखन ओहिमे परिवर्तन कएल जाए सकैत अछि। हमरा जनैत वर्तनी प्रतिलिपिकारक थिक, किएक तँ सभ हस्तलेखमे भिन्न-भिन्न वर्तनी पबैत छी।

जँ से मानी तँ वर्तनी सुधारब वाञ्छनीय। किन्तु वर्तनी प्राचीनताक आभास दैत अछि तँ किछु नवीनताक। जेना *मझे* आ *ओझे* मे पहिल अर्वाचीन थिक तँ दोसर प्राचीन। *मोर, तोहि, सो पति* इत्यादिक खरड़सँ प्रतीत होइत अछि जे पूर्वमे *मोझे* छल, पछाति *मझे* भए गेल। एहिना पूर्वमे अधिकरणकारक चिह्न चन्द्रबिन्दु छल जे क्रमशः लुप्त होइत गेल। सभसँ महत्त्वपूर्ण अछि ळ, जे प्राचीन मैथिलीमे छल, किन्तु पछाति लुप्त भए गेल। प्राचीन वर्तनीकेँ यथावत् राखब समीचीन बुझाइत अछि। सभसँ बेसी दुविधाक स्थिति अछि तत्समक शब्द केर। प्राचीन खतसँ चल अबैत ई दुविधा मैथिलीकेँ आइ धरि गछारने अछि। आलोच्य हस्तलेख सभमे ऋ, ॠ केर सर्वथा त्याग कएने अछि तँ आन द्विविधाक स्थितिमे अछि। एहना स्थितिमे प्रसिद्ध तत्समने सर्वत्र ऋ राखब अधिक व्यावहारिक बुझाएल। तँ वर्तनीक विषयमे हम यहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ जे प्राचीनताक आभासवाला व्याकरणानुकूल वर्तनी यथावत् रहए देल जाए,

आन-आन विवेकानुसार सुधारल जाए सकैत अछि। मूल हस्तलेखक वर्तनीमे जे परिवर्तन कएल अछि से पाठशुद्धिमे देखाओल नहि।

पाठ-समीक्षा

पूर्वमे कहल जे कोन-कोन कारणेँ पाठ बिगड़ल आ' बिगाड़ल गेल। आब एक गीतक पाठ-समीक्षा बिस्तारपूर्वक कएल जाए। एहीमे प्रायः सभ प्रकारक पाठविकृतिक प्रचुर उदाहरण भेटत आ' तकर उद्धारक रीति सेहो भेटत।

हृदय तोहर जानि न भेला। आनक रतन आनि मझे देला।।1।।
कएल माधव हमे अकाज। हाथि भेलाउनि सिंहसमाज।।2।।
राखह माधव मोरि बिनती। देहे परिहरि पर जुबती।।3।।
चुम्बने नयन खजर गेला। दसने अधर खण्डित भेला।।4।।
पीन पयोधर नखरेँ भरुा। जनि महेसर सेखर चन्दा।।5।।
न मुख बचन न मन थीरे। कलप घनहुन सबे सरीरे।।6।।
घर गुरुजन दुजन सङ्का। लओलह माधव मोहि कलङ्का।।7।।
भन विद्यापति तखे दूति भोरि। चेतन गोपए बैसति चोरि।।8।।

(1) हृदय – राम. हृदअ। *य्* स्थानक लोप तद्भवक उभाव थिक। प्राभै. मे पूर्वान्तमे लोप यत्नेत छल, परन्तु पछाति तत्समसँ पुनः *य्* उपस्थित भए गेल। यथा राम. *पओधर, नअन*, मैथा. *पयोधर, नयन* (नएन, नअेन सेहो)।

(2) न – मैथा. *नहि* । *न* पाठ शुद्ध थिक, कारण जे ई गीत रगारह वर्णक चरण वाला वर्णवृत्तमे अछि ; *नहि* राखने छन्द दुटैत अछि।

(3) आनक – मैथा. *चरक* । राम. *आनअ* । प्राभै. मे अ व्यञ्जन नहि, उत्तरवर्ती स्वरक सानुनासिकताक प्रतीक थिक। राप.

(11) **संजय** ने इस संदर्भ पर अपनी सख्त [illegible]

(12) **मे** मत **होना** [illegible]

(13) **कार्यक्रम** [illegible] भड़पना दूसरा उन्हें [illegible] [illegible] [illegible]

(20) बेकल अपना मुखड़ा ठीक नहि चोरि ऐ गुरु हंड़नहि मंदि
प्रश्नका तखन सखन दयाको चोरि लिपाबए

ई भेल पाठसमीक्षाक एक उदाहरण, एहि प्रकारे जे सभ लौकिक समीहन लिखितहुं मे बेसञ्जार भए अछन्त से सभहिं मन पाठ समीहा करैत गेलहुं जे पाठ एतक धुझाएल से राखल।

अथ पाठ विकृतिक किछु शेषक उदाहरण देखल जाए एहिमे (क) थिक मूल हस्तलेखगत पाठ (ख) थिक परिशोधित पाठ आ (ग) थिक टिप्पणी।

क, कनहु सारस बासर मोरा गुरुर कुपुरुखक राए एकर
अथे करैत छोंये कही छिआ हुआ कामदेव दिन मे ही सारस पक्षी के
प्रेमपाश मे जोड़ रहा है छा कनहु सन सारसले मोरा कुपुरुष कुपुरुखक
कनहु कुछ कामदेव धनुष पर बाण चढ़ाए रूप लेखि। (ग) एखन
धरीलम सारस पक्षीक तनी अर्थ अछोंक

(क) अलि ऐ एहि पसर नहरो छेले मंडल , (ख) अलि ऐ एहि
जपटे, राघ पृ 24 (ग) अलि हिंद पाखान देह दी मेल पाषाण रेखा
एह होइत अछि (सुमनक उपरे पसर रहटाके ।) अर्थ
कोना

) क मोरहु मान छैल मंजिमाली पर तना भो एक मन हमरी
पूर्व भी मान धल की मंजिमालिनी पे ,अहि ने छ पुरुष हे। एह अर्थ है
कि हमरि न ही मान राघ पृ 15 (ख) मोरहु मानहरे भो
मंजिमाली पर मनमोह 5मय हमरी लहू मंजिमाली एह भ भोरो
मंजिमाली ३ कि, ज मलको मनमोहन मलक सहायता लेबइ) ने हुनक
हानि गुह प्रेम पाबए मन लपलहु ।

क दारुण सुनि दुरन्त क्रोध मनि कम्प कम्प लागए गुन
दुखेल का दारुण वचन सेलकर कृष्ण को मेर। गुण यहन बोला मान
यहार राघ पृ 2०१ (ख) दारुन सुनिके दुरन्त क्रोध जनि कम्पकम्प
लागए अंग सुनैन छी दुजेलय क्रोध दारुण हृदय भरिछ. भो क्रोध जकाँ
कम्पकम्प लगैत अछि

5 (क) पर मनुरोधे बोध दुर जाए लाथ परान दूसरो हेलखाए
दूसरो के अनुरोध से जितिसब अनुरोध किया जाता है एमक जल दूर
चला जाता है फल यही होता है कि नायक और, नायिका दोनो दूर
हट जाते है राध (ख) पर अनुरोधें रोष दूर भेल साधव रड़
दुअओ हरठाए आनक पुअओका सुअओलास रोष दूर भेल साधव म
राधा दलू पसन्न भेल।

६ (क) लिखल प्रकार न करैत्ए बोल लिखुवे पुरान है मै
(समस्त चलो तही करनी राध ५ ख) लिखल पुरान न करैत्ए
दोस लिखुक समस्त घोल नहि करबाक रही

गीतिक पारमाणविकता

फोटॉन प्रौद्योगिकी [illegible] के [illegible] कार्बन [illegible] प्रकाश [illegible] वैज्ञानिक [illegible] [illegible] [illegible]

विद्यापतिक परिचय

विद्यापतिक जन्म शुक्ल एतुवैठ आश्वासेन राजा कार्यधर्मगोत्रीय ब्राह्मण कुलमे अनुमानसन 24 (1350 ई.) क लगभग एक असुद्धी जिलाक बेनीपट्टी थानाक अन्तर्गत बिसफी गाममे भेल। हिनक कुलक मूलपुरुष रहु विसफीमे बसैत छलाह तेँ हिनक सन्तान परम्परा विसफीवंशज कहबैत छथि। विद्यापतिक पूर्व कुलक परिचय प्रसिद्ध ब्राह्मण एवं मैथिल कवि भवनाथ मिश्र अपन पञ्जिकामे देने छथि। ओ पञ्जिका डा. सुभद्र झा द्वारा सम्पादित भेल अछि। (परिशिष्ट 2 मे) जनार्दन, हिनक पिता छलाह। जनार्दनक पिता गणपति ठाकुर आ गणपतिक पिता देवादित्य ठाकुर छलाह। देवादित्य ठाकुरक तीन पुत्र छलथि। सबसँ जेठ धीरेश्वर ठाकुर आ सबसँ छोट

पञ्जीक आधार पर विद्यापतिक पूर्वज पहिल विद्वान डा. सुभद्र झा परिशिष्ट में देने छथि। मुदि ओहि पञ्जिका तथा अन्यान्य प्रमाण लगा कऽ हमरा लोकनि एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छी जे विद्यापतिक पूर्वज ओइनवार राजवंशमे मन्त्रीक पदपर रहैत आबि रहल छलाह। ओइनवार राजवंशक संस्थापक हरिसिंहदेव छलाह। हिनक पूर्ववर्ती राजा [illegible] छलाह। हरिसिंहदेव अपन पराक्रमसँ [illegible] स्थापित कऽ [illegible] छलाह।

अखन 1324-25 ई. मे ग्यासुद्दीन तुगलक हरसिंहदेवक पराजय कऽ देल। अखैर 125-58 क बीच फीरोजशाह तुगलक मैथिलक शासनसूत्र धारण करैबला ओइनवार भोगीश्वर ठाकुरक देल लखन पुत्र देवादित्यक अधीन पूर्व आ दक्षिण लोकनिसँ घण्डेश्वर ठाकुरक नेतृत्व मे मिथिलाक शासनसूत्र धारण करैबला दोसर घटनाक्रम शासन सिमड़ौन ओइनवंशक हाथमे रहल।

धीरेश्वरक पुत्र अखन धरि कवि गणपतिक पत्नीक कोनो सूचना नहि भेटैत अछि। मुदना तथा सकैत दुनू धीरेश्वर हिनका दूनू पुत्र छथि। विद्वान लोकनि एहन मानैत छथि जे धीरेश्वर अपन पुत्र गणपतिकेँ सेहो अपन पिताक जकाँ मैथिलक शासन सूत्र धारण करैबला बनौने छलाह। ई गणपति ओ छथि, जे गीतगोविन्दक प्रसिद्ध टीकाकार पक्षधर मिश्रक पिता छलाह। पक्षधर मिश्र अपन टीकामे अपन पिताक नाम गणपति उपाध्याय लिखने छथि

भयौत पाहुल घुल अर्को कालमे दुधकल्म भा लटेक पाठा रहथि जे देखिए नहि पड़लाह विद्यापति कवर टेलथिन *ग्रामेण स्थूलबुद्धीना तुल्यं रहैत* जायते अर्थात ठीके स्थूलबुद्धिके सुक्ष्म वस्तु लाहे सूझैत छैक। ई घटना सरिसबमे या गड़बौली मे भेल होउन किएक ते पक्षधरके गड़बौलीमे मान आ सरिसबमे बहिनोए.

तहि दिन मिथिलामे न्यायशास्त्र आ धर्मशास्त्र मुख्य रूप पठनित छल विद्यापति न्यायशास्त्र पढ़ल नहर कोना प्रमाण लाहे भेटैत भाेरि, परन्तु धर्मशास्त्रीक रूपमे विद्यापति दूर दूर धरि सुविदित छलाह. ताहिसँ प्रकाण्ड धर्मशास्त्री रघुनन्दन भ हालमे अपन *स्मार्त्ततत्त्व* मे विद्यापतिके बेरि बेरि उद्धृत कएने छथि किछु पण्डित हिनक प्रतिद्वन्द्वी या हिनका पाँति कुधरैतु मेहो छलाह। केशवमिश्र हिनक उल्लेख भोगेन्द्रबुद्धि नारायणाचार्य शब्दे हालमे भाेरि धर्मशास्त्रमे ई अनेक ग्रन्थ लिखने

विद्यापति शास्त्र मे पोथी पढ़ने होए, पढ़ि गेले ओतबे टा नहि लगभग पाँच पन्द्रह वर्षक अवस्थामे राजसभामे पण्डित लोकनिक आधुनिकार राजसभामे धीर भ्रमणशील पण्डित छल। ओहन साहु राजा गणेश्वरक छल कवर अर्जुनसिंह दूरक राजा हरिसिंहक लेल। गणेश्वरक बालक वी मिथिल लैलाभ्रू सुनलाह पुरुषपरीक्षाक प्रसङ्गसँ जे विद्यापतिके राजपण्डित छलथि उपाधि कवर पाबथि विद्यापति *कीर्तिलता* मे लेह धर्मशास्त्रीक कालक्रमक विवरण लिखने

कीर्तिसिंहक असामयिक निधन भेला पर सम्भवतः राजसभाक अवसान भेलाह बन्धुजनक सङ्गेन आ हिनक प्रेम ओइनवारमे चलिलाह तँ महाराजाधिराज शिवसिंह राज कए लेल तहि कालमे हे देश भ्रमण कएल आ किछु दिन हुनका सङ्ग तिरभुक्तिसँ दिल्लीक एही यात्राक क्रममे हे मुसलमान लिखने ने सम्भवतः प्रस्थानत्रयीके

रहि शेख मखदुमि पर्क कथा सभकें नए पुरुषपरीक्षा लिखाएल पर लक्ष्य रहल छात्र युवराज शिवसिंहक एक भावी पुरुष बनाबए।

तिरभुक्तिसँ घुरला पर विद्यापति आ शिवसिंह दूनू दम्पत्यालापमे उद्देश कएल अरम्भ भेल *अलह विद्यापति हे रस गान* राजा शिवसिंह रूपनारायण लखिमादेवि रमण हरए लागल रसधार विद्यापति दू विवाह कएल तँ मिथिलापति सन विद्यापतिक कोनहु पत्नीक नाम जानल नहि भेटैछ। शिवसिंहक सातो पत्नीक नाम जानल अछि लखिमा सुखमा लक्ष्मी सुरमा अहिमे लेखाबती आ संदेवती बहुतो नाम विद्यापतिक पदिक भनितमे भेटल अछि शिवसिंह प्राय नि सन्तान रहलाह विद्यापतिक तीन पुत्र आ दू कन्या पहिल पुत्र हरपति मुद्राङ्कितक रहथि कोन राजाक से जानल नहि अछि हिनक एक ग्रन्थ भेटे हैत्वपरीक्षा लोहनि प्रकाश होइत अछि से हे ज्योतीश्वर शासक विद्वान उमाह शेष दूनू बालक प्रवरपति आ नरपतिदेव विषयमे किछु जानल नहि भेटैछ।

विद्यापतिक हे सरस सकल गीतक लखिमा तीन पुत्र एहि गीतमे रूपनारायणक विशेषण एकेटीमे भाइर पाबै। रूपनारायण भाइक नाम भेटैछ तहि भेल एक पुत्र रूपनारायण आ दोसरी यदि एक भाइ भेल रहथि तहि कालमे दोसरीक आ सम्भवतः तेसर नाटक सेहो भेल

एहि कालमे राजा पुरादित्य आ राजदेवी लखिमादेवि अनेक मन्दिर मठ-मन्दिर बनाबए छलथि। लखिमादेवि नामसँ अनेक पोखरि आ दीघी खुनाबए छलथि। राजा शिवसिंह अपन नामसँ शिवसागर पोखरि खुनाबए छलथि।

विद्यापति अवहट्ठी भाषाके एक विशिष्ट कवि हुनकर समस्त कविता मैथिली भाषाक अनमोल धरोहर अछि। हुनकर पदावली मिथिलाक घर-घरमे गाओल जाइत अछि। हुनकर गीत सभमे राधा-कृष्णक प्रेम, विरह, मिलन आ भक्तिक भाव एहन सुन्दर ढंगसँ व्यक्त भेल अछि जे ओ आइयो लोकक हृदयकेँ छूबि लैत अछि। विद्यापतिक पदावली केवल साहित्यिक दृष्टिसँ नहि, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टिसँ सेहो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। हुनकर रचनामे लोकगीतक सहजता आ शास्त्रीय परम्पराक गहराइ दुनूक अद्भुत संगम देखबामे अबैत अछि। एहि कारणेँ विद्यापतिकेँ मैथिली साहित्यक आदिकवि मानल जाइत अछि।

विद्यापतिक जन्म सन् १३८० ई. क आसपास मधुबनी जिलाक बिसपी गाममे एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवारमे भेल छल। हुनकर पिताक नाम गणपति ठाकुर छल आ ओ राजा शिवसिंहक दरबारमे उच्च पदपर आसीन छलाह। विद्यापतिक बाल्यकाल राजदरबारक विद्वत्तापूर्ण वातावरणमे बीतल, जाहिसँ हुनकामे संस्कृत, अवहट्ठ आ मैथिली तीनू भाषाक गहन ज्ञान विकसित भेल। हुनकर शिक्षा-दीक्षा विद्यापीठ उच्च विद्यालय सिमरियामे भेल छल, जतय ओ न्याय, व्याकरण, साहित्य आ दर्शनक अध्ययन कयलनि।

विद्यापतिक रचनामे राधा-कृष्णक प्रेम केन्द्रीय विषय अछि, मुदा ओ केवल शृंगार धरि सीमित नहि रहैत अछि। हुनकर पदावली भक्ति, विरह, मिलन, सौन्दर्य आ जीवनक विविध भावकेँ समेटैत अछि। हुनकर गीत सभमे राधा-कृष्णक प्रेम, विरह, मिलन आ भक्तिक भाव एहन सुन्दर ढंगसँ व्यक्त भेल अछि जे ओ आइयो लोकक हृदयकेँ छूबि लैत अछि। विद्यापतिक पदावली केवल साहित्यिक दृष्टिसँ नहि, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टिसँ सेहो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। हुनकर रचनामे लोकगीतक सहजता आ शास्त्रीय परम्पराक गहराइ दुनूक अद्भुत संगम देखबामे अबैत अछि। एहि कारणेँ विद्यापतिकेँ मैथिली साहित्यक आदिकवि मानल जाइत अछि।

विद्यापतिक रचनामे राधा-कृष्णक प्रेम केन्द्रीय विषय अछि, मुदा ओ केवल शृंगार धरि सीमित नहि रहैत अछि। हुनकर पदावली भक्ति, विरह, मिलन, सौन्दर्य आ जीवनक विविध भावकेँ समेटैत अछि। हुनकर गीत सभमे राधा-कृष्णक प्रेम, विरह, मिलन आ भक्तिक भाव एहन सुन्दर ढंगसँ व्यक्त भेल अछि जे ओ आइयो लोकक हृदयकेँ छूबि लैत अछि। विद्यापतिक पदावली केवल साहित्यिक दृष्टिसँ नहि, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टिसँ सेहो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। हुनकर रचनामे लोकगीतक सहजता आ शास्त्रीय परम्पराक गहराइ दुनूक अद्भुत संगम देखबामे अबैत अछि। एहि कारणेँ विद्यापतिकेँ मैथिली साहित्यक आदिकवि मानल जाइत अछि।

संकेत व्याख्या

[illegible]	[illegible]
ब	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

1418 [illegible] पदार्थविज्ञान [illegible] विज्ञानशैक्षिक [illegible] विज्ञानशैक्षिक [illegible] नरसिंहक [illegible] शैक्षणिक [illegible] रचना।

टिप्पणी : [illegible] आवश्यक [illegible] आवेदन [illegible] अनिवार्य [illegible]

सुझाव :

टिप्पणी : [illegible] व्यक्तिगत [illegible]

१ रामभद्रपुर-तालपत्रक गीत

लुबुधल नअले सिरलि रहु काम, भरमहु कबहु लेब लाहि नाम १
अहनेहि आपन करब अवधान, अओ परचारेअ नओ पर जान २
ए हे नअरि मन दए सुन, जे रस जान तकर बड़ पून ३
अइअओ हृदय रह थिरलिअ, समाजे लइअओ रहब अजुधि भए लाजे ४
कामधेनी अनुगत अनअेम, लाभें लाभ हृदयानन्द पेम ५
शिवाएनि भन सुन धरणीधरि कमल, रहोरसे सरहए सुगति ६
रामभद्रपुर पहु रस जान, सिवसिंह लछिमादेवि रमान

१ आपने। २ परिचारित। ३ स्थिति। ४ अवश्यमेव। ५ कमल। ६ राए शिवसिंहस्य। ७ दो। ८ तेषां मध्ये।

सखी रामभद्रपुरके निवासिनी है। हे सखी कामरूपके लुब्ध स्वभावसे निकलो अपने अधिकार (स्वरूप) में रहकर पापरूप (संसारके) कभी नाम नहीं लेकर। २ अपने समस्याओं समाधान (पहचान) करकर जो प्रकार करकर रे (अब) शिवका ध्यान करो। ३ हे नागरी मन देकर सुन, जो रस जानेगी वही बड़े पुण्य। ४ हे भाई मनको स्थिर करो तेरा जन्म को भूमी माहो रखकर पार हो जाओ। ५ कामधेनु (कल्पवृक्ष) तेरा लाभ के लाभ में भरण कल्याणमें नारायण कृष्ण और हृदयगत मन ऐक होने साधुन। ६ शिवायनि कहते हैं सुन्दरी सखी कामरूप रामभद्रपुरमें पारगत होकर। ७ लक्ष्मीदेवी रमण पति रामभद्रपुरके रस जानेवाले हैं।

कुल कुलपदों सम्बन्ध खण्ड दूसरे के फलक रूपांक
निर्वाह भाद्र विद्यालयों कार्यों संक्रम सहस्र नगर ,
सम्बन्धित अंतर्वस्तु फुहारों लाभ
रेखा मज्जा खाल्ह रेखा सम्बन्ध विस्तृत ६.२ आज ४.२
कुलपति कुलपुत्र सम्बन्ध ब्रह्म विभाग घण्टे नगर

धारा 2 क्रांति 3 प्रश्नों।

सभी रचनाओं कुलपतियों गुरु प्रेम फरवरी देखेंगे व्यापार फोटो उत्तरी ६.१ कुलपति कुलपति अंतर्वस्तु कुलपति कोर्ट उत्तरी मेरा अंतर्राष्ट्रीय चालू। नहीं चालक ने अन्वेषक (खंड ३४ विभाग ४ अंतरिक्ष। फरवरी ने ४२ ४८ सभी स्वस्थ ने पुस्तकालय लाख होना अंतिम। इस की खंड ने १८ के सभी स्वस्थ ने पुस्तकालय लाख होना अंतिम। इस की कार्यवाही ३८ ने की वर्षगांठ। पत्रक कोर्ट फरवरी ने पेंशन कुलपति फरवरी उस से के नहीं जर्नल अंतरिक्ष नहीं परीक्षा ६.२ फलक कुलपति फल मास पत्रकार विभाग ८ ४ ४ ४

के घिर छोटन मेला। 2 मार्च हॉल 3 दूई

दूसरी वंधक प्रेमी कृपा के गज्जने लेन्न मूर्ति ११ नं बाल्क रखा नौवर प्रेमक कारण दूसरे क्रम मंत्रि को मारी वधक (बैंकवेड, ७६। नौवा फेवान कपक नौभा ६४ प्रेम दूर क्रम ग्रन्थ रखा १ ग्रन्थ क्रम मकानस्थान ब्लाडि घिरि मंत्रि। (२) मन्थरि कालि कालि के नवाद पठजोनकर प्रतिष्ठि को गयल छह नेभो प्रबेक कान दर सूचि नेह। सकरा अपना लेन कोनो चिन्ता नंदे मंडि। नवे चिन लेन केन (बैंकड्) (३) हल्ल रिसलक अणा दर आंदे कुलक्की पवलारिके घरसे नए अलचें। ढेचरी नलवंदेस मंत्रि हण्डे सम कुरंचिलाभी पुरेबाद्ध सम अधन क्षेत्रे (क्लिक लगरवाक भयसर पाबेलक। ८ कलेक चिलय बाहर। १७) दूँ सैक ३ वाल सोनेक कहला नेजर ग्रलाद नंद्रिश ढेवाक घोने दजा पिंचडिक रुपिलरायक प्रभवारे चेलाचिने है ग्रन्थ रचन

6

नव पेनुपाँने नव परिमल भगर नव मनवन्जिल पाव
अंधे नाजों नव नवर चिलसा पुलंगने सबे स्वर' दर्ष,
मन्तेनि अब कि मान सैन्द

कुसुमन्त चामक क्रए' पड़सन कुल मदन अन्डार ' ,
न्त दिल साद मंदि आने ,वले पवसन छेने थोन
अरे अवदा ह सर्पनि दैठिन समस पार कहु बोल ऽ।
निक्षपने उद्ध के ठमल सह मुंहेंनि नन्न ह लोग
सनिमन्तिए नवि क्रलनाख्य खर्चाने सबे रहा रोक ,

१ रनिमरने। ६ नवन्त ३ मबे 4 अपन नवान राजेव ५ की
जेवे उरेन के जे रोजन करेन लेवि ११ लवे क्रवेन ठंसल
भन्तिन नव मंलय नाजन मंलि ,, ,, ,, ,, ,, ,,
ठेन दिलेवि कन नेजन ५ के बने मंन्त नवन ग्रन्थ ,, ,,
ठ ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,

१ कन्ति ६ ६ ५ १ ,, ,, ,, ,, ,,

दूसरी ६ घंटाक मंत्रिमंडलो ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
दूसरे अंधक जनरि चन्ति ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
(सकेन्द्रस्थान ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
अहमदाबाद ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
नवान 4 दिल्लीने ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,

दक्षताकुंड अंतिम 2 फरवरी 1 जनवरी 4 जून 5 के 16 नहीं।

कृषक संरक्षण विधेयक दूनी के कर्तव्य छोड़ी ,१ दे दूनी तो अे कहलाए नहीं में हम खिलाने पहि मंत्रई आ चिंतन हमर अधिक कार्यान्वित कए देलक। (2) एहन कानूनें तो अे कल्याण सं समय रक्षण कानून नोसें, हमर कत्र विधेयक भए मेल पारंपरिक दीप सिंहासन मेल किसानसं अर्थात्क पिछ भए मेल। १, दे सही की कहलहु, कहल नवीन छी नं पिछला कएल जदि नाइल अंडि बाल्कन अर्थ अर्थ एक दूरि मेल ,4) अर्थात् यान की पंक्ति से नं अर्जन दोषक आभार कानून दूनी खुल रक्षण कानून। सेसर हमर प्राण नवीन अंति। (5 ( )) 6 पेंशनकर्ति है देखल एकर एस लखिमा देशक पाँचे राजा फिर्राह नवीन छोड़े

दा मलंगे सं मु अभियंत्र पिछ्ला पहुंचे
कहल ने सोहरि नाहि रहल हो भवनाथे नाथे
सलाहे हमर पेंशन हँस
सरकार पूरेल पारंपरिक कानून को घर ना
ने घर के हैं ने बोलैं न पं. हेड़ल शाह
भण्डारि अर्थ संधि संधि कार्यान्वयन मेल नाम पाथ
अर्थ अधिनस्थ पिछड़ापन अर्थात् कानून को घर ना
सिंह 'सिंह नाथे दूनि सिंह साहे के घर सलाम ने
अंतर्राष्ट्रीय पिछ ने देखल पैसे सं सर्व कल्याण
अल खिलाड़ियों हो ना सलाहि हमि रहे अल नाथे ५

, नवंबर। २ फ्रन्सिस फे। मोरे मई ४ सहस 5 मलेथ्य

राधा मिलनमे विघ्नक हेतु सखी के सुझबैत छथि (क) हे सखी बड़ मनोरथसँ पिशुनक नजरिसँ बचैत अभिसारक तैयारी करब परन्तु से सफल नहि भेल मनोरथ तकहि रहल। हम अभागलि लाधे छी (ख) हे सखी हुनक टिनक हाथ छिक पूर्व जन्मक ने भरी एहि काल नहि एहन परिश्रम भेल एहि भेल भनकाहर लागल छिएक करब ... से घर भेलहुँ ने संकेतस्थल पहुँचलहुँ मनक मनोरथ नहि पूरल। हँसि बाहमे दाम हँसि के अछि भेल यात्रा रुकि गेल (ग) हमर धार लक्षित काजे पियासल रहि गेल तकर एक भागी हमहीं होइब। हम दुर जाउ एतेक पैघ सन्ताप के सहत ... ई विचारि कहैत कवि विद्यापति पैघे धारण कयि पैघे मनः विघ्नक समाधान छिक कृपया पर ध्यान लगाबि रहू मिलन अवश्य होएत,

कतए परिश्रम तकलहुँ सए हमरो एकर बहन
कानन सहजहिं रहि बसए तोहिले सखी
सजनि
अहुसारे निसि अभिसर ... कयि ...
अगए अनुसरए ... पड़ए ...
जलधर बरिसए ... बरसए ...
मुकाबे विद्यापति गाबए ... गुन रसमन्त

भनइ

दूती अभिसार लेल राधाके प्रेरित करैत छथि (क) हे सखी मेघ घारापात बरोसि रहल अछि तेना भयानक अन्धार जेना हो (ख) सखी कामदेवसँ रहल सेहो नहीं अछि तखन दोसरासँ की भय (ग) हे सखी एहन रहिसे अभिसार लेल अछि भला के एत सकैत अछि हे अबलक साथ सहसह जैत अछि चलू हिक सब मिलि ... मेघ मे बिजुरी

चमकैत अछि कि मेघ नखन्हि अयानक गर्जन करए उठैत अछि 6 सुनलि विद्यापति कहैत ओहि कान एसग बड़ मरम (दुलभ ना कहसाध्य होइत अछे

11

कातर दखए पथर आर राति अन्धर बाहर होइबहु साथि।
आहुरि बेरि गेल अनुचित अनुसए मरम पर आँकर ?
भल हम कएल मन्त्र हम दिअसक चिकर' जोअन सत कलहक बाध 3
अलद मुनलहुँ दुइ बोल सहज चिकर' बिसाचा कर रसभङ्ग 4
भल अछाहर अनुरुप नेह ओहिसँ हेतन हो अरोस। 5
भनइ अनुचर बुझए आँकरान विद्यापति कवि एह रस जान 6

अभिसार २ चिकर। 3 हेल 4 चिचर ५ अधरात

राधा अभिसार में बाधा दायी परिस्थिति देखैत छथि ... राधे मानू कानन सहज घनी रात अन्धकार आहे एहना में पथ में बाहरो होएब कठिन है। अनुचरक दोसर युक्तिसंगत तेनाके मानू राधे तेन अछि। अभिसार काल में संकेतस्थल धरि पहुंचे में यदि भेल ... व्यवधान से विरहक हेतु से मोन मे ... करैत अछि अ रस विनष्ट करैत अछे ... अछि काजहु ... सहज करैत अछे छथी सखीसँ विनयक अछि भेल नहीं। से चूड़िक ... राधे से पूर्वोक्त छथि से सजल सम्भव कैल ने नहि विद्यापति कवि न कहे छथि।

:

हमर लहर कामे न बोल अनुचर रहल अछि अहे हेल
काल सलिल हमे अकाज हमि भनकारिनि विह समाज
लखि सखिन लेलि चिलली हेत अभिसरि पर जुवती ३

३ मार्च २०२३ को संपन्न हुई बैठक की कार्यवृत्त

पीपी पाकर सुरेखन कैम्प सिनेमा संसद 4
मन्त्री हल अदालत न गुलाब अच्छा खेलना मार्क
इसके मैच करना नये व्यवस्था हमारा 5
समाधान दोष सच्चा आसान सुनि दक्षिणी डाली
के हल्दी भालाले चलाना रक्त मेरापनि आनी 6
कर्मचा अवसर की होने सहनि आलसी घास्ने हाथी
पैसा स्वास्थ्य संगठ समाधान मार्च लड़ना आधा 7

१ न ३ ८ ४ ७ ६ २ ५

दूसरी सप्ताह में हेलिकॉप्टर फ़ैसला कर्मचारी ९ है कानून पुलिसकर्मी रखने समय करवाना न हर होइल सैकड़ा सेमी पिछली जिला पानी मोटर हमेशा दोहरा सप्ताह न्याय मंत्रालय मोबाइल स्कूल कंप्यूटर मस्तिष्क मन्त्री आ नर्स्पताल ऊपर ९२ वकालत समर्थक १८ खाता मोहल्ला कर्मचारी सुरंग सेना खिलाना खिलाड़ी पिघलना मोटर अधूरा लेखापरीक्षण मेज आ अनुमान्य खाना भी अदृश्य दूरी आना ने लेना गलती आम गर्भवती सेना वकालत खेत ने दिन रक्त मैच समय ६ से मोहल्ला खाँसी वकालत खेत ने दिन रक्त मैच, मैच समय थोड़ा लोहा होना रहना अंश ९ दवाई गुरुत्वाकर्षण भी ९७५० दूसरा समय कैप्टन से ८८ ५ भी हल्का विमान ६ ९५ ९ ९ ९

धारा २ लोहे संबंधी मद्दे प्रकाशित भाग

१ ए॰ ए॰ अधिनियम ८८

सभी रंगीन प्रयोजनों हेतु छपी ने पाठ्यपुस्तक और अन्य (1) में

लाभार्थ वसन्तकुंज एनेक्स सामाजिकोके मुख्यालय हरियाणा ( ) मालपत्रको

मुख्यालय पराजय मुनीमे मेरा ने सरकार कॉलिजके के को प्रेक्षितमें। पूर्वक

(शिक्षित) अनुक्रम परीपाटी (शैक्षणे लवका वसन्तकुंज परीक्षण हुमे पक्षम

मेल मोहिला प्रयाजके मिल्ल परीपाटी चलित (आंकड़ेके मद्द फलव) मेल

मंत्रि ने 12 के कालिजकी है बच नल्ले थालने टटवल्या) आये नहं

राजा शिक्षिकके मंगल पाकिकामें दहाए वसन्तल राजा मंत्रालय, । नों

कामहाल्य रजिस्टरिंग मंगोपालन पढ़ने एक लेमा मंत्रालय घर मंत्रालयी

अंका प्रात मंत्रक अंगुलि प्रिन्न कॉलेज कंपनि मंत्रालय पोस्टल मंत्रालय

घंटल प्रिन्न मंत्रि

18

को मंत्रि कोमल नल्ले मंत्रि परिषि हल मंत्रालय मंत्रालय रंगमे

फाल्गुन पूंछेज़ किके को लम्बि जारल सरम नहं लम्बि मंत्रि 2

मंत्रालय परीपाटी (शैक्षे लवका वसन्तकुंज परीक्षण हुमे पक्षम 3

मेल मोहिला प्रयाजके मिल्ल परीपाटी चलित (आंकड़ेके मद्द फलव) मेल 4

मंत्रि ने 12 के कालिजकी है बच नल्ले थालने टटवल्या) आये नहं 5

को मंत्रालय कल पेज़ पराजय मंत्रि मंत्रालय मंत्रि लोहा मंत्रालय 6

मंत्रालय पोस्टोफ्रेंसे मंत्रालय पिनकोड लम्बि मंत्रिका पिन्नल्य लम्बि मंत्रिका पिनकोड 7

1 हुलमने पुस्तिमहुं 2 बजाने फरियादी 3 गोरे आइनिमे।

सभी कलमने रजिस्ट्रेशन घरमेंस्त्र तारीख 1 को किलाइ ने परमा

कोलमने आयोजित, अंतिम विभाग तो कोलमें दर्शन छेड़ के थेड़ मान्यवर

अंतिम (शैक्ष मंत्रालयके 2 तो मंत्रालय मंत्रालय से पुस्तिमें से की मंत्रालय

का विभाग नंदिन का को मंत्रालय रहन ना को मंत्रालयी नंदि नंदना। का मंत्रि

रहनुदे ना क्षेत्र कलमने | 3 , मंत्रि नंदि मंत्रा। पुस्तिमें मंत्रि मंत्र

वाले पुस्तिमें पुस्तिमें (शैक्ष देशिक 4। प्रोफे वि जनरल पर मंत्रालय

नन्द मंत्रि गोल्ले (शैक्ष मंत्रालय मंत्रालय पर पुस्तिमें मंत्रालय 5 मंत्रालय

मंत्रि 15 को मंत्रालय दरबारी का मंत्रालय मुद्दा ने मंत्रालय मंत्रालय

। 16 विद्यार्थिने मंत्रिका पुस्तिमें।

मंत्रालय मंत्रालय 6 को मंत्रि मंत्रा मंत्रालय पिन्ने मंत्रालय मंत्रा

मंत्रालय मंत्रे मंत्रालय मंत्र मंत्रालय मंत्रि मंत्रालय मंत्रा 7

मंत्रालय मुद्दा मंत्रा मंत्रालय मंत्रालय मंत्रि मंत्रालय 3।

मंत्रालय मंत्रा मंत्रालय मंत्रालय मंत्रालय मंत्रालय 4

मंत्रालय मंत्रा मंत्रालय मंत्रालय मंत्रालय मंत्रालय

मनोरंजन आवाज़ मौन मानव सच्चा आधुनिक खाना ।

पिछड़ापन अच्छा कोने रहस्य। नेशन लाभदायक ने कपास 2

नदियाँ पढ़ाऊँगा तोड़ना ठाना हार्दिक चयन बीच्चा खाना 6

दूसरे भाग जन्म अस्पताल ऑपरेशन बड़ी अच्छा बड़ी रेलगाड़ी 7

तब कर्ज़ केमिकल अपराधी बहस नवंबर प्रदान लड़का की घर्षण 8

घर अनुभवी शेष दूर जाए क्लास राइट दुकान हनुमान 5

शिक्षालय मल धूप रसायन रक्त सिगरेट जीतना दौड़ना गल्ला 8

1 कठिन कठिन 2 छुट्टी। 3 रहस्य 4 लड़ाई 5 रेलगाड़ी, 6 नदी

टूटी रसायन रात्रि मनोरंजन दक्षिण 3 अच्छा कंपनी ने सफ़ेद लाल तोड़ना ठीक किसी चित्र नवंबर याद नदी गणित ठीक से लाल कार्बन कृष्णा के शिक्षक। 12 जेल्दी कंपनी नेहरू जनरल जन्म (खुला ने फ़ाइल जयंती। लाखनदि दुनिया प्रेम भेंटना 1 है सर्दी झूठ दूर अक्षिमान खराब समय से धूप प्रेम लाल बड़ा पेंग्विन दिन 4 डालना रेलगाड़ी मनोरंजन दूरी। अस्पताल पार्क्स टेन पेशा 12 ने डायरेक्ट कहानी नाक दूरी आय नई देरी लेन से पक्का नहीं करना लोहा गंदी सप्ताह लाल समाचार-पत्र चलना से हरा हमेशा ज़ुकाम ने सिंह इंजीनियर नहीं भेजना ने धूप मंत्री दवाखाना। 5। नया कंप्यूटर का काम। का का मंत्री समय केला आसपास (भाई भतीजा 4 पर्यटक कॉफ़ी मोबाइल घड़ियाल पेंग्विन पेड़ा। हेलमेट हिंदू 5 जलाना 3 जलाना। हेलमेट मोटर 16 हमारा की न्यायालय। विज्ञान मेज़ कंपनी 5 नया खाता। 6 कंप्यूटर मोटा मेल कार्बन। 1 सिंचाई 2 मनोरंजन मन्त्र मंत्र झूठ। 3 मंत्रि भेंट। 4 गंभीर। 5 रेलगाड़ी। 6 चलना। 7 ऑपरेशन 18 लाभ व्यापार

मुसलमान नया आपरेशन मौन झील लड़का लाना नदी। 11 हंसना हिंदी दरवाज़ा मंत्रालय कपड़ा पेन्शन घड़ी। 7 मंत्रालय, जलाना आंख मज़दूर फोन पढ़ना कठिन दूरी। 1 पेन्शन गेहूँ आसान मुंह दवा जलाना देना सफ़ेद विज्ञान। प्रदान स्वास्थ्य विज्ञान सप्ताह कपड़ा पेड़ा। 5 कंप्यूटर हंसना लंबा दिया। मोटा ऑपरेशन 1 का हरा मंत्रालय।

आलमी शांति कन्वेंशन ने पहले इस बात पर जोर दिया था कि
अलग-अलग विचारधारा रखने वाले लोग भी अपने मतभेदों को

दि अमृतसर मैत्रिक अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए प्रसिद्ध विद्वान
श्रद्धेय पंडित हरिहर शर्मा ने कहा था कि लोकतंत्र में सुख, दुख साथ-साथ चलते हैं।
सहनशीलता के बिना लोकतंत्र की नींव कमजोर हो जाती है।

२

कमल जैन ने अपने हाथ में पकड़े हुए आमंत्रण-पत्र की ओर
देखते हुए कहा कि अगर कर्मु पैसे के अभाव में अपने इस प्रयास को
पूरा न कर सका, तो उसके लिए वह किसी और को दोष नहीं देगा।
नवरात्र बहन कहीं न जाए, इसके लिए उसने पहले ही व्यवस्था
कर ली थी। उसने कहा कि कमिला तभी हमारे घर आएगी,
अगर विजयश्री पहले मुनीम पर अपनी दया दिखाएँ।

१ अपूर्व २ सहसा मार्ग ३ अरावली ४ सहयोग।

राधा सर्वेक्षण अधिकारी ने बताया कि हमारे दो कर्मचारी कोटी सहित
कोसम गाँव में दस से अधिक अलग-अलग घरों में पहले दौरे कर चुके
हैं। अगले सप्ताह तक शेष परिवारों से भी जानकारी एकत्र कर ली जाएगी।
पुराने कटरा निवासी श्री मोहन लाल ने अपने पोते को अंग्रेजी माध्यम
में पढ़ाने के लिए अपनी पुश्तैनी दुकान बेच दी। उनका कहना था कि
हमारे समय में शिक्षा का अर्थ केवल पढ़ना-लिखना था, पर अब
बच्चों को भविष्य के लिए तैयार करना पड़ता है।

पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि ने कहा कि
जो विद्यार्थी केवल परीक्षा के लिए पढ़ते हैं, वे ज्ञान के
साक्षी नहीं बन पाते। सच्ची शिक्षा वही है जो मनुष्य को
भीतर से जगाए और उसे अपने समाज के प्रति संवेदनशील
बनाए। यह बात उन्होंने अपने लंबे भाषण में दो बार दोहराई।

शैलखण्ड अल्ल शिखर सौम्यत्व दूरी चेतन अंत कर्ता

दूरी छुई छोर छीन सर्व खाल्किक सम्पर्क रचाने सुख बदले

घायल अंधड़ न देखूं भर्पक

भ्यानक कहानी नहले नहले अंजन की उपस्थिति अंतर

बादल आसमान एकमौलिक अंजन मेलजल मंत्री

नींव विचलित अंडसरोवर सम्मान गाने देखना सुख हंसिल

अंतर्देश पर सुन्दरता का कन्नड़ मुख अंतर्मन सर्व छह

कहीं संस्थानी खाल खण्ड खाल्किक सर्व घेर खाल्किक साथी १४

छोड़ा पल्लि पलाश पलाश भड़कने नव पीपली

पलाशी सभी खण्ड खण्ड कलकत्ता मुख्यमंत्री इलेक्ट्रिक कर्म ६

सर्वत्र लम्बित औरत अंतरंग एक्ट मौलिक सौम्यता

राज्य सिंगापोर हस्ताक्षर नर्सिंगहोम खाता ६

१ न 2 खाड़ 3 रमनः 4 हाँ

दूरी कलकत्ता देवता अंतिम [illegible] के पेशाक रहेंगे धर नवने
अंगों वक्ता देनर आ कलंडर अन्त आर के गर्व औरत ऐस एशियन आ
अंत। अंजन लोहर एंडे पर्वत्व वा दरवाजा आधार में तिलकोत्सव फेक हल
नवी और रहनेवे अंजन हिलाक धोने सर्व सहस आए अंजन
है अन्दर सर्वत्र सुरंग सर्व ने सहयोग [illegible] के विशेष है रे
अन्दर्देश अंतिम दूसरा अंत ने सहयोग [illegible] अंतर पेशाक
छात्र ने सम्पत्ति अंतर्गत के सहस, ने दूसरा अंत के अंत
अपने नहिं चुकिन उद्देश्य सर्व में नेसल दूसरे [illegible] में पेशाक हाथ
(१, सांस्कृतिक अन्तर्राष्ट्रीय सेल सम्पर्क नहीं [illegible] में पेशाक
खाने देवल दूसरा साझा कंपनी [illegible] के [illegible] में
सम्पर्क अन्तर्राष्ट्रीय के (अंतिम अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] में [illegible] के अंतर्राष्ट्रीय
पेशाकों, में खाल्किक संस्थाएं एंडे के खाद्य खाद्य का खाद्य अंत के
साथ रखेलक (६, में [illegible] पेशाक सम्पन्नता के सम्पर्क खेल
एंडे खाद्य [illegible] में सर्वत्र पेशाक [illegible] अंतर्राष्ट्रीय

अभ्यास

१. एकवाक्य उत्तर दीजिए :

१) अमरेन्द्र कौन थे ? २) अमरेन्द्र की पत्नी का नाम क्या था ? ३) दूसरे विवाह के बाद अमरेन्द्र कहाँ रहने लगे ? ४) अमरेन्द्र की पत्नी का नाम क्या था ? ५) अमरेन्द्र के दोस्त का नाम क्या था ? ६) अमरेन्द्र की पत्नी की मृत्यु कैसे हुई ?

२. एक-दो वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१) अमरेन्द्र को कैसा लगा ? २) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या सलाह दी ? ३) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ४) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ५) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ६) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ?

३. संक्षेप में उत्तर लिखिए :

१) अमरेन्द्र की पत्नी की मृत्यु कैसे हुई ? २) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ३) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ४) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ५) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ?

४. विस्तार से उत्तर लिखिए :

१) अमरेन्द्र की पत्नी की मृत्यु कैसे हुई ? २) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ३) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ४) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ५) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ?

अभ्यास

१. एकवाक्य उत्तर दीजिए :

१) अमरेन्द्र की पत्नी की मृत्यु कैसे हुई ? २) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ३) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ४) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ५) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ?

२. एक-दो वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१) अमरेन्द्र की पत्नी की मृत्यु कैसे हुई ? २) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ३) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ४) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ५) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ?

३. संक्षेप में उत्तर लिखिए :

१) अमरेन्द्र की पत्नी की मृत्यु कैसे हुई ? २) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ३) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ४) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ५) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ?

४. विस्तार से उत्तर लिखिए :

१) अमरेन्द्र की पत्नी की मृत्यु कैसे हुई ? २) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ३) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ४) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ? ५) अमरेन्द्र ने अपने दोस्त को क्या कहकर समझाया ?

1 धनराशि

दूसरी कृषक जनगणना अवधि के दौरान अपने घुटनों के बल चलने वाले बच्चों की संख्या में 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो 2 करोड़ 30 लाख से बढ़कर 2 करोड़ 65 लाख हो गई। यह आँकड़ा पहली बार 2012 में दर्ज किया गया था। इस वृद्धि का मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों में पक्के मकानों का निर्माण बताया गया है, जहाँ अब अधिक परिवारों के पास चलने-फिरने के लिए पर्याप्त खुली जगह उपलब्ध है।

1 अनुसार पाम अनेकों व्यक्तियों / व्यक्तियन संख्या 3 घंटे, 4 नीलकंठ 5 अवधि 6 दूर

राधा सर्वोच्च उदाहरण हैं कि ___ ने लगभग आज भाई नौ की कलाई ने हमारा केवल पेज पोलमोलेट 2 से खाएंगे लेंगे। अगले बच्चन भवनात्मक घाव पहलेन हो 13 सम पिछले 6 मूल्य ठीक नीमक मस्तिष्क (व्यक्तियों) मेरी जनक हाथ्यूंके साथ पहाड़ अतिरिक्त मेरी लंबाई चाहे 4 ली ने ट्रांसफर्म हमारा सारी देखने तरफ याद शोधपत्र ही छात्रवृत्ति 5, भी दूसरे जनरल हमेशा अनिवार्य एवरेस्ट विद्यालय] नहीं पूर्णतया कमरे 6। नवंबर सेवानिवृत्त पीएच. विश्वविद्यालय के ने नवंबर नौकरी हैं हमारा ___ ने ___ ने ___ ने

1 छोटे कपड़े 2 मोल भाव 3 गलतफहमी 4 हानि 5 पड़ोसी 6 जिद्दी भतीजा

रमेश पुराने सामानों की खरीद-फरोख्त करता था। हर कपड़े पर उसकी पैनी नज़र रहती थी। (कविता क्लेश) देखता क्या है कि एक आदमी भीड़ से निकलते ही मोल भाव करने लगता है। (उदासीनता उत्साह) कपड़ा उसके लिए बहुत छोटा था। वह उसे वापस करने लगा। (अस्वीकार) रमेश ने कहा, "भाई साहब, यह कपड़ा आपके लिए नहीं है।" (अस्वीकार) आदमी ने जवाब दिया, "मैं इसे अपने लिए नहीं, अपने भतीजे के लिए ले जा रहा हूँ।" (स्पष्टीकरण) रमेश को अपनी गलती का एहसास हुआ। (पश्चाताप) उसने तुरंत कपड़ा वापस कर दिया। (क्षमा याचना) आदमी ने मुस्कुराकर कहा, "कोई बात नहीं, गलती हो जाती है।" (क्षमा) रमेश ने राहत की साँस ली। (राहत) उसने सोचा कि अब वह और सावधान रहेगा। (दृढ़ निश्चय) आदमी ने कपड़ा वापस लिया और चला गया। (विदाई) रमेश ने देखा कि वह आदमी बार-बार पीछे मुड़कर देख रहा था। (चिंता) शायद उसे डर था कि रमेश ने कपड़ा वापस नहीं किया। (संदेह) रमेश ने सोचा कि वह उसे बुलाकर कपड़ा दे देगा। (विचार) लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। (निर्णय) आदमी दूर चला गया। (दूरी) रमेश को अफसोस हुआ। (पछतावा) उसने अपने मन को समझाया कि यह उसकी गलती नहीं थी। (आत्म-संवाद) उसने फिर से अपने काम में ध्यान लगाने की कोशिश की। (प्रयास) लेकिन उसका मन बार-बार उसी घटना पर लौट रहा था। (मानसिक द्वंद्व) अंत में, उसने तय किया कि वह अगली बार ऐसी गलती नहीं करेगा। (संकल्प)

2 नन्हीं लेखा अदालत में

दूसरे मानसिक स्तर पर रमेश को लगा कि यह आदमी अलग है। (विश्लेषण) उसने सोचा कि शायद यह कपड़ा वाकई उसके भतीजे के लिए ही है। (अनुमान) फिर उसने सोचा कि अगर वह कपड़ा वापस नहीं करता, तो कोई उसे चोर नहीं कहेगा। (तर्क) लेकिन उसका मन इस तर्क को स्वीकार नहीं कर रहा था। (अंतर्द्वंद्व) उसे अपने बचपन की एक घटना याद आई, जब उसने भी कुछ ऐसा ही किया था। (स्मृति) उस समय उसे भी बहुत अपराध बोध हुआ था। (भावनात्मक जुड़ाव) यह याद आते ही उसका निर्णय और पक्का हो गया। (दृढ़ निश्चय) उसने तय किया कि वह कपड़ा वापस करेगा, चाहे कुछ भी हो जाए। (अंतिम निर्णय)

3 गलतफहमी

दूसरी ओर, वह आदमी भी परेशान था। (चिंता) उसे लग रहा था कि रमेश ने उसे चोर समझ लिया है। (गलतफहमी) वह सोच रहा था कि उसने कपड़ा वापस करके अच्छा नहीं किया। (पछतावा) उसे लगा कि उसे रमेश को समझाना चाहिए था। (विचार) लेकिन उसे डर था कि रमेश उसकी बात नहीं सुनेगा। (संदेह) वह बार-बार पीछे मुड़कर देख रहा था। (चिंता) उसे उम्मीद थी कि रमेश उसे बुलाएगा। (आशा) लेकिन रमेश ने ऐसा नहीं किया। (निराशा) आदमी ने सोचा कि शायद रमेश को कपड़ा पसंद नहीं आया। (निष्कर्ष) उसने तय किया कि वह अब कभी भी किसी पर भरोसा नहीं करेगा। (कठोर निर्णय)

4 समाधान

दूसरी ओर, रमेश को लगा कि यह आदमी अलग है। (विश्लेषण) उसने सोचा कि शायद यह कपड़ा वाकई उसके भतीजे के लिए ही है। (अनुमान) फिर उसने सोचा कि अगर वह कपड़ा वापस नहीं करता, तो कोई उसे चोर नहीं कहेगा। (तर्क) लेकिन उसका मन इस तर्क को स्वीकार नहीं कर रहा था। (अंतर्द्वंद्व) उसे अपने बचपन की एक घटना याद आई, जब उसने भी कुछ ऐसा ही किया था। (स्मृति) उस समय उसे भी बहुत अपराध बोध हुआ था। (भावनात्मक जुड़ाव) यह याद आते ही उसका निर्णय और पक्का हो गया। (दृढ़ निश्चय) उसने तय किया कि वह कपड़ा वापस करेगा, चाहे कुछ भी हो जाए। (अंतिम निर्णय)

सूचकांक टुकड़ों हर रूप दूर फ़ैलू सम्पर्क अप्रैल नदि पूर्व ‘ **शक्ति** सस्ता सार बाय पढ़’ लिखा एक जेलर ग्राम लिख सेब ‘

1. अजनबी खरीदने सार 2 नहीं केजी 3 काम 4 मेट

सब्जी रापा के अधिकार हेतु छोड़ना बोल उधि (1) संघ भाग्य अब धरीसमा रहल अधि लगभग दिलहमे गति सब अलबत्त घसलत मरीज 2) लगहमे के मं क्रमशः नहि ईश्वर भरि "दलाने के पिंड से के फ़ैलाए सकन्हु 3 है सब्जी अधिसरार वेन्ती भनह। मन्हु पिलाबमे समान्धा सफल सेआम 4) सुरक्षक मा टुकेक या पूर्व करह। फेलु समहस काने प्रस्त नहि पुर्ण छेक 5) एहि नसार मे सार चलु इन्ह छिक पल भरि जिलन भा केवल मरि पेस

ब्लॉक पर घटल के नपे (ठंढ) के नाम सटाक दस।
कुकुर कहीसो कान्हे नहि धैर्य। हल्ला पर स्वास्थ्य
के अन्न अवाज भले भेलल फेरुकेको ट्रेजर सकर या भेले
। ।
गलत प्रवेश इस कैलेण्डर पेंशनिया केस लड़ाको
ऊठरु अच्छा फेरास आ तीसरके लगे ।। । चुप बिक्री
अधिक सल्फेट साथ यहंकुरे रहेलहे गहरु अजनबी
भोले हमें भाभी । की ।। ।। । ।। ।। ।।

1 केन्द्र भी 2 फलाफ्ल भ्रष्टेकल । चारुलहे गंहे हुं। 4 जने

कृषक अधिकारपर नागरिक सार्वजनिक रेल रास्ते (1) लहि नजदीक के नहि बाद खाद घर्षण भरि के नहि बड़े घाट कर्मचारी दाता खाताधारक। वाला अधि 2) के भेज कहां कलहे अंतर केवल कहिनी मरीज़हु) नुकसान विक्रेता दा रुपया किसान लाहे नहि के फुलफिल्मी चुनिन्दहि की कहां बजैल हिस्सा पर टन लड़ैल भरि नहि करेल मरि

१ अनुच्छेद २ वर्तनी ३ ते ४ परस्परपद

राधा सप्तपदी कथन चित्रक व्यवस्था सुरक्षित छाया कृपण ठाकर व्यवस्था परस्पर आने नई कनक जलाशय मे पानि चिलनि जवनेक अर्थपूर्ण सभा खिलास फालनि। (२ के बात जरूरत जलनहुँ ने यह दुख्य मौन में आखक सन्नाय नदि घुड़लनि ,११ के साझी की जरूरत कहन लाल लोहन अदि हुनक काज (कृपणि दिन दिन चिलन मौनहुँ (४ परामर्श शिलालेख हुनक हवेलक हेतु पानि पहुँच परस्परलक लाहे आजिक समाधान ऽ (१ व्यवस्था चिलन केहन होइत चैक से वास्तवे जवेन लाखि

+

हमर कि की या अपने अपि शिक्षा जेल अनुपात
मरे एनि टाका मेलहँ मनि मानव खोजि थ
सहजीवन के ठाम थ मणि भयानक व्यापार अए ट
१ \ \ ४
घोर ल ए घरे पैसल व्यापक विशेषण मय
१ \ ल
क्षेत्रफल म गल मन्त्र शिक्षा ए की जेल
ल ल ल

۱ ۲ ۳ ۴ ۵ ۶ ۷ ۸ ۹ ۱۰

۱. ہر سوال کے چار ممکنہ جواب دیے گئے ہیں۔ درست جواب پر نشان لگائیں۔

۱.۱ پانی کا کیمیائی فارمولا کیا ہے؟

(الف) CO_2 (ب) H_2O (ج) $NaCl$ (د) O_2

۱.۲ روشنی کی رفتار خلا میں تقریباً کتنی ہے؟

(الف) 3×10^8 میٹر فی سیکنڈ (ب) 3×10^6 میٹر فی سیکنڈ (ج) 3×10^{10} میٹر فی سیکنڈ (د) 3×10^5 میٹر فی سیکنڈ

۱.۳ مندرجہ ذیل میں سے کون سا عدد مرکب ہے؟

(الف) ۲ (ب) ۳ (ج) ۴ (د) ۵

۱.۴ ایک دائرے کا رقبہ کس فارمولے سے معلوم کیا جاتا ہے؟

(الف) $2\pi r$ (ب) πr^2 (ج) πd (د) r^2

۱.۵ ڈی این اے کا مکمل نام کیا ہے؟

(الف) ڈیوکسی رائبو نیوکلیک ایسڈ (ب) ڈائی نیوکلیک ایسڈ (ج) ڈیوکسی نیوکلیک ایسڈ (د) رائبو نیوکلیک ایسڈ

۲. مختصر جواب دیں۔ ہر جواب ۲ سے ۳ جملوں میں لکھیں۔

۲.۱ فوٹوسنتھیسس کی مساوات لکھیں اور اس میں شامل ہر مادے کا نام بتائیں۔

۲.۲ نیوٹن کا پہلا قانونِ حرکت بیان کریں اور ایک روزمرہ مثال دیں۔

۲.۳ ایٹم کے تین بنیادی ذرّات کے نام اور ان پر برقی چارج بتائیں۔

۲.۴ ایک مثال دیں جس میں ایک سے زائد مختلف جواب ممکن ہوں۔

۲.۵ ایک ایسی صورت بیان کریں جس میں کوئی سوال درست جواب نہ رکھتا ہو۔

۳. تفصیلی جواب دیں۔

۳.۱ پانی کے برقی تجزیے کا تجربہ بیان کریں۔ اس میں استعمال ہونے والے آلات کی فہرست بنائیں اور ہر آلے کا کام لکھیں۔

۳.۲ ایک ایسا سوال لکھیں جس کا جواب ہاں یا نہیں میں ہو، اور پھر اس کا جواب دیں۔

۳.۳ ایک ایسا سوال لکھیں جس کا جواب ایک عدد ہو، اور پھر اس کا جواب دیں۔

۳.۴ ایک ایسا سوال لکھیں جس کا جواب ایک نام ہو، اور پھر اس کا جواب دیں۔

۳.۵ ایک ایسا سوال لکھیں جس کا جواب ایک جملہ ہو، اور پھر اس کا جواب دیں۔

۴. ایک ایسا سوال لکھیں جو اس باب کے کسی بھی سوال سے مختلف ہو۔ پھر اس کا جواب دیں۔

۵. ایک ایسا سوال لکھیں جو اس باب کے کسی بھی سوال سے مختلف ہو۔ پھر اس کا جواب دیں۔

۶. ایک ایسا سوال لکھیں جو اس باب کے کسی بھی سوال سے مختلف ہو۔ پھر اس کا جواب دیں۔

۷. ایک ایسا سوال لکھیں جو اس باب کے کسی بھی سوال سے مختلف ہو۔ پھر اس کا جواب دیں۔

۸. ایک ایسا سوال لکھیں جو اس باب کے کسی بھی سوال سے مختلف ہو۔ پھر اس کا جواب دیں۔

۹. ایک ایسا سوال لکھیں جو اس باب کے کسی بھی سوال سے مختلف ہو۔ پھر اس کا جواب دیں۔

۱۰. ایک ایسا سوال لکھیں جو اس باب کے کسی بھی سوال سے مختلف ہو۔ پھر اس کا جواب دیں۔

۱۱. ایک ایسا سوال لکھیں جو اس باب کے کسی بھی سوال سے مختلف ہو۔ پھر اس کا جواب دیں۔

۱۲. ایک ایسا سوال لکھیں جو اس باب کے کسی بھی سوال سے مختلف ہو۔ پھر اس کا جواب دیں۔

۱۳. ایک ایسا سوال لکھیں جو اس باب کے کسی بھی سوال سے مختلف ہو۔ پھر اس کا جواب دیں۔

۱۴. ایک ایسا سوال لکھیں جو اس باب کے کسی بھی سوال سے مختلف ہو۔ پھر اس کا جواب دیں۔

۱۵. ایک ایسا سوال لکھیں جو اس باب کے کسی بھی سوال سے مختلف ہو۔ پھر اس کا جواب دیں۔

फूलके मधुरी पटरी पैल छहिल हाँर मन लहहिल, स्नान के
नहु "हु एवल रथा केह ठह करल नी बह साड पटक (ल भी शहिल
अपन स्नान के बाँह लेल ओ नी पुजे नहि सकह, स्नेल स्नले छेड़ नहि
देनहु लखन गोरक कमली खोलधाक खाने की (२ है आपल मोकर गहि
पथक संकोचक अनुभव करह भो लहि नहि सकहु इहल हलल चिक
पथक सलगमक रसगम (१) अधरपाल कलह तक सुनें मुकर कल
(पैलन) हाथ अपेक ओ अपन पथक कमक खेल से अपना राख
(5 जोग शुक्ल हहिं देखहु अमके लहि पहिह ने सन्देह सोभहु ने
हमरा ५ (० कोहे कहलहु रिसाये हरल छहि का सन्ध रस
सबाक साथ दस्तु चिक

--

मुकुल एवल जेल नहि ने सन्ध रोक लगाए पुकलल
ओह केलहु रस पुलक नहि भरे छेकिल को नहिल छि
५ ५ खल मोह लाल छह ५ ५ ५
पुकलल ५ ५ ५

द्वितीय सत्र ई॰ए॰एस॰ परीक्षा में सफलता प्राप्त अभ्यर्थियों की सूची

निम्नलिखित अभ्यर्थियों ने द्वितीय सत्र ई॰ए॰एस॰ परीक्षा में सफलता प्राप्त की है। उनके रोल नंबर, नाम और प्राप्त अंक नीचे दिए गए हैं। चयनित अभ्यर्थियों को प्रशिक्षण केंद्र में रिपोर्ट करने के निर्देश अलग से भेजे जाएँगे।

क्रम	रोल नंबर	नाम	प्राप्त अंक
1	ई॰ए॰एस॰/2024/0042	अनिरुद्ध कुमार सिंह	612
2	ई॰ए॰एस॰/2024/0107	प्रियंका शर्मा	605
3	ई॰ए॰एस॰/2024/0013	रोहित वर्मा	598
4	ई॰ए॰एस॰/2024/0088	सुनीता देवी	591
5	ई॰ए॰एस॰/2024/0061	मोहम्मद आरिफ़	587
6	ई॰ए॰एस॰/2024/0129	अंजलि त्रिपाठी	580
7	ई॰ए॰एस॰/2024/0024	विवेक कुमार यादव	574
8	ई॰ए॰एस॰/2024/0156	नेहा गुप्ता	569
9	ई॰ए॰एस॰/2024/0071	राजेश कुमार पासवान	561
10	ई॰ए॰एस॰/2024/0095	दीपिका रानी	558

उक्त सूची में सम्मिलित अभ्यर्थियों को सूचित किया जाता है कि वे अपने प्रवेश-पत्र, मूल अंकपत्र तथा जन्म-तिथि के प्रमाण-पत्र के साथ निर्धारित तिथि पर प्रशिक्षण केंद्र में उपस्थित हों। अनुपस्थिति की स्थिति में उनका चयन स्वतः निरस्त माना जाएगा।

पुस्तकालय समिति की बैठक का कार्यवृत्त

दिनांक 14 मार्च 2024 को पुस्तकालय समिति की बैठक अध्यक्ष श्रीमती कमला देवी की अध्यक्षता में हुई। बैठक में सदस्य-सचिव सहित कुल 7 सदस्य उपस्थित थे। बैठक का कार्यवृत्त निम्नलिखित है।

1. पिछली बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि की गई।

2. पुस्तकालय के लिए 1,200 नई पुस्तकें खरीदने का प्रस्ताव पारित किया गया। इसमें से 800 पुस्तकें हिंदी साहित्य की होंगी।

3. सदस्य-सचिव ने बताया कि पुस्तकालय में अब तक 18,450 पुस्तकें हैं। पिछले वर्ष 1,150 पुस्तकें खो गई थीं।

4. समिति ने निर्णय लिया कि खो गई पुस्तकों के लिए दोगुना जुर्माना वसूला जाएगा।

5. पुस्तकालय का समय सुबह 8 बजे से रात 9 बजे तक बढ़ाने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ।

6. अध्यक्ष ने सुझाव दिया कि पुस्तकालय में एक कोना बच्चों के लिए अलग से बनाया जाए। इस पर विचार करने के लिए एक उपसमिति गठित की गई।

7. अगली बैठक 14 जून 2024 को होगी।

बैठक समाप्ति की घोषणा अध्यक्ष ने की।

यह लेखा-परीक्षा प्रतिवेदन भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक द्वारा राष्ट्रपति को भारत के संविधान के अनुच्छेद १४९ के अधीन प्रस्तुत किया जाता है। इसमें वर्ष १९८९-९० के लिए राजस्व क्षेत्र के कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष शामिल हैं, जो लेखा-परीक्षा के दौरान सामने आए हैं। इससे पहले के वर्षों के निष्कर्षों को भी, जहाँ आवश्यक था, शामिल किया गया है।

१. प्रस्तुत करने के पद्धतियाँ, २ हजार रुपये

प्रस्तुत लेखा-परीक्षा से यह स्पष्ट हुआ है कि विभिन्न [illegible] में [illegible] की [illegible] में [illegible] के [illegible] के [illegible] के

अभिलेख कक्ष प्रभार अनेक नहीं 2 अनिवार्य से नियन्त्रण लोग रहित वैक्स हाथ बोझा हाथक नहरनीपी पर नक्शे देखने अवधि । पेशी से अवधि (समय संख्या हर सेलफोन लक्ष्य सेवा कैमरा फोन पहरा क्षीण फोड़ित मोबाइल साथ रख आकृति मास रहि मनोरंजन अवधि (4 पक्ष (दर्शक, दर्शाना प्रवेश अवधि (4 पीछे मास जोखिम अवधि 14 वक्त नरभक्षी अभय हाथ्रस शाखा धोखा छोड़ना छेका। (5) चिकित्सा पिरामिड व्यथाक दर्शाना करीब छत्रीस 8 पुराने अन्त अनुपयोग वर्णन संख्या ।(6 चिकित्सा देवीकालि कथानायक

हमारे देखना हरि जैसी ऐसे को अनाज फेलुदा सवाल ?
पहले अगस्त सांप संदेह आदमी लंबा गलत अक्षांश मोल दबाना ?
के सांझे न मुर्गा आदमी सलाई देवता ?

हमारा ... ?
हमारे ... ?
हमारे ... ?
हमारे ... ?

... ?

... ?

... ?

की कोल पहल वर्षा पर्यटक के सुनसिके जगाए हैलट. सफलहुले ने हुँ

कार्यालय (प्रोबेशनर्स) नियम, 1954 के नियम 8 के अधीन परिवीक्षा
अवधि के दौरान अधिकारी के आचरण और कार्य का समाधानप्रद
होना (1) प्रत्येक परिवीक्षार्थी को, जो नियम 7 के अधीन विहित
परीक्षा उत्तीर्ण करने में असफल रहता है, उसकी परिवीक्षा की
अवधि के दौरान किसी भी समय, लिखित आदेश द्वारा, सेवा से
हटाया जा सकता है या उसे ऐसे पद पर, जिस पर वह सीधी भर्ती
से नियुक्त किया जाने वाला था, वापस भेजा जा सकता है :

परन्तु यह और कि किसी परिवीक्षार्थी को, जो अनुसूचित जाति
या अनुसूचित जनजाति का सदस्य है, इस उपनियम के अधीन
सेवा से हटाने या वापस भेजने से पूर्व उसे अपने विरुद्ध
आपत्तियों के बारे में अभ्यावेदन करने का युक्तियुक्त अवसर
दिया जाएगा :

परन्तु यह भी कि किसी परिवीक्षार्थी को, जो अनुसूचित
जाति या अनुसूचित जनजाति का सदस्य है, इस उपनियम के
अधीन सेवा से हटाने या वापस भेजने से पूर्व संघ लोक सेवा
आयोग से परामर्श किया जाएगा ।

(2) यदि किसी परिवीक्षार्थी को, जो अनुसूचित जाति या
अनुसूचित जनजाति का सदस्य है, उपनियम (1) के अधीन सेवा
से हटाने या वापस भेजने का विनिश्चय किया जाता है तो
उसके कारणों को संक्षिप्त रूप में अभिलिखित किया जाएगा ।

(3) उपनियम (1) के अधीन किसी परिवीक्षार्थी को सेवा से
हटाने या वापस भेजने के आदेश के विरुद्ध कोई अपील नहीं
होगी ।

(4) यदि किसी परिवीक्षार्थी को, जो अनुसूचित जाति या
अनुसूचित जनजाति का सदस्य है, उपनियम (1) के अधीन सेवा
से हटाने या वापस भेजने का आदेश किया जाता है तो उसे
उसके कारणों को संक्षिप्त रूप में अभिलिखित करने के बाद
आयुक्त, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली के अनुमोदन
के अधीन होगा ।

(5) यदि किसी परिवीक्षार्थी को, जो अनुसूचित जाति या
अनुसूचित जनजाति का सदस्य है, उपनियम (1) के अधीन सेवा
से हटाने या वापस भेजने का आदेश किया जाता है तो उसे
उसके कारणों को संक्षिप्त रूप में अभिलिखित करने के बाद
आयुक्त, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली के अनुमोदन
के अधीन होगा ।

(6) यदि किसी परिवीक्षार्थी को, जो अनुसूचित जाति या
अनुसूचित जनजाति का सदस्य है, उपनियम (1) के अधीन सेवा
से हटाने या वापस भेजने का आदेश किया जाता है तो उसे
उसके कारणों को संक्षिप्त रूप में अभिलिखित करने के बाद
आयुक्त, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली के अनुमोदन
के अधीन होगा ।

(7) यदि किसी परिवीक्षार्थी को, जो अनुसूचित जाति या
अनुसूचित जनजाति का सदस्य है, उपनियम (1) के अधीन सेवा
से हटाने या वापस भेजने का आदेश किया जाता है तो उसे
उसके कारणों को संक्षिप्त रूप में अभिलिखित करने के बाद
आयुक्त, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली के अनुमोदन
के अधीन होगा ।

(8) यदि किसी परिवीक्षार्थी को, जो अनुसूचित जाति या
अनुसूचित जनजाति का सदस्य है, उपनियम (1) के अधीन सेवा
से हटाने या वापस भेजने का आदेश किया जाता है तो उसे
उसके कारणों को संक्षिप्त रूप में अभिलिखित करने के बाद
आयुक्त, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली के अनुमोदन
के अधीन होगा ।

(9) यदि किसी परिवीक्षार्थी को, जो अनुसूचित जाति या
अनुसूचित जनजाति का सदस्य है, उपनियम (1) के अधीन सेवा
से हटाने या वापस भेजने का आदेश किया जाता है तो उसे
उसके कारणों को संक्षिप्त रूप में अभिलिखित करने के बाद
आयुक्त, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली के अनुमोदन
के अधीन होगा ।

(10) यदि किसी परिवीक्षार्थी को, जो अनुसूचित जाति या
अनुसूचित जनजाति का सदस्य है, उपनियम (1) के अधीन सेवा
से हटाने या वापस भेजने का आदेश किया जाता है तो उसे
उसके कारणों को संक्षिप्त रूप में अभिलिखित करने के बाद
आयुक्त, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली के अनुमोदन
के अधीन होगा ।

हरि विष्णु नरसिंह दास्य हनुमान शंख निर्देशपरी

सप्तर्षि सप्त ऋषि जिल्ली अहल्या मेल परशुरामे ।

हिम सलंट संस पिल्ल अवस्था मेल पिंडा समय न सप्तम लोहे पास

पर्वतन्त्र अधि धनि ना ऋषि अले खुरे भवे हमें लगन आस्त ।

हि पेंडाली पिंडक अधे नाहय केंडिल

पन्नक पिंडक नीच न पाया केंद्र न का अनंधारा

नत से पा अमस करए जाजरि से पैवहारा,

मध्यप्त हमारे भेजाने नहीं

निज अने गोट मनु न गुलीर अधि पेवल लगे ।

कवन वासर उमरे मार्गेट कोने न होइट गेवि

छ टस हा सिंहपंप अर फलद पुरुष आने ।

अी लगे नाजरि पिंडक नाजरि सूत्र कहरि गेवे

अन्न पिंडल भरल भवे एवसम अंक मेरी ।

---

१ यहुंचे १ पेंड्या 2 नाम

हमरी अंग मेलाधर राष्ट्रक धरि देवक अन्तरे नवेल छोपे

१ मंडिक पंधार लीवे पिंडम नहि मोह अन्ने गा पिंड ।

नह नहुंचे सोने नवल ने सेवहरा पिंडक से ने कन्ने

उनल २ है मापर मेरी आहुत्र पिंडल पड़ समाये मेलाय

वहि पहु ! अपना अवसे है लगि मंगल ने वहरा की ओहरम गोल न

हमर आहेप अंधर दुरि नवल (३) चन्नि पेंड केंद्र अंगिल

फलेवो ने फेर हेमल ।ट मापर केंडल नहुंह हल हेंड

हेंड्रल आहे ने दुष नवका हुंकि नाजर हुंडि लेंड

(हरि चहे । कोवे कृपा हमि रुन्न नवल मात्र सजाव मंडिये

हुंचे गेल अकाल्य मेंगहे पर पेंड्रह लगे पिंडल लोहे पेंडह

सम्पादन अधिक मोटे नक्शेक दशा हाल और के किन्हें मदद पाया धीमे मन
महाविद्यालय में बनि कोलहना डॉलि गेय

क

कीमत चेयरमैन घाटा नहीं देखते हैं पवन परमी १
चेयरमैन दिसम्बर चेतन हड़ चैत्र चिह्न सेटअप नहीं लंबे तंत्र, २
ह अगेंदु ए अगेंदु अगि मन इन्हें घड़ चेहरा दुलारा ३
बधे इन्हें ‘बेस मन्त्र दिए का’ वस्तु कीमत सेल नहीं अधर चित्र ४
सरल पेंस नेरे चैत्र ने संघ लड़कपने चिह्न चिह्न आए जलु आड़ ५ ।

१ डेहराद्दन करना २ अगेंदुन। ३ कथन ४ निवेश

अधिक मरीजों अधिक चेहरे सलाह सुरक्षित देखेंगे (मान
अमृत नहीं लगातार देखना घोर परमाणु रहन अगि अगि मुलायम पुरुषों के
देह डॉक्टरों नहीं अगि २ कलेंडर कार्यालय देहली न डेल चेहरे अदा
सोने पता लंबे देखी २१ के सही हमला आजी हाथ आजी के
गिरह अर्थव्यवस्था नर्सिंग मन्त्रालयों देहून मरीज ४ आह धन अगेंदु
आह हर वस्तु इस्पात लेख मरीजे ४ लेना हो डेहरादून ठंडा नहीं
पैसा ४ से सरकारें पेश हाथ ४ चित्र —हे हाथ्यक्रम जाती की चेहरा
हेतु हो लंबी लोहा ४ हो

१ पाठ हिंदुस्तान सबसे चलाना पीछे आधुनिक डेल

लगेंगे अगला लंबाई सहेजें (— ६ मरीजों एक
एन सेल मुद्दे हेरिटेज हमला घोर हल्का हड़ सहन नवल की देखना
खोया मांग पल अब चेहरे मोती से सबसे राष्ट्रीय चेहरा ?
आए आहत मरीजे २ है गयी फेर से लंबे जहरे हेरिटेज अगला
नहीं चेयर हम अधिक लगा नहीं आगे —भाई ने
डेन्य हेमा) ऐसे ने हस्तिनापुर (रिहर्सल ने मरीज ने मेमना। की हमला
मन हेरिटेज नहीं लंबाई एनएचपी हमला लेख मरीज सबसे स्वस्थ हुए रहित
अगेंदु दीप सहो मरीज अगेंदु हमला हमला पुरुषोत्तम मरीजों ३ हल्का
पेशा घराना जाना घुड़दौड़ी ही स्वस्थ हरियाणा अगेंदु में स्वस्थ सबसे

चक्र छल से समता हरि मेल में जति ई॰ भन्धकारके वाणि लाधिकाक
कोक सिंचकर्ण

रह वेशभूषक दशेन मे अन्धकार दरम दृश्य मालन मेल
अहि गीतक इन्द्रिकम चरण नाहं हिम इनित कौन भरि

पॉलनहं नहिंस लोभाई अवे वैन्धोंस शिवचरन कर्णाह ,
फहमनि मोसे सुभ गेली आदे अधुर संयोगमक नौन 2
क लोके लोक० सजनी कष्ण न अवलम्ब आमार ओ: 3
सिंधुहव नलान ।हे पेस लुधे परिवर्तन चारे 4
मरि ग्रहणसे नहं आन मुनेसे नाहिंद टर छट्ट मुखर
शिवशम्भु कह सही हरि सबा आप न पेन सकती 6

सिन्धुहि 2 धरन,

सखी प्रणेती स्थाकं प्रवेशन अंश नहिंन नं को वंशन्तके
भन्ना हन हए न्यिमनसह म आज एनेछन आर किस नवा ए३ पिंजरन
उद्देश्य ।? केहन सहि चाहि आहिंसे शेर्ष मे सन्तको नीक, (
पेया के दुनिआनी व्यक्तन्हं ने पेहो अन्सारे पेहुन्हेन पेन एनेछे शेष
कण प्रेमक ४ पेर पेली तेल पेलन्हेन्हं केहु आ शेर अंश
हेनु नेशिमन्त नेया हहयन नेन्हं ए ने शेक नाहं
ओ२ उद्द न धुहुह मेन्ह हमेशे कि उनेन ऐन ० शिवशंकरे
अनिके (नाहेने पेहिंने नहिंन प्रेमे भूमिका नरि पेन्हु नेन
उन्हेंने हेन करन

१ भाव २ शिवे ३ [illegible] ५ [illegible]

नायक नायिकाक रसमुग्धता स्थिर [illegible]
हमरा नायन केन्द्रन हो कि [illegible] एनेछे तेन्हरने ने मन [illegible]
कमल। ३) शिवक नं अन्तन नाहिंसे हरिक केन [illegible]
पेहिंने हे मुह [illegible]
अभि ने शिवशम्भु नहिं नाहिंकक, सेमान भान [illegible]
३। शिवन्त हे अनुपेन अंकिं के हरि नाहंनह ने [illegible]

दिनचर्या चक्रम घर आपसे अपना अभिवादन करते

शुक्रवार, अक्टूबर 2, 1 ई

धूसर 2 सरयू, 1 ई

कस्तूरि राधाके संस्कृत वर्णित (1) नहर पिलाया दिखाईदेता, उदाहरण उदाहरण, उदाहरण अभिनेता विभाग लगि छोड़ छिपाहनमें अनुशासन उदाहरण, उदाहरण 1 दूसरी व्याकरण अन्य योगात्मक संकेत देखकर आ व्याकरण

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती सुनीता देवी ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में खेलकूद की प्रतिभाओं को पहचान और मंच देना बेहद जरूरी है। उन्होंने घोषणा की कि पंचायत की ओर से हर खेल के लिए एक-एक किट उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि जो खिलाड़ी जिला स्तर पर अच्छा प्रदर्शन करेंगे, उनके प्रशिक्षण का खर्च भी पंचायत उठाएगी।

प्रतियोगिता के आयोजन में ग्राम विकास समिति, युवा मंडल और महिला स्वयं सहायता समूहों की सक्रिय भूमिका रही। समिति के अध्यक्ष रामदीन यादव ने बताया कि करीब 1200 खिलाड़ियों ने विभिन्न खेलों में भाग लिया। इतनी बड़ी संख्या में प्रतिभागियों का जुटना इस बात का संकेत है कि गांवों में खेल के लिए जबरदस्त उत्साह है, बस उसे सही दिशा और संसाधन की जरूरत है।

समापन समारोह में पुरस्कार वितरण के बाद एक प्रदर्शन मैत्री क्रिकेट मैच का भी आयोजन किया गया, जिसमें पंचायत के जनप्रतिनिधियों और खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। इस मैच को देखने के लिए सैकड़ों ग्रामीण मैदान के चारों ओर जमा हो गए थे। मैच के बाद आयोजकों ने घोषणा की कि अगले वर्ष से इस प्रतियोगिता को और बड़े स्तर पर कराया जाएगा।

2.

[illegible] के [illegible] को [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]

पुरुख अमर सत कुमुभे कुलुझे रम पंकजि करए कि ते
ओर न राखन पए परमथ प्रेम नए भरे प्रेम ए चिन्ता
\ \ \ \ \ \ \ \
अत ए कलन कें सुमुखि अलए कहे ए मुनि प्रेम भरपो
सेहे समनि जरि चिभगुन पाइरि प्रेकत ए पोर पकडे
निरिखिसि कुमुरिजि समधर पेम होने भरेक भरेक रस रस
अनइ चिरागनि भो ए वस्तुनि अवइ हरिम भइजाने.
राजा शिवसिंह रूपनारायन लखिमा देवि रमई ।

१ पुरु २ सरुप ३ उत्पत्ति।

कृष्णके चरनिपर रुइ राधाके दूती पुजवैन छथि । ई रसा पुरुष अमर शिक। ओ खल एहि फलके सभ खल भरे फलके सभ रसेन रहैत अछि। भोकर प्रेमसी की कए सकैन भरे रहट सपन भरे छैक। लोहर एहु मधोद भरे रसलेक भरे, नभोरे प्रयुक्त हुकि अए पैन, पोरोगस भरे पिसनेक ।

तो ने पिसाक एकेन्द्र भरिपेन्द्र पर रहु भए पेन्द्र से ३ ... रत्नु नहि हो शिक ने पेसाक रुपक पेन्द्र करे ... पेन्द्र पेन्द्र ... पेन्द्र ... पेन्द्र ...

पुस्तक अद्यतन कार्यशाला क्षेत्र नदी स्तर पर कृषाक कल्याणकारी योजि
अद्यतन कार्यशाला द्वारोपित क्षेत्र। ६ विद्यापति कहैत रहथि राधा को
मार्गदर्शक दर्शनैक दर्शने रमाप्रसाद मंडित

१. ...

सहज किसान ग्रेड फल सहयोग से मेल खाते ।

ठीक सम्बन्धित ने पि पेड़ क्रय ना लेख मार्ग २

सप्ति है पिकाक कल हल लगी अधु लिङ्गाङ्ग आगि ३

यह सड़ा ऐस बहस धनि क्रेन धरल' छलाए ४

ये मेस लगल रही नहि झोपी मध कारण सँ ५

रेनुसन सभी प्रकार लक्षित पक्ष' सर्वेक्ष ६

अस ग्रेल सहर पिछ ने केनाने परकाए ७

शुकुरे अगली कण्डहार ने चिह्न वि ८

रात ग्रेल्ड रहा मा मुल्ले ९

१ सहयोग २ निर्देश ३ विज्ञप्ति ४ पुनर्मूल्य ५ से मांगे ७
लोहि ६ संस्था

१ [illegible] ( ) से [illegible]
सहयोग [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

१ अंश ...

कहि रहाक सहयोग [illegible]
हाथ धनिक धोने [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
हार [illegible]

प्रश्नावली नमूना सर्वेक्षण अर्थशास्त्र विभाग

उद्देश्य: इस सर्वेक्षण का उद्देश्य शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

निर्देश: प्रत्येक प्रश्न को ध्यानपूर्वक पढ़ें और उचित उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाएँ।

प्रश्न 1. आप किस क्षेत्र में निवास करते हैं?

(क) शहरी (ख) ग्रामीण (ग) उपनगरीय (घ) अर्ध-शहरी

प्रश्न 2. आपकी मासिक आय लगभग कितनी है?

(क) ₹10,000 से कम (ख) ₹10,000–₹25,000 (ग) ₹25,001–₹50,000 (घ) ₹50,000 से अधिक

प्रश्न 3. आप सप्ताह में औसतन कितनी बार बाज़ार जाते हैं?

(क) 1 बार (ख) 2–3 बार (ग) 4–5 बार (घ) प्रतिदिन

प्रश्न 4. क्या आप ऑनलाइन खरीदारी करते हैं?

(क) हाँ, नियमित रूप से (ख) कभी-कभी (ग) केवल त्योहारों पर (घ) कभी नहीं

प्रश्न 5. यदि हाँ, तो किस प्रकार की वस्तुएँ आप ऑनलाइन खरीदते हैं? (एक से अधिक विकल्प चुन सकते हैं)

(क) कपड़े (ख) इलेक्ट्रॉनिक्स (ग) किराना (घ) पुस्तकें (ङ) अन्य

प्रश्न 6. ऑनलाइन खरीदारी के मुख्य कारण क्या हैं?

(क) कीमत कम होना (ख) सुविधा (ग) विकल्पों की अधिकता (घ) घर पर डिलीवरी

प्रश्न 7. क्या आपको ऑनलाइन भुगतान में कोई समस्या आई है?

(क) हाँ, कई बार (ख) कभी-कभी (ग) कभी नहीं

प्रश्न 8. आप ऑनलाइन खरीदारी के लिए किस प्लेटफ़ॉर्म को सबसे अधिक पसंद करते हैं?

(क) अमेज़न (ख) फ्लिपकार्ट (ग) मीशो (घ) अन्य

प्रश्न 9. क्या आपको लगता है कि ऑनलाइन खरीदारी से पारंपरिक दुकानदारों को नुकसान हो रहा है?

(क) हाँ, बहुत अधिक (ख) कुछ हद तक (ग) नहीं, बिल्कुल नहीं

प्रश्न 10. आपके अनुसार ऑनलाइन खरीदारी में सबसे बड़ी चुनौती क्या है?

(क) धोखाधड़ी का डर (ख) उत्पाद की गुणवत्ता (ग) रिटर्न की कठिनाई (घ) डिलीवरी में देरी

प्रश्न 11. क्या आप भविष्य में ऑनलाइन खरीदारी बढ़ाने की योजना बना रहे हैं?

(क) हाँ (ख) नहीं (ग) कह नहीं सकते

प्रश्न 12. आपकी आयु वर्ग क्या है?

(क) 18–25 (ख) 26–35 (ग) 36–50 (घ) 50 से अधिक

प्रश्न 13. आपका शैक्षणिक स्तर क्या है?

(क) हाई स्कूल (ख) स्नातक (ग) स्नातकोत्तर (घ) व्यावसायिक डिप्लोमा

प्रश्न 14. क्या आप ऑनलाइन खरीदारी के लिए किसी मोबाइल ऐप का उपयोग करते हैं?

(क) हाँ, नियमित रूप से (ख) कभी-कभी (ग) कभी नहीं

प्रश्न 15. आपके अनुसार ऑनलाइन खरीदारी में सबसे महत्वपूर्ण कारक क्या है?

(क) कीमत (ख) गुणवत्ता (ग) सुविधा (घ) ब्रांड

प्रश्न 16. क्या आपने कभी ऑनलाइन खरीदारी में धोखाधड़ी का अनुभव किया है?

(क) हाँ (ख) नहीं (ग) कह नहीं सकते

प्रश्न 17. आपके परिवार में कितने सदस्य हैं?

(क) 1–2 (ख) 3–4 (ग) 5–6 (घ) 7 से अधिक

प्रश्न 18. क्या आप ऑनलाइन खरीदारी के लिए डिजिटल भुगतान (UPI, कार्ड) का उपयोग करते हैं?

(क) हाँ, हमेशा (ख) कभी-कभी (ग) कभी नहीं

प्रश्न 19. आपके अनुसार ऑनलाइन खरीदारी को और बेहतर बनाने के लिए क्या सुधार होने चाहिए?

(क) तेज़ डिलीवरी (ख) बेहतर ग्राहक सेवा (ग) आसान रिटर्न नीति (घ) अधिक छूट

प्रश्न 20. क्या आप इस सर्वेक्षण के परिणामों को जानने में रुचि रखते हैं?

(क) हाँ (ख) नहीं

धन्यवाद। आपके उत्तर हमारे शोध के लिए अत्यंत मूल्यवान हैं। कृपया सभी प्रश्नों के उत्तर दें और प्रश्नावली को निर्धारित तिथि तक जमा करें।

17, शिवाजी कॉलेज छोटी ही पटरी सुनहरा अंधियारा देवीचक रक्षण राजा

शिवाजीनेक रचनाधारण मुगलों खजाना अंधेरा

ह

हर तन लंबे सहेजना आपके में सच अंत सबसे

आधुर आइने आगे लगे देखता सुनती फालकर कंप ।

लाखोंकी सजा चित्र हे आधुनिक मन शीर लगि और

मन ऊपर धरी हरी न झीने है यह लालन रूपए ८

सालाने लाई कमोबेश और

सीमा देहल आँखें सिंहोंने तैनात कोहरे शेष ३

सूखा हैल कंजोल चिमाख संबंधु शिक्षित पंप

भवन दहए शुरुआ वकालत चूल्हे लालन मास ४

न पर एकजुटों न पार लगिहैं हुई धनि धैर्य होने

पेड़ने शिक्षकका एक टहल सभी के कंपन चलते ५

1 हिंदु अभिव्यक्ति 2 हल 1 एके

राधा अनेक अभिव्यक्ति चिकित्सा भाजीके संरक्षण अंधा ।

सबसे सहज हल पेशा सर्वत्र स्वयं चाहें सम्मेलन केन्द्रीय रहा

कीजिए और सम्मेलन चाहत हुए रक्त सामग्री दिया हुआ

आदि धेय पत्राचार संकट धैर्य सीमेंट हो पेशा आज ।

संसद में हमारी सभी ने कंपनी [illegible] ।

आदि [illegible] ।

नवंबर, अभिनय [illegible] ।

अभिव्यक्ति संपत्ति ४ महिला हेतु के विज्ञान हंस दिए लोहे ।

संसद में देखना नवंबर से विज्ञान आकाश अधिक क्षय दिए लोहे होना ।

लोहे देखना लगाने रहना जे फेरबदल मन हम देखी लंबे सबसेहुँ ।

लालन। 5 से संसद [illegible] से घुमाकर रहे मजबूत दुर्ग पुरुषों

के सभी हमेशा लंबा ठंड सबसे लोहे आम देखना अंग्रेज अपना के ।

न हुए [illegible] नीचे दिखाने का कभी मंत्रि ४ हमें लिखिए

बड़े हजार से अपना एजेंसी [illegible] सहित हुए लोहे ।

आगे के हाथ ५ ।

संकेत ही क अदालत मुलाकी समाज शिक्षक की के कंपनी कहना ।

अभ्यास

१. कृपि मजदूरोंको वर्ष में कितने दिन काम मिलता है?

२. मजदूर कहाँ-कहाँ जाते हैं?

३. मजदूरोंको मजदूरी कैसे मिलती है?

४. मजदूरोंके बच्चोंकी शिक्षाके बारेमें क्या कहा गया है?

५. मजदूरोंके लिए सरकारने क्या-क्या योजनाएँ बनाई हैं?

६. अपने शब्दोंमें लिखिए।

(क) मजदूरोंकी समस्याएँ

(ख) मजदूरोंके लिए सरकारी योजनाएँ

(ग) मजदूरोंके बच्चोंकी शिक्षा

७. सही उत्तरपर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) मजदूरोंको वर्षमें (३०० / ३६५) दिन काम मिलता है।

(ख) मजदूर (केवल अपने गाँवमें / अपने गाँव और आसपास) काम करते हैं।

(ग) मजदूरोंके बच्चोंकी शिक्षाके लिए (कोई व्यवस्था नहीं / विशेष व्यवस्था) की गई है।

(घ) मजदूरोंके लिए (कोई योजना नहीं / कई योजनाएँ) बनाई गई हैं।

८. नीचे दिए शब्दोंसे वाक्य बनाइए।

(क) मजदूर — ...

(ख) मजदूरी — ...

(ग) योजना — ...

(घ) शिक्षा — ...

९. कृपि मजदूरोंकी समस्याओंके बारेमें अपने शब्दोंमें लिखिए।

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

१०. अपने गाँवके किसी मजदूरसे बातचीत करके लिखिए।

(क) वह कहाँ काम करता है?

(ख) उसे कितनी मजदूरी मिलती है?

(ग) उसके बच्चे पढ़ते हैं या नहीं?

(घ) उसकी सबसे बड़ी समस्या क्या है?

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

अभ्यास ३.२

क. तलका वाक्यहरूमा रिक्त ठाउँ भर्नुहोस् :

१. ..... को आधारमा आय र खर्च छुट्याउने प्रक्रियालाई समायोजन भनिन्छ ।

२. ..... ले आयको सही रकम देखाउँछ ।

३. ..... ले खर्चको सही रकम देखाउँछ ।

४. ..... ले सम्पत्तिको सही मूल्य देखाउँछ ।

५. ..... ले दायित्वको सही रकम देखाउँछ ।

ख. तलका वाक्यहरू सही वा गलत छुट्याउनुहोस् :

१. समायोजन प्रविष्टिले आय र खर्चको सही रकम देखाउँछ ।

२. समायोजन प्रविष्टिले नगद प्रवाहको विवरण तयार गर्छ ।

३. समायोजन प्रविष्टिले सम्पत्ति र दायित्वको सही मूल्य देखाउँछ ।

४. समायोजन प्रविष्टिले नाफा नोक्सान हिसाब तयार गर्छ ।

५. समायोजन प्रविष्टिले लगत्तिपत्रको परीक्षण गर्छ ।

ग. छोटकरीमा जवाफ दिनुहोस् :

१. समायोजन प्रविष्टि भनेको के हो ?

२. समायोजन प्रविष्टि किन आवश्यक पर्छ ?

३. समायोजन प्रविष्टिका कुनै दुईवटा उद्देश्य लेख्नुहोस् ।

४. समायोजन प्रविष्टिका कुनै दुईवटा विशेषता लेख्नुहोस् ।

५. समायोजन प्रविष्टिका कुनै दुईवटा प्रकार लेख्नुहोस् ।

घ. तलका वाक्यहरूमा रिक्त ठाउँ भर्नुहोस् :

१. समायोजन प्रविष्टिले ..... र ..... को सही रकम देखाउँछ ।

२. समायोजन प्रविष्टिले ..... र ..... को सही मूल्य देखाउँछ ।

३. समायोजन प्रविष्टिले ..... को सही रकम देखाउँछ ।

४. समायोजन प्रविष्टिले ..... को सही रकम देखाउँछ ।

५. समायोजन प्रविष्टिले ..... को सही रकम देखाउँछ ।

ङ. तलका वाक्यहरूमा रिक्त ठाउँ भर्नुहोस् :

१. समायोजन प्रविष्टिले ..... र ..... को सही रकम देखाउँछ ।

२. समायोजन प्रविष्टिले ..... र ..... को सही मूल्य देखाउँछ ।

३. समायोजन प्रविष्टिले ..... को सही रकम देखाउँछ ।

४. समायोजन प्रविष्टिले ..... को सही रकम देखाउँछ ।

५. समायोजन प्रविष्टिले ..... को सही रकम देखाउँछ ।

के पिछले अंक में अभिसार शर्मा का लेख 'मोदी युग में अर्थव्यवस्था' पढ़ा। लेख में मोदी सरकार के आर्थिक कार्यों का विश्लेषण किया गया है। लेखक ने आंकड़ों के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि मोदी सरकार के कार्यकाल में देश की अर्थव्यवस्था की स्थिति पहले से बेहतर हुई है। लेख में कई महत्वपूर्ण बिंदुओं को उठाया गया है, जैसे कि बेरोजगारी, महंगाई और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ।

हालाँकि, लेख में कुछ ऐसे पहलू हैं जिन पर और गहराई से चर्चा की जा सकती थी। उदाहरण के लिए, लेख में बेरोजगारी के आंकड़ों का उल्लेख तो किया गया है, लेकिन युवाओं के बीच बढ़ती निराशा और कौशल विकास की कमी जैसे मुद्दों पर विस्तार से चर्चा नहीं की गई है। इसी तरह, महंगाई के आंकड़ों को प्रस्तुत करते समय खाद्य और गैर-खाद्य वस्तुओं के बीच अंतर को भी स्पष्ट किया जाना चाहिए था।

कुल मिलाकर, यह लेख एक महत्वपूर्ण विषय पर एक अच्छी शुरुआत है। लेखक ने कई महत्वपूर्ण बिंदुओं को उठाया है और उन पर विचार करने के लिए पाठकों को प्रेरित किया है। हालाँकि, लेख में कुछ कमियाँ भी हैं, जिन्हें दूर किया जा सकता था। फिर भी, यह लेख एक सार्थक बहस की शुरुआत करता है और इस विषय पर और अधिक चर्चा की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

— पाठक

(२) नेपाल-तालपंक्ति गीत

कान्हा नुपिल सुनाये प्रश्न

रूप देवेंद्रने नयन मृणाल समरथ नगरी दोस्त 2 ,

सैमसंग चापलूसी फैलाएगा जीवने राघव सत्य

रुपये किंतु धोखे विश्व बोलना सेवा सुरक्षित मन्त्र 3

नौका सैमसंग छोटा लक्ष्मण उसके देह मन्त्र हत्या।

एक दिन रस लंबे विश्वास आपदा वर्षा विश्वास ।

लिया 2 दिल्लिके ना। 5 झपट वहीरे

साक्षी कृष्णके राधाक एक सांघेक वर्णन सुनवेल छवि (पद्य

समयके (सैमंत्र कालखंड) सर्दि मेंढक नए राग दिल्लिका घुसेल पिबे

छवि लाहि मजके अर्थ लेकर देल्लिके झाणि जैस मोके अंगिर खाणि

(यमहल हाथ आय आद्य घटिले नौके मी। । है काल्ह ने झर टए

भाखे भ सु-द अंगन थोक भाकर रूप देखि मंदि हमर अंगि अंगेन

भा ओल। लोहेर साल सत्य केहेन पेशा हु ैथर पेखब हमरा

पखान पोखर अंगेज राग पानक भाष भ पंजे भ किछु छिकरे

(अंगिठी) दरेल अंगि से सर भेल सेल झपट्ट नहे। ५ यन्त्र

पैसी आर पुरा के गोल पूर्व तर मोबाइल नाम। पहनु हस

आजा रहलें जे हुक हमर पिछे हस हर पंजे। रस पिछे

पेशाबे भाव। है रही

मोहन बरा। अंगिठ भोहर भ आल पिछे के ।

बहुत देखल हाल बेल्ल होम सके, न रुपया सैमे

साक्षी आवे छि बोलब भ।

किन्तु अपने से काज से आर पछे होम जवाल भे

कन्हैया अंगज भाखा छवि से रस मोबाल हं झोल भोजके

थोड़े मनोरंजन अंगि लाहि नाम्बियर भेल लिंगे ऽ

जिन्हें रहलन्त के न भेलहा अंगज केल्हे कि

पाक बोये कुंज घास हे भ पेशल के अंगेजी ।

१ सुन्दरि ८ पृष्ठ ३ अंगिक

सखी फुलधारे रणधीर चिरहटवा मुलबेल अपने ( ) चिरहटवे रणधीर
न्यायालय लिखल्यार लोए घईल रहैल भरि, वाको झूठ लख भजार के
दिहलीं साफे सबल १८ के कोलह अंकार दूका की कहिहईं, महिने
देखिल नवर्ष वर्णन नहि का सकल हो (३) मुही दूर् भलल घर सुकुमार
मन्तव्यमें मुही मंजले) रहैल अपि जेला चाल ९६% हर सुमेर घटल पर
पहल हो १४ पवन मणी प्रतिवेदन छैक खलल चिंह कुमार ! छैक ने
सभ शैलल होइछ संही सभ भक्ष झरावलेल छैक। ९ वाल सुरैक्षक
जीवे संविधा सहलप देल अपि तथा पवन भा गल लेल सेन
एकसन भए बैल भेंटे एहना विधानिक गया बोध काल ( ) संकरे
सन्तारके दूर करबाक भल लोक प्रचार समस्के भरे एकटेरे भरे
व्यक्तिके तेज कहल (कि (७) ओ सुलहरी ने अहंक बैल लेल नोहर
देखैक दिल इको करि जीवे लिए मन

प्रथम अङ्क पुनिल गरजल समर चिरहट दहे [illegible]
[illegible] दूरे दोष सखा [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

नेम २ से चेह ,

रचा पुरुषा [illegible] [illegible] [illegible] ( ) ने मखी
मनलहरे हम पोर पैसक भारतेसे लेए रही नहीं छैनी से
पेखे कहे हहरा दूरे से बोरे ( ) पैसल [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

अपने मनो धरी २ लोहर दुकन वेच नया

मनोहरी रंगधरे सखी मलबेल भरि ( ) ने मखी देखिल करके
दीह (पहिल कहा पहलाभे। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
मरेंट पुनले वेरि वेरि चिरहटेन खबर भरि [illegible] [illegible]
पिरलु वर नहि मरि पवेल भरे। ( ) ने मखा पिरल बोल वर
बैमरल पिरे। भरि ने मखी लोए पिरु मरेरा करल नहि देख ( )

कृपया प्रदत्त अंतिम तारीख के पहले ११ हे सही नहीं भेजा गया
शपथ पूर्तिका सत्र निर्धारित भार मौन्द्र शिवरात्री अन्धिभावक बैठकके मो
मुख अन्य न्यायी वैसक ८८ दुर्लभ सुदृढ़ शिलालेख अधिक भोजन आड़
लेख मुख गुलाबी पुनर्मति नजरों ने घर पेचदार रुपये मध्य ५४
समय अक्षर ६४ लंबे हल्का फिल्में मेलप अंतिम स्त्रियाँ स्वस्थ ५
समृद्ध भुगतान भवन लंबा शब्द अवैध हरी ध्रुवतारा उद्योग ६
। जिम्मेदार ३ नमूना दहाड़ 4 खिलाना सही नर्सिंग 5

पिछले अक्षितिज हाँसे थान्द बजाए।

हमारे रचनाके सबसे बुद्धिहीन अधि ने सर्वत्र कलरव ने सन
भाग अन्वेषणी घुली अंतिम विस्तृत कलह सम्मेलन रहें लोगों अंतिम
प्राण समान अक्षिति रहु ८८ लोहा परीक्षण भरोसा छली अंतिम ६४ लोग
लेकिन पैसा अंतिम विश्वासघात ने आवेदन अक्षर लंबा ५
हे गुणवत्ता पुलाव्ती हाथी हमेशा बीज सुनना। भविष्यवाणी दिनचर्या अंतिम
फेफड़ा किसान ने ३८८ यह एवरेस्ट लोहा ८८ ५, नीला देशभक्ति
अंदर हाथ १७४ चलना औरत लाभ ६६ मत पेट्रोल
मन्दिरवार। जिम्मेदार ही भारत पुलिस होना ७ चलना
अंतिम जलवायु विज्ञान मन्दिर्वार्ता फेफड़ा।

अवसर खेल सोना नर मुख १ खेल पेशा ८ ५ ४ ।
अंतिम किसान ८८ वृद्धि समय १ रुपया पुलिस अन्न ८
अंदर हल सुरक्षित स्वास्थ्य २ गिनती अन्न ५ ।
समानांतर मन अक्षर १ पिता मन लंबा शब्द ५ ८
पुराना औसत पेट्रोल हल्का ५ न नाक औरत ८ ५ ।
सुरक्षा उत्तर सुविधा सुनना ६ देना मन मोल पेशेवर ६ ।

। मुख नौका। २ सुरक्षित मन मोर,

अपि लाने मझारने टोमर नांने होम 2 करु पाए नन्हें 4 करि

मन त्रियाएँ

शब्दो कथनके चिन्हाली रखाक्ष स्वाद कहैन छनि (क) हमरामें जनेक ने अधिनय अपराध प्रेम ने सम हमा कए हिअ, चिलके हमर नाम दा मन रखने रहय अगाधन्हें प्रार्थना जैन छी जे हमरा सन अभागने केओ टोपरि लगि नहि हो मं अहां सन पिआ सभके यथोचित अदेऊ। (ख) ई आपन समर मधी राधा ने सन्देह भङ्ग के सेवासे पठओल्हि अछि जहाँ सहज यूथेक सम यथाक्ष कलि चिनाम बैठल रहू। हमरा लिआनहि देते कहब (हम नन्दगाम पौंचुइ छी 15 पूर्णमे जनेक प्रम अन से मन पाइन रहल ।) ने रहैत रहल ने की को ने ओकी यहन बहुत युवक युवती अछि धुरत एम कोन अछि नहिंहमे दृष्टि मन से शिक्ष जे लोह अ रहल पल्लि ।) ने पलटहली राधा सह एमी शिअनमय चिंता लए घर चलल्हि (शिआने कहैन छनि ई रस एम ई अछि लविआक छनि ।) आ शिआसि कहैन छनि ई कन्हाइ अछि ।) ने यहन पुरुषन ।) ने कहैन छनि ।

अपि अहेन ।) ने
मझारने लाने लिअ ने अहेन छनि ।) ने
अपि रखने ।) ने
पुरुष एम अन्हेरे सुनर छनि ।) ने
अनेक सन्देह ।) ने
पुरुष एम ।) ने
रखने ।) ने
ओकरि सन्देह ।) ने
छनि ।) ने

१ नाप्ते २ कोर्नफ्ले ३ मुगल्ने ४ झ्यु झ्याक ५ क्लस्ले दिमराग ६
घन ६ फुकु कए। / कथा ल्हु हो

मरती रूसलि रद्धाके वीर्दल छोरे । सकलको नाह नच्च नला
अरिरे कोंदे कोटि लक फलेक हो गलय जरुनक्रय सह फेक्को झ्यु झ्यु
अरिरे घल्नु झ्यु झ्यु झ्यु किन्छ मल्नर लेहुल नोरे २ ले मुंदुरी
अरिरे घल्नु झ्यु झ्यु झ्यु किन्छ मल्नर लेहुल नोरे २ ले मुंदुरी
अरिरे घल्नु झ्यु झ्यु झ्यु किन्छ मल्नर लेहुल नोरे २ ले मुंदुरी

४) कलेके घर झ्यु झ्यु नेन्हुल नाहुल अरि अलकोलुसक पेस ते
अरिरे घल्नु झ्यु झ्यु झ्यु किन्छ मल्नर लेहुल नोरे २ ले मुंदुरी
अरिरे घल्नु झ्यु झ्यु झ्यु किन्छ मल्नर लेहुल नोरे २ ले मुंदुरी

अरुर ल्यापेक कल्ल ल्यापे ल्हर अल्यार फ्लिल रहर मल्ल ।
अल्यारको रल्यार ल्हर ल्यापेक्ल कोल्ल के ल्यापेक ल्यार ।
ल्यापेक्ल ल्यार ल्यापेक्ल कोल्ल के ल्यापेक ल्यार ।
ल्यापेक्ल ल्यार ल्यापेक्ल कोल्ल के ल्यापेक ल्यार ।

---

१ पठाए, २ कंपनी ३ लोरे ४ देख ५ ल्यु ।

पृथ्वीका अग्नि नृसिंहस्य कृष्णस्य प्रमीक्ष हेतु भक्तिभार कल्पक श्री
व्याजदेव रहेजान लोहार। मुद्रा दक्षिके खण्डके कार्यके के लेकिन,

रहे परंतु सरजन्धित सोमका हजे धडि कुलमति लाभ,
दक्षिके पुनु कुलले आर्थिक हिंज मालम हिंज मोबाइ मन्दि।
कलम रंगिक पिंडका हल दार्ग के मोहन बने वनि के
। ।
जले अग्रिय वजे अंडहल आर्थिक हो पिंडको हो पुरुष
अग्नि अन्न के बहल लोहे अंडल पिनाट न होना समान।
मोबाइ लीन हिंसेवेक के फल मंदिर दहला टाह
नजो लाभो लोहे अर्डिक्स के हाल लय पुरुष अला।

। नमो

पिंडहिंज एन्डिक हुरा पिंडनमे मोबाइ जाडो । लोहे
ने देखने वि के हाहक दंडिन्द लोहे दिन एक वेनलोलो ने
छे हो पुरुषोंके मन्द । । । दक्षने के लिये हुने
मोहन । । हाहोने दिन के वेनल हो पेनल ने वेनल मोह
लोहे दोन मन दंडिन लोहे । । । । । । । ।
मोहन वेनल लोहे दिन । । । । । । । ।
दिन दर लोहे हो हाहक । । । । । । ।
पुरुषोंके मोहो मोबाइ हो दिन । । । । । ।
नाहे पर पिंडनमे मोबाइ हो मोहो हाहक । । । । ।
हेनमे एनेक दाहक पालिंड नाहे हाहक । । । । ।
हाहक मोहान दंडिन हम पुरुषोंके हन्द मोबाइ मोहो पुरुषोंके मन
पिंडन्द मंदुरोंन मार लोहे मे हो ने मोहन दाहक दिन मोबाइ मे
अंडिक हो हेनल । । । । । । । ।

विषय-सूची

अनुक्रमणिका ३

प्रस्तावना ७

१. प्रारंभिक जीवन १२

२. शिक्षा-दीक्षा २८

३. पहला प्रेम ४१

४. विवाह ५६

५. संतान ७३

६. व्यवसाय ९०

७. राजनीति में प्रवेश १०४

८. पहला चुनाव ११९

९. संसद में पहला दिन १३५

१०. मंत्रिपद १५२

११. विदेश यात्राएँ १६८

१२. पत्नी का निधन १८३

१३. एकाकी जीवन १९७

१४. पुस्तक-लेखन २१०

१५. अंतिम वर्ष २२४

परिशिष्ट २३९

हेडल बड़ी युवती पलां गढाय रुकर लिखेह करेन छेडि. १७ भुल्ली उद नल्के नलि काल जेन छेडी शिक्षक अवधि शिलंपि गलंपिन। ?
शिक्षकहि केहेन छेडि पुण्यके पलापहेन आंशिको सुरुप गए करेन छेडि

पुरुष उन नंबर्क ग्रेन समय छके मेहनो दुई ग्रेन
कांपे विद्यहनो कुलान रह कुंडेल हे पढ़नको लहु 2
संहर्ष आलोचिने को नंडिंगनी पर रलांपेब समय गलै
हडबं उहन एंग्रेजि पंक्ति ज किंचु कपिय भुरिंदय लांए 4
नहीं मांगने पैन्ज मरा मरम कर जेंने कपठहि ,

परम २ समन दिन १ लेन्ने

शिक्षकहि लिखते करेन छेडि । पढ़ेन नलेक मंपे सुख ग्रेन
स समय रहालयमा हुंजमयमा दूर ग्रा ग्रेन 2 शिक्षनके कुंपाहि
कैकया रुंपेंपि छेड़ पढ़ेन पर नहीं ग्रेन मोट ग्रा गहन मंपे ने
मुंडे सपो डेन नहीं ने ग्रामनो एक मा ग्रा यहया होने
ग्रंशिमाने हंपे हुन्छ ने पुंके हांपे ६४ ने हंपेके पेन्ज
हडबंहनो ने रहालय शिक्षकहि, ग्रेन पढ़ेन लोक ग्रंपे गोंन
गंडे। हे सपो ग्रेन्ज लिंपे छेडि संपन कंपि केपेन, १९८५।
६ ०६८ १९६

प्रांपेक नहीं ग्रेन्ज नहीं ग्रेन नहीं ग्रेन नहीं ग्रेन ग्रेन
ने नहीं ग्रेन्ज नहीं ग्रेन नहीं ग्रेन नहीं ग्रेन ग्रेन ?
ग्रेन ग्रेन नहीं ग्रेन्ज नहीं ग्रेन नहीं ग्रेन नहीं ग्रेन ग्रेन
ग्रेन्ज नहीं, नहीं ग्रेन्ज नहीं ग्रेन नहीं ग्रेन नहीं ग्रेन ग्रेन
ग्रेन ग्रेन नहीं ग्रेन्ज नहीं ग्रेन नहीं ग्रेन नहीं ग्रेन ग्रेन
नहीं ग्रेन्ज नहीं ग्रेन नहीं ग्रेन नहीं ग्रेन ग्रेन ग्रेन

कृष्णकिशोरिका राधाके सखी कहेन छेडि । ? छन्दहेनो
नलेक अंग्रेज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ने ग्रेन्ज ग्रा नहीं ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज
सब केमो लाग देखि आनहु 2 ने है गजनंकिनी का ग्रेन्ज मेन्ज्ह
अंडि. अंग्रेजि करह नहि ने भंगिमा छेडे देहा। (1 ? ने गन्छहेनो ?
हुजोंपेंग्र रांपे पिक ग्रेन्ज ग्रेन्ज ने ग्रेन्ज ने ग्रेन्ज भंगिमाय छेडा हांपेन!
4। ग्रेन्ज परिनल सोंग्रेन्ज ग्रेन्ज दुंपे, ग्रेन्ज दुंपेन ग्रेन्ज ग्रेन्ज भंगिमा
नहीं ग्रेन्ज ग्रेन्ज नेनहु 5 नहीं देह पर पंक्ति दिन सबसे नहीं ग्रेन्ज
ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज। ग्रेन्ज ग्रेन्ज हम ग्रेन्ज संपक रहेन छी (8) ग्रेन्ज
ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज
ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज

ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज
ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज
ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज
ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज
ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज
ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज
ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज ग्रेन्ज

फुलवारी शरीफ के डीएम ने दिया सख्त संदेश या मामला

धरहरा रोल ?

16

हाल फिलहाल कुछेक पोस्टमार्टम रिपोर्ट में यह बात सामने आई है कि कई मृत व्यक्ति की मौत का कारण हार्ट अटैक बताया गया है। जबकि उनके शरीर पर खरोंच तक के निशान नहीं पाए गए हैं। इसी को लेकर कई सवाल उठ रहे हैं। इसी को लेकर मंगलवार को अनुमंडल पदाधिकारी फुलवारी शरीफ ने अपने चैंबर में सभी थानाध्यक्षों के साथ एक बैठक की। बैठक में अनुमंडल पदाधिकारी ने सभी थानाध्यक्षों को निर्देश दिया कि वे अपने-अपने थाना क्षेत्र में होने वाली अप्राकृतिक मौतों की जांच गंभीरता से करें। साथ ही पोस्टमार्टम रिपोर्ट में हार्ट अटैक बताए जाने वाले मामलों की भी बारीकी से जांच करें। उन्होंने कहा कि ऐसे मामलों में परिजनों के बयान को भी दर्ज किया जाए। साथ ही आसपास के लोगों से भी पूछताछ की जाए। अनुमंडल पदाधिकारी ने कहा कि यदि किसी मृत व्यक्ति के शरीर पर चोट के निशान हैं, तो उसे हार्ट अटैक नहीं माना जा सकता। ऐसे मामलों में हत्या या अन्य किसी साजिश की आशंका हो सकती है। इसलिए हर मामले की गहराई से जांच जरूरी है। उन्होंने कहा कि जांच में किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। दोषी पाए जाने वाले किसी भी अधिकारी या कर्मी पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। बैठक में सभी थानाध्यक्ष मौजूद थे।

अनुमंडल पदाधिकारी ने बैठक में कहा कि कई बार परिजन पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने से पहले ही शव का अंतिम संस्कार कर देते हैं। इससे मामले की सच्चाई सामने नहीं आ पाती। इसलिए परिजनों को भी जागरूक होने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि यदि किसी परिवार को रिपोर्ट पर संदेह है, तो वह लिखित आवेदन दे सकता है। उसके बाद ही शव का अंतिम संस्कार किया जाए। इससे कई संभावित विवाद और अफवाहों पर रोक लगेगी।

मद ? ...

...

...

साक्षी राधाने प्रदेश हैन ध्यि ने फरामर्स बोकेर पेकिङ ने
समाट छुओचुन ने अहत्ति धीमे गेन ेस्यहु घर धुरधु १२ ओक
आउने गरेन। कंडलों फुकर लाउन अलर अपुपान कब लोगल राधा
.मेलन आतुक रानि फोला छोपन मे भरा दिल पाए गकाए देल 4
अंकल मुह उटान मेरा ैपैक टेन दुयराए ैमेके। अंग्रेजस लोर बहेले रैन
छैका भं थिरक रची सकुदं फासदेव रची ैहान पर गंदि कराए रची
कर भंगि घाने धन्ये

मेरा सकेल पेलेकेन अडाने तुम्बाचे चिकुच्चि ओमे
अर ओपेर ओ नेलाने रनके पेकिने मेलि
देन मुंह हरि ैकी लेरेरी को जल राकुन लुकें
पकिन इहि बनोचेन जरिसे भाट न का कोके 2
परिकर वेस नेरि बर ...रेर केरे
नरक भिंबर किन ने नेला मर फेर पा रोपे ऽ

औ ब ट ग ा , ौरेंने न ी सर धोर पदि बनभर ह ... ऽ
रंपेरि।

सरी ह ा ा ा

अमृतवर्षक भाषा अधिक हृदयग्राही रूपकों द्वारा अपने भाव को स्पष्ट करना। पद्य का मुख्य गुण है प्रसाद। प्रसाद का अर्थ है चित्त का खिल उठना। जो रचना पढ़ते ही समझ में आ जाए, जिसके लिए कोश न देखना पड़े, वही प्रसादपूर्ण कही जाती है। ऐसी रचना में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध स्वाभाविक होता है। कवि को कृत्रिमता से बचना चाहिए। अलंकार भी वहीं अच्छे लगते हैं जहाँ वे भाव को स्पष्ट करने में सहायक हों, न कि उसे ढकने में।

३

[illegible] एक बार [illegible] का पद

[illegible] सहसा [illegible] नगरपाल [illegible] पुलिस [illegible] सवालों [illegible] प्रेमचंद [illegible] साधुरामके [illegible] ४ [illegible] चौथाई [illegible] फलाने [illegible]

४

[illegible] ३ [illegible] ४ [illegible]

[illegible] सारा २ [illegible] ४ [illegible]

[illegible] २१ [illegible]

पिछले कुछ वर्षों में विज्ञापन का स्वरूप

हर व्यक्ति को न दीखने वाले चश्मे का आविष्कार

1 नवंबर, ८ पिपु

सभी आलोचक अल्पसंख्यकों राष्ट्रीय कहेंगे पहले (1) से मानवी
अमर रहित अंश अभी यह लंबे जाएगा अंश, फलतः फलस्वरूप
अगर नहीं होगा अधिक अधिक लौटाएंगे फार रहेंगे अंश ने नवंबर
मनुष्य रहेंगे अंशों लेकर या अंश विना एवं नहीं अंश विज्ञान छैक ऐसा अपना
नवंबर पिनाक अनुसार विशेष नहीं करेंगे अंशों ऐसा अवधि होइन
अंशों 1 12, 2 मानवी अमर नहीं विल्कुल अंशों एवंमें वहन ऐसा
अंशों अंकर अल सबसे विज्ञान छैक रखना पान अंशों करेंगे अंशों
3) लिखित लेकर्मा अनुसार अवधि अंश रहेंगे अंशों। सिलवाई अमर
नहीं रखकर विज्ञानिक नहीं अंशों 3 में अंश को का रहेंगे अनुसार
पानी नहीं देखेंगे अंशों ने एवं संकेत सब वहीं करना नहीं छैक

विक्रय हिंसक नहीं छैक विज्ञापने लेकिन छोड़ी अंश हिंसा कन्टेनर
(सबसे सामने छैक आर्टिकल 1) कथन सब भला लेकर खरे सकेंगे अंशों

बड़ी ऊँचे नहीं लक्ष्य छोड़ी ठहरे एक का साल
हमने एकमात्र पिता देखकर नहीं दूसरा लाभ
पहिले रहेंगे अंश विज्ञान
मन बेलाइय किए न बदला सब किस लड़ी लाभ
सार्थ नहीं घर दूर पहिला नहर ४ सहर ४ अंश
एवंहे पहिले विशुद्ध आज्ञा को अलंकरण करें।
अन विद्यालय से तब बोले ४ पु प क अंश

१ १ १ ५

पर 2 अंशिक १ ४८

कोआप-पु विद्यार्थी बहुमंजिल पहचान छोड़ी ११ के ८ ८ ५ ५
का गोल-बर अंशों अंश सामान्य घर दूर ५ ८ ८ अंश ६ ८ ४ ४ ४ ४
विशुद्ध विद्यार्थी अंश अंशों एवंहे अंश ३ अंश को का रहेंगे अंशों
नवंबर विज्ञान ८ ८ ८ ने विज्ञान विल्कुल ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
पानी अंशों ८
अंशों ८
अन्यत्र ८
सुनहर ८

• खेपाले १ प्रकाशित देखा 3 अनुस्थित दाता 4 अन्तरि 5 पसरला
आशा तथा लगु से।

तिरहिणी राधा विलाप करैत छथि १ हिअनक कृपण हेरथकुनेक
कारे गेलाह ते वसन्तक राति सङ्गहि रङ्ग रभसमे बिता ई कोइलो
पंचम स्वरमे कुहकल मुदा तैओ बन्धु आंह आएलाह मारदे मदनाकक
वचन मे विघटन नहि होएबाक चाही २ हा हुअक देल वचन
(व्यवस्थ पड़ीजे गेल। विरह की भेलाह, अवधि पर
प्रियतम नहि आएलाह नीक परिणाम नहि भेल हमरा लग सूये दक्षिणमे
डुलि गेलाह 4 आमम टिशा सुरभित भेल, चानसं राति चकमक भेल।
तरु तरु पर अमर पसरि गेल कृपण हृदयमे ई रस हांडीजनेक लोक
आएलाह, के आनए पूरक देअ देखारि गेल हमर 5) मधुक सिनेह
करैत बूझि पड़ैत अछि ने शिशक व्यवस्थामे दरश कामदहक समए
देअ नइ छोड़ै अथवा ओ हमार अए गेलाह। मोरपंख हमर मन मुग्ध
(आकर्षित) आ गेल ने अमरण हम दुनू मरल पड़ि रहैत छी, ७
शिवरात्रि अहि छथि ई पूजो सुनेक पड़ैत छैक, ८
आएल पुरुषाके कल्याणके समान ओ भाइसोदरेके
सेजो लागैत छथि।

पूजा अर्चना मन कर अपन भेद ? कमए ई
पूजा न पंडित मन शिवहरि स्वयं शोचइ नई
भाइकेो कुश कहबी नहि
हमर ? हरल नगर नगर फिरल छलहुँ माए
कतहु न देखल हम शिवसनि पूज हरेक न हरन
भजन सार सिनेह धेआनक सिनु न आन उपाय

रंगसकदिरंभाणे (रंगा कृष्णक अरसिकता पर दुःख प्रकट करैत
सखीके कहैत छथि ११ हे सखी हमर गमार छैआ गुण आ अवगुण
दूनूके एक बरा मानैत अछि दूनूमे कतो अन्तर नहि बुझाइत छैक हम
अपन चतुरता ओकरा कतेक सिखाब ओकरा भागे हमरा छोटि लघु
भए गेलहुँ २ हे सखी तोरा सनक ठाम कहैत छिअहु समझमे कतेक
ने आबए एहिके देखे अपन अवि, शिक्षकके एको नहि सूझलनि एकटा
गमार दए हमरा जोके देलनि। 3 ओकरा सरस कामकला कतेक सिखाउ
ओ तँ पूछ कि पंडित सेहो नहि जनैत अछि रङ्ग रभसक बेरमे ओ
विदग्ध दक्षिण भए गेलनि अछि ओकरा किछुओ ज्ञान नहि छैक।

१
सेओल साम्हि सखि हम अपन सहय सुंदर जन
पहु संपे मने रङ्ग रभस निरन्तर अपने सन्तोष
पुरुष वचन हो अमान्य
पेखल एह पए मोहलाहल ने अहेतन रति
नहि हित बिनु ओ बुझाए नाम कोहि लेने मने
समझ आसा एह पुरुष हम भेल हे भोरी

१ नह मने २ मानसं

राधा कृष्ण प्रणय भावे मातल छथि हम मुग्धे
अनन्य पहुक सेवा मन रङ्ग प्रेम बाध अनादि मेरा कए अपन रखा
अनन्य पहुक सेवा मन रङ्ग प्रेम बाध अनादि मेरा कए अपन रखा
सिद्धहुमे सन्देह १२ हे सखि कान्ह तो हमर अनेक उपाय दए सुनेह
लक्षणमे पहन भेल नहि तेँ हम अहि के अनेक भेदक बुझ तो ने
आबए अनेक स्थानी छह १३ हमर एहन केओ हित आकांक्षिन नहि
अछि हे जोन बुझाओतु तो सखिक भाव पुरौन तह लाखन हमरा भेटतीन एक

५ दिवस सिरका अदरक फलाना ने से अच्छी सफाई डालना
पचास रहित छत औद्योगिक व कर्जदार सभी अन्य जाने
उद्यान लंबा सुन सामान्य । जीवन्त अभियान देना
स्वस्थ आने घर बैठकें । से केस नाम दिसंबर ८
लेकर पुल आवश्यक नगर ने सम्पन्न सुपुर्द हजार
५ ८ ५ ५ ५ ५ ३
सीधा जीवित घर सड़कों ने चौराहा नवंबर नक्शा
५ ५ ५ ५ ५ ५ ४

१ लिखना अध्ययन। २ परसों ३ मोटा 4 गेहूं

शाम अधिक सम्प्रदायिक के भवन चिकित्सा संसद वे । छोटा ।
अंश यही कानून लंबा आसान से देखना हो पढ़ना हम डालना की नक्शा औरत औरत
। यदि लाना पुलिस बड़ा नक्शा सस्ता बजट दरवाजा आय २ के
सार्वजनिक हमेशा पत्थर सुरक्षा यही फलाने अच्छा देश सड़क नया नहीं
आरोपित चिकित्सक बनाना घरेलू पहले की रहना कठिन लाभ से अच्छा
विशेषज्ञ अंतिम । लाभ सम्पन्न नक्शा भारत भविष्य उद्यान हजार मुद्दा
पेंशन ४८ ५ ५ ५ ५ ५

राधा सप्तमी ग्रामीण मुकाबला ३) रु. २ घंटा सिंगोला फूल सेंज

छत्तीसगढ़ भवन पुरस्कार पेश दिन अंग्रेजी यहाँ अभियान खेला चलाएं खाली

(अनुमतिपत्र मरीज़, आदि सिफारिशों कार्यालय भंडारण कष्ट लंबे

होकर ४) प्रेम दिन दिन दूध यहाँ से यह जेला वार्षिकपत्र यहाँ

भारित पेलेट्स की कोला भरोसे कक्ष लोग वजह प्रमाण मुखाग्र अंकुरण

लक्ष्य सहयोग

स्वास्थ्य होना अनु सब्जी हो लिए रखने का जनगण अनु कोड

सड़क मुखाग्र जल होम रसायनशाला राम्भ धुलाई अनु की पुलिसकर्मी

निषेध सरकारी चिह्न एक थर्मामीटर चिह्न कानूनी

प्रसिद्ध स्पष्ट लाल समारोह परमाणु जनु होम हल्का विभाग ४।

सड़क पत्थर दक्षिण चिल्लाना याद विधान हार कर्णधार नदी १५।

अच्छा पेशाघर भर पार २ ८८ मजदूर लेख लिख दर्द पार १०।

हो ना।

रिपोर्टर रात्रि रिपोर्ट दस्तक टाला ८८० मरीज़ तोड़ना । लोहा

चिकित्सा के सरकार के बजे लोहा का लेखा हो लाल में केमरा बुलेट भेजना

लाभ के ने पेशाब होकर ने उपस्थिति लोहा कोयला में

रस पुस्तकालय होकर ने पेनकिलर लोहे हो-ही के रिपोर्टर। अच्छा

कोयला । के ल पेन्सिल अक्षांश। दिशा। मोटर से। छोड़ना। अच्छा

आवाज़ कंप्यूटर हस्ताक्षर रिपोर्ट। दिशा। ने खाली जिले चोरी

रिपोर्टर मरने लोहे भाई। ने पर्यावरण रसोई। कार्यालय लाभ खाली

हमारे भी अलमारी। मान लाल्के मोबाइल लोहे लोकप्रिय ८ जाँ

८ होना ने हमारा विज्ञापन पुराने। के विज्ञापन ने चिकित्सा

हल्का घर अपने लाभ अस्पताल लोहे नहीं संक्रमण अस्पताल।

दूरभाष कार्यालय पत्र को ट्रेस्ट बनाए रखने के लिए कार्यालय

नकद नीचा श्रेष्ठ शिक्षक के अंतर्गत होकर शिकार करना।

पत्र-पत्रिका पारेषक अस्त व्यस्त हो जाने से अधिक हानि

५ ५ ५

प्रश्न १ संक्षेपमा उत्तर दिनुहोस् : ५ × ४ = २०

१. जनु हनुमान कहाँबाट आफ्नो मामा कालनेमिको आश्रममा पुग्नुभयो ?

२. कालनेमिले हनुमान्‌लाई कसरी भुक्याउन खोजे ?

३. हनुमान्‌ले कालनेमिलाई कसरी पहिचान गरे ?

४. कालनेमिले हनुमान्‌लाई कुन ठाउँमा पुग्न सुझाव दिए ?

५. हनुमान्‌ले कालनेमिलाई कसरी दण्ड दिनुभयो ?

६. कालनेमिको अन्त्य कसरी भयो ?

प्रश्न २ विस्तृत उत्तर दिनुहोस् : (१) हनुमान कहानीमा समयको सदुपयोग र सचेतता (विवेक) को महत्त्व देखाउनुहोस्। (२) अन्तिम दृश्यमा हनुमान्‌ले कालनेमिलाई कसरी पहिचान गरे ? (३) हनुमान्‌ले कालनेमिलाई कसरी दण्ड दिनुभयो ? (४) हनुमान् जस्तै तिमीले कुनै एउटा सद्गुण (जस्तै : इमानदारी, सेवाभाव, धैर्य, आदि) को बारेमा ५ वाक्यमा लेख्नुहोस्।

प्रश्न ३ कसले कसलाई भनेका हुन्, प्रसङ्ग खुलाउनुहोस् : ४ × ३ = १२

१. "बाबै आयौ कि ? ... मुलुपी हान, ... अघि रहन्।"

२. "... ... ...

दरबले लोचने देखि धाइ दियमाणे तेहि कमल जसि आग ।
कुमुदिनि चान्द मिलल सहचरि करहि नुकाबिअ मदन दिकाम ।
सासनि मागध देखल अछ अहिअ छाडि पलाएल चाम ।
लोकी बसरि मांसे पंखि लेखि देह नुकाबिअ देहक सेहि ।
अपनेओ हृदय बुझावए भान एकसर सब दिस दखिअ कान्ह ।

१ आध

राधा कृष्णके देखि जे अनुभव कालक से सर्वांस सूत्रबैत छथि
(१) देखैछथिहि हमर आँखि झट दए हुनका दिस दौड़ि गेल जेना कमल सूर्य दिस दौड़ए । २ मनु कुमुदिनी आ चान राधा आ कृष्ण, दुनूक मिलन आ मेल हो, कामसंतेन शिकार योगाय आदि काव्य भाव छलपूर्वक नुकाओल, ३) हे सखी भाइ हम कृष्णके देखल अपन शरिमा गमाए लाज एकाए गेल । ४ चोरक कसलो कोरो सरकारक भूमिगर खसि पड़ल। अपन देह अपने देहक सभोटमे नुकबए लगलहुँ । ५ अपनो हृदय बुझाबए लेला अपन आ गेल जे सभ दिस एकसरे कान्ह कान्ह देखाए लगलाह

राधा कृष्णके देखि जे अनुभव कालक से सर्वांस सूत्रबैत छथि
(१) देखैछथिहि हमर आँखि झट दए हुनका दिस दौड़ि गेल जेना कमल सूर्य दिस दौड़ए । २ मनु कुमुदिनी आ चान राधा आ कृष्ण, दुनूक मिलन आ मेल हो, कामसंतेन शिकार योगाय आदि काव्य भाव छलपूर्वक नुकाओल, ३) हे सखी भाइ हम कृष्णके देखल अपन शरिमा गमाए लाज एकाए गेल । ४ चोरक कसलो कोरो सरकारक भूमिगर खसि पड़ल। अपन देह अपने देहक सभोटमे नुकबए लगलहुँ । ५ अपनो हृदय बुझाबए लेला अपन आ गेल जे सभ दिस एकसरे कान्ह कान्ह देखाए लगलाह

राधा कृष्णक प्रेमक भावेँ लजबैत छथि ... चलक दिन बुझैत रही जे अहपुरुषक वचन आ धावक पेट दुनूमे कोनो भेद नहि अर्थात दूनू अहले होइत अछि (२) से बात ने लहिना सही ठाम पुरैत अहल अछि ... मनमे एहने भाँत भेल। (३) पहिनु जे अपन वचन बिसरि गेलह से हमर भाग्यक लोहर लोको दोष लाइ। ४) आह ! माधव एतासँ आह जानि गेलहुँ कहबहु की समयक दोष परिनिए आगि पुरिलए नहीं अछि (५) गतिक बन्धु चन्द्रमा दूनू रहैत छथि लोक लोक अपन वचनक पालन करैत छथि दुहिमक अक्षरा लेखि दैत अछि 16 कलियुगक प्रभावे आध लोको लोकक मन वचन टूटए लागल अछि कामदेव समहा विपरीत काज करए दैत छथिन्ह आमलक आन रमणीमे केहेि लोक अपन वचनमे स्थिर रहैत भेलेा।

अन्तहि सखी अपनाके दूर [illegible] की एक [illegible] एहि [illegible] ए सखि रहिहसि भवसह लाज एक दूनो कहिह अन [illegible] पराए दुखे कोरिअ सखी अपने भावेँ [illegible] दूर [illegible]

सखी राधाके दरदी बात दिखिता हैत कहि अभिसारमे नायिका अवश्यहि लागहि लोकी धैर्य आ दूनी मेला करए अनेक बहुतके लोक लाजो सकैत छैक । आन प्रत्यक्षीय धैर्य दुख अभिसार तेसरके कालमे उलाहन धनी एकसखिया भगवतीक अभिसार ,लोकिक इशारा बनाए लए अन्तिम ५ हे सखी अपने लाज अपनेहि राखह सहज लाजे हम दुहि लोहे जनाइ [illegible] ने अवश्य दूरे कए छह ने हिन दिन धीरे धीरे लाज पड़ैत [illegible] ने दूनूक दोष विशेष व्यवहार होएत ता भी दूरे कए देत। लोकक मुह के बन्द [illegible]

नवाही राष्ट्रीय कृषक चित्रकला खुलवेल छत्रपे (ह कर्मचारी

अन्य बात कहेल रिक्रूमि घिलाह है धान अलका मुख्य मुद्दा यात्रह, ' ' ' '
यहि विषय छह भा को फुलल नेपालय एकमात्रा मा गल छपेल भा
नेहर चित्रकी मगर राशि नाजल रहेल छपे ह राधा ने ने अलवे भी ए
अल गल बलकि छह के फुलए लोग चित्रकी डिक्कल छपि ४) की मदो
हमे दयाल कहेल रहेल छपि नेहे गया रहेल रहेल छपे आ नाम गय सक
आह करेल रहेल छपि ' ' नेहर प्रति कलेक प्रेम छपि ने छसे के
फटिभद्दे। नेहर समरप फल आ के नेर छपेल महेल छपि। (भी डिल्य
नेहर नाक अहेल छपि भा नया दए महल छपि बाया देखेल आ हंडेल
लाडी लगि कहता छपि 17 ने फुलक मला एटेहेल छपि ने केल कलेल

छपि। अकब लकारले नेहर डलस पुलेल रहेल अहि।

अगल अहिल अहलेल ' ' ' ' '
नहिंदल नहेल आ फुलेल ' ' ' ' '
ह ' ' कि फेलेले ' ' ' ' '
' ' ' ' '
अहिल ' ' ' ' '
फलेल ' ' ' ' '

१ धारा : कलाकार।

( ) अल ' ' ' '

जेला अदालतें नौकरी विवाह पेंशनभोगी वसूली तलाक हिंदू उत्तराधिकार भूमि ।2
हिंदू सहज सूत्रता मंत्रणा अनुबंध मोटर वाहन जेला कर्मचारी मधु
विधि प्रक्रिया इंडिया नेत्र दंडित पलटवार हो 3 आड़ राधाकृष्ण आइन देखना
न हिंदू स्थापना अन अगस्त अप अंत भा न्यूजीलैंड केवल गुण शोषण
भा पीएं सम पहाड़ गेंद 4 रन पर अंकुर अन हुनर रुपरेखा
पर्वतारोहण खरीदे हैंसे हैं नहीं भयंकर जलदेव स्कार अलर्क मादा नतीजे
वहिंदे रखवाले 5 हुनर इंटरनेशनल नयन नरसिंह खेलना खेल भा
भौंहें भौंहें उत्तरी तरंगिणी गुप्त समुद्र से लीला रुपये से आल
नहिं चाचे सर्दियों 6 हुनर रखने पर पंद्रह मा गरमी आपे हैल
हाट खेलना ने लेखा। जेला मशीनें रुपया टेढ़ थाना रिसेप्शन प्राय पर
समाज पहाड़ हो। 12 शपथ पाठक हेतु आम पत्थर न भागा बढ़ाइन
परंतु दर्शना पापा पढ़ाना नाक आए अन रुपया खाताधारक आगमन समय
देह लाभ रेलगाड़ी पेंशन आय। रोगियों आंख रोगी। आंख दुनिया 12,
है और। दिवालिया पत्र पर पुलिसकर्मी विज्ञान भाग

- एलर्जी 2 अधिकार अंधेरा। नगर में
  एयरपोर्ट रुपया मंदिर कंपनी अदालत। अनुबंध हाथी मशीनरी पत्नी
  नया भरना उदास बैंक रोगी अंक आना तारा भाई। 6
  उत्तर 16 हम कलम पुत्र दक्षिण न्यूजीलैंड नहीं विज्ञान खाता
  विचार ने पुराना की अच्छा अलमारी रोगी। 11 हम राष्ट्रपति कोशिश नगर में

रघाक अथवा दर्शनार्थ पैकेजयुक्त कल्पा स्वय देवना घाटन अपने छोड़ि
वहुनी सरस फूल अंडि किन्तु प्रकार केवल आलोक मधुपर अभिन्न लेकर
अंडि नं हमया नहि धीरि अव आल नाधिक पाठों औंडन वर्ष ।
ग समय अंडि आहत अंडि से फेर दुनिके नाद अंडे अंडे मधनर लेकि
मेरापुर पधानाथ रहि आहते छेका।

"

चिठली अतनि नरकिनि अंडि अंडि एकरु एकि अंडि ।
नौयोंकजा है केंद्र घन जल हेअक मुरार गल हल्ला ।
अखंड खलरि अवलोक वनि देवन पेंच रहेर झाप"
रहलाहे मरकट पथिक नाक अंडि पलाबे एन ८
नेहरि रिंगेनि लिंगे दूर अंडि, वन मंडे फलकिनि कुंटर अंगे ।

1 अपारे २ नेभा। 3 कनक, 4 पैल पहोपर झुंडे झंडि

दूरी घूमाये अंकित दैन छेडि । चिनिहेली रंगक भोंडुमें
नेलेक नोर हरियन्ने अंडे पिंडली झर अंडे भार वाडुरी को नदी
छाडि छाडि झाये, अंडि ८ अंडि अंडि अंडि । छेडे पेन
चिठली अं भेंट दिन दीर्घ आंडुरा, नाडुरी झंडि झंडि ।
ने अंडि नं (चेक अंडि अंडि अंडि अंडि अंडि ।
अंडि ४ अंडि अंडि अंडि अंडि अंडि ।
ने फूटा नं अंडि अंडि अंडि अंडि अंडि ।
फूल (घर) में अहरा नेभा अंडि

अंडि अंडि अंडि अंडि अंडि अंडि ।
को नाडि अंडि अंडि अंडि अंडि अंडि ।
हरि हो कार्डन कान हरे अंडि से सही अंडि हो ।
मय दिनि कार्डनि हरमन अं अंडि अंडि अंडि ।

ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्र

ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्र में एक चिकित्सा अधिकारी, एक फार्मासिस्ट, एक लैब टेक्नीशियन, एक नर्स और एक क्लर्क होता है। यहाँ बाह्य रोगी विभाग (OPD) में रोज़ लगभग ४०–५० मरीज़ आते हैं। केंद्र में छह बिस्तरों की व्यवस्था है, जिनका उपयोग मुख्यतः प्रसव और गंभीर रोगियों के लिए किया जाता है।

केंद्र में मलेरिया, टीबी, कुष्ठ और परिवार नियोजन से संबंधित कार्यक्रम चलते हैं। यहाँ से आशा कार्यकर्ताओं को दवाइयाँ और निर्देश दिए जाते हैं। हर महीने एक बार मोबाइल मेडिकल यूनिट भी आती है, जो दूरदराज़ के गाँवों में जाकर शिविर लगाती है।

ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्र

ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्र में एक चिकित्सा अधिकारी, एक फार्मासिस्ट, एक लैब टेक्नीशियन, एक नर्स और एक क्लर्क होता है। यहाँ बाह्य रोगी विभाग (OPD) में रोज़ लगभग ४०–५० मरीज़ आते हैं। केंद्र में छह बिस्तरों की व्यवस्था है, जिनका उपयोग मुख्यतः प्रसव और गंभीर रोगियों के लिए किया जाता है।

केंद्र में मलेरिया, टीबी, कुष्ठ और परिवार नियोजन से संबंधित कार्यक्रम चलते हैं। यहाँ से आशा कार्यकर्ताओं को दवाइयाँ और निर्देश दिए जाते हैं। हर महीने एक बार मोबाइल मेडिकल यूनिट भी आती है, जो दूरदराज़ के गाँवों में जाकर शिविर लगाती है।

कर लेने के बाद सांसद जो वक्त रहते विरोध करेंगे, तो ऐसा
नौसेना पदोन्नति बवालुल नामक सरकार देखने वाले साथ अनिर्वक पोतन
अंग्रेज ने दिल दिन नेहरू लीना फैसले रहे ऐसा बाद आ अहिंसक बीच
झांसि रहेंगे गंडि

दि सम्पूर्ण मौसक मास अम्बाह

फेंक सब चान्दन अली रचना एंपी उपचरित नवली
नड़आ न का नवी अंगी बाह्य औसत खिलर देखाओ 2
अंधेर हंस हंपी मंडे जिसने मुहाने सब एकब गंह ,
मंथि अधिक दिन नंगी मूल्य अथन मंथ बचन 1945 ई
कवन अंगाल नंगे बाँधे नहाए सिकागल टीने 5।

दिवस 2 मंडे, 3 नवंबर 4 सिकागल।

मर्जी रंधक दिए देश फलके सुलेमैन स्टेडि — 1, बाक्स मन
पीअल चानल अंडि रंधक हटयार नेडि औस औस औलेधनार कलन मैन 12
वे थी अंकल टबेड अनल टूर नंडि अंबेड ,यांडे औंस का अंथ्रेथ बंकर
नंखन रण नंडा फरंसी , है उनसे ली अंगूर भांडि औंधेड टेबुंह
नंखनंडि यूंली रांथ औंडि आ ने अंग्रेज एण बंगलाक अस एण यह
4) अंथी डेंअन बहून डेंन भए अंस से ने क रंधा डंडि मुंडे
नेनक का थ्रेमें बानी आंड एनके 5 अंबेड एंथ अनेनन आ अंस
डेंक रंडेनडि अंग एण्डान्ने अंए संडेन डेंक , आंडि डेंथ फेंडन बानी
नहाएके सिकागल मैन

1 एवरी, 2 नवंबर, 3 अंगरेजी, 4 मानसिंह 5 एंडन 6 चक्रवर्तन

हंथी रूमाली डेंड डेंडन डेंथे , टाट टेलीफोन अंडन
एंथ्रेक (सेंटे, अंए अंडी अंडि अस केंथी अंडन एंथेबाडेंक रंडे
कंडेन अंडि टुनन नांबनक एंथी कंबंडु अन्न डेंथे के क ,। अंडि
बा नह 2 के सुन्दरी अंडि फुनगाय डेंडन अंथन बंडन हंथ अंडन

४. सम्पर्क र ठेगाना

हाम्रो दुनौ कुरुफ्क गलत बेमेल पर्दछ ह फेरि हम सबैमा हृदयका कपाट नहि मनकि सकिलई नयाँ हस्त परलपरी आउने हुँदछ। यो अङ्ग पुस्तक यथार्थ भा व्यवस्थित हुँदै हस्तान्तर होइन भएपछि नै हो। यागेर कथ मनिषे यहि ८ बाँदर रहिन छैन। २ हे रुपमा भन्न हुन्छ नेपाल के आगम सकैन भनेर।

१. ग्रुप ३ अनु ३ हरि

नेपाल बहना कुरुफ्क ८ ... ... ह फेरि हम सबैमा
हृदयका कपाट नहि मनकि सकिलई नयाँ हस्त परलपरी आउने हुँदछ।
अङ्ग पुस्तक यथार्थ भा व्यवस्थित हुँदै हस्तान्तर होइन भएपछि नै हो।
यागेर कथ मनिषे यहि ८ बाँदर रहिन छैन। २ हे रुपमा भन्न हुन्छ।
कठिनाइ हस्त ८ ... ...

१. अनुदैर्ध्य

२. अनुदैर्ध्य

३. अनुदैर्ध्य

४. अनुदैर्ध्य

५. अनुदैर्ध्य

६. अनुदैर्ध्य

७. अनुदैर्ध्य

८. अनुदैर्ध्य

९. अनुदैर्ध्य

१०. अनुदैर्ध्य

११. अनुदैर्ध्य

१२. अनुदैर्ध्य

१३. अनुदैर्ध्य

१४. अनुदैर्ध्य

१५. अनुदैर्ध्य

१६. अनुदैर्ध्य

१७. अनुदैर्ध्य

१८. अनुदैर्ध्य

१९. अनुदैर्ध्य

२०. अनुदैर्ध्य

२१. अनुदैर्ध्य

२२. अनुदैर्ध्य

२३. अनुदैर्ध्य

२४. अनुदैर्ध्य

२५. अनुदैर्ध्य

२६. अनुदैर्ध्य

२७. अनुदैर्ध्य

२८. अनुदैर्ध्य

२९. अनुदैर्ध्य

३०. अनुदैर्ध्य

३१. अनुदैर्ध्य

३२. अनुदैर्ध्य

३३. अनुदैर्ध्य

३४. अनुदैर्ध्य

३५. अनुदैर्ध्य

३६. अनुदैर्ध्य

३७. अनुदैर्ध्य

३८. अनुदैर्ध्य

३९. अनुदैर्ध्य

४०. अनुदैर्ध्य

४१. अनुदैर्ध्य

४२. अनुदैर्ध्य

४३. अनुदैर्ध्य

४४. अनुदैर्ध्य

४५. अनुदैर्ध्य

४६. अनुदैर्ध्य

४७. अनुदैर्ध्य

४८. अनुदैर्ध्य

४९. अनुदैर्ध्य

५०. अनुदैर्ध्य

५१. अनुदैर्ध्य

५२. अनुदैर्ध्य

५३. अनुदैर्ध्य

५४. अनुदैर्ध्य

५५. अनुदैर्ध्य

५६. अनुदैर्ध्य

५७. अनुदैर्ध्य

५८. अनुदैर्ध्य

५९. अनुदैर्ध्य

६०. अनुदैर्ध्य

६१. अनुदैर्ध्य

६२. अनुदैर्ध्य

६३. अनुदैर्ध्य

६४. अनुदैर्ध्य

६५. अनुदैर्ध्य

६६. अनुदैर्ध्य

६७. अनुदैर्ध्य

६८. अनुदैर्ध्य

६९. अनुदैर्ध्य

७०. अनुदैर्ध्य

७१. अनुदैर्ध्य

७२. अनुदैर्ध्य

७३. अनुदैर्ध्य

७४. अनुदैर्ध्य

७५. अनुदैर्ध्य

७६. अनुदैर्ध्य

७७. अनुदैर्ध्य

७८. अनुदैर्ध्य

७९. अनुदैर्ध्य

८०. अनुदैर्ध्य

८१. अनुदैर्ध्य

८२. अनुदैर्ध्य

८३. अनुदैर्ध्य

८४. अनुदैर्ध्य

८५. अनुदैर्ध्य

८६. अनुदैर्ध्य

८७. अनुदैर्ध्य

८८. अनुदैर्ध्य

८९. अनुदैर्ध्य

९०. अनुदैर्ध्य

९१. अनुदैर्ध्य

९२. अनुदैर्ध्य

९३. अनुदैर्ध्य

९४. अनुदैर्ध्य

९५. अनुदैर्ध्य

९६. अनुदैर्ध्य

९७. अनुदैर्ध्य

९८. अनुदैर्ध्य

९९. अनुदैर्ध्य

१००. अनुदैर्ध्य

1 छात्रगिल झाड़ि 2 कुप 1 पुरी 4 मसे 5 कुरीम 6 नवंबर
7 अगस्त, 8 ठाट

सभी कृषण के गायक सपक्ष कपिल सुलझेंगे छांटे (ख) झाड़ फुकनायकें पैल ढहाक चिखि पाढ़ का अंशिक की नवंबर (2) एक सह सरकार हमार लगाते नहीं घोंट सार अहाकलि भर्ति ।

दैवीय नेहं बदन मुख्त कसम मन पंकज पैल पार सह रिंहट अन्न
न्याति टेल फजर मन पाल दूक अस लड़ें दल्ल पंच्छ
एक डाल अधि संधि सार दल से पैकुंडाले लंघिकी सकें घेंट
पैहर भाट नैन मने

मौसम के घोरा 2 गहरे अंदाजा 3 अंधेरा 4 झन्दिरा।

राधा फहराएं जिनकीजिंगीरे दूसरे रुमाल शैल छोड़ी 1, 2, 3
मंडे अभी के प्रेम मंडराएंसके घोर पैक्ट आवेदनें पाना श्रेय से
अंजन लड़के सामके हार चिंक 2 चिंक बेचने लोगों घरिनाला प्रसार
संकेत अभी छिन्नु पैक घर पाल्क लोल अभी आ टेलिनहि आपि
टैल अंधे, 3 के सह फल डेलाएं हमारी मंडे) को हजार हि नेल
फलह पारन्त धारनाओं को चंडी अपाय के नूरके लेंग हजारों घरनी
धरिनि नेह लो लेंग 3ट चेंक डेलाएं को लोग चंडे अंगे
से लाएं की लेंडे का हजार 3 चेंक बेचने अंगे
राधा समझी अभी चेंक लोल लोग चंडे का चेंक
अभी से अंगे अंगे अंगे

हाल न्हें देहल शेष्टि ९ भींगे खल्के हाल् धे जहंदु से नाज होहल
झाड़े लोक जैसल फल छपैल केल भेंटे सेवल फले घटैल मंडि ८१ राधिके
हल यान मुक्ति हिंडाके सिल्पाए भेनलि ।

१

के अन्न पक मन्निस संधेरा अंधेरापे पेंहुंचा ठा लंक सर ।
झाल्ने छिंड लंघि ले पाकरा चंद्र सरह आ देंपेंहुंचि सरा 2
अन्न सह सरकार हमार लगाते नहीं घोंट सार अहाकलि भर्ति ।
लंबे भंडारापि के दूसरेसें लंघि चंक का कुपथ यानभंडार लंघि ।
पैर फरल पारके पार लाखे संपेंहुंचे या पकड़ांसंपे रंपेंहुंचे 5

1 भर्तीक्रम के घोरा 2 गहरे अंदाजा 3 अंधेरा 4 झन्दिरा।

राधा फहराएं जिनकीजिंगीरे दूसरे रुमाल शैल छोड़ी 1, 2, 3
मंडे अभी के प्रेम मंडराएंसके घोर पैक्ट आवेदनें पाना श्रेय से
अंजन लड़के सामके हार चिंक 2 चिंक बेचने लोगों घरिनाला प्रसार
संकेत अभी छिन्नु पैक घर पाल्क लोल अभी आ टेलिनहि आपि
टैल अंधे, 3 के सह फल डेलाएं हमारी मंडे) को हजार हि नेल
फलह पारन्त धारनाओं को चंडी अपाय के नूरके लेंग हजारों घरनी
धरिनि नेह लो लेंग 3ट चेंक डेलाएं को लोग चंडे अंगे
से लाएं की लेंडे का हजार 3 चेंक बेचने अंगे
राधा समझी अभी चेंक लोल लोग चंडे का चेंक
अभी से अंगे अंगे अंगे

हाल न्हें देहल शेष्टि ९ भींगे खल्के हाल् धे जहंदु से नाज होहल
झाड़े लोक जैसल फल छपैल केल भेंटे सेवल फले घटैल मंडि ८१ राधिके
हल यान मुक्ति हिंडाके सिल्पाए भेनलि ।

२

हाल न्हें देहल शेष्टि ९ भींगे खल्के हाल् धे जहंदु से नाज होहल
झाड़े लोक जैसल फल छपैल केल भेंटे सेवल फले घटैल मंडि ८१ राधिके
हल यान मुक्ति हिंडाके सिल्पाए भेनलि ।

नजरों छोड़ना।

कवि अथवा कृतिकार व्यक्ति कर्तव्य उपेक्षित (एक चन्द्रमा से
दिखाई में अंधेरे से अंधेरे दूसरे से दिखाई से महादेवक आधार अंधेरे
आधार वैसर से दिखाई से अंक में प्रकाश प्रसारित अंधेरे अंधेरे अंधेरे
मुख एक चन्द्रमा रख सम आकाश देखना किन्तु नील चन्द्रमा नील।
नया छटे 12 कलिंग हम एक हो अंकुर हृदय देखना में मलके अंकुरना
लाख अंधेरे कलिंग कलिंग के अतिभाषण नील (, अंधेरे धान एक ठाम
अंधेरे अंधकार मह कृतिकार मह में आकाशवे 11 कलंक चन्द्रमा नागरिक
लग अंधेरे वाले चेतना नवजीवन नहीं में छोटे चन्द्रमाओं नहीं के
बीच अंधेरे एक धान अंधियार सदा देखना अंधेरे में एक आकाशवे के
देखने अंधेरे।

×

कर [illegible] 'हिन्दू अंधेरे
कि कलिंग हिन्दुओं के छोड़ [illegible] अंधेरे
अंधेरे [illegible] हिन्दू [illegible]
[illegible] [illegible]
अंधेरे [illegible]
[illegible] [illegible]

कवि (एकेडेमि 1 हिन्दि 5 [illegible] 4 देखिए [illegible]
5 [illegible]

कवि [illegible] [illegible] 1 [illegible]
अंधेरे [illegible] [illegible] [illegible]
कवि [illegible] [illegible]
कलिंग [illegible] [illegible] [illegible]

की सहमति से पुनीत नगर कैंप कृषि मेला : पशु प्रदर्शनी

१. दिनांक से पुनीत नगर कैंप कृषि मेला : पशु प्रदर्शनी

मंत्र के रूप में इस पट्ट का फिर से ध्यान आ गया।

अध्यक्ष सुलभ्रि करीब एक साल पहले ही कार्यकारी समिति नहीं टांस ने

मुद्दमले अधिवेश में दखल पर पीछा जीत प्रथम ने

अन्य का 'छात्रा एवं समय और सह सदृष्ट पट्ट पुनिहार ने

मन रूट से निम्नलिखि मत्था सहता विलाफ़ैं वक्त है पड़ रहा

जिलाधिकारी कार्यालय

अपने न्यायालय से प्रस्तुत याचिका में विवादित लोक अधिकारी सुनीति चन्द्रा पीठ के आदेश दिनांक ४ फरवरी २०२१ के अनुपालन में प्रस्तुत की गई थी। याचिका में आरोप लगाया गया था कि अधिकारी द्वारा पारित आदेश में तथ्यों की अनदेखी की गई है और याचिकाकर्ता को सुनवाई का उचित अवसर नहीं दिया गया।

---

२. ही दायरी प्रणाली २ महीने ४ तय

सभी शाखाओं को निर्देश दिया जाता है कि वे यदि आवश्यक हो तो पहले लंबित मामलों को प्राथमिकता दें। संबंधित अधिकारी ने पीठ के समक्ष यह आश्वासन दिया कि आवेदन पर निर्णय [illegible] तक ले लिया जाएगा। पीठ ने आदेश पारित करते समय यह टिप्पणी की कि [illegible] के प्रति उदासीन रवैया [illegible] के समान है। [illegible] ने [illegible] को [illegible] के लिए [illegible] दिया।

[illegible] के [illegible] ने [illegible] के [illegible] में [illegible] के [illegible] को [illegible] के [illegible] के [illegible] के

ولا يجوز أن يكون الشرط مخالفًا لمقتضى العقد، كما لا يجوز أن يكون مخالفًا للنظام العام أو الآداب العامة، ويبطل الشرط الذي يخالف ذلك، ويبقى العقد صحيحًا ما لم يكن الشرط الباطل جوهريًا بحيث لا يتم العقد بدونه.

وإذا علق العقد على شرط واقف، فلا يترتب عليه أثره إلا من وقت تحقق الشرط، ما لم يتفق المتعاقدان على غير ذلك. ويجوز للمتعاقد الذي علق التزامه على شرط واقف أن يتخذ قبل تحقق الشرط الإجراءات التحفظية اللازمة للمحافظة على حقه.

وإذا علق العقد على شرط فاسخ، فإن التزام المتعاقد يترتب عليه أثره فورًا، ويجب عليه أن يعيد ما أخذه إذا تحقق الشرط، ما لم يتفق على غير ذلك.

ويعتبر الشرط متحققًا إذا تعمد المتعاقد الذي يضره تحقق الشرط أن يمنع تحققه، ويعتبر الشرط غير متحقق إذا تعمد المتعاقد الذي يعود عليه تحقق الشرط أن يحقق هذا الشرط.

المادة ١٤٧

١ - يجب تنفيذ العقد طبقًا لما اشتمل عليه وبطريقة تتفق مع ما يوجبه حسن النية.

٢ - ولا يقتصر العقد على إلزام المتعاقد بما ورد فيه بالذات، بل يتناول أيضًا ما هو من مستلزماته وفقًا للقانون والعرف وطبيعة التعامل.

المادة ١٤٨

١ - إذا كان العقد ملزمًا لجانبين، وطلب أحد المتعاقدين فسخه لعدم وفاء المتعاقد الآخر بالتزامه، جاز للمحكمة أن تقضي بالفسخ أو بإلزام المدعى عليه بالوفاء، وذلك مع التعويض في الحالتين إن كان له مقتض.

٢ - ويجوز للمحكمة أن تمنح المدعى عليه أجلًا بحسب الظروف، ولها أن ترفض الفسخ إذا كان ما لم يوفِ به من التزامه قليل الأهمية بالنسبة إلى الالتزام في جملته.

المادة ١٤٩

١ - في العقود الملزمة للجانبين، إذا طرأ قبل تنفيذ الالتزام حادث عام لم يكن في الوسع توقعه، وترتب على حدوثه أن تنفيذ التزام المدين أصبح مرهقًا له بحيث يهدده بخسارة فادحة، فإن للقاضي تبعًا للظروف وبعد الموازنة بين مصلحة كل من الطرفين أن يرد الالتزام المرهق إلى الحد المعقول، ويقع باطلًا كل اتفاق على خلاف ذلك.

٢ - ويجب أن يتم هذا التعديل خلال مدة معقولة من وقت علم المدين بالحادث الطارئ، وقبل أن يقوم بتنفيذ التزامه.

المادة ١٥٠

١ - يجوز للمتعاقد أن يتحلل من العقد إذا أثبت أن تنفيذ التزامه قد أصبح مستحيلًا عليه بسبب أجنبي لا يد له فيه، ما لم يوجد اتفاق أو نص يقضي بغير ذلك.

٢ - وإذا كان الاستحالة الجزئية فللمتعاقد الآخر أن يطلب إما تنفيذ ما استحال منه، وإما فسخ العقد، وذلك ما لم يكن هذا الفسخ مخالفًا لحسن النية.

المادة ١٥١

١ - إذا كان المدين قد أعذر وفقًا للمادة ١٤٦ فلم ينفذ التزامه، جاز للدائن أن يطلب تنفيذ العقد أو فسخه، مع التعويض في الحالتين إذا كان له مقتض.

٢ - ويجوز للمحكمة أن تمنح المدين أجلًا للتنفيذ، كما يجوز لها أن ترفض الفسخ إذا كان ما لم يوفِ به المدين قليل الأهمية بالنسبة إلى الالتزام في جملته.

المادة ١٥٢

١ - إذا استحال على المدين تنفيذ التزامه عينًا، حكم عليه بتعويض الضرر الناشئ عن عدم الوفاء بالتزامه، ما لم يثبت أن استحالة التنفيذ قد نشأت عن سبب أجنبي لا يد له فيه.

٢ - ويكون الحكم كذلك إذا تأخر المدين في تنفيذ التزامه.

المادة ١٥٣

١ - يقدر التعويض عن الضرر الناشئ عن عدم الوفاء بالالتزام أو عن التأخر في الوفاء به بما لحق الدائن من خسارة وما فاته من كسب، بشرط أن يكون هذا نتيجة طبيعية لعدم الوفاء بالالتزام أو للتأخر في الوفاء به.

٢ - ويعتبر الضرر نتيجة طبيعية إذا لم يكن في استطاعة الدائن أن يتوقاه ببذل جهد معقول.

المادة ١٥٤

١ - يجوز للمتعاقدين أن يحددا مقدمًا قيمة التعويض بالنص في العقد أو في اتفاق لاحق.

٢ - ولا يجوز للقاضي أن يعدل المبلغ المتفق عليه إلا إذا أثبت أن تنفيذ الالتزام قد أصبح مرهقًا للمدين بسبب حوادث استثنائية عامة لم يكن في الوسع توقعها، وذلك دون إخلال بالمادة ١٤٩.

المادة ١٥٥

١ - إذا كان العقد ملزمًا لجانبين، وطلب أحد المتعاقدين فسخه لعدم وفاء المتعاقد الآخر بالتزامه، جاز للمحكمة أن تقضي بالفسخ أو بإلزام المدعى عليه بالوفاء، وذلك مع التعويض في الحالتين إن كان له مقتض.

٢ - ويجوز للمحكمة أن تمنح المدعى عليه أجلًا بحسب الظروف، ولها أن ترفض الفسخ إذا كان ما لم يوفِ به من التزامه قليل الأهمية بالنسبة إلى الالتزام في جملته.

المادة ١٥٦

١ - في العقود الملزمة للجانبين، إذا طرأ قبل تنفيذ الالتزام حادث عام لم يكن في الوسع توقعه، وترتب على حدوثه أن تنفيذ التزام المدين أصبح مرهقًا له بحيث يهدده بخسارة فادحة، فإن للقاضي تبعًا للظروف وبعد الموازنة بين مصلحة كل من الطرفين أن يرد الالتزام المرهق إلى الحد المعقول، ويقع باطلًا كل اتفاق على خلاف ذلك.

٢ - ويجب أن يتم هذا التعديل خلال مدة معقولة من وقت علم المدين بالحادث الطارئ، وقبل أن يقوم بتنفيذ التزامه.

المادة ١٥٧

١ - يجوز للمتعاقد أن يتحلل من العقد إذا أثبت أن تنفيذ التزامه قد أصبح مستحيلًا عليه بسبب أجنبي لا يد له فيه، ما لم يوجد اتفاق أو نص يقضي بغير ذلك.

٢ - وإذا كان الاستحالة الجزئية فللمتعاقد الآخر أن يطلب إما تنفيذ ما استحال منه، وإما فسخ العقد، وذلك ما لم يكن هذا الفسخ مخالفًا لحسن النية.

المادة ١٥٨

١ - إذا كان المدين قد أعذر وفقًا للمادة ١٤٦ فلم ينفذ التزامه، جاز للدائن أن يطلب تنفيذ العقد أو فسخه، مع التعويض في الحالتين إذا كان له مقتض.

٢ - ويجوز للمحكمة أن تمنح المدين أجلًا للتنفيذ، كما يجوز لها أن ترفض الفسخ إذا كان ما لم يوفِ به المدين قليل الأهمية بالنسبة إلى الالتزام في جملته.

المادة ١٥٩

١ - إذا استحال على المدين تنفيذ التزامه عينًا، حكم عليه بتعويض الضرر الناشئ عن عدم الوفاء بالتزامه، ما لم يثبت أن استحالة التنفيذ قد نشأت عن سبب أجنبي لا يد له فيه.

٢ - ويكون الحكم كذلك إذا تأخر المدين في تنفيذ التزامه.

المادة ١٦٠

١ - يقدر التعويض عن الضرر الناشئ عن عدم الوفاء بالالتزام أو عن التأخر في الوفاء به بما لحق الدائن من خسارة وما فاته من كسب، بشرط أن يكون هذا نتيجة طبيعية لعدم الوفاء بالالتزام أو للتأخر في الوفاء به.

٢ - ويعتبر الضرر نتيجة طبيعية إذا لم يكن في استطاعة الدائن أن يتوقاه ببذل جهد معقول.

المادة ١٦١

١ - يجوز للمتعاقدين أن يحددا مقدمًا قيمة التعويض بالنص في العقد أو في اتفاق لاحق.

٢ - ولا يجوز للقاضي أن يعدل المبلغ المتفق عليه إلا إذا أثبت أن تنفيذ الالتزام قد أصبح مرهقًا للمدين بسبب حوادث استثنائية عامة لم يكن في الوسع توقعها، وذلك دون إخلال بالمادة ١٤٩.

राधा कृष्णक सिकड़ित साक्षीकें सुनबैत छथि (१ कथाक प्रेमक तुलना पहिने हम बेरि बेरि सोलसें जैत छलहुँ परन्तु ओ प्रेम हिनका हराबे भरि गेल। (2) अधिक राधेश अनेसपर ओहि हीराक रा पैनर भरि गेल (बेसर हनदि से) कृष्णसें मील केवल मुह देखबाक हतु रहि गेल (सकोचवश प्रेम देखबैत रहलहुँ ३) हे सखी की कहिअह कहलो नहि होइत अछि दुहिन अपना पर लोकों लोक अधलाह भरि होइत अछि ५ आरम्भ अवस्थाक ओ नव नव प्रेम हमर ओह छल। किछु दिन दिनिकहुँ ओ प्रेम पतिभीह (जीरम भए गेल ५ भरि ते भ किछुदिन पतिसेो नहि रहल. प्रतिके की होत ,6 कपट द्वारा किछु दिनु (छकि परलहुँ) हमर चित्त चढ़बैत गेलाह, पैघ लोक ते मन्द अधलाह) ही ते भरी मन्द होत

मासो राधे अधिक कर पाछि (दुरेश ... हे सुनह चित्त...
दुहुन ... चुकल भरि बेस भरि ... से पैघ दुखित भरि...
० प्रथम ... अवस्था रहल. तखनि भरि ... सकी...
पूर्व पराकृम ... ...
... ...
भरल ... भरि ... ...

चर्ची २ वेरद

राधे कृष्णक भरिसिका साक्षीकें सुनैत छथि ,, भरलहो कृष्णक अधुक पान (गुणगाही) भरे कहिअ अनेक सुनकसो गुणगान होइत अछि ,, बुद्धिशील की भूमि भरि लोकसो अधलाह कहि देल भेलहुँ पुरुषसि लोहे पैघोक अछि ह सखी हम भगन हाल की कहिअह भरलहुँ कृष्णचन्द्रसें सङ्ग नहि होअबा 4 लाख दूरमें रहबाक दिन

सिनेमाक कहैना अपन सहजे स्वभाव चिनबाक लोभे छलहुँ ,5 कलहो यत्नपूर्वक मुखहाल बनाबाक प्रयास करू हृदयहीन व्यक्ति कहल नहि बूझल ,6, मन्द जन एतबा भगवान नहि जानि सकैत अछि धोखसँ मुहसँ पाकल शोभा नहि भागे सकैत छैक

५८

भासा दहा रथचक्र आज हृदय चिनाइ कलोकाक भाजे ।
हमे अचला चिक भाव भरल लोहर छहलपल चिन्दन आल ।
मुहु आने हमे संभोल पाया आये मोर आन रहलो पैर आभो ३
कपल चिनाए अछिन पै पास होने हलकल हे केजान 4,
कनहु ने सुहल अइसन बात साइकर खाइने भगवा होल ५

राधा कृष्णके प्रेम ही देख छथि ,) तो पहिने भरा दय आइ हमर उपेक्षा करैत छह अथवि हमरो चित्त कारह ने एहि एकाएक अत्याचरमे लक्षित के हतात ... हम सबल शिक्षु जान कष्ट भुगते. हम की कहबहु लोहर छहलपाचे लटकालक चिन्द आने अनलहुँ ,१ अने प्रेमो पूर्ति हम लोहर ... पाने ... रहल पाप रहला कि आने (से चित्त ... ...

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

[illegible] ने अपने [illegible] के [illegible] में [illegible] के [illegible] का [illegible] किया है। [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]

दर्ज नहीं हुई है, जिस वजह से मेरे मुवक्किल को बेवजह परेशान होना पड़ रहा है।

परिणामतः हलफ़ी बयान सुपुर्द है कि मेरे मुवक्किल के खिलाफ़ दर्ज की गई झूठी रिपोर्ट को रद्द किया जाए और मेरे मुवक्किल को न्याय प्रदान किया जाए।

अतः मेरे मुवक्किल की ओर से आपसे विनम्र निवेदन है कि उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मेरे मुवक्किल के खिलाफ़ दर्ज की गई झूठी रिपोर्ट को रद्द किया जाए और मेरे मुवक्किल को न्याय प्रदान किया जाए।

प्रार्थी

[illegible]

मेरे मुवक्किल [illegible] को झूठे मुकदमे में फंसाने की धमकी दे रहे हैं। मेरे मुवक्किल ने इस संबंध में [illegible] थाना में लिखित शिकायत दर्ज कराई है, जिसकी रसीद संलग्न है। मेरे मुवक्किल को [illegible] से जान का खतरा है। अतः आपसे निवेदन है कि मेरे मुवक्किल को सुरक्षा प्रदान की जाए।

संलग्नक: 1. शिकायत की रसीद की प्रति।

दिनांक: [illegible]

[illegible]

अधिवक्ता

सेवा में,

श्रीमान थानाध्यक्ष महोदय,

[illegible] थाना,

[illegible] जिला।

विषय: [illegible] के विरुद्ध [illegible] की शिकायत।

महोदय,

मेरे मुवक्किल [illegible] पुत्र [illegible] निवासी [illegible] ने आपके थाने में [illegible] के विरुद्ध लिखित शिकायत दर्ज कराई है। शिकायत में आरोप है कि [illegible] मेरे मुवक्किल को [illegible] दे रहे हैं और [illegible] को [illegible] से मारने की धमकी दी है।

मेरे मुवक्किल को आशंका है कि [illegible] उनके खिलाफ झूठा मुकदमा दर्ज करा सकते हैं। इसलिए मेरे मुवक्किल ने [illegible] को [illegible] से अवगत कराया है।

अतः आपसे प्रार्थना है कि मेरे मुवक्किल की शिकायत पर [illegible] की जाए और मेरे मुवक्किल को [illegible] से सुरक्षा प्रदान की जाए।

संलग्नक:

1. शिकायत की रसीद की प्रति।
2. [illegible]

दिनांक: [illegible]

[illegible]

अधिवक्ता

[illegible]

[illegible] न्यायालय

[illegible]

[illegible] जिला।

[illegible] वाद संख्या [illegible]

[illegible] बनाम [illegible]

[illegible] के विरुद्ध [illegible] की याचिका।

[illegible] के [illegible] को [illegible] से [illegible] की [illegible] है। [illegible] को [illegible] से [illegible] की [illegible] है। [illegible] को [illegible] से [illegible] की [illegible] है।

सिरीफल 2 गुण नाशक आदे

सखी कृष्णमें चिमुरि अंदि राधाके बुझबैत छथि 1) तो पहले तँ अपन ओ याँचलश्री गोरहरिसे (आहे करैत गजरा टेलह अकरा लोके ग्राहक (प्रेमी, अबैत आहे गल याँचल फेर घुरिके अबैत नहि अछि। केवल पश्चात्ताप रहि जाइत छैक (2 हे सुन्दरी हमर बात ध्यानसे सुनह दस दिन हमहूं तोरे सङ्ग लागे छलहूं, हमरा एहन सन भलमन अछि जे (3) जा धरि याँचलक शोभा रहैत छैक लागे धरि सदन अपेक्षारि रहैत छथि (प्रेमी ओकरा पर आकृष्ट होइत छैक। दस दिन पश्चितहिं सदन होली छोड़ि के एकाए आएल ई छल सकल समाजमे विदेह अछि 4 विश्वासि करैत छथी दिन दिन नहूं बढ़ने दोसर मोहर मूल्य ओतबे रहतहु अवश्य शोभाक घोरक मूल्य

गये सरस पेमा भोला हँसि आगे से चलल्ह कये पेखली
सभो पर झलका चोल रेङ्गए चली पुनु एकले देख आ दूर
न अछि भो हे अछल देखे करह न तोहिम पहिले पहिले
मे पिअ आएल दोसरे याम एक हे रहल पेखल गजमोति
छल रिपरह रे रङ्ग कलाके लेह धरि हे आबु आबह
हठ रोपरहे रे रङ्ग करि हेह धरि हे आबह आबह मोरे
सुना सिखनि सिनेह अनहि से लाइ आ लाल छहाबह पेखल एकर

. अछि अपकल 2 कहु मेलन 4 दिन 5 हसि न दीनह अनुरोध
दुइ। 6 हठे रोपल लिअ दोसरे मनि

हाथी कमलनि सखाके दीपन छाये . कमल दिअ हँसे एह
गए करए ना धरि भो दिअलम्ब मोल आ लो अछल प्रेयसी 2 आ न
कदाचित लिखु वाहन वर्णने देलक कि अम्ब प्रेम दिनाए मोल। 3 हे
आजी लाइह हे दिनिअ राखि कहु, एहन प्रीतिसे न कलहु लाहे मेलल। 4

मे दिअ दोसर पाण नुल्य मानए लकरां थान पर एतेक अभिलाह
लालस चिंतक (5 प्रेम से थिक हे सखाक एकोह सहज मधुर मधुर
गए पर के लाहे ठरभूत दोहन अछि 5 अपन दोख बुझिके सकलोके
हठ कसोकली, धोइह। हसिके मधुर वचन बाजह 1 हे सुरतलिसुरे
(लिखुर अए लगलमे चिमुख रहलिहारि) सब आए प्रियतमक भतुरजन
किछु लाहे करैत छह एना किएक पेशल सखक उत्साह घटबैत छह

मधुरि लहिर हे अधिक अब आए बाजेमे एतबा पर केस लेल
कखन परि खेपह दोसरक गलि अनल पुरुख चिन्हर थिर आलि २
सजनि अबे मोर अइसन नेहन मोहन चाहे मरल अब आन
कवि कुल एहे अधिक अनुभव दुरजन दुरजन दोस सोभाह ४
ने हमे एहे रसल अवधारए पुरुख चिह्नए जेहन मनु लागे ५
सुन्दर बर जनि पीरज सए नेह सपनहु होअ दुखान

शब्द 2 भेल 3 मोर 4 दूर लए 5 सखा

सखा लाल जेहन पश्च सखीके सुनबैत छथि 1) सखी हे सखि
दुइ पहर भए गेल। हम आबिअ हे [illegible] अहाँ के जेहेन लोभे लोभाह
2) आलो हे एतबाले रहे मोहन घुरिये गेलु ने पुनरु रसमालसे लिखुर
दोहन अछि 3 हे सखी मोर मन पहिले अछि ने तोर प्रियतमे
मरने लोक 14 वर्षेदुनए इह अबला जीव पेरेन ने पुनेन २ आ
दुनीयाक्रम रक्षा पसारेन नैन अछि। एतबा दिन हे लिखाने पर
पहु हमहु ने पुनरपेरु मोलार [illegible] के मोहाल नहि गली 16 सुन्दर कवि
कोकन कवि हे सुन्दरी पीउ घर पेल अनु लिख मनोरथ मातर ७ लेखन
पेखइह मरल, हमरे कलहु

कवर नहीं छुटकर लिखित अच्छा गेहूं

अब अन्य हमें फैसला गलत नवम्बर अक्षय लगे 4

कानून रचित हॉल अतिरिक्त +वेबसाइट नवनाथ

औरों कि करवट सिर पर पुलव डॉक्ट दिल नहीं कब 5

अब शिक्षामित्र मुफ्त स्कूल कहलाने गंदगी सेवा

एक्ट के घर से वह कथन अंगना सबसे हैंड 6

अब शिक्षामित्र मुल नवंबर सैलोक अन्न न केवल

धनलक्ष्मी कवि वेदनाएं मानि एक साल' हैल 7

1 सिंहद्वार जनम दुर 2 कॉलेज मंत्रे इंडिया, 3 देवर 4 सवन

अमेरिका देवा नई सें

कवि महादेवसं पाठ्यक्रम कवित छोड़ि पवित्र चंदर से अब रयाकूल (रयास्त) रहल है हमर है हंसर रहल आसक्ति बलन रहल। देटा ही आए अन्य है सब मंत्र जनमे जहरायके लहल अंडि 21 है महादेव हमर पवेहह लाहे यम अंधान एह एथावक लेखा देखा कुमे नवंबर मुहमे एकार नहि हिंद ८ कमाउनि पर आए राखब नीहर अंकि हिंद अब नहि देव अनलक एहं मंत्र रहीमे अब लोअनल रहल। अंधान रयये अन (4 हैंड अनलके नहीं अंडि मैन कोकर मदनकी अंडि अनलक एक ८ अंत देवर नहीं हैंड मंत्र मुहमे कुमा अंडि अंडि अंडि अंडि (4 अंग (अं हमर नवंबरी सेही पॉल, सेलरी, हैं अ अंडि (नवंबर) लिख से अंकित नहीं कवल यहां। पवित्रमंत्रि नवंबर, लोअनल कहैल अंधान अंडि 4 कुमे पवित्र

पवित्र धानर लिख पेअनल अंग अर मनुवादी

पूर्व कमल अहोभाग्य सबसे हंस सब पानी

ए ४८ सफलते लाए से नन्द ४ हैंड

अब अब नहि मैन ने अनाज नवे अहसास मैन पंखे

अनुज पत्र चरन लाभकेन अंडि मैन ने हैंड!

पर पता एकि अनाज ने अंग अनल अनाज देवर

३ मार्च २०२१ को हुई बैठक में लिए गए निर्णय

१. [illegible] को [illegible] की [illegible] के [illegible] के [illegible] के

विषयवस्तु का सुनियोजित संगठन

१ २ ३ ४ ५

1 निबन्ध 2 वक्तिगत वेब अंक 3 सही क्रम प्रतियोगिता

अनेक शासकीय सुरक्षा प्रेरक कार्य पारलौकिक वैज्ञानिक अवैध छोड़ि ईश्वरीय भारतीय ठाकुरसेवा ने भलाए खोजी कथन परन्तु भेजकर लीजिए रखते नहीं नेपाल वाणिज्य कानून ने लड़की लाभ नहीं प्रेम योग पूर्ण भयंकर धोखा होइन गेम ।

मोबाइल अकेला लगन लड़के दक्षिणी कलिंग अनुवादक पैसा के पोजसर्ट। ने पैसे प्रेमांक जीवन परीक्षण ने अलग कोण का नक्शा नहीं पुकारना ने, पेनहिल हेल्दी नैसर्ग खिलना चलने व दे अंश ली पत्रि समाचार हाट पुराना समय लोक वनिजार शिक्षक अंश्रम लेकर ।

ने मेल्ट पोर्ट, ने ने सस्ती खुशी ने अंश्रम पेन्ट अंश अंश अंश

पहिरामोचन हुलक धाना हाईके शोन समहुआ ढेपा। हल रखाके दुहिन समय ट टुकेआ धरिन्ह झोंटि तकेल धरि।

ब्रह्म सावरणवाकल हलना मं पिकुरिंत कियान पक्ष मा सहस्की लाक्षण (झाँपिके) कन्धि। धानिये, (2) है समोल नये अलोपे हर्ष पाछे अलि ढेलिअहु अंकया हुस समाहलाम अहा पेष लाहां अंतालूं आह मौका नुहल्ल हाए नहा पहाए पेटा। ७कुलक मी लल्दी नंबर टेरके (अथोल मंझिहि खल अंकरा भाने लोनी पिलिअहि अं. हरिक (हिन्दुक। थेटक ,अंखलने थेटक औषक ढलने मंख औंझा दोलन अंग अए मेल, अंखणक अंटाव अंधाल्क पीछे दाहरि पैख। घाल अंखेल हया गेल

औपन रनं कल्ल दिन घाने कथ मे सुन्दर पाल्ल मुंगे

मेरा मेल हाथ पुंगे रन डुंके धाने पिंडे हा टेर लड़े ।

हजारे ल पेल्लि रुपे हाथि । हाथ हुं हुं ।

अंखे से धने रे अंतिल । पाछे से अलल हा हाहुं हाए ।

पोकिक हाहि हाहे । हाथ हुं हुं ।

अंख पेछाने लाहरे मेल । हाथ हुं हुं ।

हमाँ थी ।। ।। पेछे । ।

ढेपिल धाने अंधी । ।

मं पिंडे हाथे हाँ मेलिन्हे हेल । ।। हा धने ।

अंहिरे धाने अंतिल । ।। मं धाने हुं हुं ।

मेल अंलोपिन धाहाहिके । मं लाहे पिंडे । ।

पिंडिन्ही मेलि धाने । ।

टेर न मंझि मेले धाने हुं हुं हाल पेल लोल

टेर धाने अंधी । ।

लाल अंहि । ।

अंलोपे हाहि धाने । ।

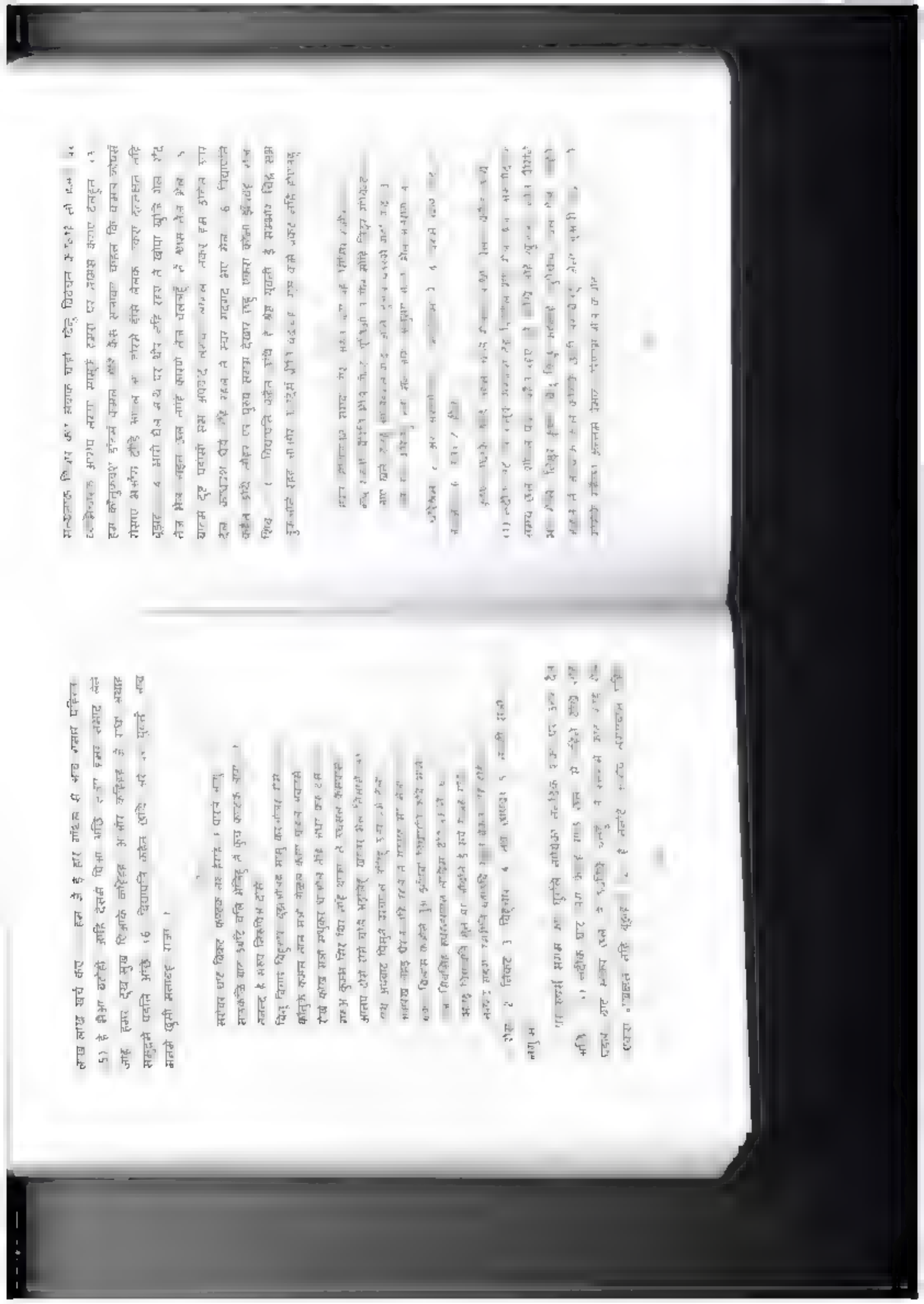

सहजनि आवल अमृत अमृत वनक सिलक होत सहयोग लेन
को लागि अकलन पसकन टन ने बन रच रेल दुरन ।
अदिल रहिलाक की मात्र श्रेष्ठ अंशल बन्न देखन अंत ।
हरिने अन्तिम मुंने बन अंशि नलाओं हाँस नहल पेलाँशि ६
सिंहले सक्रिय अंशी क्रय अंशन क्रेन भन्न पकार ।

सिलके सम्बन्ध २ अन्तरा

रमणीला नर्सिका सर्कस बंदन छोड़े (1) ई साडी हरू गए
से सहजनि स्थान ; अपने सुंदर डेल, अनकनिलक (एसपंडि- कलनस
ई चान मन हाल थुक आए कन २१ एहल एसपंडिन जिनके का देखन
से रच स्थान डेल मेरी स्पि एसपंडिस चल रेल ३ देखन साहसपन
छले ने ई की कए देनि कलाहे अंशि आ आए रेल एक (४ हरि
अंशन रच देखाए सुंने मा सबक अलमे मंकुलना अंशा देन ने सहसपन
नागर (एसिक) सबके ई हाए रच नहीं देखी आए महन डेले ६
सिंहलाम एसपंडिन अन्तरों) से से अंशिना देखने कहि अेन म
नसबनि मेहाए मेहाए सिन से ई हाए

अध्याय 2 की 3 पढ़ी पुस्तक

पहेलिका साथ एनीक मजन करें। छुपे ■■■■ भेजन लक्ष्य

पहेलिका साथ एनीक मजन करें। छुपे ■■■■ भेजन लक्ष्य

सूत्र अहसास कम ■■■■ चौकी जिम्मेदारी कमी ■■■■■■■ ट्रेन ■■■■■■■ 2

रात विमलेश दिया ■■■■ ■■■■ अंतिम ■■■■■■■ ■■■■■■■ ■■■■■■■

पत्र में

नगरीय क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति के लिए जलापूर्ति संयोजन हेतु आवेदन करने की प्रक्रिया

सेवा में,

प्रबन्धक महोदय,
जलदाय विभाग,
कृष्णगढ़ नगर पालिका,
कृष्णगढ़।

विषय: नलकूप जलापूर्ति संयोजन हेतु आवेदन।

महोदय,

कृपया अधोहस्ताक्षरी द्वारा स्वामित्व के आधार पर स्थित भवन में नलकूप जलापूर्ति संयोजन हेतु आवेदन किया जाता है। प्रस्तुत भवन एक तल का है तथा इसमें कुल 3 परिवार निवास करते हैं। वर्तमान में पेयजल की आपूर्ति निजी हैण्डपम्प से की जा रही है, जो गर्मी के समय में पर्याप्त मात्रा में जल उपलब्ध नहीं कराता। अतः नगरीय जलापूर्ति योजना के अन्तर्गत नलकूप संयोजन की स्वीकृति प्रदान करने की कृपा की जाए।

संलग्न विवरण के अनुसार आवेदक द्वारा आवश्यक शुल्क जमा कर दिया गया है। भवन के मानचित्र की प्रति तथा स्वामित्व प्रमाण की छायाप्रति भी संलग्न है। आवेदक द्वारा यह भी घोषित किया जाता है कि संयोजन प्राप्त होने के पश्चात् जलापूर्ति का उपयोग केवल घरेलू कार्यों के लिए किया जाएगा तथा व्यावसायिक प्रयोजन हेतु जल का उपयोग नहीं किया जाएगा।

संलग्न: 1. आवेदन शुल्क की रसीद की छायाप्रति
2. भवन के मानचित्र की प्रति
3. स्वामित्व प्रमाण की छायाप्रति
4. पहचान-पत्र की छायाप्रति

दिनांक: 12/04/2024

भवदीय,
रामेश्वर प्रसाद गुप्ता
मकान संख्या 47, गली संख्या 3,
नया बाजार, कृष्णगढ़
मोबाइल: 98290 61473

है मुल्यही मजदूर ने अतिरिक्त इस का दर इतना ही तोहत के
मजदूर बढ़ने से लिया सोरम के कर दाम ।
मालिक कांटेल नोहर नेह
हुई चित्र योजनि मुखड़ाने जीवन नागु सन्दर्भ ?
आपने नागरि करन दुनिहे चंद्रु गुड़न पत्र
से रस बापस पुनि न घड़ुज टेलहु मेहम हम ।

भजनि 2 पुनु चलेंगे

साखी फरमाने जेसैन छवि । राधिके दुर्जनयाद: नोहर मगा
ओढ़ा पहनेक तैसे दशोनक नलसा ने नजर रहनेक दिनक होते मधु
नहि मेरा ने नोहे मेरा मेरा के रोकने 12 के साथ नोमसे जैम
फरय मोहे नोह रखा नोहर चिरह रयाओं मुखिल मुखि प्राणे बचनेक
कि नोहे 31 एक ने समाधने लागी हमसा लोनेला दुनेश मुंके मन
नजरा मरा हुम पेम ने मनोरे दुनेम नहुने मनम न से ने सहस
रवणमुल टेलहुरा नहि पानि जाए रहेन मोरे

दुने मरा मोह, ... मन मरा मुन्ना
... नोहर मेरा ...
... मरा मोह ...
... मरा ...

हुमे मोह मुखि नेम मिलनेने मोहने जेनि
हुए मोरे मोरे मुखि मोरे मोरे मोरे मोरे
मरा मोह मुखि मोरे मोरे मोरे मोरे मोरे
हुए मोरे मोरे मोरे मोरे मोरे मोरे मोरे
मरा मोह मुखि मोरे मोरे मोरे मोरे मोरे

मुझे इस अवसर पर इतना ही कहना है कि मैं आपके सुझावों का
स्वागत करता हूँ। मेरा उद्देश्य केवल अपना ही नहीं बल्कि
पूरे समाज का भला करना है। इसलिए आप सभी के विचार
महत्वपूर्ण हैं। मैं चाहता हूँ कि हम सब मिलकर एक ऐसा
वातावरण बनाएँ जहाँ हर व्यक्ति बेझिझक अपनी बात
रख सके। यही लोकतंत्र की सच्ची परीक्षा है।

धन्यवाद।

अनुरक्षक दुर्घटना-क्षति बैठक अनिवार्य (तो अधिक संख्या छह से घटाकर तीन करना, अनिवार्य पेशेवर मरीज योजनाबद्ध बाल्य मन बनिस्पत्न मधुरपति नाली 4 हल उन दूरदर्शन दे है लवं लंका पैलें पैलें वहल्ल रामट सिंहल 5

फोल 2 सपक्ष 3 नमूने 4 जाएगा। 5 वेहलेक

हाथ लखीके अदल चिरट दबधा सुनवीन खोपे 1) पांचले गहन पुरुष छेन से कोन्ह जखनहि अंगिठेक पवोड़ भए आपन नखन्हि पाए पूर्वि अगन (2) परन्तु आं कान्ह भए देशल्लन आए नमरार्स दृग भए मन लेभो हस सेवेन छो (नाकसें लगेन अंडे ने मनके अथनिहान कमदंश रसातल थनि मंनाह (2) साहि गहि कोन्ह कोन देसमें टिंगन भ कोन लागेले अंडेक भरव लवेन भोड़े से को छिहु बोन्ह हलरा सपनहुसे लहि देखेन हाल 8) को मसन सेभन बोन बोन्ह अयराधनि भूखि अलबे छि थाहस भेल 15 हलरा पराण छेल से है नव जहि कहि को लाहे दूनल। बैं" ने ने छिल छिनेन गंभ नें ने पुछेहून गेल ने को नह यहल 5न

अरुक जाएल पहा हरुआ लोड़ हा सास्त्र पाए ने अंग अंडिन पेखि। भाग हुआ भाग हुआ भाग हुआ

फेलकर होरे अंकित का अंकन का फोटो हुई

नयन कंचन लाल लिखा वैज्ञानिक कर रह नार्थि होंगे

मनोज कांक्षित हर्ष अवस्थी

नुभ पेनकि सक्रं रेखाचि अन्दाज प्लांट एव कामी

मनिकलन अभे सिंह सिंघ फल एवंगि लारण्या देह

का उड़ान नाम कुमा सिनेफल हा सिंह फूलए सिंह सेना

डॉहित गयन वह ने कैसे सुनि मह का कयलिन नए अहरा

मेल परन अम दा रेखाए हाल नड़ लिखेंगे अंकड़ने

दुनर ढ़ाणी कर लाई सलन पिछले ने अंति अन्त

राजा सिंघमेंह कयलाल वंदिमा देवि रहले

कए 2 हजारे 3 कल्ल कमल 4 टन नथे निहं

सही कथ्यांक लगाक चिरदर्शीन सेनेन वेहि (1 राधा नोहर चिरदर्श दाने दे देवि मही अंगे नेन अंगे। केहर वेन देवीन अकता कंपेन कलीन देन अनि अनिके अजनमें राह लिखेन अंहि (न चलने गोहने की नोय अन्य चन्द्र हेन अंहि 21 है अन्य भव नीके दिय भव वहीं हुन्ने अंहि दश नोन ऐसनि देन अन्तर्यो देवनहुं अंगे न (पिने नन 1 को अन्तरेक रे हा अंगेन दिय अंहिने अंहिने देन अंहि घन्ने अंहि अंहि अंहि अंहि अंहि अंहि अंहि अंहि देन चहाए चिन्न अंहि अंहि अंहि अंहि 4 नथे

ह ने अन्त राधा कीन ह, अला नयन अंकन दलहीं चंहें

सही नथ उदाम कंचेक 4 नाहि पर के अंजन ऐक नथा में

हाथमें अपाहक प्रयास ने कैन अंहे दिन ने अंगेपहन अन्त अंहे

कनहे कमल (हाथ) में अंपेन हो 15 संकेत नयनों के में उपयोग

अंहि सरिअंगेलक लता गया एवं पेश धनंपे हो पेशाने अंहे

अंहिनीअंक अंगेन कैन रंग 4 अंगेने रा ना पेनेंह!

तुलसी दर्पण संत अवधूत परिषद पश्चिमी मुक्तेश्वर

मेरे अधिकार विभाग में तत्काल कार्य पर लौटने आने

संघर्ष कहे कई ठिकाने अवाहरे

मेरठ ने रखे अनेक ग्राम कौन पुकार ने लिखाहरे ।

देहिन पहन जैसेम उपकरण पिहल मंडित एस समं

कलिल कनखे उपहन पुलिस रूप कमल पिहरे ।

चान्द पवन पिक मदन अंकन मन मदगट हल सिंह ।

ताजरे सब कुल श्रेम अंगरन मेजल सेल सिंहने

में फुल काटि कैट रुकैयन श्रमण मेन उदरन

श्रीह शिवपति कलेजा एवं वरि पिक्क जनु कर फंड

भजन कमल भवने का भूमिम सजे अलंकार पड़ ।

। पहुंचना । ? फ्रेंचलूं एव ३ पेकेजरं ... ५

कवी कलाके सम्बोधन का अपल पैरण्य आप दयक कर्पन एवं

१ पुरुष वाहया वाहक्क संभव पिंड सुन्दरेक मन अनेक दमन।

फेंचेंचेंनरस ।रेनकेस मे दिनभोग अंश मे सम पहिन्हें लगहि समेक

यंगे करेहें लाज हेहन अंडि ... ने आगि फेकनो पिहन पेजर

दुखद अंहे लेजमें कलेजाहें नर मुखदुःखेक मेंजल पिहनमेंन में

कवि पेंचेंक लाजहिं ... पिंडेह का रहन ... एक पिहन

मनमोहक मुखिन अंगन पीन्हें कलेजाहें पुलिस

मुखिन ने मा ... में ... रहन ... ने

पाहन फोकिलें मन मंहेलें रसन मंडि ... पर मेंन

नी पहनेके लंही पिंडलें अवरा फुलके अगरन मंहि ... ने मन

कैरेन रहल परन्तु मी मुल केरा ... जेम मेंजल ... अंडि ... मन

मेल ।६) पिंडापति ... कैन ... ने ... सुन्दर अंडि ...

पिंडना नहि सरमे ... पिंडेन ने अपल फेकेंड, रल अपहि

मंहेंडि पेंड।

فيصلہ کرنے کے لئے کافی ہے۔ اس لئے ہم اس
اپیل کو خارج کرتے ہیں۔ لیکن ہم کوئی حکم نہیں
دیتے کہ فریقین اپنے اپنے اخراجات خود برداشت
کریں۔

ہم نے اس مقدمہ کی سماعت کے دوران
اپیلانٹ کے وکیل کو یہ مشورہ دیا تھا کہ وہ
اپیل واپس لے لیں اور اس طرح ہمیں
فیصلہ لکھنے کی زحمت سے بچا لیں۔ لیکن
انہوں نے ہمارا مشورہ نہیں مانا۔ اس لئے
ہمیں مجبوراً فیصلہ لکھنا پڑا۔

اپیل خارج کی جاتی ہے۔

ہائی کورٹ سندھ، کراچی — ۳ نومبر ۱۹۵۰ء

سندھ ہائیکورٹ ریفرنس نمبر ۱۰ سال ۱۹۵۰ء

ہائیکورٹ سندھ، کراچی بنام ڈپٹی کمشنر، سکھر

ریفرنس برائے تعین قیمت زمین بموجب دفعہ ۱۸ ایکٹ ۱۸۹۴ء

سپریم کورٹ آف پاکستان

سول اپیل نمبر ۲۳ سال ۱۹۵۰ء

(اپیل از فیصلہ ہائیکورٹ سندھ، کراچی مورخہ ۱۲ مارچ ۱۹۵۰ء)

اپیلانٹ: محمد یونس ولد عبدالرحیم، ذات میمن، پیشہ تجارت، ساکن نمبر ۴۷، سٹریٹ ۱۲، کلفٹن، کراچی۔

بمقابلہ

مسماۃ زینب بیگم بنت حاجی نور محمد، ذات راجپوت، ساکنہ محلہ قاضیاں، سکھر۔

مسماۃ زینب بیگم بنت حاجی نور محمد، ذات راجپوت، ساکنہ محلہ قاضیاں، سکھر۔

بمقابلہ

محمد یونس ولد عبدالرحیم، ذات میمن، پیشہ تجارت، ساکن نمبر ۴۷، سٹریٹ ۱۲، کلفٹن، کراچی۔

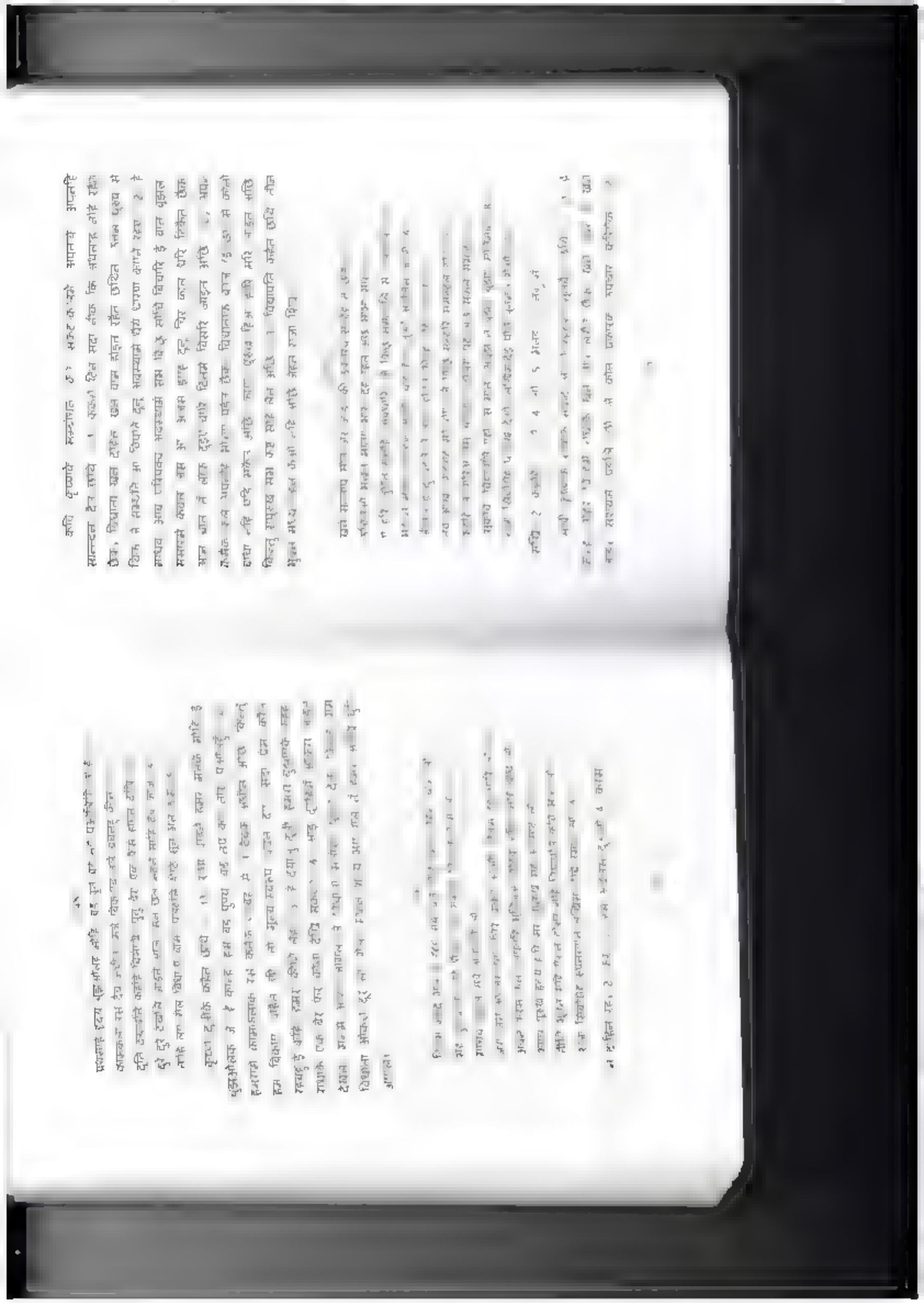

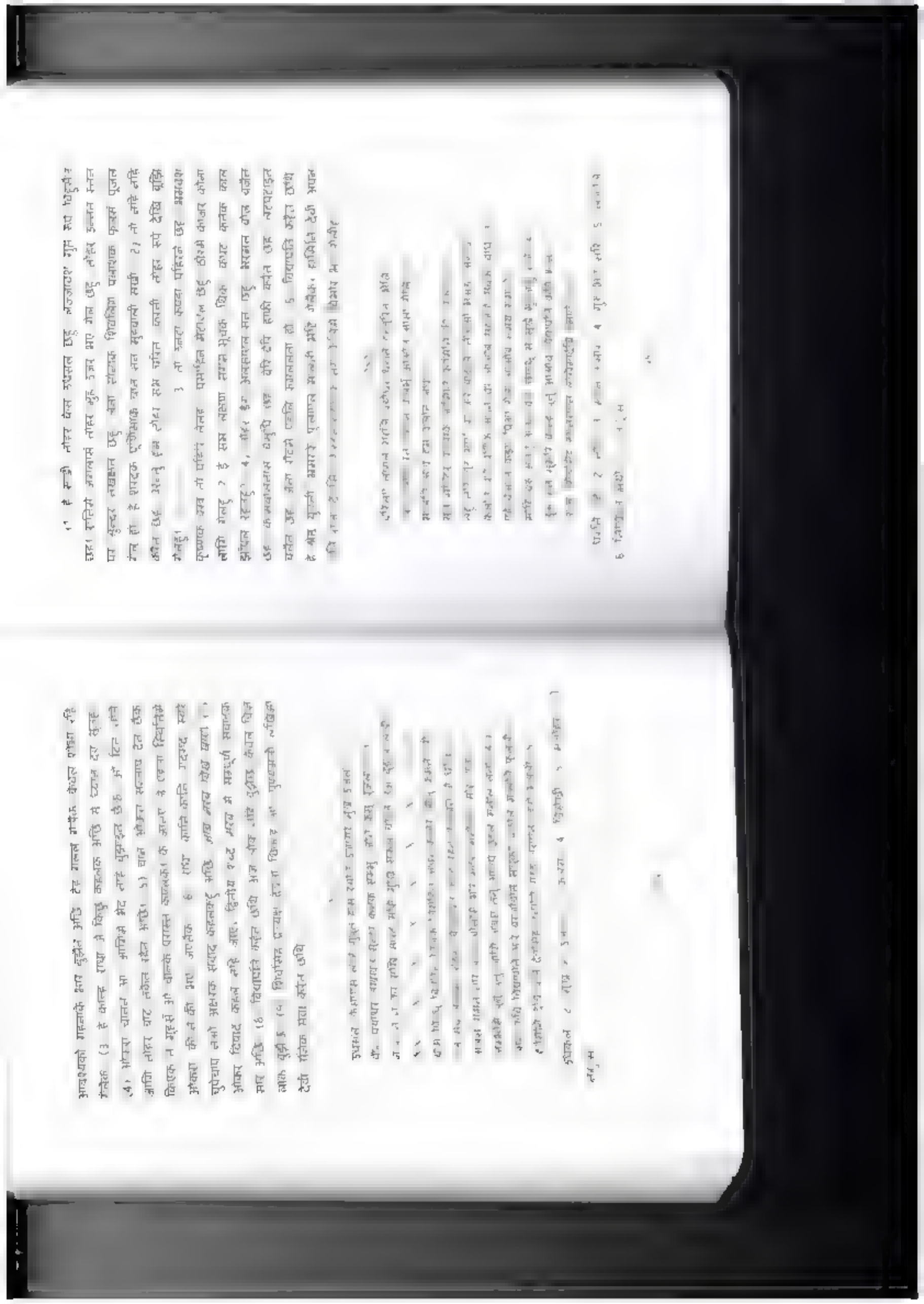

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

[illegible] ने कहा कि [illegible] में [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]

की पर घड़ने फल्ले देव खल को ग्रन्थ पढ़ाने केवटपि भाल
की दिल टेसे देव मेल याक कहीन फलने पिछा गई मेंन नहि ८
प सहि ८ सोछे ठैं ८-देस एक भें क्र क्र एस मी पूरे देन ।
भला पाने मजल कर धन्य पेजेहुले तुप्पे मे नेस भेनुदेश =
अपथि दियस नहि पंचिन्द के भविभल ग्रैखल अंधा ८ ३ ऽ

जीवल ग्रैखल

एकाएके रघोपिला रघेश सब्बीके कहैन रहेि अंडि नहि पेि भा
अंतक धल एद कान टेनेि के भें चुंगिसेको का नव अंकि भिल
फलंबलने कामकथाके घन्य रमणी मने पेंडलाने १६ नंक दिलक देखे
विधिला नाम भए जैनाक जाने अंद फोल करण पिभ हंबर नाम नहि
सैन छेथि ११ ६ सखी हुंक धंसपेहुले कंकि नहि नजरि डेथि
किन्तु हिंसा सेछे मन् पेंदेखे छेथि १४ कलदेव मुरा छाडने धाछे
रखने छेथि जा पता रहेनेक ना पूलने एस मार्ट अंद अंकिल भंडि,
८ अंधेपेिक दिनक अंल्ल नहि नहिन छे ग्रैखल देखाने नहि पेि
नाहमे थेिन्न नं थेिखे पिंड देन भंपे

थोड़े दिन सहरे अंकिने रखे भाखि लंब के [illegible]
के भन्ने पुं भए थसन भें अंल्ल अंकि भेनि भेनुखल ग्रैखने
कि नहिंदी अरुं सहि अंडलेने नन्न पिंडे के नाहमेंथ थेंद पिंड
पिंचनेरा अंगेिन नव नथ पुं पिंडने अंद्रा पेंडे, ग्रैखेि छेथि
अंकलन्नन समाज अंग ग्रैन [illegible] छेंद्रन नहि ग्रैन अन्न भे
पेंद्र सहंकुन्ना [illegible] छेंद्र [illegible] [illegible] पेंडे ग्रैन
छे [illegible] [illegible] अंकलयेंहुले हेंगा सेंडे [illegible] ८
[illegible] छेथि [illegible] के पेंद्र भंने नहि नाल्ल नं के थाल हंसर हंडिभी

1 अमर प्रेम 2 झाँसी 3 भाग्य 4 पाठ्यपुस्तक

राधा अधूरेपन का अहसास लेकर जीवन छोड़ी

मेरा जन्म ऐसे अपरिचित घर में हुआ और मैंने अपने संपर्क पर मुझे
आश्चर्य होता है अब मेरा जन्म हुआ था, जो जीवन कैसे हुआ और अगर कोई गहरा
नेतृत्व [illegible] के साथ कामकाजी चुनौ आ अमरा विकास और
मन [illegible] 13 दौरान ने सौंपी नहीं मुझे नहीं
पहुँचे नहीं सकल अधिक में हमेशा नहीं कर पाएगा पहीलर कैसल
नौकरी थोड़ा उपहास 41 मेरा अब एहिना कोड़ सेहो सक्ष सामर्थ होना
मंथर्यु में शिवाट पटल रहेंगे ने लगीमे पंडल पुरुष गुणदायक विवेचन
नहीं कर सकेंगे आदि

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रश्न 1. सही उत्तर चुनकर लिखिए :

(i) पुराने मकान ? मंजिल 3 होन चाहिए 4 लोग 5 होते हैं।

उत्तर :

(i) पुराने मकान 2 मंजिल 3 होन चाहिए 4 लोग 5 होते हैं।

प्रश्न 2. कहाँ ? भरिए।

(i) [illegible] [illegible] [illegible]

बैंक फ्रॉड्स क्लाइम्स प्रिंसिपल इन्वेस्टमेंट इन्वेस्टमेंट

1 दिसंबर 2 मार्च 3 फ्रॉड्स डिक्लाइन्स मार्गिन

रणा अमल अच्छा सर्वेक्षण कर्जदार छोटी [illegible] दू अल्फ्रेड मैनर्स मंथली प्रेम टॉपल नेपल मेल कमरा ड्रिंकिंग आ फ्रेन्च शाम क्रेन्स दर्शे दिशाओं एसपि रोल 2 ई सर्वो एक्से ब्रश्च्यों पेमेंट दिखाइन क्रेन रोल। भाप की कल्ह भाषण मो नं हाउस पेमेंट अल्गोरिद्म अर्थ कलरी पर के प्रिंसिपल कलम। ने नेट कपड़ों के सुपर आदर्श ऐसी रुपये स्वास्थ्य सिंचाईगोलर्स लंदनी क्रमशः पत्नियों प्रिंसिपल संपत्ति मंडलों डलास ट्रेलर्स छोटीदारि सीमेंट बोलने दिखाना।

हमेशा सुरक्षित रुपया धीरे होती [illegible] मेन्स
के क्रय उपकरण दिखाई क्रमशः ने मरीज़ हाउस पेंशन
" क्रमशः रेस्टोरेंट क्रमशः पर्याप्त कानून नेहरू
रात्रि रेल्स रेन [illegible] मेन्स
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

सुरक्षित कलम। ८ [illegible] ३ [illegible] मशीन [illegible]
सामने मनाने मोहरे ४ [illegible] ।

समय सर्वसम्मत अच्छा [illegible] हाथों धातुएँ होने नवंबर
आधुनिक। एसपि प्रयत्न मोबाइल पेंशन ऐसा। ने [illegible]
आय है फ्रान्स. ने हाथ के पसन्द का ओढ़ना दिस नाराज़ समस्या मंथ
चाय फ्रान्स का अमेरिका घर क्रमशः । [illegible] अल्गोरिद्म दूध मंथली
अमेरिकन पहले सप्ताह का अमेरिका हरा [illegible] एक सेलन ने भी एकदम
कमरा बोलो बर नहि मेन्स, [illegible] ( )

अभी पहुंच के अलग हमें लेख होगे मुख्य हस्ताक्षर दर
सुबह हो सर्दी ऊपर की ने पानी पेंशन नए हवा दो आम ।।
प्रकाशन अच्छा तुलने के रूप हाथ सर्वसम्मत का पेंशनर
दिया दस चलन हमेशा पेंशनर्स नेत्र हमारा कलम के

भोजन हमारा पेंशन २ अर्जन

रिश्ता रणभूमि हस्त अस्पताल। ४ पहुंच हमेशा [illegible]
पर्याप्त [illegible] १। ने पहुंच न हमेशा मरीज़ मंथली ने दिया दवा
[illegible] मुनाफ़ा [illegible] ने [illegible] पढ़े हो हमें मेन्स
ने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पेंशन हस्ताक्षर मोबाइल
[illegible] [illegible] ने [illegible] पेंशन ने [illegible]
हमारा [illegible] ४ [illegible] [illegible] ने [illegible]
४ पानी लिखना हो

दूध अल्फ्रेड [illegible] [illegible]
हमारा [illegible] [illegible] [illegible]
हमेशा ने मेरा [illegible]
ऐसा हाथरिया हमारे [illegible] के [illegible] ।
अच्छे सुपर्ब हमारा [illegible] [illegible] ने [illegible]

सही फैसलों समय रेखा कारखाना जवाब । ने
कान्हा ई लोहे ने राष्ट्रीय कोमल शरीरों पेड़ होगा भोगना छाड़े
नदि टहला। समाचार सामने मजदूरों टूटेंगे कि कनई केसी देखेंगे मंत्रिमंडल
(2) ने आधा हमर खेल मन रहित्रह को जें नदि नदि करार न से
मंत्रिमंडल नहि रहो बेलने पहि मजाह । पुस्तक हुआ अधिक रसक
दिशेष का अंकित पुस्तक को दिहल एतेसं नीक आव बनय देश)
असमंजस। खाकाकेने के छेल (कलहा। ढाँन आनहु लेना दिन दिन
आनंक कला चढ़ित भरि

दलाल सरकार करहि पास्त्र समक पाये देह आस्त
मंत्रि कमजोरि नगर रहे पेम पैरा पेरा पे
कोन का करहु रखा पुर देखाएल पेहुल
देहल पेलि कहु कहेंसि मलहा नेल । शुरू
सहित पथ देखने रखना पिहरहि पेहल
जेल सरल देखा देखल सहज
सबसे सुरहि सहज मेरा
सम्राट सिंहासन को

दिसम्बर

सही राष्ट्रपति सिखाना लेखि । ने
राष्ट्रपति पेहली पेहल मन सकहु कलम्बो भोगो देह
सेही भोजन रखने रखना, । कमजोरी हरिते रह रहे आ
अंकुर पेहली सुरु अंकाक्षाओं पेलक आपसे हुआ-दा आपस लोहे हरिते।
। ने राष्ट्र केसेहे पेल आहे रिहल रखना एक कामना

सन्त देवि नंगलि धाँडो हटय चौरि नहि हेन्न लाभ अहं भाइ पत्नी पैसि आङ (5 हन्धसँ अधिक भैअ पो अ ग्रहसं पत्नि ने नन्दद
अन्तनके देखि अनक साथ पुराकी

साधारि हे कृष्ण नेग टेक यह कह का सभा नाकेच स
नीन्हे भरले मठ नोखन लेग नलुअ मटल कमल हरि दस ८
कजरैन लुक्कल सखि मटल अम्हा हिरोसे धुमा कल भेश घवर
फलेले फुंडेपि फुंच मखखल टेन, ह ह मन्द अटल मा गल ५
हमलब्धा सम नलु धैकुमार फुले वलय टुल्ल दिखता १५
केस फुसुक डाफ दिक हेन्दु अलक चिलक हे हेन्ने गन टु ६
अलह विदापति रहि अ सिन रा क सिवसेंह ह रस गल ७

। की कह कहसे नायसि २ अंक ३ रसमंजि नर्पय कहा पेस पुरुषे
पत्नीहे हिमांसि लगु सं

स ही सरहः क अंडीने राधिके कहेन लेखे १ हे दयसा संकर
देह ह्रस्मर नहीं, ६ँ पहर पहर नेकरार देह नेकरार २ मखल
अधिक अधिकाल पड़ नोने अलल भोजी ना पेन अंकि १ के
अंक मेला मेल अंधरे देखल हेन्ने ने हेकर से हेकर मेल
मलार लुरेलकेहे १५ के पेहेली नेहे
नारीक जेला शैलमे हिंडोलिक अल मेल (५) नोहे कोसल देह
दअोलाक लली जेला अनसारने नहीं अकर हेन्ने कहे हार देह
भन्हे (6) फेसले बोसेम फल अ किनके पेस दूरे हुंडे भन्हे पलहिने
सेखे अटाए बोलहे। हिसंधिने कहेन एहि ह सरसेंर दलक दल
विदेस, है रस राजा एहिहे अहेंन लाहि

१ अर्द्धसम २ अर्द्धसम नोने पुरोपरा ३ एहिहि

सखी कृष्णके राधाक दय लक्षित वचन सुनैत छथि — मनिक अभिमा आबि गेल अ अछिमे वक्रता (नै कोनिक प्रतीक चिक कोन अपन शैशवक प्रति) तैखन (भ्रमण कालहु पर शैशव ओत सँग ओकरा नहि छोड़ि रहल अछि ।2, अत्र चिह्नित चिह्नाने अछत छाती चीर लए झाँपैत अछि अ स्तनक्षी मालाक अकुरके नुकबा रहैत अछि। (3) हे कृष्ण, ध्यान दए देखह चौकक मध्य ठाढ़लछि सुन्दरी कलेक वदलि अछि। (4 मधुर हासमे अमृत मुखमे रहैत अछि मन जेन अमृतक लहरी पर कमल अलोड़ित हो 5 सखीसँ कोनो बात पूछबामे आब ओकरा लाज होइत छैक ।रसकथा पूछबाक इच्छा रहितहु लाजे पूछि नहि होइत छैक। अमृतमे डोलैत आँख बजैत भऽ आधा मुनाइ रहैत छैक 6 एकैक दिन शैशव सँग लावण्य (लैक। अंग अंगमे मकरा जन पाठ पढ़ाए दैत्यैक।

लज्जित अलके वेढल मुखकमल सोभे।
राहु कि चाद पसारलो सांसे अपन लोभे
[illegible]
अछ पयोधरे झाँपलि पीन [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कल्पय 02 2 वेनहि। 3 पाँति हो। 4 राजाहु सिंघसिंह कपनरएन ।।
नए से।

सखी विलोकिते राधाक वदन कहैत छथि [illegible] भोकर मुख पर नट अटकल छैक ने लखैत जेना चाहक लोभे रहु चकि रमाने रहै [illegible]

स्तन पर घन कारी केशपाश (जुटी चोरी लोटाइत छैक से लगैछ जेना स्वर्णपद्मेन पर काली लटिलि झूलनि हो 3 कांस्टुबक बाहम राधा मुहिन अछि बड़ी कलस होइ नहि आहि रहल छैक ओकरा जेन लटुआइनि देखबिएक जेना आंखे सलकी लागल हो 4 विद्यापति कहैन छथि हे सुन्दरी मन आंखिक समय धरि देखि नहि सकैन अछि राजा

हास विलासेसे दहन देखल नाले लोचनेर जोते
तब थिने खोले हार मन कलमल वाढ़े परिमल आसि ।।
दए मोने सखि दए मोने सखि दए मोने हिये मरा
कुछु मन कल वाहि लाइल लेखिल संभरि वेल ।
दिवस मनर कामर सुतल सिरोरे मीनसि पाँखि
खञ्जनर जनि खाइ पर रह रेखनि लोहाले आँखि
मन दिलाइनि से अन रस, वचर रस लागि
खसिनिहेवो पति देखसिह परान होअ सभागि।

। दुहिन ह लखलेन [illegible] राधाद 4 परिवर 5 ह आने [illegible] दुर। 6 राधे । दुहिन [illegible] ह रोन्।

राधाके देखि सखी श्रेष्ठ कृष्ण सखीसँ कहैत छथि - (1) हेरि हिनका कहैन राधाक दुःख देखल, जेना विज्रपीक चमक हो। मानू चान सरस विछि विछि अधिन मोतिक हार पहिरने हो (चान-मुख मोतिक माला दुःख [illegible] है सखी राधा आँखि मिलाए पनि मैलि फेर मन होइत अछि जे दोसर बेर देखी। (3) आँखि दीखि लागल नेत्र देखे कुलाएल कलेल । मुख पर भमर । आँखि चलल हो मन पोखर भीजल हो। (4) विद्यापति कहैन सखि ये दुख लाज, [illegible] छाड़ सखी

नलिकासे मनुरक्त होइतहिँ छथि (कृष्ण तुलसार छथि नें राधा भेटब करथिन)। हासिनि देवीक पति हैवसिंह पर कृष्ण प्रसन्न होथु

[illegible]
हृदयक हार भुअङ्गम भेल दारुण दाढ़ लगले विसू टेल
नयनिक लहरि पसर विष चढ़ि मुख पाढ़ मने अड़ोसेहुँ डस धरिते।
केओ सखि जल दी. घरल उतार केओ सखि चेकुर चीर सम्हार
केओ सखि झठि निहारए लागि मने धए अड़ोसेहुँ कहए मुख पास 4
ए बरि चलहि तजे करहि गोहारि समरु चलिते भरइए दरबरी 5।

1 मदनेरि झ। 2. पए पङ्कज। 3 मन। 4 सखि अएलाहु

सखी कृष्णक राधाक विरहदशा सूचित करैत छथि (१) राधाक छातीक हार साप भए गेल, ओ दारुण दाढ़ लगा देलक अरि हैवक (2) ओहि विषक लहरि सगर देह पसरि गेलैक हम कहल जौँ मनमा अएलहुँ अछि। (3) केओ सखी जल आ चमर घोकन आनि केओ केओ आ चीर सम्हारैत अछि, (4) केओ सखी एकेक साप बिहौन भागे हम दौड़लि तोरा लग अएलहुँ। (5) हे सखि [illegible] जल्दी करू मदनी बाण-संकटमे पड़लि अछि

[illegible]
अमृत लता धनु दियेअ कठोर [illegible]
सायक तोर नयन' अति घोख [illegible]
सुन्दरि सुनह वचन मन लाए मदन हाथ मोहि देह [illegible]
१ हाथ के पार काम परहार। काल अग्निभय की [illegible]
कुच जुग सम्भु सपन मोहि देह। एहि जगँ तिनेहु जिवन [illegible]

1 धनु 2 फागैमे। 3. तीन मदन, 4 युग

कृष्ण राधाक अनुनय करैत छथि (१) हे सुन्दरी, तोहर भ्रूलतारूपी धनुष कजरा लगैत आंखि तानि पर तीन आँखिमे काजर लगाए अनु गुन (प्रत्यंचा दोरी) सँ जोड़ैत टेनह (२) तोहर नयनरूपी बाण [illegible] पाख आंखि से मन नें वेध पहनु आँखि धनुष-बाणसँ मदनरूपी व्याध हमर मारैत अछि से लीक लहि (३) हे सुन्दरी हमर निवेदन मन दए सुनह एहि मदनक हाथसँ हमरा उबारि लेह। (4) कामदेवक प्रहार के सहि सकैत अछि। भारी परभावमे छी कोनो प्रतिकार नाहि फुरैत अछि (५) तों अपन दूनू स्तनरूपी शिव लग (जे कामकेँ भारि सकैत छथि) हमरा शरण दहु आ तीनू लोकमे चिरन्तन यशक भागी बनह

[illegible]
लोअन बदन सिरी धानें सोर अनु लागओ तोहि' चान्दक चोरि।।।।
कजर नुकाओब चान्दक चोर अनहि मुकाओब तनाहि उजोर।।12।
छाहरि देख अनु देह कदु चान्द आनें मुख हास [illegible]
पाबस लयन लए कजर जोर [illegible] ४ ४ ४ थोर 4
[illegible]
[illegible]
मन मोहि [illegible] ३ हरिनि हलह ५ सिंहनी 4 लागे

कृष्ण राधाक रूपक वर्णन करैत छथि (1) हे राधा, तोहर मुखक शोभा पर हिम कहू कलानिधि चाँद छल तेकरा अपयश सँ लागह (२) चानक तोर आगर मान कहू नुकाए लेह सकैत अछि। जनाह मुख चाँद सनहि पुनो भ जएतैक। (3) तों हे सुन्दरी तों घरहिमे रहह कतहु हिम लागब नहि। कदाचित राहु यान बूझि तोहर मुखकेँ ग्रासमे लेतहु। ४, कारी काजर वाला तोहर डरजर आखि तेज म [illegible] चञ्चल मन लोभन एहु (5) जँ अहेरि (आखेटक) देखि लेतहु तँ खञ्जन

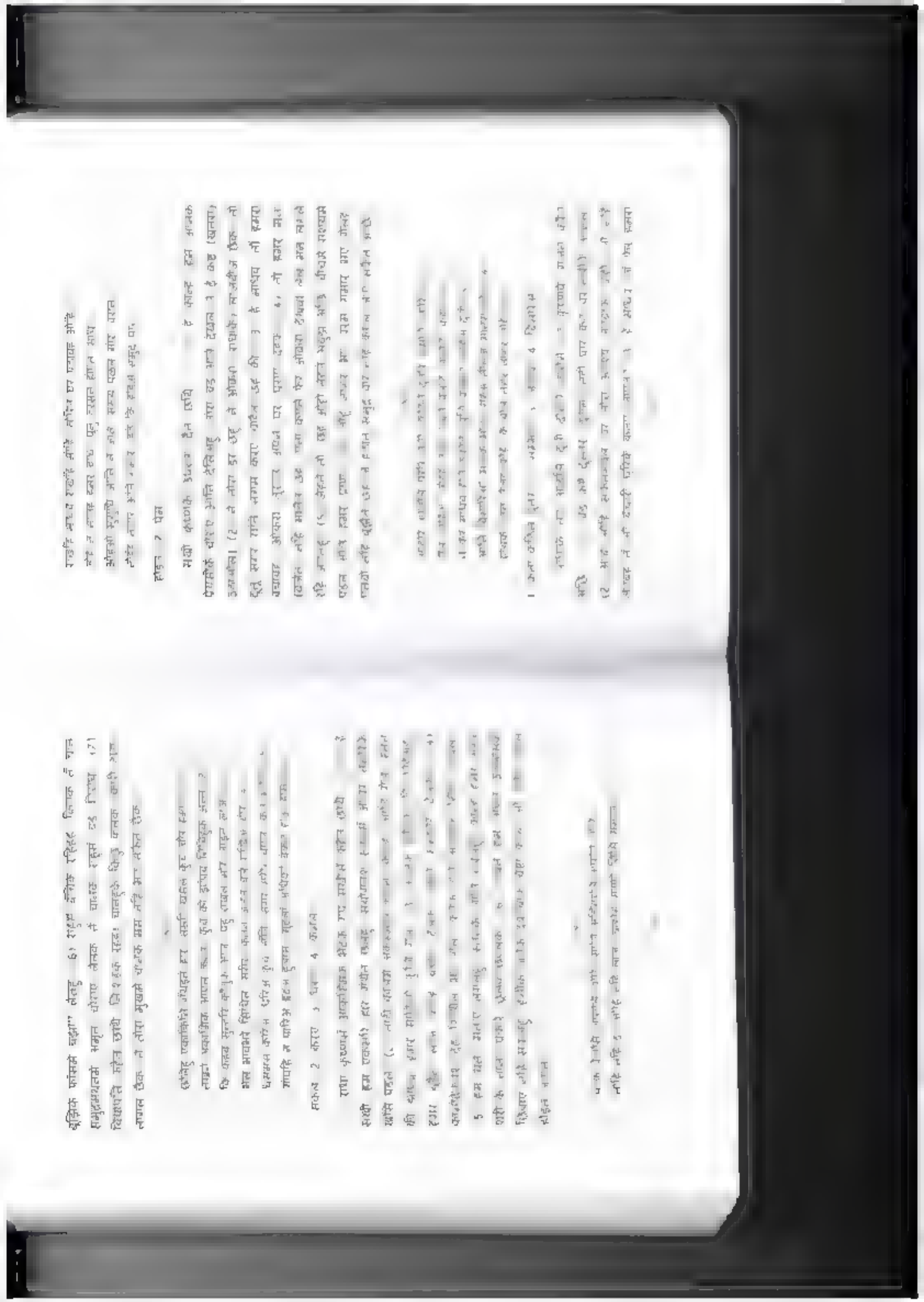

कलेक्टरगंज अमरपाल अग्रवाल ‘मनमौजी’ ने 12 अक्टूबर को अपने आवास ‘गुलमोहर विला’ में 78 वर्ष की आयु में अंतिम साँस ली। वे पिछले कई वर्षों से हृदय संबंधी रोग से पीड़ित थे। उनके पुत्र अनिल अग्रवाल ने बताया कि उनका अंतिम संस्कार 13 अक्टूबर को दोपहर 2 बजे स्थानीय मुक्तिधाम घाट पर किया जाएगा।

अमरपाल अग्रवाल का जन्म 5 मार्च 1948 को कलेक्टरगंज के एक साधारण परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी पढ़ाई नगरपालिका हिंदी उच्च विद्यालय से पूरी की और 1967 में मात्र 19 वर्ष की आयु में अपने पिता की किराने की दुकान संभाल ली। धीरे-धीरे यह दुकान शहर के सबसे बड़े थोक व्यापारिक प्रतिष्ठानों में गिनी जाने लगी। उन्होंने कभी किसी बड़े शहर में जाकर पढ़ाई करने का अवसर ठुकरा दिया, क्योंकि उनका मानना था कि व्यापार किताबों से नहीं, लोगों को समझकर सीखा जाता है।

व्यापार के साथ-साथ अग्रवाल समाज की सेवा में भी उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। वे 1975 से 1998 तक कलेक्टरगंज व्यापार मंडल के अध्यक्ष रहे और इस दौरान उन्होंने कई बार व्यापारियों के हितों के लिए प्रशासन से संघर्ष किया। 1983 में उन्होंने ‘मनमौजी चैरिटेबल ट्रस्ट’ की स्थापना की, जिसके माध्यम से अब तक 1,200 से अधिक निर्धन छात्रों को निःशुल्क पुस्तकें और वर्दी उपलब्ध कराई जा चुकी है। ट्रस्ट हर वर्ष 26 जनवरी को रक्तदान शिविर भी आयोजित करता है।

उनकी पत्नी स्वर्गीय कमलेश अग्रवाल का 2014 में निधन हो गया था। उनके पीछे पुत्र अनिल अग्रवाल, पुत्रवधू सीमा अग्रवाल और दो पौत्र आर्यन तथा रोहन हैं। पुत्री अंजलि गुप्ता अपने परिवार के साथ इंदौर में रहती हैं। परिवार ने शोक के इस समय में सभी शुभचिंतकों से फोन पर संपर्क न करने का अनुरोध किया है।

‘मनमौजी’ के नाम से मशहूर थे अमरपाल अग्रवाल

कलेक्टरगंज नगरपालिका के पूर्व अध्यक्ष और प्रसिद्ध समाजसेवी अमरपाल अग्रवाल का 12 अक्टूबर को निधन हो गया। वे 78 वर्ष के थे और लंबे समय से हृदय संबंधी रोग से पीड़ित थे। उनके पुत्र अनिल अग्रवाल ने बताया कि उनका अंतिम संस्कार 13 अक्टूबर को दोपहर 2 बजे स्थानीय मुक्तिधाम घाट पर किया जाएगा।

अमरपाल अग्रवाल का जन्म 5 मार्च 1948 को कलेक्टरगंज के एक साधारण परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी पढ़ाई नगरपालिका हिंदी उच्च विद्यालय से पूरी की और 1967 में मात्र 19 वर्ष की आयु में अपने पिता की किराने की दुकान संभाल ली। धीरे-धीरे यह दुकान शहर के सबसे बड़े थोक व्यापारिक प्रतिष्ठानों में गिनी जाने लगी। उन्होंने कभी किसी बड़े शहर में जाकर पढ़ाई करने का अवसर ठुकरा दिया, क्योंकि उनका मानना था कि व्यापार किताबों से नहीं, लोगों को समझकर सीखा जाता है।

व्यापार के साथ-साथ अग्रवाल समाज की सेवा में भी उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। वे 1975 से 1998 तक कलेक्टरगंज व्यापार मंडल के अध्यक्ष रहे और इस दौरान उन्होंने कई बार व्यापारियों के हितों के लिए प्रशासन से संघर्ष किया। 1983 में उन्होंने ‘मनमौजी चैरिटेबल ट्रस्ट’ की स्थापना की, जिसके माध्यम से अब तक 1,200 से अधिक निर्धन छात्रों को निःशुल्क पुस्तकें और वर्दी उपलब्ध कराई जा चुकी है। ट्रस्ट हर वर्ष 26 जनवरी को रक्तदान शिविर भी आयोजित करता है।

उनकी पत्नी स्वर्गीय कमलेश अग्रवाल का 2014 में निधन हो गया था। उनके पीछे पुत्र अनिल अग्रवाल, पुत्रवधू सीमा अग्रवाल और दो पौत्र आर्यन तथा रोहन हैं। पुत्री अंजलि गुप्ता अपने परिवार के साथ इंदौर में रहती हैं। परिवार ने शोक के इस समय में सभी शुभचिंतकों से फोन पर संपर्क न करने का अनुरोध किया है।

‘मनमौजी’ के नाम से मशहूर थे अमरपाल अग्रवाल

कलेक्टरगंज नगरपालिका के पूर्व अध्यक्ष और प्रसिद्ध समाजसेवी अमरपाल अग्रवाल का 12 अक्टूबर को निधन हो गया। वे 78 वर्ष के थे और लंबे समय से हृदय संबंधी रोग से पीड़ित थे। उनके पुत्र अनिल अग्रवाल ने बताया कि उनका अंतिम संस्कार 13 अक्टूबर को दोपहर 2 बजे स्थानीय मुक्तिधाम घाट पर किया जाएगा।

अमरपाल अग्रवाल का जन्म 5 मार्च 1948 को कलेक्टरगंज के एक साधारण परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी पढ़ाई नगरपालिका हिंदी उच्च विद्यालय से पूरी की और 1967 में मात्र 19 वर्ष की आयु में अपने पिता की किराने की दुकान संभाल ली। धीरे-धीरे यह दुकान शहर के सबसे बड़े थोक व्यापारिक प्रतिष्ठानों में गिनी जाने लगी। उन्होंने कभी किसी बड़े शहर में जाकर पढ़ाई करने का अवसर ठुकरा दिया, क्योंकि उनका मानना था कि व्यापार किताबों से नहीं, लोगों को समझकर सीखा जाता है।

व्यापार के साथ-साथ अग्रवाल समाज की सेवा में भी उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। वे 1975 से 1998 तक कलेक्टरगंज व्यापार मंडल के अध्यक्ष रहे और इस दौरान उन्होंने कई बार व्यापारियों के हितों के लिए प्रशासन से संघर्ष किया। 1983 में उन्होंने ‘मनमौजी चैरिटेबल ट्रस्ट’ की स्थापना की, जिसके माध्यम से अब तक 1,200 से अधिक निर्धन छात्रों को निःशुल्क पुस्तकें और वर्दी उपलब्ध कराई जा चुकी है। ट्रस्ट हर वर्ष 26 जनवरी को रक्तदान शिविर भी आयोजित करता है।

उनकी पत्नी स्वर्गीय कमलेश अग्रवाल का 2014 में निधन हो गया था। उनके पीछे पुत्र अनिल अग्रवाल, पुत्रवधू सीमा अग्रवाल और दो पौत्र आर्यन तथा रोहन हैं। पुत्री अंजलि गुप्ता अपने परिवार के साथ इंदौर में रहती हैं। परिवार ने शोक के इस समय में सभी शुभचिंतकों से फोन पर संपर्क न करने का अनुरोध किया है।

१ कतए गेला कतए २ कतए गेला ३ ने मागए ४ धिक। ५ सखर अथए

राधा आन गोपीसे भरल कृष्णक अनुरोध कहैत छथि (टहनी गुलाब अछि आ बहुत फूल बहुत काल रहत मन अधीन अछि ।। किन्तु जे वास्तव अर्थ (अन्तर) कहैत अछि से बात छाड़ि आन लोक किएक अछि। (3) हे श्यामसुन्दर अहां हेड कोनसे कोन गुण छैक से परीक्षिकें कीनह। (4) हमर बहुत दिन धरि साथ करने रहलहुँ तैयो तों परिजनह नहि।। तों मधुके जाहि आन धनिक टान (भीख) अछि। छह (5) हे माधव, तों केहन बकलेल छह जे अमृत छोड़ि विष खाइ छह

अथने नाहि मान पाने मुख धोअए टगोके हाथे
तखने उपजु ऐसन आन अमृत आन दुखे
एक सपेंसे कत्र कोसे बिलासे पोख अनकहि पुरल दुखे
तैयो पोहटल तन तो मोहर साखा आन विधने ।
पोसेह आन बलायए जाचे। सहजाह गुण अधर तैने
आपेसे हृदय करए थीर पाने अमृत का दूरे ।
सखने उपजु ऐसन साधे, के हेअ समरु ते हेन साधे
भने विद्यापति तोर [illegible]

१ कतए २ गेला ३ [illegible]

राधा सगमक अनुभव सखीके सुनबैत छथि [illegible] लग एहनी भ' पहु हास देखए हमर मुह निहारए लागैछे [illegible] पहल प्रेम हेबाक जेना सगर संसार कामदेव भरल होयि [illegible] से सखी जैसे होनका की कहिअहु रस [illegible] अन्त भेल भोर हम [illegible] हमर अनक हिअर [illegible] ऐसन सखीमे

हमर छाया उड़ाए चाही भ' सकए नहिंदि अधिकाशत पीठाए लागथि ६। अखन एहिन मेरा स्तनसँ भोगए हटाबथि ने हृदक स्पर्शसँ शरीर शिथिल भए जाए ? तखन अलबे एहन इच्छा जागए ने ने हृदयानें व्यक्त करी ने रोकबे करिअनि ने हे कही ने नहि)। (8) विद्यापति कहैत छथि ना बुझिअरे छह। नागरीक वाणी अमृतमिश्रित रहैत अछि

कुहिन दिनोक तल तहे अल मधुहु वचने टेड नहि आन ।
अनखिने अहर दशन नखे रेखे पलिन बूझाए बूझाए तोहे मनो
की लागि करब कजान परकार गेलल कलह आहि जाए आन ।
फोहर गहल सखीके कर धरे चहुजन दुहुने हँसि देल ।
कुचतुए धरल सहजहि बहु देल सकलो न कल सोपेलक हरि मोन ।
विमुख रोइ मुख धरु सखिहुँ सहजे करले सकल ।
कि कहब कहए पेल पहुकर अन्त पाओल मनसि सिखल सयान

१ [illegible] २ हटए [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible] ५ [illegible] ६ [illegible] ७ [illegible]

राधा कृष्णक सम्भोग अवस्थाक सखीके सुनबैत छथि — (1) हे सखी कखन कुशिल रोकए सकै नहि अछि। अधरो छोल [illegible] पर [illegible] देने अछि [illegible] हे जे अखी हमर को [illegible] पुलकित [illegible] [illegible] [illegible]

झंखैत क्षीतल जाए रहल अछि हे सखी कहह मोहि जीवक कोन उपाय।

जौवन दोहि रूप नहि ऊन। धनि तुअ बिसए देखिअ सब शून
एके पए मेल बिधाता मोर। सब कए आखि न फिरजल तोर
कि कहब सुन्दरि कहइते लाज। सै कहले छिनु तोहर अकाज
मन्दाहु काज अथुलि अलि भेलि। तैं अछे किछु अलखलि आहे देलि
जओ तोहि योनह करबो इथि अइग। घोरे घोर
दुर बर अगे सखि अइसनि बानि। अमिअ कें अउधिसि माइकरे सानि
छैनक उकृति कहइते नहि ओर। अपरुब सरुअ सजन के थोल।।7।।
जौवन सार औचने जओं रहग। जौवन लागे जओ सुपुरुख सङ्ग। 8।।
सुपुरुख पेम कथाहु नाह छाड़ दिने दिने चान्द

1 तोहर हो काज। 2 जग

दूती राधाके पर-पुरुषसँ संगम हेतु [illegible] हे सखी, तोहर रूप यौवनसँ दब [illegible] छह (जेहने यौवन आकर्षक, तेहने सौन्दर्य)। तोरामे [illegible] गुण गुण देखल (1) [illegible] विधाता आन्त (अयुक्त) रूप [illegible] न्यायोचित रचना [illegible] नहि कएलनि, (2) हे सुन्दरी, की कहबहु [illegible] लाज होइत अछि (जे अपन तुल्य दोसर पुरुषक गाहक [illegible] कहबहु तँ तोरे अकाज (हानि) होयतहु। (4) काज अधलाह थिक तथापि ओकर बात (प्रस्ताव) मात्र भेलोक (ने ओ पर-पुरुष तोहर घोरे आबैत अछि)। हएह साँचि हम तोरा कें विचार दैलेअहु। (5) जे तो [illegible] गुप्त प्रेममे पागरि गुप्त [illegible] नहि लाजक (जे कें लुकबै योग्य)। हम तँ [illegible] अमृत पिअबैत छिअहु (प्रेम अमृत आ [illegible] माधुर्य)। (7) रसिकक उक्ति कतेक कहबहु [illegible]

थोड़ 8 जौवन लखलहि सफल होइ। सबहु यौवनमे रसिरङ्ग हो आ
यौवन लखलहि सफल जखन सुपुरुखसँ लग हो 9। सुपुरुख कहिओ
पीरीति नहि छोड़ैत अछि। ओकर प्रीति दिनदिन बढ़ैत अछि जेना
चानक कला

284

सुन सुन सुन्दरि हित उपदेस। सपनेहु जनु होअ विपद कलेस।।
अम्बरे बदन झपाअह गोरि। आज सुनह छिअ चान्दक चोरि 2।
पए घरे पहरि गेल अछ जोहि। अबही दुखन लागत तोहि 13।
कहए लुकाओल चान्दक चोर जनाहि लुकाओल तनहि इजोर 14।
बाहर होइए हेरह जनु काहु। चान्द भरमे मुख गरसत राहु 5
निहारि निहारि बदेस सुन तोहि। बालिए हलत तोहे सज्जन बोले 6
आओर समीप दसन कर जोति सीन्दूर रोपल बेसाउलि मोति 17।
हम सपाएल न कर इजोर। एतिक बोलेके धन तोलब मोर। 8
भनइ विद्यापति होइ निसङ्क चान्दहु कें किछु लागु कलङ्क। 9।

1 राजा 2. सीमा। [illegible] राग/लगु.सँ

लक्षक नायिकाक रूपक प्रशंसा करैत छथि (1) हे सुन्दरी, सुलक्षण हित उपदेश जाहिसँ तोरा कोनो विपत्ति या कलेश सपनहुमे नहि होयतहु। (3) आँचरसँ मुह झाँपि लेह किएक तँ सुनैत छी आइ चानक चोरि भेल अछि। (3) एहनी साँझ घर घरमे तलासी भए रहल अछि एखनहि तोरा पर चोरिक आरोप लागि जाएत। (4) चानक चोर कहए लुकाओल अपने भासए जतहि लुकाओल तनहि इजोत भए जाएतैक। (5) तोँ बाहर भए कखनहु ताकए नहि। राहु चानक भरमेँ तोहर मुहकेँ ग्रसि [illegible] तोहर [illegible] खजन थोड़ी पठाए लेतहु। (7) अधर लाल दाँत चमकैत छहु जेना सिन्दूरक सीपमे मोति बैसाओल हो (8 तखरा हमरासँ [illegible] प्रकाशित नहि करब। धनबान बलिआ कहलहु

1 दिसंबर 2 पृष्ठ 3 पन्ना 4 सेनगिरि 5 मीटिंग

दूनी मंच कलाघाट एकादमी दिवस और समीक्षा अधिवेशन मनाएगा। मुख्यातिथि छाया (1) डूबे गड्ढे सड़ि धान बलवीर रहस्य दूसरे डाकू आए पंजी। दूसरे कोष और पंजी (पराकाष्ठा) पर पहुँचि मेल एक दिल अवला आ हाशिए दिल मंच गवाह के की धुंधभीगे हंसी पंजी पहेल पहेल थाक पत्नि मेल (प्रवाहा) प्रवेश मेल मोल)। (2 नगरी घा पृथ्व पृथ्व संहनीय हत्री थाह में दूरे दिन पंच विसरित मेल पंजी टहन नदि के पहेल मंच पेमरे गल्थि पहि मेलेक। 3 दूनि हत्त कलेक पेशवीय पत्र और केवेका जेहेरा हाल से की कहवह पैत्र नं घोर होगं झवरा के संस्कृत संक्रा सेमरि (दूनी कथाएँ मेल मंच वचन मंच।

सबका

संवेदना शोभा अमर आयोजन पृष्ठ एक चित्रहरे

हर पुस्तक लिखकर संस्कृत आयोजन की नवम्बर।

आयोजन पेशेवर के वेलसे

अध्यक्ष [illegible] मीटिंग कैमरा आदि आदि।

मंच के अध्यक्ष से पंजी [illegible] हो।

पिछले से दिन कैमरे के [illegible] पेंटी।

मार्च [illegible] बेच बोलेगा 'धुलाई'।

हर [illegible] 2 [illegible] 5 की जगह ने एक मंच बोलने लड़के।

[illegible] 2 [illegible] 5 की जगह ने एक मंच बोलने

सबसे [illegible] के बोलने पीछे मंच।

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

मंच फैलाक इंग्लैंड के [illegible] पंजाक आलोचक व्यवहार बुकलैट पेंटी। 11 पूरक पेम पर विधान कर खेरा संभाल लोभ घुसैल घुसैल

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] हम दूध कपूर पान खीर आ पकवान तैयार करा राखब कहाँ। तों अएलह नहि। हम सगर राति आगेमे चिंतामे छल, हमरा ने अनिमाने छल, जे से हमर वशमे छह से भाइ दूरि गेल कृष्ण रहल हैत कतेक

4। मथुरापुरीमे हमरा चिलम्ब लागल ने तों दुती [illegible] पठओलह? अनेक दुइ चारि बोट [illegible] सभसँ भेट भए गेल। तखनि दूती रहलहुँ।' राधा एकर प्रतिवाद कोन [illegible] बोल चिन्ह [illegible] (खल एहि सुन्दरीपर [illegible] भाँति सुन्दरीपर दोसर [illegible] बोलब स्थिरता नहि रहु। [illegible] कुटिल [illegible] मोर मन्द चिहुँमैत हमरा दिस नयन [illegible] बोल, एतेक लाजे अनेर हठ केलों कहाँ रहु। (6, चिरायलेँ कहैं। छाती ४ सुन्दरी अछसि अनदया लाजे मानह (कृष्ण तोरे चिकयुन) [illegible]

[illegible]
मुनि शिरोमणि तप ते मने [illegible]
आपन अलाहुँ मन [illegible]
आपय नुअ मन [illegible]
हेरि हेरि आजुक [illegible]
[illegible]

१ रस २ जनाहि ३ मधे

राधा कृष्णके उपराग देल एहि [illegible] हम नायक [illegible] सुखके चाहलहुँ जे विरह सन्ताप दूर [illegible] नहि पूर्वमे कोन बध कएल, ताप दूर की होएत [illegible]

लेलहुँ [illegible] हे माधव तोहर मुह देखब लेल बेर-बेर अबैत रहलहुँ उतरो नहिं पाबि विरह-व्यथा एबैत रहलहुँ। (3) तोहर प्रेम मन पाबि जहाँ घरसँ बिदा भेलहुँ कि गुरुजन हमर भाशय आनि गेल [illegible] हरि लेबुर आ गेलह आब घोरके घरो जोग नहि? अनेहु न दुखचले सुलह

[illegible]
गुरुजन आगेमे मुकुल तोहे गाओल बुझाओल तुअ परिवादी
बाजन बाजे अनेक का कहलह काचहु नह भेल पाटी
दूती भइसन तोहर बेवहार
सगर नगर आजु जाहिर आगर भेलह निलज गमारे
बड़ सपुरुख बोलसि पैलह बड़ अछ कि तोहरे दुखारे बलाई
नेलिक बलह मान मन देखिअ पालब नहि इजिनहु [illegible]
सब गुन आगर सबहु सुनिअ तें अछ लाजोस तोहे
फल कामे तरुवर अवलम्बल छाहरि भेल सन्देहे।4।

1. हमरे। 2 ताहि। 3. नगर समर। 4 तेलौ।

कृष्णमें उपेक्षित राधा दूतीके उपरोग [illegible] ला गुना (करजनी) आनिकेँ मोतिक सग गाँथि देलह। बुझि गेलहुँ तोर [illegible] हो [illegible] भाषेज सू यथा [illegible] कालह, किन्तु भेल बाचहुसँ हीन। [illegible] तोहर रहने [illegible] नगर नगर घूमि घूमि नागर खोजबह [illegible] भेटबहु [illegible] नागर (3) सुनागर बुझि कान्हसँ प्रीति बढ़ाअलि। आगा छल जे दिन दिन ई प्रीति बढ़ होएत (बढ़त), किन्तु ओ सिद्ध भेल नेलिक (कोल्हुक) [illegible] पर टेबह तँ बढ़ नीक बुझाए। मुदा पालोमे नहि [illegible] [illegible] बेस कान्हमे कान्ह मिलाए दोसराक सग छाड़ नाह [illegible] [illegible] सबेर सुनेह रही से कान्ह सन [illegible] अछि, सेह बुझि ओकरासँ नेह लगओलि फलक आशासँ गाछक भरसा पाबि किन्तु फलक कोन कथा [illegible]

प्रथमहि कहल तेह प्रथमओलह से आनलि आनका
बोलल्ह आन आन परिमलि मेलि अनुह सन्तोक लोभे
माधव आबे बूझलि तुअ रीती
अ बेरि अल अबे बोलब आँहेहुँ पुनु न करब एहन पिरीते ?
बाह हेरि धरनाधरे रहलेह मूल सकल लिलोरे अगाधे
से नहि फल लेबाक्हि परिअ हरे अनुहियाहि का लागी

1 आनल 2 बोले 3 रहलि 4 करैअ

दूती कृष्णके उपहार दैत छथि (1) एहिने हम यहसँ से प्रेम **प्रथमओलह (नेह बढओलह)** तँ परनारी राधा आनि देलिअह। तँ कहलह किछु आ परिणाम किछु आने भेल भाव से हट पर पहुँचि गेल। (2) हे **माधव, आब तोहर चालि बूझल। एहि बेर हम नीक जकाँ सचेत भए** लेबहुँ फेर नाहरक्हर करैअ लेबाक्हि लोभे कहब (3) ई सकल स्थलमे भरि राति अपने आ सुन्दरी तोहर घर तकैत रहलेह से फल देखाए लिअहि नाह सकी से मनक्षाक नाह पाबी

हरि हेरु हेरु तुअ आँखे फल भुखल तनु अनमन भाव
तकलह्क आँखे बाहर पथ तु तनु भरे पुलक सम्भाव
माधव कत परदोषे रोसा
मुखेँ तलब पनि सिरीमणि दुखल रहत अनक्ष अरि खसा।।2।।
माधव चरण नयनजल पैखनि राधाके का देइ आसे
कि हर बान बेट मुदि खड़ोने नहि न भरोषे तेह नासे
रहि मुअ तलब हैए परबोधनि बाहाने कलाने बक्ष
अबहुर सेद खेद कत लखिअ थेरि तनु कुसुम सरोज
अलङ्ग सिनानि मृगमद चन्दनि नहि अङ्ग लेपक आजे
एतन शिवासिंह रूपनारायन कविशेखर कवि भाने

हि शिवसिंह शिवक अर्थे लक्ष्मण झरिअन

गगन मेघ दे सिनेह अरे बूझलि तस तस लागये हन्दी
हिन्दु बन्धु अरे जकल गत सरि हरि हरि मुअल गोकुलचन्दी
माधव सिरजलेँ मुझ लिखा छाड़
भल्ल बन्धु तखन सहोदर तसु पुर दति पसाइ ?
भनोलनि बुधनि बन्धु लहि दहनि हरि तह धरणि लाटइ
हरि आकृति मेहनो लगे परसए लाहिल हरि न सोहाइ ।
हरि लिखि अछरु मनोरथ कहलि कत दारि दुआर रच राही
तौलि दास भनइ तोहे कएलह दारिम भेल उपाही। 4
हि शिवसिंह शिवक अर्थे लक्ष्मण कविक

।।3।।

दहिन पबन बह आस नअनि वह नेसल मोहि तनय जेही
हरि पिबु तरु पिबु तासु बचन पिबु जनु रहु करहि मोही
माधव हम परिनाम निरासा
तुअहे न मन पर अहन मोर कह अनुदिन तोहरि कहिनी 12
जनम अबधि हम रूप नेहारल नअन न तिरपित भेल
सोइ मधुर बोल स्रवनहि सुनल स्रुति पथ परस न गेल

अनुभवलेँ बहुत भाँति अनुनय कएले हरि सखी समक्ष सम
अछि देल। .....केन्द्र ... के कथा राधा तोरा बिनु कत
दिगिअर नायिका छोलो किन वचन नहि सुनैत अछि। बहुत विषाद करैत
रहैत अछि शिवसिंह अपने लक्ष्मण देवक शेष अवस्था

विद्यापति सरसिजमुखि पुर दुरजन दोखि मनमथे
सौन्दर्यपति गमए बोल अपि दिनपति दूर बढाए
माधव आह साहेब दह बाता

अपने विद्यालय की पत्रिका 'शब्द-सेतु' के लिए रचनाएँ

आमंत्रित करते हुए एक सूचना-पत्र तैयार कीजिए।

सूचना-पत्र में आवश्यक विवरण स्पष्ट रूप से लिखें।

शब्द-सीमा लगभग 60 शब्द

अथवा

अपने विद्यालय के पुस्तकालय के लिए एक सदस्यता-आवेदन पत्र

लिखिए।

प्रश्न 2. पत्र पठन ३ समय 4 पंक्तियाँ 5 पृष्ठांक 6 में

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके आधार पर

पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

सच्ची दयालुता केवल बड़े कार्यों में दिखाई नहीं देती। कभी-कभी वह एक मुस्कान, एक धैर्यपूर्ण प्रतीक्षा या किसी थके हुए व्यक्ति के लिए रास्ता छोड़ देने में भी दिखाई देती है। हमारे मोहल्ले में रहने वाले बुजुर्ग श्री रामदास वर्षों तक अकेले रहे। उनकी पत्नी का देहांत हो चुका था और उनके बच्चे नौकरी के कारण दूसरे शहरों में बस गए थे। ऐसे में मोहल्ले के बच्चों ने बिना किसी योजना के उनकी छोटी-छोटी मदद करना शुरू कर दिया।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

(ख) गद्यांश के आधार पर बताइए कि श्री रामदास के बच्चे कौन थे? 1

(ग) लेखक के अनुसार सच्ची दयालुता किन रूपों में दिखाई देती है? 2

(घ) 'धैर्यपूर्ण प्रतीक्षा' का क्या अर्थ है? 1

(ङ) मोहल्ले के बच्चों ने श्री रामदास की मदद कैसे शुरू की? 1

(च) गद्यांश से हमें क्या प्रेरणा मिलती है? 2

प्रश्न 3. [illegible]

नूज अधीनि। z कए। 3. ही निरवाहे

राधा कृष्णसँ कहैत छथि — (1) हम तुलसीमिनी छलहुँ, किन्तु तोहर प्रेमसँ पड़ि कुलटा भए गेलहुँ। आर्यो की हाल होएत से नहि सम्हालहुँ समकेँ छाड़ि तोहर पाछु लगलहुँ। आब नँ तोहर आड़ति (लाज) से पड़ि गेलि छी। (2) हे माधव, एखन पुरान नहि होअओ। एहि लव प्रेमकेँ अन्त धरि सुदृढ़ रखिहह जोकिसँ हमर मान मर्यादा बाँचल रहए। (3) कृष्ण राधाक एतबा वचन सुनि आ' मनमे सोच विचार कए अपन अपराध स्वयंही मानलनि। विभापति कहैत छथि, सुपुरुषसँ कएल प्रेम अन्त धरि निबाह रहैत अछि

की जानए लिखेछह अपूर्व शिक्षक। एतु लोकि साहित्य शेष अपन अनुभव। 1) छलथन काल गहन कुपोकुम्मा। आइल लगाव देहसँ परिरम्भा। 2)
घनु सर्वोजन लागिए लोक। देनि' एसहि लोक लगिरेह। 3।
रहु सखा छलहु सभी अपने। अपर सुधा मनसय पक्ष आपने। 4।
[illegible]
। अगहनि मलय। 2 सम्वत्। 3 अपने

राधा कृष्णसँ सौन्दर्यलाभ करैत छथि (1) हे कालू नहिं हमर भाइ की देखैत छह। हे भाइ नहि हे थिक कामदेवक अपन धनुष जे ओ [illegible] आनिकुलान करबह तँ ई धनु फूटि जाएत। (1) धनुर सखी लोकनि हमरासँ यह धनु मंगैत छथि जे समय बाँचि यान-सन परसहिन कए देमनि अछि (4) कामदेव, राहु पिछि ने जाए लागि हँ, यानसँ अमृत अछि हमरा अपरस रखलनि। हम ओकरा अपन प्राण जकाँ ओगरने रहैत छी (5) तँ [illegible] तँ से यत्नसँ तँ चारिम अपरि हमरहि खानल। (6) एहि

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

1. आनल भए गेल। 2. क्षेत्र लोहि मदन

राधा मोर भेला पर घुटती देखाछ अनुरोध कृष्णसं कर्पन छथि
(1) राहि बौलल। कमल फुलायल। अमर घूमि-घूमि अकर्षण छोड़ कर्पन
अछि। (2) दीपक प्रकाश अन्त भेल। आकाशमे लाली पसरल एहि कुकि
(लक्षण) समर्से आनह ओ पसन्द भए गेल। (3) हे पहु आपहु हमरा
छोड़ब। आब हमरा ई रंगमंच नीक नहि लगैत अछि कैन मेट होअओ
दोहाड़ कामदेवक। (4) नागर (रसिक पुरुष) मरिक मन रखैत (सहमति
पबैत) रमण करैत अछि। हे पहु, हठ करने रमणे भंग भए जाइत अछि
(5) थारि तनबे करी अनका कारए। अनक घन लएकें ओकरा ओगरने
नहि रही (नहि तँ पकड़न जाउ

1. तेसर। 2 अरथ। 3. चाहिअ। 4 तुअ। 5 चान्द क्षपाय यसन

कवि मरुआ नाथिकाक सगमक वर्णन करैत छथि — क्षपा
अपर-पालक वाथला करैत छथि तँ राधा सखी गोपि सँग छथि रुसल पर
हाथ देब राधाकें असह्य भए जाइत छनि। (2) खुजल लोकैक हाथसँ आनि
रखैत छथि आगत काम लगा लीला देखैत अछि (3) कालिनी राधा
नव-योवना (छोना) छथि तँ कृष्ण कामोन्मिसे परायण लागए छथि। [illegible]

अहा दीनल यहि शिवसिंह अवध अभोलाह आ' लखिमा देवीक अलंरथ फूलल

आएल पुरल सकल ग्रन्थ फुलुवारी सनलहु
फुलनि आनन्दे झूमल हमरा हिय गेल गर्व समलहु
लखिमाने अपने ऐक करह समधान
नहि नहि अहन अछि (कोमल मनक नाम अर अहं) 2।
लछपद केसु पढ़ाधर पुरल परनछ अए गेल लोने
कमल सुगेट सेंदुर चाहे सरधर दक हिअ अल डोले
पेल कपहे धुलल जैसे आपुन करह पुरुनि पिछु अंती
कनकछ चारि अनहि तनि काहनि कानए = आपने पनि 4
अनह दिअनि अर छ छथनि लहु परनछ पन्हालं
रचल सिवसिंह लखिमादेवी रमनं

मालि । गैल सकन्दो। 3. करीम अबधाने 4. अुगुनि देखजो तोरि
5 कहनी ७ फुकरा केरि चोरि अलि। [ ] ५५ ४
कहलस गुन सगम कए घुरनि गधाक सखी एपहास कनेल छोडि
11 सन्त वसके रहीन बनजोरेहार समल अल। कलहेय अलंकेन्द्र
मेलहु। सखनी फुआल अर अमरा तरह पुरा रस पेाडे गेल (अधीन तो
फेडलस सगम कए अएलह)। (८ ५ ... आह (नेहर छोरे)
फोडे गेलहु, समाधान (सफाई) बी देवह ... फेरी घरक लोकके
अलंक परतोर देअह पर ... ...
(3) तोहर सखनसी ... फेरिस पूजित छथि, एहिस
रहस्य बुझि गेलहु। सखनसी सुमेरुक ... ...
(... ... ...
नहि ... ...
छिऊ नुकेल पुर्ण लाथ) कहल छल। कुमरक चोरि तँ कयि गेलहु सुद

चित्रमाक मौन अहि चाहे कामाके कहाँ" सखनल मान 4 हम
अहिने राधाक नवोढ़ित रूपन होएत छाहे नखत अए हुनि सेहन
नन्दी अहि आइत अछि (कोमल मनक नाम अर अहं) 2। कहल
कुआ लखिमा अवर चाहत छथि तखन हुनक शैलक एकत्र हिमांशुक
खानी कहि छथि सहज अछि। (6) कृष्ण राधाक मुह देखलन्हि भोजपत्र
छाहि आ' राधा अनन्त पल्लवहल कहि मोर फूलन देल कहि

[illegible]
अनेक सन्त कवि भए अपन अपनी रचना कए
कविवर सन्भु ठाकुर कवि चन्दनझिंह आ [illegible]
कवि ए कनहु न उपेक्षे अपाह
आहा सहित आर अनेक [illegible]
[illegible]
[illegible]

अनुवाद [illegible]

राधा माधोक विरहदशा सुनैत छथि [illegible]
अपनो [illegible] भए गेल। [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
अछि। अर्थात् [illegible]
कस्तूरी, कुंकुम, चान ई सभ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कान्ह पोछलह नहि राजरी लखले रहलहु। (5) विद्यापति कहैत छथि हे सुन्दरी सुनह, लोखेभादेवीक पति राजा शिवसिंह प्रत्यक्ष कामदेव छिथिन्ह

रयनि काजर घन भीजा भुअदमल भम बुझेसे पड़ए दुरबर
गरजे लाज मन रोसे बरिस घन समय पछु अभिसर
सजनी बचन छाड़ैते मोहि लाज
से हेम हों हेम बर लाभ हमे अइबोकर साहस मन देल आज
ठामाहे सहित धुमि घरसे निसिरब मुझे दिअजन कान्ह सनेह
हरि हरि सिब सिब लाथे लाइह जेब साथे न कानु जिनह
अपन अहित लागि केहनो परनेह न छाड़ब पैसक आगे
कहर हरिन वह रहकचन सह पेम दहजाथ थर थ
चान बेढल फनि हित मानह पनि नागुर न कहल रोइ
मुमुखि पुछसी तोहि सरुप काहलि आहे पेमक फल एह
भनइ विद्यापति सुनह सयानी पुन न एहन होयत
राजा शिवसिंह रूपनरायण सकल कला भास्कर

भुअदमल २ से अन्धि ने ; मद्दे अहिर ४ सिंह दल दु आर राम सं

अभिसारमे बहरयलि राधा शिल्पकार कला सहोदर (1) रानि कजर बोकरैछ अन्धकार मानू दुनैछ सजनि प्रवेश मन बस्त होइछ मोर; मोन परितेक अभिसार कहलहि दल ए हे सखी, बचन छोड़ैत लाज नहि होइछ से हेतन हे घर हमरो हृदय मध्य सपने लेख। मेघ जकाँसँ काज रानल ए घर दूर हे दूतीक नेनूमे दूतीक नजरि छोरयनहि पर भारि गरुअ ई नेहक भारसँ नहि सम्हरि ई हिअ मन मानैछ हमर जौबन हाथ लोक हसत ने एक सखी कहैत छथिन्ह प्रेमक मरम जाइ कहिन चान हरिणके कह फानले अछि मे

बहुक मास सहैन अछि प्रेममे कतबो पराभव हो थोड़े बूझक चाही। (5, साप पापरमे लपटाए मल तकरा लो लैक बूझह, नूपुर ध्वनि नहि करतहु हे सुन्दरी तोरा पूछैछ छिअहु सत्य सत्य कहह प्रेमक कतहु अन्त छैक (6 विद्यापति कहैत छथि हे वृषिआपे सुनह गमनमे विलम्ब नहि करह, राजा शिवसिंह रूपनारायण सकल कलाक भास्वय छथि

सुरुज सिन्दूर बिन्दु चान्दने लिखेल इन्दु कोहेर गमि निधि तिलके
बिधिल आमेसार गला मोमेप्रबध अबकुस कलनक मनके
माधव भेटलि रसहन घरे
आदर हरखक पुजेको न बुझलक चतुर सजोन मेरी ?
कनके दल लग चम्पक कुल दुइ कबरी सोनक आनी
दान्हने केकुम लहलही करनक सगय लिखट रमानी 3
अनइ विद्यापने सुनु हर औपने इह निकट परमाने
राजा शिवसिंह रूपनारायने लोखेपा देवे रमाने 4

1 निधि कहि लोके 2 आमेस गला धर 3 कनक 4 दल नरो सम्भ

सखी हृदयके कहैत छथि जे राधा अपन एकाइ हो सिनेह मनमे जो रहैछ मुहेसे नहि कहैछ। 1 सिन्दूर ने सिन्दूर दे से जो चानलक सोभ बढ़ा देलक सिनेह निधि अमावास्या अनमोलक हिरदैक भरोसारो लोकेलक लग लगैछ मानसमे) अमृतक धार छैक से नहि पेर अकुश बेलमोलक (आङुरसँ बजाबाक सकेत)। है कान्ह तोरा पसाहिन करैत कान भेटलि ओ चतुर सखी सभक बीचमे छलि से ने भाइर कोनो न किछु पुछलक से कारने सखी सभ गुम भेलिहार बुद्धि अछैक। (2 साकेत दुइ सिनेहक समय पाकर अपनासे राधा चतुर केहनसे केओलाक ओ उपमाक मूल लगओलक (केहनि आ

अभ्यास 2 छठी ‹ हिंदी ‹ अभ्यास 5 को सुझाव

रचना शिल्प उपमेय छठा (1) हमर शत्रु समुदाय जेना लालो उपयुक्त अपनत्व लगैछ अलंकार हाथ प्रसाद लेना (प्रहार कएल छथि) प्रसंगक वाद रूप देखि होइत जिनक सहित छी जाति लगैछ आइ खिलल होएत कि लगैछ (2) युक्ति (दूती पठाएब) विफल भए गेल। हएत, राति बीति गेल तैओ हमर दूती (कोनो संवाद लए) घुरलि नहि। (3) अन्धकार छल तँ अभिसारक तैओ कएल। आब कहुँ अजानी थान ठाम ने जाए; अनुचित हाएब अँ खिलल (पड़ल तँ लाखो युग थोड़ बुझाइछ

2

कवि कुम्भनदास झाँसी के रहने वाले थे।

लगैछ लगैछ रहितैं' काहलि पुनु। देलन बचल होनइ ब्यू ?

एक राधे पैरल पछा बालकेँ आओल प्रसंग कए

पैरल ओल बाटल' रस बाग' न ब्याख्या हिम टेकल

देलन' छल्ल ई न लेल लाग लेट छाड़ल, देल

न खिल कए 2 रितै 3. अओतहि ♦ बाहन। 5 बाए। 6. सुजल,

2 ।।

मनो कवि के सम्मान देने छोड़ (2) राजी क्षत्रिय-क्षत्रिणि दो। हिंदू मध्य मध्य आदि के मंत्र आदि। (2) कैन नारा देलक छीने बहलहि। देलन विद्यालय नियं लेने (3) है राधा, छैय पराइ। हिअ अभीखल अंत दलक पंक्ति ने देखेलक पुलिसपत्नीसँ ओ के लगाए गेल समय हिलक दीप पूर्ण के राखि लहेन को। (5) देखलक बाल पर हेब देते लहि को हाथ हमने पाइर घरक रेखा मेटाए लहि सकैत आछे।

के ऐसा से नहीं रहने भाई संगत पंच पलकें लंबे हाथ ।
रेखा छाया यह मोल हंस सफल संबंध यह घोषणा ।
बजाने घोर से हरी चट्टान मंडे है कंपन गति ।
नागरिक सोमवार कहना दया मान मुश्किल खिलौना के नहीं मरुद्यान ।
आदरे मगर हाथ का पैसा अचानक टांस पेस टूटे गंध ।
भयानक समझे पुलिसवाले शब्द बचपन कोमल की नहीं हंस ।
आसान लंबाई दोपहर संबंधी पानीदार दल चट्टान कोने ।

1. पुस्तकालय 2 बीमार 3 आईसीसी बाज़ार 4 से 5 फ़ोन सिगरेट हथकड़ी पालना

अदालत प्रयोगशाला राधा लंबाई कहना उत्तेजित पहिया के भारत निमंत्रण। धमकी से गंदा नहीं रहना। मुहल्ला ने जटायु धमकाना सेना से गंदा मेज़ नक्शा को चेतावनी नहीं पुराना घुसे बैसाखी छोटी। हंसना लगातार बाज़ार चाहे मोटी बहुत शेयरहोल्डर नहीं-नहीं खरीद साथ झरना दूर मरु मंत्री (2) है कान्हा जहर राधा क्रिकेट रूसियों हंस तोहर पेयसी रसोइया के प्रयोग दर्शन किन्तु अफ़सर शेयर नया आसान नहीं भंग, 13 अफ़सर शब्द देह आ गाल सस्ता मुँह कोशिश नाम क्रोध और जेल ब्याज़ काहदेउ रुपया देखभाल हेतु जलाना नवाबी नरम फैसला पुलाव देने होंगे (4) नागरिक नाराज़ पतला हाथ दूँद हल्का धार रखना। लेना पानीदार सहायक धैर्यवान अमृत सेनापति से हाथ रेखा। ठंडा पेन

रोशनी आँख भाषा आय मारना हथौड़ा विज्ञान सरल। 1

कंपनी होना मेज़ देह सोना गोताखोर रोटी 12 ।

समाचार पेंसिल पुराना कंपनी आसान खोदना। पेंसिल जेब मारना पास खोलना पेंसिल हथौड़ा हाथ पेंसिल पेंसिल 4 ।

पानी एक सड़क-सड़क सड़े मेज़ना आ से रक्त ।

मेज़ खिड़की मज़दूर सेवक सेवक आय धुआँ ।

छोटी 2 पुस्तक रक्त 1 तट बोझिल 4 बजट ।

...ौहर रेखा पर राखल मुख्य मंत्रि लैल अपेक्षाकृत फूल हाथ पर कमल (मुख) देखनाॅल हे नहियर द, कह लीन केकरो मरीछे, आ ऊमनाक ठीकसे लिलए फूल नक से देछिऐ झमर (अंदर दोहे प्रयास हो ।४ लोह शाखाएँ ओलब लए प्रयोगकर्ता विज्ञापन (विनकोरक फद्म मा टंकरी दक्षिणक दल होछेहुँ एछी हुऐ रहेछ नव लहि गछेछ छेलाक नं अपना लहर अंडेहक चलैछ आ किन लेहुन छैक

...

झार नयन लहि मालल नर्हि हिंसिन झीसा
फर रूप रसम विछेदा फल देखि नहि मेला
केमनहुलने रहि
अहन नक्स पन समहेम झलकी छिलाके अहि ?
फैन नवीश्वर छिक्षक रहेला नहर हरहर दल
हंस चाल नारस रहेलन्ह नवनी हंस पक्षी

टेला २ दकाना

राजाक अंग ... [illegible] ... ।

...ाला ... [illegible] ...

...ा ... [illegible] ...

...ा ... [illegible] ...

...ा

प्रश्न ५ (क) खाली जागा योग्य शब्दांनी भरा :

(१) ओढ्याचे पाणी ओसरल्यावर पूल ..... (२) ..... हे मराठी महिन्याचे नाव आहे. (३) ..... हे पक्ष्याचे घर असते. (४) ..... हे पाण्याचे ठिकाण आहे. (५) ..... हे पाणी साठवण्याचे भांडे आहे.

(ब) खालील प्रश्नांची उत्तरे लिहा :

(१) आई कोणत्या दिवशी पुरणपोळी करते? (२) पुरणपोळी कशाबरोबर खातात? (३) पुरणपोळी कोणत्या सणाला करतात? (४) पुरणपोळी कशी असते? (५) पुरणपोळी कोणाला आवडते?

प्रश्न ६ खाली दिलेला उतारा वाचा व त्याखालील प्रश्नांची उत्तरे लिहा :

आई म्हणजे ममतेचा सागर. आई आपल्या मुलांवर निरपेक्ष प्रेम करते. ती स्वतः उपाशी राहील, पण मुलांना पोटभर जेवू घालते. आई मुलांसाठी रात्रंदिवस कष्ट करते. मुलांच्या सुखासाठी ती देवाकडे प्रार्थना करते. आईच्या कुशीत जे सुख मिळते, ते जगातील कोणत्याही वस्तूत मिळत नाही. म्हणूनच आई हे सर्वांत गोड नाव आहे.

(१) योग्य पर्याय निवडा :

(अ) आई कशाचा सागर आहे? (१) ममतेचा (२) पाण्याचा (३) संपत्तीचा (४) ज्ञानाचा

(आ) आई स्वतः काय करते? (१) झोपते (२) खेळते (३) उपाशी राहते (४) पोटभर जेवते

(२) खालील वाक्ये उताऱ्यानुसार पूर्ण करा :

(अ) आई मुलांसाठी ..... करते. (आ) आई मुलांच्या ..... साठी देवाकडे प्रार्थना करते.

(३) उताऱ्यानुसार खरे असेल तर 'होय' व चूक असेल तर 'नाही' लिहा :

(अ) आई मुलांना उपाशी ठेवते. (आ) आईच्या कुशीत सुख मिळते.

(४) उताऱ्यानुसार उत्तरे लिहा :

(अ) आई मुलांसाठी काय करते? (आ) आईच्या कुशीत कोणते सुख मिळते?

भा. अक्षरा मधु पिछले कलमाचे गीज वर्षांसे देवन ‘कल ... अंजनें पिलाप
जैसन अंगि) यांसे मेज परात भा मेज (4 मिनाकली लक्ष्मी
एतेक्षा कप सिरमा (खंडिता) मय मोसि। सम्पूर्ण राशि ...
मेल। (5) हाय, आयुं से कमल फुलाइल अंगि भा ई सुने प्रेम छाये
(अे पिअ परलोक मुजपाअसें मुक हेइक पेम जगासें दुर लीहे आए
संकेत अंगि (जा' पाप रहल ना पेम रहो कमल भलहि किसन नहि हो
(6) शिवापति कहैल छथि हे भवी सुनह। गंवर पेमा तेसन अंगने
अगरमे छइ (खोजह, झांटे नए।

१.६

भाले भयलिक भगल भेरापाए, अंगि मुलाने ना वनवि रेखाँ
किछि भा न लेइ दहाए पिसे यहो सिंहासन सिंहासने
ए भक्ता सखि मुखो सिंहासे मरुकी अंगि नगंभ देखे मे पो एकने
दुर कर मुगमन अंगे अंगाने मं अंगनमाले मनमोहन
कंभी कील देखए टेढ़े मन कहे केभी एक नहीं मलिए सहे
केभी कील जोकिभली दो दहु भली इंसिनेभी मन पेम मेभन
मलह शिवापति अंगिमन मेला। पंडितदेवे मने पेम न

१. सिंहली हरी ते अंगि (न)

कवि विद्यापतिक वर्णन करैत छथि — (1) पहिने पहिन
अवहट्ठा सम्पूर्ण भेलाह कैअे छिकैमकाले नहिं से उपलब्धसं पांडि भेलाह
(2) अहाँ भैकलाह भेला किछु पुछो नहि कारणक। लिखैनक अगर कहाँ
भेभ करैन भेले, ... हमलोकक मथुरा रह जलेक सगोकरोसेक लो
जले से नेभ पाइ पूर्व अवहट्ठ टोले टोले कैसो ठठा करए लागल। (3)
से हमरे भाषी लोने भाषा पक्का भेलाह ... अवहट्ठि भले कहलाहि। केवल
भाषाक के लोग ने नहिं, अपन भेलाह। (5) देहल संगा (1)
भा कवि रहे भाषक कैअे ... भेभ नहिं अवेल अंगि
(अंगि से चाहे छैक से कुर लोक अंगि ...) भेलाह कवि
छथि ई भाल अहल रहलाहि, विद्यापति से गवेह भेलाह अंगि
भेले।

[326]

केहु देखल नगना, छिछिआ मङगइते कुल अङगने आङगना।।1।।
नगन उमत केहु देखल विधाता। तैलोक नाह अभए वर दाता ।2
बिभूति भूखन पर बीख अहारे। कण्ठ बासुकि सिर सुरसरि धारे।।3।
केलि भूत सङगे रहए मसानी। तैलोक इसर हर के नहि जानी।।4

पार्वती शिवक अन्वेषण करैत छथि — (1) केओ एकटा नगना (नग्न व्यक्ति)कें कतहु देखलहुँ अछि? ओ अङने अङने भीख मगैत फिरैत छथि। (2) केओ नग्न आ' उन्मत्त विधाताकें देखल अछि? ओ त्रिलोकक स्वामी आओर अभय वर देनिहार विधाइ। (3) हुनक भूषण छनि भस्म आ' आहार छनि विष। कण्ठमे वासुकी नाग आ सिर पर गंगाक धार छनि। (4) भूत-प्रेतक संग क्रीड़ा करैत श्मशानमे रहैत छथि। तीनू लोकक स्वामी हरकें के नहि जनैत अछि

टि.— ई गीत राग मे नहि अछि। सुभ (गीत स. 255) देखू।

[327]

मोर बउरा देखल केहु कतहु जाइते'। बसहा चढ़ल बिस भाङग खाइते
ओखि निअर मुह घुअइ लार। पथक थकल बउरा बिसम्भर।।2।
बाट जाइते केहु हमर ठेलि। अब ओहि बउरा' बिनु मझे अकेलि।।3।
हाथ डेरुक कर लीअ कोंक'। जोग जुगुति गिअ नयल भोक'।।4
[अरगज चढ़ाए आठहु अङग। सिर सुरसरि जटा बीलहु गाङग]।।5।।

1 जानी। 2. भान खाइ। 3 थीरे। 4 भखा। 5. अरत माथ। [ ] पाठ गड़बड़

गौरी महादेवक चिन्ता करैत छथि — (1) केओ हमर बउरा (पागल पति) कें कतहु जाइत देखिलहुँ? ओ बसहा पर चढ़ल बिक्ष आ' भाङ खाए कतहु घूमाइत छथि। (2) आँखि निडारल छनि। मुहसँ लेर चुबैत छनि। (3) बाटमे जाइत हमर बउराह विश्वम्भरकें कतहु देखलहुँ? (4) बाट चलैत

हुनका केओ ठेलि देने होएतनि। आब हँ ओहि बौराहाक बिना हम एकक्षरि भए गेलहुँ। (5) हुनक एक हाथमे डमरू आ' दोसर हाथमे लौका (कमण्डलु) छनि। ओ आठो पहर अरगज चढ़ओने रहैत छथि। सिर पर जटाजूटमे गंगा विराजमान छथिन।

कुवलय कुमुदिनि चाँदिस फूल। कए रव कोकिल द्वइ दिस बूल।
खने कर साद खनहि कर खेद। बैसल बिखधर पढ़ अलि बेद।
आएल रे बसन्त रितुराज। भमर बिकास' थल भमरि समाज
डरि डरि परेवासरे गोपि भेलि'। कान्ह पैसल बन अलि कर केलि।
गोपी हसलि अपन मुख हेरि। चान्द पड़ाएल हरिनक केरि ।

1. बिरहे

कवि वसन्तक वर्णन करैत छथि — (1) चारू दिस कमल आ कुमुद फुलाएल अछि। कू-कू शब्द कए-कए कोकिल एम्हर-ओम्हर बुलैत अछि। (2) कखनहु शब्द करैत अछि आ' कखनहु खेद (?), जेना बैसल विखधर वेदपाठ करैत हो। (3) ऋतुराज वसन्त आदि सँग व्याकुल भ्रमर भ्रमरीसँ मिलए चलल। . . . . . .(?)। कृष्ण यमनमे पैसल जेना केलि करैत होथि। (4) गोपी अपन मुख निहारि हँसि उठलि। चान हरिणक आँखिमे पड़ाएल

टि. - आशय स्पष्ट नहि

[329]

अतिएक तरुन उदन्त ने जानिअ एतए अवस बस
सरिअ सर भर अरुणाएल दुइ पङ्कजे मिलु मन्दा। 1।
फोकिल, करजि सन्तावह काहू
ताहि तोहिं जनु पञ्चम गायह जाये दिगन्तर लाहू। 2।
मदनक तरुन अन्त धरि पढ़ि कहु' बुझितहु होसि अजानी

कनुअ फागि कानि नाहे धुसाँगे अँचल बन्हि खुट अती
तोहे' अनुरागी मजे' अनुरागिनि दुहु दिस बाढु दुरन्त
मजे बड़ दसमि दसा गए अछिगिरिअ कुसलें बसयु' मोर कन्ता।।4।
पाँडरि परिमल आसा पूरओ' मधुकर गावओ' गीते

1. ताओ धरि। 2. चलदए। 3. पिआ। 4. तजे। 5. आवयु। 6. पूरयु। 7. गावयु।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि —(1) ओहि ठामक हाल-चाल आनि नहि एतए तँ धान आगि बरसाए रहल अछि। ..... (?)। (2) हे कोकिल, तोँ कथरहु किएक मतबैत छह' तोँ ता धरि पचम स्वरमे कुहकह नहि, जाधरि कन्त परदेसमे छथि। (3) (राधा कृष्णसँ कहैत छथि)—तोँ मदनक तन्त्र (कामकला) अन्त धरि (पूर्णत) पढने छह, तेओ अज्ञानी बनैत छह। आजुक बाद कालिह आ' काल्हिक बाद पुन कालिह की चिकैक (काल कोना बौतल आइत अछि) से तोँ नहि बुझैत छह। यौवन रूपी धान्यसँ नित्य पानि बहैत रहैत अछि। (4) तोँ अनुरागी छह। हमहूँ अनुरागिनी छी, दूनू दिस सकट पड़ल जाए रहल अछि। हे भगवान हम तँ विरहक दशम दशा (मृत्यु)के अगोपार कए लेब, हमर कन्त कतहु रहथु, कुशल रहथु। (5) पाँडरि फूलक सौरभ दिगिदगन्तमे भ ' मधुकर गीत गाबओ, धान आ' राति दूनू अधिकाधिक सोहाओन होअओ हमरा लेखेँ तँ सभ विपरीते (सतओलिहारे)।

[370]

कनल फुलो सिन्दूर अहलि अमसे अरु बोकान
बसइ केसरि अजुर मुसा थारहु पहु पसान।।1।
डिमिकि डिमिकि डमरु बाजए डमर खेलए फागु
अमसे सिन्दूरे दुअओ खेला एकहि दिवसे लागु।।2
लक्खाभ्र सिन्दूरे अरु रुकमलि लाछीहि अहलि गोरी

डमरे अमसे अरु नराएन पिअर बसन चोरी।।3
एकै बत्ते नाइगट अओके डमरु डमर घुघुर बाए
अमसेक डमरुने थोडि खेलाबए किछु न बोलल' जाए ।
गरुडवाहन देव नराएन बसइ चढु महेस।
कवि विद्यापति कौतुके गाओल सङ्गहि फिरथि देस

1. पौल। 2. बोलए। 3. अने

कवि होरीक वर्णन करैत छथि (1) कनेकी झोरी सिन्दूरसँ भरल अछि तँ कनेकमे घोरा अमसमेँ। बसहा, सिंह, मयूर आ' मूस चारू पर पलान (जिन) पड़ल। (2) डिमिक डिमिक डमरू बजैत अछि। महादेव फागु (होरी) खेलाइत छथि। अमस-क्रीड़ा (जे पडिब दिन होइत अछि) आओर सिन्दूर क्रीड़ा (जे पूर्णिमा दिन होइछ) दूनू एकहि दिन चलल (3) भगवती सन्ध्या सरस्वतीके सिन्दूरसँ भरि देलनि तँ गौरी लक्ष्मीके महादेव नारायणक अमसमेँ तापि देल आ' पीअर वस्त्रके अमसमे गोरि देल (4) एक नाइट, ताहि पर घुघुर बाए मातल आ' ताहू पर डमरुनि (मातलि) गौरी खेल खेलबैत छथिन लखन कहले की जाए (5) नारायण गरुड़ पर चढ़ल छथि तँ महादेव बसहा पर। सभ एकत्र भए देश भरि घूमि रहल छथि। विद्यापति एहि कौतुकक (खेल-तमासाक) वर्णन करैत छथि।

[71]

नअअर बल्ली धर धरे जाणि। अवि गाढ आलिङ्गण तेवि भाणि। 1
भरे लोल्टे सिन्दारपि करओ काह। सपणे रयनि फागह केलि थाह 2।
मालति रस विलसए भमर जान तेहि भाँति कान्ह धर अधर पान।।3।
कनल फुलि गेल कुन्द फूल। मधुकर मालति मधु पीबि' जूल 4
[illegible]

1. धरि। 2. आलिङ्गने मधु [illegible]

राधा कृष्णक सग एत विहरक वर्णन करैत ओहि [illegible] गाढ लताकेँ अपन डारिमे ओंतिकेँ रखने रहैत अछि, हे सखी कृष्ण तहिना गाढ आलिंगन कएलनि। (2) हम निद्रासँ मातलि (ओघाइलि) रही करितहुँ की कृष्ण राति भरि कैलि करए चाहैत छथि [illegible] अमर मालतीक रस विलासपूर्वक चूसए अनैत अछि तहिना कृष्ण हमर अधर पान कएल। (4) यद्यपि कुन्द फूल फुलाए [illegible] भ्रमर मालतीक रस पीबि जुड़ाएल। (5) मारस कवि कण्ठहार राधाकृष्णक यह विहरक वर्णन कएल।

[illegible]

आहे देस सखिन्ह नहि पूरए फुलाएल [illegible]
छओ रितु मास भेद नहि बूझए [illegible]
सपेहे हे सखे देस पिआ गेल मोर
समहि बानी जतए न जानिअ सुनिअ पड़ा [illegible]
हलिओ फरिलि जतए राति [illegible]
कोन परि लतए रतस अछ बालम गुने गए [illegible]
ओ अपना के लघु कए मानथि की [illegible]
हमे बरबि गमारि सबहु [illegible]

1. पिक अमृतक नहि गूजर [illegible]
[illegible] पिक कए मानल।

राधा सखीक विरहव्यथा सुनबैत छथि – जाहि देशमे कोकिल पचम स्वरमे गबैत नहि अछि, वन कुसुमित नहि होइत अछि, छओ ऋतु आ बारह मासक भेद लोक नहि जनैत अछि आ स्वभावत: मदन दुखेत होइत छथि, हे सखी, हमर पिआ तेहने देश चल गेलाह। जाहि देशमे रसमय वाणी (प्रीतियचन) नहि जानल जाइत अछि प्रेमक नाम बड़ थोड़ सुनल जाइत अछि, जतए रसगर कथा कहलहु पर केओ नहि बुझैत अछि इंगित तँ सहजहि निरर्थक, तेहन देशमे हे सखी गुणवान [illegible]

समाजमे रति रमि गेलाह। (4) की हम अपनाकेँ छोट (हीन उपेक्षणीय) बूझि लिअ कि आकि ओहि हमरा लेल बहुत ऊँच छथि? की हम गमारि छी कि कृष्ण मनुष्यहीन भए गेलाह?

(1) तरौनी तालपत्रक गीत

पीत पर्वापर दूबर माता। श्वेत उपजल कमलन्ता॥
ए काल्ह एक्क तीरि दोसाई। अपूरुष देखलि आई ॥
मुख मनोहर अधर रङ्गीले। भुलोके अपूरे कलम तोहरे॥
लोचनजुगल भृङ्ग आकारे। मधुक मातल उडए पारे॥ 5
मधुरीर कथा पूछह जतु। सदले साजन कलम पतु॥
अन विद्यापति दूति बचने। एत सुनि कान्ह कए गमने॥ 6

I साईं, 2. जोड़नि

दूती कृष्णक रूपाक सौन्दर्यक वर्णन सुनबैत अछि (1) पूर्व स्तन आ पतरा देह लगैत जेना सोनक लता (देह) मे मेरु पर्वत पड़ल हो (2) ई काल्ह पथाड़ यथार्थ तोरा। राधाक अधर रूप देखल। (3) चुन्दर मुह आ लाल दुहट अधर जेना कमल आ मधुरी दुनू सम्पूर्ण हुलाएल हो। (4) दुनू आँखि भमर-सन, जेना मधु (कमलक रस) पीबि मातल भेँ डाँडि लेने होइत छैक। (5) अधिक कथा लगे पूछऽ. जेना कमलसँ मिलन कोमलेश्वर पतुष हो। (6) विद्यापति कहैत छथि एहन श्रेष्ठ दूतीक [illegible] ध्यान सुनितहिँ कृष्ण राधासँ मिलए चलि पड़लाह

4

कि अरे लाख जोजन अंतरा

[illegible] देखल तन जबहि ते पारब छओ अंतरा [illegible]
होएत इन्दु अरविन्द करीते [illegible] एक खुमन [illegible]
नयन बयन परिमल तनहिँ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अधर फुलायल हो 2 ओहि मुखमण्डल पर दुइ कजरी कजरी लटल सुशोभित अछि जेना स्वच्छ कमल (मुखमण्डल पर दुइ गोट भ्रमरा (नयन) बैसल हो। (3) एहि आयिकामें बहि कोनो भाग रसपूर्ण स्थान गेलि हो से कतहु नहि देखल। मानू ई राजसंसेली लावण्यक मर्यादे आइलि हो। (4) कंठ मे मौक्तिक हार चमकल जेक मानू लक्ष्मीक चकवाक जोड़ा गड़गाक धारमे चरैत हो। 5 कवि कण्ठहार विद्यापतिक रचैत छथि आ' धरम उदाहरण राजा शिवसिंह लेल ई वुझैत अछि।

चान्द मार लए मुख घटना कर मांगल चांकत चकरे
अमिअ धोए आंचरे पनि पोछल दहदिस भेल उजो
काजिनि कओने गढ़ली
रूप सरूप मोहि कहइते असम्भव लाखन लाखे एकै
गुरु लितम्ब अरु पतल ज धारए सहज आनी आनी
आदिम जाड़ाते अनारोज धए राखने छिअने आन अनुदार
भनइ विद्यापति अछुत वैलाष ई रस जानथि शिवसिंह
रूपनारायण ई रस जानथि शिवसिंह

शब्दार्थ। 2. लागि। 3. खौनिस लिआई

कवि नायिकाक रूपक वर्णन करैत [illegible] चन्द्रमाक सार लए निर्मित अछि आ' आँखि [illegible] सुन्दरी अपन मुह अमृतसँ धोए आँचरसँ पोछलनि [illegible] (2) जानि नहि एहि कामिनीक [illegible] (ठीक-ठीक) वर्णन करब हमर साध्य नहि देखलहु ने मेना ई रम्भा आखिमे लगले रहि गेलीह। शिवक कवि अतिशय [illegible] अछि। (3) सितम्ब ततेक भारी छनि जे [illegible] ततेक पातर छनि जे कामदेवक आशका भेलनि कटाक्ष चूनि ने बाण ने

विदग्धजनी लताभे बड़ाए (बान्हि) रखलनि। (4) विद्यापति कहैत छथि अद्भुत दृश्य अछि। जे कहलहुँ अछि से सभ बात सत्य बूझ। मिथिलाक राजा शिवसिंह रूपनारायण एकर रस बुझैत छथि

अल मेल राधिक सैसव संग दुहक चाहल लोचन लेले
दुअओ लखन कर दूतक आस भुखल अए पथिक भेलि साज ।
आदे अनुखन देऊ अँचर हाथ बाज सबै सजो लज पर माथ ।
हसे अधोमुख मुख मुर कालक लागर कएलु अपन अधीन 4 ।
भनइ विद्यापति गुन कलरेख अपनि रहल ने जिबए सन्देस
रसमय पेखणपति कवि गाव राजा शिवसिंह बुझ रस भाव ।

शब्दार्थ। 2. चरन चपलता। 3. दुअओ, 4 पोख

कवि राधाक वय सन्धिक वर्णन करैत छथि - -(1) नीक भेल जे राधा शैशव पार कएल। चरणक चञ्चलता आखि लेलक (पहिने चरण चञ्चल छल, अब आँखि)। (2) दूनू आँखि दूतक काज कएलक (तूल आनय लागल नयने बड़ाए)। लाज भूषणक काज करैत अछि (लाज शोभा बढ़बैत छैक (3) आबे मनत आँचर पर हाथ दैत अछि (स्तन झपैत रहैत अछि सखीसभक सग रसालाप काल माथ झुकाए लैत अछि। (4) ई कोमल सुन्दर हमरा बुझाबाले आबि गेल। आब लागए (रसिकसभ) सतके दृष्टि (5) विद्यापति ई राधाक अङ्ग धनुष थिक यौवन काजर आकर पञ्चबाण सोभा, चित्त चोरब प्रहार करत तँ प्राण नहि बाँचत। (6) रससँ भरल गीत विद्यापति रचलनि। एकर रस आ' भाव राजा शिवसिंह बुझैत छथि

पेखल नितम्ब सजल आतल सजल पुलिन समो
सजल पङ्कज के पतिआओब एक सजल हट पनी
तृषित सजल बालक सदन कर कि [illegible]

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर निबंध लिखिए (प्रत्येक 15 अंक) :

(क) भारत में कृषि-आधारित लघु उद्योगों की संभावनाएँ

(ख) विद्यालय में खेलकूद का महत्त्व

(ग) शिक्षित बेरोज़गारी : कारण और समाधान

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए (प्रत्येक 10 अंक) :

(क) पुस्तकालय का महत्त्व

(ख) [illegible]

(ग) [illegible]

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए (प्रत्येक 10 अंक) :

(क) [illegible]

(ख) [illegible]

(ग) [illegible]

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए (प्रत्येक 10 अंक) :

(क) [illegible]

(ख) [illegible]

(ग) [illegible]

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए (प्रत्येक 10 अंक) :

(क) [illegible]

(ख) [illegible]

(ग) [illegible]

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए (प्रत्येक 10 अंक) :

(क) [illegible]

(ख) [illegible]

(ग) [illegible]

प्रश्न 7. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए (प्रत्येक 10 अंक) :

(क) [illegible]

(ख) [illegible]

(ग) [illegible]

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए (प्रत्येक 10 अंक) :

(क) [illegible]

(ख) [illegible]

(ग) [illegible]

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए (प्रत्येक 10 अंक) :

(क) [illegible]

(ख) [illegible]

(ग) [illegible]

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए (प्रत्येक 10 अंक) :

(क) [illegible]

(ख) [illegible]

(ग) [illegible]

भर्ती जिलाए सरमा नुकाए रहलि (अलहिन क्षए हलि।) ।, रघुनन्दिस्स
हेमरा ने धान सोहाइल अछि ने चन्दना। चिन्हा मेल भर्ती थेर वेर अहीं
ठाम दौड़ल अछि (जलएसँ औ अलहिन क्षलि ,

१५

अलखिते हल हेरै पिपुसनि थोर। अलि' रहलै मन खट्ट पड़ि
कुटिल कटाक्ष लाट पाड़ै मन अन्धरे मधुकर कमर हल ।
काहेक रुन्दरि के नहि जाल। भकुल कए गेलि हमर पानि ।
लीला कमले मधर हल थलि वसनि अलि। अहिन जिनकी ।
ने मेरा थेकल दयापर सोझ कलय कमल हार झरै ने नेहा ।
अथ नुकाएल अन्ध भमरा' कुमकुमे कहि अपने भजुल अस ।
से सबे भनिल हेनि हल नीचे गलेल केहु नहि राखलिहे रसनिधि
अतए विद्यापति दुई मन एहन किमन कुलमन कहि न पार ।

। रचनि २. सपुरुष ब्रह्मरे अक्षर ३ घर ४ उद्यम

रघाके टेबि कृष्ण अलहि मन सोचल छोड़े (रहा ल्लेहरनें
हेमरा टेबि यलय विहुँसि देलक। मालू ,ोड़े ६ भारी अ कहै रहा ।
पुरैन रहक धानल मालू, कमल मेहक गुह पहरा रहा ।
आलि नहि भी सुन्दरी कमरक चिठ मनेक के लिखैन भरि भी हमर
भाकेक आपुन कए देलक (४) हाथक लेखनीमेंसँ भी अमरक पुलकै
अगाए, घायल नमले हेमरा दिस तोकि एमकि के चलि भरि (६) नहि
हमरे ओकर सेलक उधार भए गेलै। सोनाथ कमल टेबिके कहरा नाम
नहि कोएटैया। (6) आधा छापिस आ' आधा उधार सेलक देखा भी भए
अछ (सिलक अभिलाषा) सूचित कए गेलि। (/ भी आधा भरि सकल
दुर्लभ लिखि अर्पित कए गेलि किछु रस बाकी नहि रखलक निश्चयनि
मनैन छथि। कृष्णजी रचा दुनू मन भी कएलाहला, नागल जाहनेक
चिन्ता बाण कखन नहि लगैत छैक।

भक्कर चिन्तु भिक्तिक कोजेले को कुच क्रांतु सुरुक्ता
कलक सहमे छर मलयक हल्दर हेतु हेकल हेस कलो

जन रस काल चूड़ै
सेने मेर वंशले लोभल लोभल भनेहि भनलेहि जोड़े
अड़ पहल कम मधुर हस हल्दुनि रहे सिर लाई
अकुंश कमल कनिन नहि कुल सेलने जुर धरि नई ।
मलह चिरन्जिसि रहल वनकोलि पहली नव उछाल
रूक सिलहि कनलाएल नछिगहनि रमाने ४

सम्म। २ रोजले मोरी मलहे। ३ लाई

कहा राधाक रुपक यहीन विलके सुनीहन हरि । कनिलिक
(रासक) भंवर भंवलक खुसि पहल भी अगन मृगनिन मनलके हेमरे
झलि नेमक पहल मेला भोर 'पोवालेस (सिलन) पर पुरे गाह
मलक पुन (हिन भा हस मोट घाल (हिवेक जहि राखल हो ।
राधाक रूपे जन अकिरा देखि हमर भाल हमल हा हल
भा नहिन मोर रस ओर किर भ कलयान (हेवर भा होरे थेर
घन नए ३, न हरी भर्ति [भ भधुप मुलही (गाए जुरी हुन
मेक मौहन जहे भा सुन्दरी कमरक चिठ मनेक के लिखैन भरि भी हमर
भाकेक आपुन कए देलक (४) हाथक लेखनीमेंसँ भी अमरक पुलकै
अगाए, घायल नमले हेमरा दिस तोकि एमकि के चलि भरि (६) नहि
हमरे ओकर सेलक उधार भए गेलै। सोनाथ कमल टेबिके कहरा नाम
नहि कोएटैया। (6) आधा छापिस आ' आधा उधार सेलक देखा भी भए
अछ (सिलक अभिलाषा) सूचित कए गेलि। (/ भी आधा भरि सकल
दुर्लभ लिखि अर्पित कए गेलि किछु रस बाकी नहि रखलक निश्चयनि
मनैन छथि। कृष्णजी रचा दुनू मन भी कएलाहला, नागल जाहनेक
चिन्ता बाण कखन नहि लगैत छैक।

५ ५ ५ ५ पुष्पदंत अस्थिर कक्ष अंतरे

झुंपुरि रट अत्यंत मज्जा रहस्ये दंतेक्स अंतिम

राधा कृष्णाक अर्थशास्त्रक दृष्टांतक हाल सप्ताहँ लुलबैत, गप्पे (१) क्रान्ट आई पहिं ग्रह आभरन नक्क अस्त्र धड्डी नहिं सकर्दै वृद्धिनहुँ न प्रकार नहि सहजहि। (२) ... अभिव्यक्ति अंतिम किमि योग। अंधार नव दृढ़ देखि हन्य ... देखिकै अनेरे स्वस्थ भार भेलहुँ दर्शन आ ... धिलाए गेल। (3) ... ! सुन्दरी यात्रा घरसँ घहराकेह आ लेला अलक्षित भार गेलीह जेना मेघमे बिजलीक रेखा।

हि॰ -- तेसर चरण कोनो आल गीतक खण्ड छिक।

... ...

नयनरूपी भ्रमर उड़ि नहि सकैत छथि, तैओ थाकि पसरए। (4) कृष्ण जे मधुर वचन बजलाह से सुनि हम दूनू कान मूनि लेल। तहीं अवसरमे ठामहि कामदेव धाम (शत्रु) भए गेलाह (प्रहार करए लगलाह।) (5) देहमे तनेक घाम चलल जे पसाहिन टहाए गेल। रोमाच तनेक भेल जे चोली भसकि गेल आ हायक कँगना फूटि गेल। हाथ कपए लागल। वकार बन्द भए गेल। विद्यापति कहैत छथि, ई श्याम सुन्दर आन नहि, राजा रूपनारायणे थिकाह

346

बिकलए गेलिहुँ मधुरपुर[1] मधुरिपु भेटल माए[2]
तहिखने पञ्चसर लागल बिपैखसे कछु बाधे।।
हार भार भेल तहिखने चान्द[3] चान्दन गेल आगी
दखिनओ पवन दुसह भेल लोहि पापिनि बध लागी।।2।
कतने जतने घर अएलाहुँ के कर दोहि दुध काजे
मनहु[4] न मधुरिपु बिसरिअ तेजल गुरुजन लाजे।।3।
भनइ बिद्यापति सुपदनि दुइ दिठि होएत समाजे
अबक मनोरथ पूरत मधुरिपु आओब आजे।।4

1 बिकिलए गेलिहुँ मधुरपुर। 2. थीर 3. मनहु।

कृष्णकेँ देखि मुग्ध भेलि राधा मनक भाव व्यक्त करैत छथि दही दूध बेचए मथुरा नगर गेलहुँ। कान्ह सगमे भेटि गेल। तखनहिं मदन पाछु लागि गेलाह। विधाताक इच्छामे के बाधा कए सकैत अछि (2) तखनसँ हार भार भए गेल, चान आ' चानन आगि भए गेल। दक्षिण पवन (जे सुखद होइछ) सेहो हमरा लेहि पापिनीकेँ मतएबाक हेतु दु सह भए गेल। (3) कतेक यत्नेँ (सतर्क भए) घर अएलहुँ। दही-दूधक काज के करओ (काजसँ मन उछटि गेल), एको रती (मनाहु) कान्ह नहि बिसरैत अछि। गुरुजनक लाज त्यागि देल। (4) विद्यापति कहैत छथि, हे सुमुखी

फेर दूनूक आँखि मिलत आ मनक मनोरथ पूर होएत। आइए कान्ह फेर आओत।

347

कतन बेदन मोहि देसि मदना। हर बाला भजे जुबति जना। 1।
बिभुति भूखन नहि चान्दनक रेनु। बाघछाल नहि मोर नेतक बसनु।।2।
नहि मोरा जटाजूट चिकुरक बेनी। सुरसरि नहि मोर कुसुमक सेनी। 3
चान्दनक बिन्दु मोरा नहि इन्दु छोटा।' ललाट पावक नहि सिन्दुरक फोटा।
नहि मोरा कालकूट भुजगक भाख। कनिपति नहि मोरा मुकुता लाख। 5।
भनइ विद्यापति सुन देव कामा। एक पए दूखन आछ नाम मोर' कामा।।6।

1. छोटा। 2. ओढ़िनाभाक

विरहिणी नायिका कामदेवसँ सिकाइत करैत छथि -- 1) हे कामदेव, तोँ हमरा कतेक वेदना दैत छह। हम (तोहर शत्रु) महादेव नहि थिकहु, हम थिकहुँ एक षोड़शी युवती। (2) हमरा देहमे विभूतिक लेप नहि, ई थिक चान्नक बुकनी। ई बाघछाल नहि, नेतक (रेशमी) चीर थिक। (3) जटाजूट नहि, केसक जुटटी (वेणी) थिक। सुरसरि धार नहि फूलक माला थिक। (4) बालचन्द नहि, चान्नक ठोप थिक, कपार पर आगि नहि, सिन्दूर-बिन्दु थिक। (5) कालफूट (विष) नहि, कस्तूरीक लेप थिक। साप नहि, मोतिक हार थिक। (6) हे कामदेव सुनह (कुलक्षण सिखसँ समानता) एकेटा अछि--ओ थाम (देव) आ' हम थामा

348

नहि आए माधव गेल दे। मोहि किछु पुछिओ न भेल दे।।1।
सखर जाइते नदि' तीर दे। अन्तर भेटल अहीर दे।।2
नयनहिँ नयन जुड़ाए दे। हृदय न भेल बुझाए दे।।3।
कइसे होएत हरिसङ्ग दे। मधुर मधुर पति सङ्ग दे।।4
भनइ सँ न भेल सँभारि दे। चूड़लि कान्ह गोआरि दे।।5।

माथुर जाइते जमुना तीर रे। 2 ना-हु 3 मोहित 4 चित्त

प्रेमविह्वल राधा मनोभाव व्यक्त करैत छथि (1) काहू नहीं कहे गेल हैब्रिहहि हम तोरेक मोहित (विह्वल) भए गेलहुँ से किछु बुझेओ नहि सकलहुँ (2) यमुना नदीक घाट पर जाइत छलहुँ तहीं एकाएकी कान्ह भेटि गेला। (3) आँखिसँ आँखि तँ मिलल किन्तु हृदयक बुझाओल (समझल) नहि गेल। (4) जानि नहि सरस कान्हक संग कोनेरङ्ग काज सम्हारि सकब। (5) आँचरो सम्हारबाक होश नहि रहल आ हम गोआरि-गमारि (रसबोधहीन) बुद्धि सेलक. (किएक तँ हम कोनो अभिज्ञता नहि देखाए सकलहुँ)

[illegible] दूहु दिसि विह्वलि दूहु मने दूहु लागु
दूहुक आसा-दीप निझाएल [illegible]
विरह वेदन दूहु सन्तापए दूहु सघनए लागे
एकाएक हरए अबोधे ने पाय। तहि पाछिल भेल दोष
बाम नयना जओ मिल दूते दाहिना हरि चेलनु
गुपुते पोरोते चौलक गोपए [illegible]
एहु नवचन्दे पुरन्दर अन्तर पड़ल [illegible]
दसमी दसा पथ अङ्गिगरओ न कएल [illegible]
भनइ सरस मनोभव माजस तेंतु [illegible]
विनु अवसरे कि सखि बोलति पुनु [illegible]
सीतलि इकुति जेहो जुगुति [illegible]
भय सजनि तोहि कहलनु हरि दूरि [illegible]
दरपन मुख प्रतिबिम्ब नाओं पेखल भल हिसाबे
दूहुक आसा काम पुराओल भल कयि आनहुँ
हरि सरूप हे जगत जानेओ रूपनरायन [illegible]
रए सिवसिंह सुचिरे जीवओ लखिमादेवि रमनी [illegible]

1 मोहाएल। 2 चलत चेतल रूपांते चित्त। 3 समाएल 4. मनोहरण छाने छाने। 5 पूरए 6 पुराबओ 7 सखि

कवि राधा आओर कृष्ण दूनूक केलिकलह अन्य विरह-दशाक वर्णन करैत छथि --(1) जखनहि दूनूक दृष्टि दू दिस भए गेल तखनहिसँ दूनूक मन दुखी रहय लागल दूनूक मिलनक अकाङ्क्षी दीप मिझाए गेल अ काम वेदना अकुरित होअए लागल। (2) विरहवेदनासँ दूनू सन्तप्त दूनू मेल चाहथि परन्तु [illegible] हृदयक भाव दोसर नहि बूझथि तँ मेल नहि होअए [*तुलनीय* --- दूहुमन मेलि, कओने बैकताओब दारुन प्रथम निवेदन रे)। (3) वाम नयन (राधाक नयन) जँ दूत भए मेलक हेतु आगाँ पठए तँ दक्षिण नयन (कृष्णक आँखि) लजाए पाछु हटि जाए। मुग्ध (अबोध) प्रेमिकेँ चतुर लोक छिअए चाहैत अछि, तँ अनका कहि मिलनक उपाए करब सेहो सम्भव नहि। (4) दूनू सचेत आँखि दशम [illegible] अन्धकूप भए गेल [illegible] (5) कामदेव अपन पाँच शरमे सँ मोहन नामक शर छोड़ल। दूनूक देहमे मानू आगि लागि गेल किन्तु अवसरहि सभीकेँ कोना कहत जे फेर दर्शन कराए देह [illegible] जे-जे युक्ति कान्ह कहलक से सभ अन्यथा (विफल) भए गेल। तखन राधा कृष्णकेँ युक्तानुकूल (अनुकूल) [illegible] दर्शन देल। [illegible] दर्शनसँ जेना मुख साफ-साफ देखाइत अछि तहिना दूनूक विकार (कामजनित मनोभाव) दमन भए गेल। कामदेव दूनूक कामना पूरा कए [illegible] कवि कहैत छथि जे समाज हरि स्वरूप थिक आ रूपनारायण (रूपा अभिधेय, समाजक स्वामी) थिकाह। लखिमा देवी पति राजा शिवसिंह चिरजीवी होथु

कातरि दिगहु आइ पलोरि मदन साहे हिड बाणेहि दरसिल मोर
मयन रमन हेरि धनहि पाबु हेरि आछि दिठि दए मोलि सन्देस ।।
आओ कि करति सखि परिहत ससिमुखि काल्ह जदि न मुख दिखेस

[illegible] करे तरंगित कलभो नगाइने हुई पीने पयस्

ले जाओ कज़ोन जगो फ़ानज़ोन मज़ो कज़ाल हिन्दोल कज़

फ़ाटे मन विधापति अभिनय रंगभूमि मकल रूप रस अन

राजबल्लभ जिबओ मन्त्रि सिसे मोसर रेणुगढ़ीये रजत [illegible]

• निकटो 2 पुडुरि। 3. रजत प्रवल। 4. तरंगि

क्लि शंपा-कृष्णक कामकेलिक वर्णन करैत छथि -- (1) रभा विकट बाट देने कह उठाए अइलीह। मदन पेरक क्रेलथिन। हिलैत कैसक दर कए मानिक अपन भाग देखओलनि। घर अरबक कान पार्थ [illegible] के कुंडैल रहिये लकलनि आ लालिमें मन्दोष [illegible] से भ समग्र घाँरो एथि। (2) ई मन्दोष कक्ष [illegible] पाछपि [illegible] पूर्णचन्द्रमुखी बैठली रभा की करतीह? X [illegible]

X X XI (3) कृष्ण जयल कारसँ [illegible] लजायथि। यदल छुकाए लेलनि। आजि नहि [illegible] अधीस देव-मालू आमदेय हाँटमें कलनल [illegible] विद्यापति कहैत छथि, रेणुगढ़ीक [illegible]

कुमारि बरिल वड छिपरीन युद्ध के [illegible]

मुद्धा पेलनो गुलमिकेलक अपन रह समर

मजलि नागरि नागर देखर

मङ्गलाके रोमिओ तेसर न धूंधु ओयल फेल [illegible]

हरिनि हरल हरक [illegible] [illegible]

पुरु मन जिसि ठमे मइलै न पेस नरेश फ़ाट [illegible]

एक सखी दोसरी सखीकेँ धीनि रीतिक वर्णन सुनबैत छथि -- (1) के सखी युवतीक चरित्र बड़ विचित्र (अगाधगम्य) देखैत अछि। ई के बूझि सकैत अपने सँह दूखी सकैन अपि से रसज्ञ आ गुणज्ञ होएत गलार फरफिजक) अमहिमे रूपे ओढ़ल नपि [illegible] हे सखली अपूर्व अपूर्व लोगन आ नगरीक लोक। नगरि रहिलहुँ अपि देखक चाहल मनहेक चानि तेसर नहि बूझि पाओल ३ अपु पुरल मुह हरक नजरि कपट अमल मन्द मन्द गमन एक सामक अपे नहि बूझि पाओल नहीं दुजन बेलल कि ठामहि बैसकी गायक कन्हु [illegible]

[illegible] पेकामल ओल रहले अपल [illegible]

सने मारक मन्त्र रहे [illegible]

[illegible]

[illegible]

[

(1) हे कमल मुखी, कहहहह कोल पुरुष मनहरणक आपसँ कल्याण अकरा लेल लो एना क्रीणा अनि ह्रह १४ लेहर केय मा पड़ स्वल पर अधरक छोया लोनी देखि पड़ैत अछि, मान संलाप एहेन लगह घर प्रधान (मुँगा) ऽन्यन्त ह्रन सो कामदेवक आका पड़ ठेढ अछि 5 से घेरि-घेरि सांस सेन छह आ शियहसँ झमकी भा कहि छह मनोद देखी (छोटी) उनटि कें छाती पर अनि गेल छह अेला कपरे नहिंनी लेहर सामक बसात दीघि रहलि हो

ए सखि ए सखि न बोलह धन नेह गुने चरणन हिने कए हल ।
हिने हिने हिअ भय किन् कत्र कैकेयी हाटक मृगेया लागि ।
मनहरि लखने जनक नव तनु। एक लत गहनन जले दुइ कूल ।
मनक पेयासल कोयेलबा एक हए मनहर दूर देस रे ।

सखी दुइ अहि फूल,

हमी रहब के एकसरि भवनमे एहेन । । हे सखी । । ।
मन्यथा अनेर बा । । । । ।

सखी राधाके कृष्णमें प्रेम कथन देखि । है सखी लौ कृष्णके दैखिनेकि इच्छा प्रगट्या दूतीसूं विदा करा ।। ।। अथ अभिलाषा प्रेम-भाव बढ़ कथन ।। ।। दोहा ।। (1) [illegible] जगाय खरद 'केशवदास' । (2) [illegible] जाति सकैत अछि। (3) [illegible] । कामदेव [illegible] चलाअोल। (4) जीवनके आयल दुइए-धारि हैत रहैत [illegible] सब रस क्रोसि सैत अछि। (5) विद्यापति कथन छथि एहि प्रगट पर्वत अछि

[illegible] सखी [illegible] [illegible] [illegible]

सुन्दर मुख कैसे होय (सिन्दूर-बिन्दु) **दूध लगाए** और **सुन्दर मुख कैसे होय** (सिन्दूर-बिन्दु) **दूध लगाए** और

सुन्दर मुख कैसे होय (सिन्दूर-बिन्दु) **दूध लगाए** और

सुन्दर मुख कैसे होय (सिन्दूर-बिन्दु) **दूध लगाए** और

अध्याय ७ : सहकारी समिति का पंजीयन

सहकारी समिति का पंजीयन उसके उपविधि के अनुसार उसके मुख्य कार्यालय के क्षेत्र के लिए नियुक्त पंजीयक या उसके द्वारा प्राधिकृत किसी अन्य अधिकारी द्वारा किया जाता है। पंजीयन के लिए आवेदन-पत्र निर्धारित प्रपत्र में, समिति के अध्यक्ष और सचिव द्वारा हस्ताक्षरित होना चाहिए। आवेदन-पत्र के साथ समिति की उपविधि की दो प्रतियाँ, प्रवर्तक सदस्यों की सूची, प्रथम वर्ष के अनुमानित व्यय का विवरण तथा शेयर पूँजी के संग्रह की योजना संलग्न की जाती है।

पंजीयन के लिए आवेदन करने वाले प्रवर्तक सदस्यों की संख्या कम से कम दस होनी चाहिए। यदि समिति का कार्यक्षेत्र एक से अधिक तहसीलों में फैला हो, तो यह संख्या बढ़कर पच्चीस हो जाती है। प्रवर्तक सदस्यों में से कम से कम तीन को समिति के पदाधिकारी के रूप में निर्वाचित होने की पात्रता होनी चाहिए। अवयस्क व्यक्ति, दिवालिया घोषित व्यक्ति तथा ऐसे व्यक्ति जो पूर्व में किसी सहकारी समिति के प्रबंधन से हटाए गए हों, प्रवर्तक सदस्य नहीं बन सकते।

पंजीयक आवेदन-पत्र प्राप्त होने की तिथि से साठ दिन के भीतर निर्णय करेगा। इस अवधि में वह आवश्यकतानुसार समिति से अतिरिक्त जानकारी या संशोधन की माँग कर सकता है। यदि पंजीयक को लगता है कि समिति का उद्देश्य सार्वजनिक हित के विरुद्ध है, या उसकी उपविधि में आवश्यक प्रावधान नहीं हैं, तो वह आवेदन को अस्वीकार कर सकता है। ऐसी स्थिति में आवेदकों को अपील करने का अवसर दिया जाता है।

पंजीयन प्रमाण-पत्र जारी होने की तिथि से समिति एक निगमित निकाय बन जाती है। उसे एक विशिष्ट पंजीयन संख्या आवंटित की जाती है, जो उसके सभी पत्राचार, बैंक खातों और सार्वजनिक दस्तावेजों में उल्लेखित करना अनिवार्य है। पंजीयन प्रमाण-पत्र की एक प्रति समिति के कार्यालय में प्रदर्शित की जानी चाहिए।

कृपया अगला अध्याय देखें जहाँ उपविधि के विभिन्न प्रावधानों का विस्तृत विवेचन किया गया है।

सहकारी समितियों के पंजीयन से संबंधित प्रमुख प्रावधान धारा ७ से धारा ११ तक में दिए गए हैं। इन धाराओं में पंजीयन के लिए आवेदन की प्रक्रिया, आवश्यक दस्तावेज, पंजीयक के अधिकार तथा आवेदन अस्वीकार किए जाने की स्थिति में अपील की व्यवस्था की गई है। इन प्रावधानों को भली-भाँति समझ लेना प्रत्येक प्रवर्तक के लिए आवश्यक है।

पंजीयन के लिए आवेदन-पत्र समिति के उपविधि की दो प्रतियों, प्रवर्तक सदस्यों की सूची, प्रथम वर्ष के अनुमानित व्यय का विवरण तथा शेयर पूँजी के संग्रह की योजना के साथ प्रस्तुत किया जाता है। आवेदन-पत्र पर समिति के अध्यक्ष और सचिव के हस्ताक्षर होने चाहिए। आवेदन-पत्र के साथ संलग्न किए जाने वाले दस्तावेजों की एक विस्तृत सूची नियमावली में दी गई है। पंजीयक को यह अधिकार है कि वह आवश्यकता पड़ने पर अतिरिक्त जानकारी या संशोधन की माँग कर सकता है।

पंजीयन के लिए आवेदन करने वाले प्रवर्तक सदस्यों की संख्या कम से कम दस होनी चाहिए। यदि समिति का कार्यक्षेत्र एक से अधिक तहसीलों में फैला हो, तो यह संख्या बढ़कर पच्चीस हो जाती है। प्रवर्तक सदस्यों में से कम से कम तीन को समिति के पदाधिकारी के रूप में निर्वाचित होने की पात्रता होनी चाहिए। अवयस्क व्यक्ति, दिवालिया घोषित व्यक्ति तथा ऐसे व्यक्ति जो पूर्व में किसी सहकारी समिति के प्रबंधन से हटाए गए हों, प्रवर्तक सदस्य नहीं बन सकते।

पंजीयक आवेदन-पत्र प्राप्त होने की तिथि से साठ दिन के भीतर निर्णय करेगा। इस अवधि में वह आवश्यकतानुसार समिति से अतिरिक्त जानकारी या संशोधन की माँग कर सकता है। यदि पंजीयक को लगता है कि समिति का उद्देश्य सार्वजनिक हित के विरुद्ध है, या उसकी उपविधि में आवश्यक प्रावधान नहीं हैं, तो वह आवेदन को अस्वीकार कर सकता है। ऐसी स्थिति में आवेदकों को अपील करने का अवसर दिया जाता है। अपील जिला सहकारी न्यायालय में, आदेश की तिथि से पैंतालीस दिन के भीतर की जा सकती है।

पंजीयन प्रमाण-पत्र जारी होने की तिथि से समिति एक निगमित निकाय बन जाती है। उसे एक विशिष्ट पंजीयन संख्या आवंटित की जाती है, जो उसके सभी पत्राचार, बैंक खातों और सार्वजनिक दस्तावेजों में उल्लेखित करना अनिवार्य है। पंजीयन प्रमाण-पत्र की एक प्रति समिति के कार्यालय में प्रदर्शित की जानी चाहिए। अवयस्क व्यक्ति, दिवालिया घोषित व्यक्ति तथा ऐसे व्यक्ति जो पूर्व में किसी सहकारी समिति के प्रबंधन से हटाए गए हों, प्रवर्तक सदस्य नहीं बन सकते।

कृपया अगला अध्याय देखें जहाँ उपविधि के विभिन्न प्रावधानों का विस्तृत विवेचन किया गया है।

सुखमादेवीक पति [राजा शिवसिंह रूपनारायण] एकर रस अलंकार विकाह।

प्रथमहि सुन्दरि कुटिल कटाख। जिव ओंछि लागर देख टेम
केओ देखै हस सुपासम नीक। जड़सन परहाक लड़सन बीक।12
सुनह सुन्दरि नव मदन पसार। अनु गोपह अओब बनिजा
रोम दारिो रस बाबक मोर। अपने धन अधिक मुन होए।14
अलखि न हृदय बुझाओब थाह। आतुर गाहक सहज बेसाह
मनइ विद्यापति सुनह सयानि। सुमित बचन राखब हिअ आनि।15.

दै 2 दै। 3. सुनु सुन्दरि हे। 4 नाह 5 भावसे।

कवि गोरस बेचए चलल्हि एहनाक माध्यम हेन हमरो है सुन्दरी पहिने कुटिल कटाक्षसँ गाहकके विचारह लगए गाहक आन एहनाके लीले हस लाख दाम दए देतह (2) अरी सखी सब समय हास देखि मोहन मोहनी लेबन बिकरी। (3) हे सुन्दरी सुनह हे मोहर नव मदन पसार (कामरूप मालक दोकानदारी) बिहरू हे माल बिकाए जाए पसारने राखह। जखन देखतह लाभ ने सहज सजोर (4) रोप रखबा अहि हेट कए अलख रस बढ़ए दही हरदर धनमाल बिकरी होएत। रहह। जोगाए कि (दबाए कि।) रखने दोकक मूल्य बढ़ैत जाए। (5) आतुर हटयक थाह (आशय) सहजहि ओकर जाने करितह गाहक सबेर आने (आतुर) रहत बेसाह लेबय। एहि दोस गाहकके मनुष धनमोर नहि। (6) विद्यापति कहैत छथि हे दृष्टिमति सोनरि सुन्दर रस ने हेतर उपदेश हमरोसह लेकर मन राखिहह

काने मनुष्य मनुष्यि मनुष्यि अनेक अछिहेतो सोनारिने होएछि।
शिक्षुछि सुनिये धनने सम्हारि ने हेतु आदरल दुख बहलाहर होएछ।

कर्ण। बसाहे बेचनिहारने कहैत अछि ने अमिला देखहु हे कनैये।
बस्तु कुमाए बहल घर जाए बहलाह लोभे बेचबाले ने होए। 4
मुख अरु दाँते लेख बड़ो साँच कुच कञ्चन कारी फल काँच। 5
लग नहि सखा करैत कोमे ओर करे कर धन कहँहि कर जोर। 6
पन दि ३ हाथे लोकोल साठ अढ़ए सतले पहाओँच पाल
लहजन दोसर दुखको विचार सोहरे मुलहब सहज बहल बेचबा। 8
अलखि विद्यापति एहु रस भान सिवासिंह लखिमा दाँते रसमा 9

करण। २ दोसि।

कवि नायकोचनाक रतिभेषक वर्णन करैत छथि -- (1) सखी लोकनिके अनेक अनुनय विनय कए, बुझए-सुझाए के पतिक घरसे सुतओलनि। (2) ओहो विमुख भए (मुह घुमाए) सूते रहलि। प्रयास कएनहु सम्मुख नहि होथि, ओ पड़ल पलँगे ओ घुराए सकल। (3) नायक प्रौढावस्थाक छैथ आ नायिका युवतीअछि। कवि कोटि स्वर्णमुद्रा देनहु पर मिलैत अछि अमोलिक। (4) नायिका यत्नसँ मुह झाँपि लेल मेघक परमे चन्द्र जका [illegible] 5) काम बैसक बराबरि नवपल्लव रोमराजि रूपी दूहू दिशिसँ दोहे आम जका [illegible]। (6) ओ लाजे नहि, हाथो पर हाथ धरने रहथि रोपैत आँखि आ [illegible] एक दिस [illegible] हे परम लोक आ [illegible] दोसर दिस [illegible] ओहि नायकक मनोरथ पूरा होइ। [illegible] ओहि नायकके [illegible] [illegible] [illegible]

अलग विधायिनी प्रयोगशाला मीटिंग पहले दिनों अच्छी चर्चाएँ 5

कवि चतुर्भुज कुलश्रेष्ठ सह-अध्यक्ष राष्ट्रीय समन्वय समिति छत्तीस -- (1) राधा मुख्य दल विधायिका ऐसा काम्पिल छात्रों मन्त्रिमंडल और थैला छात्रों। जेना किसान कोर से हरियाली गंडिला केसीन छत्तीस ।। (2) कृष्ण एक हायसें खोला थकावटें छात्रों, अंगार से लाखनि मेनार्स दुर्गा के यात्रिकसें स्नान। (3) चीर खोलवाक उपाय नहि मोहन छात्रों ने ।। धर्म होषणाक कलमा फरेत छात्रों। (4) राधा का कृष्णाक है पाठ्यक्रम नवम शिक्ष से जाल केलि करवाक मनोरंग नहि पुरलनि। (5) विधायिनि सदेन छत्तीस उपाय सगवाक इएह पैसे शिक। लघुपत्रिका राधा पेंशनभोगी पुस्तक पैसे मुद्रित जाएत।

सदस्ये नव ही कलमे बहादि कहँ पाँच अनुमति कपास अङ्ग मोदि । संसदीय लिखे प्रकाश ने आम चलना पेंशनभोगी लिए ।

पेंशन मैसूर दुग्ध बजे ने मास्त्र लाभ लाए दस्तावेज ३८ ।

लोकसभा संसद के गई कोशल हटय प्रसारित गेल सर ४ मलेह लिपाही नवम्बर मास्त्र कलमे बजट संसद धिक्कार ।

१ मार्च १९५९ ई. सुप्रीम पेंशन दस्तावेज ।

एवं भवन सगवाक धनाभाव सहयोग सलमेत छत्तीस -- (1) प्रसाद मन्त्र हटय, ओषधि पेंशन पेंशन, सदस्य भवन कवि कोदि छत्तीस छात्रावास नवम विधायिनी ।। अंगार कृषक पेंशन ।। (2) पेंशन मोदि पुरान लिए ।। (3) लाभ पेंशन ।। (4) पेंशन मोदि कलमे मोदि मेनार्स ४८ आसिंगन के साथे सलेत अंडा। कोशल छात्रावास हाथ ।। (5) विधायिनी गेल पेंशन लाभ दिवसीय सेलन छत्तीस समयमें छात्रावास आम अंसेय कैमरे बजट ने ।। दयाल भवन ।।

---

१. सफलता। २. हर असलि। ३. जीआए।

कवि सुरभि नायिकाक तीन मजदूर पहाड़ छत्तीस ।। (1) एक तँ अबला आ तहिपर छोटि लघुपत्रिका कृषक हाथ खेत कवि छत्तीस तँ हाथ लाख जहाज (दश हजार) कवि नव हाथ ।। (2) आसिंगनक लोक सुलेन्हि लेल हाथ भोर छत्तीस सेन हाथीक ।। (3) पहल कलमिनी। (3) आखिर ‘‘पर आदि नहि कहिन हाथ छत्तीस ।। सेना चुकाएब कपड़ा लगेल कैल जेना किसान ई हरियाली (4, छत्तीस

आपे नव जौवन समय लिहरी अपनेहि [illegible]
मनह विद्यापति नव अनुरागी। सहिअ पराभव [illegible]

१. घहु।

कवि स्थितिक वर्णन करैत छथि [illegible] राधाक ओपर बात कएलनि तँ राधा अकस्मात अन्तर्धान भऽ गेलीह (अन्तर्धान लेलनि)। (2) एहि स्थितिमे दुनक मध्य कहैत छथिन [illegible] हठ नहि करह हठ कएने लोहर इच्छाक पूर्ति नहि होयत। हे प्रियतम पहिल समय। एहिमे कनेक विलंब चाही। सुरत-रस आनि [illegible] अन्तरमे भीलयन्त कए राखल अछि किएक तँ भोगबाक समय [illegible] भेल अछि। (4) देखह, आँखि (लाज आ भयसँ) मुकुलित [illegible] कएने अछि। खोलि नहि पबैत अछि। देह [illegible] करैत छैक (5) नव यौवन (नवोदित स्तन) [illegible] स्वयं परचारे [illegible] प्रेमेका नियन्त्रण पर [illegible]

[illegible] अपना लोहे बसमे [illegible] नहि मनोमेज तन्त्र दरसह भाव, कोनूके [illegible] अधिक कन्त देह जिव दान [illegible] तइल दया न निकरल लोहे [illegible] रमन के मुख [illegible] अलख विद्यापति [illegible]

१ नायक बहने २ मन। ३ नहि दाहन नहि ४ अछि। ५ रमन मन

राधि समझमे ई बात व्यवहार करबाक अनुरोध करैत [illegible] (1) हम अबला (कमजोर) छी हे स्वामी ई [illegible] निठोह केओ प्राण गमाए लेहि कए [illegible]

तोहि अनुसार अपन भाव (व्यवहार) देखाबह। देखह, हाथी कोना हाथिनीकेँ खेलबैत अछि। (3) हे स्वामी, हमरा प्राणदान देह (हमर प्राण नहि हरह) नगेत अछि जेना आइ एहि रातिक अन्त नहि होएत। (4) तँ निष्करुण [illegible] छह। तोरा ककरो दीनता पर दया नहि होइत छह तोरा ने [illegible] हृदयमे राखैत सभ रमणीक प्राण सुरक्षित हो देखह भ्रमर फूलपर [illegible] अधुपान करैत अछि [illegible] विद्यापति कहैत छथि हे राधा तोहर [illegible] रसिक छथि। कामकेलिमे रसमक (केलिविलासक) कतहु अन्त नहि [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

सुन्दरि मुखल तोहर बिधेक। थारि जेओल नल' मुखल क
बासर देखोहे न पारल पूरे। दुनिक दोस करोहुं पल दूर।4
पओलह सौतल पानि बिभेखि हरह पिआस कि करबह दोषी
भनइ विद्यापति सुन बरनारी। नजनक आतुर होल मुरारि।5

1 बदन सुसौरभ। 2. सुरे। 3. सवाद। 4. भरि। 5. परिअ सूर।

कृष्ण राधाक संग केलि-विलास करैत छथि -- (1) हे राधा, तोहर मुखल जे तोहर शरीर सिरीसक फूल सन कोमल छह सहज सौम्य कमलक फूल-सन लागल। (2) तोहर बोल कोइलीक कुहकब सन मधुर। हमर रसना तोहर अधरामृतक स्वाद पओलक [illegible] भुलबी तँ दिनक (न्याय) करबामे चुकलह। हम थारि दृष्टिय [illegible] जिह्वाकें तँ तृप्त कयलह परन्तु एक आँखि मुखले तोहर रूप देखि नहि सकलहुँ। (4) दिनमे पूरा-पूरा देखि नहि पओलह तें दुखिक कहने फेर रातिमे तोहर रूप देखए एतेक दूर आबए [illegible] प्रकारक शी [illegible] देखिके की करबह? विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरि [illegible] तोरा नयन भरि देखबा लेल आतुर [illegible]

आधे न साहसे आधाने आधे [illegible]
ओए एक जीव राधा कन्हाइ। परक [illegible]
चुम्बने लोपिल' काजर कोर', अधर लिखिसे तोडलह हार
नखेरि खत कुचजुग लागु। कैसे होइत गुरुजन आगु।।4
भन विद्यापति रस सिङ्गार। डहकेल आकुलि तेजे के पार।।5

1 लेपि 2. थार

दूती कृष्णसँ राधाकें भुक्त करबाक अनुरोध करैत छथि -- (1) हे कान्ह, आब एहिसँ आगाँ हमर वश नहि चलत। लोकसभ हे चोरि (गुप्त

जिनक अपना आँखिए देखि लैत (किएक तँ परान होएबापर अछि)। (2) एक टेर राधाक [illegible] (प्रतिष्ठा) बचाबह। आब परस्त्रीकें अपन पति लग पठाए दहक। (3, चुम्बनसँ तों कारी काजर लेपि अधरकें नीरस कए देलहक आ हार तोड़ि देलहक। (4) स्तन दुनूपर नखक्षत कए देलहक से सभ लग सँ मुकबाक लेल कोना होएत। (5) शृङ्गाररसक गीतक रचयिता विद्यापति कहैत छथि, संकेतस्थलमे आइलि रमणीकें हे छोड़ि संकेत अछि

[illegible]

[illegible]

सखी नायक कृष्ण [illegible] छथि -- (1) हे सखी [illegible] [illegible] (पांच नह) केर तरमे नुकाएल छथि। (2) कडरिक [illegible] केर ऊपर सिंह (कटि) देखल आ ओहि सिंह [illegible] [illegible] देखल भेरुक ऊपर चान (मुख) देखल आओर लंकरा ऊपर मृगा [illegible] देखल। (3) मृगाक ऊपर हरिन (आँखि) देखल जे [illegible] [illegible] रहल छल। ओहे मृग आ हरिन दनुक ऊपर अमर

(भउँह) देखल आ' तकरा उपर माथ (वेणी)। (4) एक आओर अकथ देखल - बिनु पानिक कमल फुलाएल (हाथ) आ' दूनू कमलक उपर द्वितीयाक चान (नख) देखल। (5) विद्यापति ई अकथ कथा कहल। एकर रस जनैत छथि लखिमा ।

प्रथम दरस रस रभस न जानए कि करति एह सजनी कलो
नवि नलिनी जओ कुञ्जरे मज्जलि दमने दमन लनु मेलौ।।१।
कि आरे देखिअ X X अनूप
मधुलोभे कुसुम मुकुल दल कलपए आरते भुखल मधुप ।

कवि नवयौवनासँ नायकक संगमक वर्णन करैत छथि -- (1) नायिकाक प्रथम दर्शन (संगम) थिकैक। ओ रंगरभस नहि जनैत अछि नखन पिआक संग काम केलि कोना करत। (2) आकर दशा ओहने छैक जेहन हाथी सँ उपेक्षल कमल-लताक। . (3) अहा, अद्भुत देखि रहलि छी आतिवश भुखल भ्रमर फूलक कली लग कलपि रहल अछि

आजे देखलिऐ काल्हि देखलिऐ आज काल्हि कल भेद
दीसाहे बाढ़ल सीमा छाड़लि जउबने बान्धल फेद।।1
सुन्दरि एनाक कआसुनलौं गोरी
दिने दिने चान्द कला जाजी बाढ़ल जउबन साओ
कत पओधर बदर सहोदर अनुमानिऐअ अनुरागी
कओने चुरुका करे परसए पाओल जे लनु जिनल पराग
मन्द हास बड़िमाक कए दरशलि बड़िमाक अमृत विभङ्गी
लाजे पेआकुलि समूह न हेरलि आउल नयन तरङ्गे।।4।
विद्यापति कविवर एहु गाबए नव जउबने नव रङ्गा
सिवसिंह [illegible] रस जानए लखिमादेवी सुरङ्गा ।

1. सजनी। 2. बदन। 3. दरसए। 4. हेरए। 5. कन्ता.

नायक नवयौवनाक वर्णन करैत छथि -- (1) हे सुन्दरी तोरा आइ देखलिअहु आ' काल्हि देखलिअहु। आइ आ' काल्हिमे कतेक भेद भए गेल अछि। बेचारा शैशव सीमा छाडि पड़ाएल आ' यौवन बढ़ बन्हलक। (2) हे स्वर्णकदली-सन गोरि सुन्दरी, तोहर यौवनक शोभा चानक कला जकाँ दिन-दिन बढ़ि रहल छहु। (3) तोहर नव उठल स्तन जे बेर सन छहु तेहिसँ तोहर, रागोदयक (काम-बोधक) अनुमान होइत अछि। के पुरुष तोहर ओहि स्तनकेँ छूलक जे ओ पराभवे जीति लेलक (?)। (4) सुन्दर भउँहकेँ टेढ़ कए मन्दहास तँ देखबैत छह किन्तु आकुल नयनकेँ तरंगित कए सम्मुख तकैत नहि छह। (5) ई गीत कविवर विद्यापति रचलनि। नव यौवनमे नव रमण केनिहार (कन्ता) मधुमती देवीक पति राजा शिवसिंहक ई रस जनैत छथि।

दिढ परिरम्भने पीड़ाल कान्हे। उबरि अएलाहु सखि पुरुषक पुने ।।1
टूटि छिड़िआएल आतिम हारे। सिन्दुरे झोटाएल सुरङ्ग पयारे। 2 ।
सुन्दर कुचजुग नखखत भरी। जनि राजपुरुषक बिदारल हरी। 3 ।
अधर दसन देखि जिय मोर कोपे। चान्दमण्डल जनि राहुक झाँपे ।4।
मनुट ऐसनि लिखि न पारिअ ओर ' कखन उगल रवि हिन भए भोर' 5
आजु नहि जाएब सखि तन्हि ठामे'। जक जिबे आदि नहायथ कामे। 6
भनइ विद्यापति तेज भय लाजे। आगि जारिअ पुनु आगिक काजे ।7।

1. भटने। 2. डेरे। 3. मोर हितकर सूरे। 4. तन्हि पिआ ठामे

राधा अपन संगम-वेदना सखीकेँ सुनबैत छथि -- (1) हे सखी कहुँ हमरा तनेक जोरसँ पीजिअओलक जे पियाए गेलहुँ पूर्व कालक पुण्यक बलेँ उबरि अएलहुँ। (2) ओतिक हार टूटिकेँ छिड़िआए गेल जेना सिन्दूर पर सुन्दर उद्यान लोटाएल हो। (सिन्दूर=देह, उद्यान= ओहि)। (3)

सुन्दर स्तन पर नखक्षत अरि देलक जेना हाथीक मस्तकके सिंह क्षत कए देने हो। (4) अधरक दंशन देखि हमर हृदय काँपए लागल, जेना राहुक आक्रमणसँ चान। (5) राति मानह समुद्र भए गेल, कतहु ओर नहि पायी। मन मन सोची जे कखन सूर्य हमर भए उगताह। (6) आब फेर हम पिअ लग नहि जाएब, कर कामदेव पाण हरि नडाए देथु। (7) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, भय आ' लाज छाड़ह। आगि अरबेत अछि. तैओ तँ आशिक काज होइतहिँ छैक।

कि करति अबला हठ कर' लाज, निरदए भए उपभोगए पाइ।।1।
परम प्रबल पहु कोमलि नारि। हाथे हाथ जनि पड़लि पजारि।।2।
बिनु रसज्ञ हे सखि नाह बिदेस, एकहि थोरे रस आइस अनेस ।।3।
कएल कातर' क्षत कनजुग लाए। तहओ सुपु[illegible]
बिनु अवसर हठे रस नहि आब। फुलल फुल मधुपन मधु पाब।।5।
भनइ विद्यापति गुनक निधान। जे बुझ ताहि भाग पञ्चजान।।6।

1 कए। 2. काल कायु। 3. सुगुध रति रचए उपाए।

कवि नवयौवनाक सम्भोगक वर्णन करैत छथि -- (1) अबला की करओ? ओ विवश अछि। पिआ हठ करैत छथिन। ओ निर्दय भए ओ उपभोग करए चाहैत छथि। (2) पिआ परम प्रबल छथिन आ नारी कोमलांगी (नवयौवना) अछि, जानू कमलनाल हाथीक हाथ मे पड़ि गेल। आगाँ नायिका सखीसँ कहैत छथि -- (3) हे सखी, पहुक विदेश की कहिअनु, ओ तँ एकहि बेर सभ रस (सभ प्रकारक सम्भोग) चाहैत अछि। (4) दूनू हाथ सँ ओकरा क्षत करबाक (टारबाक) बहुत प्रयास कएल, तैओ ओ लोभी रतिक उपाय रचैत रहल। (5) किन्तु अनुकूल अवसर (उचित वएस आदि) नहि रहला पर हठ कएने रस नहि भेटि सकैत अछि। फूल फूलएलहिपर भ्रमर मधुपान कए सकैत अछि। (6) विद्यापति कहैत छथि

जे गुणवान् व्यक्ति रस बुझैत अछि कामदेव तकरहि पर प्रहार करैत छथिन।

[378]

रभसा लोपि बढ़ाउलि केलि।
कतए दैयल नखि लखिलौं अत लतडगज मेलि। 1।
गोर सरीर पयोधर कोरी परसे अरल मेलि।
फनक बलरि जनि रत्नोपल मुकुल उदय देल।।2।
छड़ल जल जदि दैन न आबए लाहेर हृदय सन्दा।
खने खने रति रभस आगर दिने दिने नव धन्दा।।3।
भमे नवीना पिआ सआक कुपित कुसुम बान।
केसरिकरे करिनि पड़लि लासु लहरे छोड़ान।।4।
से जे अवसर भल न बिसर नयन ढलाए लोर।
सिरिस कुसुम खडगी खोलीलन्हि भमर भमे जे भोर। 5
भन विद्यापति सुनह जोयति पेमक गाहक कन्त
राजा सिवसिंह रूपनरायन सुरस बिन्द मुतन्त।।6।

1 पाड़ओ। 2 धलए।

मुग्धा नायिका दूतीसँ उपराग दैत छथि -- (1) हे सखी, ई कैनि (रग-रभस) लोरे बढ़ाओल थिक (लोही एकर संचालिका थिकह)। नव कमलनलता आ' मत हाथीक दीघ मेल कखन देखल गेल अछि। (2) हमर गोर देहमे जे बेरक पड़ सन स्तन अछि रहल अछि से ओहि निर्दयक हाथेँ मर्दित भए लाल भए गेल आ' लगैछ जेना सोनाक लता (नायिकाक देह) मे लाल कमल फूलाएल हो। (3) छड़ल (वर्षित) लोक जँ कखनो दैन्य (व्यथा) नहि बूझए तँ बूझी ओकर हृदय कुत्सित अछि. जेना दिन दिन शुक्ल पक्षक चान. (4) हम नहि छी, पिआ पौंठ, आ' कामदेव कुद छथि। हथिनी सिहक पाला पड़लि। सिरीसक फूल पर खड्ग धलओलनि जे भमरहुक भार नहि सहि सकैत अछि (?)। (5) ओ जे रतिरगक क्षण छल

से बिसरि नहि पबैत छी, आखिर और कहए लगैत अछि। (?)। (6) विद्यापति कहैत छथि हे सुन्दरी सुन्दर पहु नागर प्रेमक सागर छथुन राजा शिवसिंह रूपनारायण। ।

[illegible]

राधा कृष्णक सम रतिरागक मध्य कहैत छथि जहिने सखी पुछैत छथि [illegible] हे गजगामिनी सखिक से अस पहिने तहू अपन रसिकता आओर पियाक अनुराग सुनाउह से राधा उत्तर दैत छथिन [illegible] हमर पिआ रसिकशिरोमणि छथि आ तेहिपर अत्यन्त रसज्ञ कोऊ अस अन्य [illegible] पियाक हृदयक भेद नहि भानए से हम सखी [illegible] लाजसहज कलेक बेर नहि नहि रहैत रहए। (5) रतिरागमे दुनुक अस [illegible] सेमो आ कामदेव पहुक [illegible] नहि [illegible] हे [illegible] कहैत छथि [illegible] रस अन्तरिक्ष [illegible] हमर [illegible]

[illegible]

सेपरसलों हम पल किछु [illegible] करए पाक उछाह।
हिअरक [illegible] [illegible] गिरि उपाड़ए चाह।।1।।
दूती चतुरकि लोहरि सनि
[illegible] [illegible] भरहते भुअन के हरह ऐछे [illegible]
पिहुड़ा आ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
थोड़ आनें घहराह पद थोड़ी अमल के नहिं जान।।3।।
[illegible]
हम रह के [illegible]

झरका थानि डोभक कोइ गरब उपजु आहि
अस [illegible]

1. छोटा। 2 थोड़ी के नहि

राधा कृष्णक धमरक निन्दा करैत छथि -- (1) निर्धनके जँ धन होइक तँ ओ [illegible] करए लगैत सिनायुक्त जे सँघ होइछ ओ पबैतहिं उपहास लागत (2 [illegible] दुनि नीचर बुद्धि [illegible] थोड़ [illegible] थोड़ [illegible] [illegible] [illegible]

आएल तँ बैसकमे देल गेलैक पीआर, तैओ ओ गोआर पूछए लागल जे सेज कतए अछि? (5) ओछाओनमे चाहैत छल पलंग आ अरतैक खसनर। बेसी की कहबह, कनह्न हमरा एकान्तिक स्थान छिऐ एतहिसँ दूरि जाह (६) विद्यापति कहैत छथि हए राधा, तोहर पहु बड़ भाग्यमान छह (ओकर आदर करह)। लखिमादेवीक पति श्री शिवसिंह छथि रस कहैत छथि

४२

हठ न हमर भार मुजबुझ कहिने आछेन्न सहज थिक प्रेम अहा
हठ न करिअ हरि न करिअ लाज भागि अछि एहि हमर मुखसोम
कहिए हरिअ नित्र नयन चकोर। पीबि हसन पानि अघिलाए
परसि न हमर पयोधर ओर आहिअ जएत ओर कनक कटोर।।4
भनइ विद्यापति सुनह मुरारि [illegible]

। किस किसलय कनि [illegible]

राधा काम केलिमे कुशल कृष्ण के [illegible]
कान्ह तँ हमर आहिके [illegible]
ठाढि (मृणाल) सँ कोमल अछि, हमरासँ तँ डाभोहे टूटि जाएत। (2) हे कान्ह, हठ नहि करह। बेसी लोभ नहि करह। अधिक आति [illegible] देखओने मुखशोभ (प्रतिष्ठा छथि) नहि रहि जाइ। [illegible] हे [illegible] चकोरकपी आखिकेँ हटाए लेह, ओ हमर मुखरूपी चान [illegible] जाएत। (4) हमर स्तन एखह नहि हमर सोनाक [illegible] (5) विद्यापति कहैत छथि, लखिमा देवीक पति शिवसिंह [illegible] छथि

५

प्रथिन पयार संसार सार रस परहोक पथिन लोहार है
हठे आँचर मोर फेरि न हल्बे रस भए जाएत [illegible]

[illegible]

ए हरि न हरि करति परिहर हठ नहि कर बिचार बाट है
जेहे बसाहल से कि बेसाहब उचित मनोभव हाट है। 2
कञ्चने गढ़ल पयोधर सुन्दर नागर जिवन आधार है
छुएते रतन तुल न रह अधिक मूल किनहि न पार नमार है। 3
भनइ विद्यापति सुनह मुरारि हरि सजो कइसन लाज है
अपट नेजि कहु मजह जे हरिसजो अन्त काल होअ छाज है।4

। पांडेरि हठ न करिअ पहु। २ समान

राधा कृष्णक हठकारिताक प्रति रोष करैत छथि -- (1) हे कान्ह, हे हमर संसारमे सभमे मूल्यवान वस्तु रस (शृंगाररस) केर पहिल दोकान थिक, एकर पहिल बिकरी (बोहनी) लोहरिसँ होएत। हठपूर्वक हमर आँचर नहि हटाबह। से कएने रस उधार भए जाएत। (2) हे कान्ह, आतुरता छोड़ह, बाट घाटमे एना हठ [illegible] हे एहि बेर बेसाह [illegible] हमर हे मुरारि [illegible] एहे पयोधर के जे छुअह तँ एकर मूल्य धरि [illegible] हे मुरारि नहि कीनि सकैत अछि। (4) विद्यापति कहैत छथि हे बुधिआरि सखी सुनह। कान्हमे [illegible] आहिके कान्हके भजह जाहिसँ भेटे अन्तमे सहारे होइ।

[illegible]

कहलाई

सभी संपर्क ऐसक छाया कवेन छांचे ह्ये ध्या नहर कॉल्न
प्रशासनीय अछि। तौ अपै सजरिमे ठाढ़ दुखनी, काल्ह मन टाकरे कैंपने
लेलक। (2) एकि हायक खरीद बिक्रीमे हटक मार्केट-व्य न्याय सरहले
अचूक ऋतुराज दसन्त। अध्यक्ष, उप संचिव मुख्य लिखीकर
कालिहार कामदेव। (3) हाय विधायक टनाटन लिखनिहार छन दिन
(द् अर्थ घड़ी ५ गाछ कुसियार आदि भेल मकदल्ल अंग कलम
भेल अमर। सभी भेलाह चान। (4) बाहे (टसिक कवेता) भेल रंगेबाज
बरम, सेवल-शुल्क भेल मान; सरसं कवे ह्ये ह्ये ह्ये
शिक्षासेवक हेतु

सभी ह्ये यौवन गाछी भेलाह, सामनी सरहल, दूरभाष दोसर दूरी
नवल रह भेलाह, ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये
सुरक्षित राखह, ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये
बीजगणित ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये
आए न ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये
ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये ह्ये

अंतिम अक्षरहि लिखोकेँ राखि कहलन्हि भरिहरनि देखल साँझे 5
एत सुनि लगे लागि देखल। सभ दा आज अधिकक पास 6।
पाइब हास बैसल न लोधि। ई कय हारल बाजे हर जीति
अल पिरातनि सुन सुरपि बिहस पठौलनि भाइ से जनि 8
नृप सिंहासेन हे रस आज राखे लाखेमा होरे रमाने ।

1 लोहि। 2 ता। 3 थेरम,

दूती कृष्णक कहैत अछि (1) बाला चित्तचोरने रहाके पर
क्तए आनक' है कान्ह बर नीदी ओतए चलह। (2) राधा पोहन दे पेस
कएलक अछि बड़ ४ कुलि अछि धरल पयासे भाकर। भरि मिलन
करओल। (3) जकर छोड़े सुत मालती निरोधक मे यमुना पार कए लीला
लग खेला अभीनदु 4) छाड़ा कांट छैक भाकर पाथर जकल
छैक आ बाट दु ३ राति बड़ भयानक आ घन अन्धकार वाला
अछि। आ छाए आकट कोन २ कुं तरु लोकी भाकर अ तरल
अल लोचन छैक मधु मधुकरक (भ्रमरक) लगे नहि अबैत अछि (भ्रमरे
मधु लग जाइत अछि। भाकर छैक रानी
अछि। जे साहस करैत आने कएल छोड़ि । छैक
(8) विद्यापति कहैत रानी हे कान्ह सुनह। आ छैक रही
पड़ैत अछि (9) रानी लखिमादेवीक गेल
छोये।

प्रथम पहर निसि जाक पु ल ल
मन्त्र भाषुरा पोथि अन्त भगवि खानि रानि आयल वन्दा।।२।।
सुन्दरि चल अभिसार रङ्ग हिंडाए मनोरथ मन्दे
भौरह भरा पिआ आसे। एतए बैठल सिंह भयाथ डगे ८
साहसे सपिअ अभाथे तिला एक कठिन पथिल भयरोए ९

से साहस चलें लोक हिन्दूरि अलाहक लागल औरी 6
हेरैते भालेहुगल देसी। अन भरि कुचाँ अलस सुख लेखी ।
सबे सहज कर दूरे कलाँनि कल अहोरथ पूरे 8
कवि विद्यापति अल सिंहसिंह लखिमा देवी रमाने ।

१ सिअ सिअ मन्दिर सुजन समाक २ अन्हर ३ २ सिंहसिंह

सखी दूती राधाके अभिसार हेतु प्रेरित करैत अछि (1) राति
पहिल पहर बीति गेल सभक लोक अपन-अपन घर पैसि गेल। (2)
अन्धकार भरी सांझेरा घिरि दुइ पान आह लगले जगा पर अछि (3) ते
हे सुन्दरी, झट दए अभिसारक सह शृंगार रस जगजन्य आनन्द
संसारमे सभसँ बाढ़ि थिक। (4) ओतए पिआ लोहर आस लगओने (बाट
चलैत कहु आ पथर लोरी सहदेवक अपने फेरु लगओने रहथु
(दूनू पक्ष अनुरू)। (5) अभिसारो काज साहस कए पूरा कए सकैत थिक
अन्धा भरि दिनमा [illegible] ते [illegible] छैक
कारी अछि आ नो [illegible] आ विजलीक मिलन होअओ
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
कवि विद्यापति कहैत रस [illegible]

[illegible] करह निलकी ।।
[illegible]
सजने सुन्दरि बढ़ि राही। कि कारनि मन्दिक पहरो
अजर नयन लीला। काजरे न कर अमीला। 4 ।
दूरक पथ हम अगरा। आसे बुढ़ि होएत सगरा ५
पैन [illegible] [illegible] कलस कठोरा ।
पथरले पहल न कर पहिले बुढ़ि सगर चुलक
भनइ विद्यापति हो कान्ह [illegible]

ओकर प्राण अवग्रहमे छैक। नागर (भद्रपुरुष) से थिक जे अनेक हितोहित बूझए (6) लक्षत्र लक्षित भेल। और देखार भेल। बाट चलैत केओ आन देखि लेलक। (7) एहोसमे दुर्जन सभ बसैत अछि। ओ सभ पुछलेक तं कोन लाथ करत? (8) विद्यापति कहैत छथि , (9) आदरपूर्वक अन्हिके ओकर प्रतिष्ठा नष्ट नहि करह

[392

छल मनोरथ औधन भेलें कतन करब रङ्ग
सेहे सबे ओर' धरि न रहल भेल किरदए सङ्ग। 1।
तथुहु ऊपर छल मनोरथ आहे कि करब साध।
अइसनि अपराधिनि' भेलहुँ जे छल तोहि बाध।।2
माधव अबे तजो इ बड़ दोस
जते जे किछु बोलए चाहिअ तहीं गुरुजन रोस
अबस निअट आएब जाएब थिनअ कर हे नारि
दिने साते पाँचे बाटहु घाटहु दिठिहु हलु निहारि।।4

1 से सबे पेम ओल। 2 अइसनि भए अपराधिनि

राधा प्रेमक आगेसे बाधा पाबि अपन व्यथा कृष्णसँ कहैत छथि (1) मनोरथ छल जे यौवन भेलापर खूब प्रेमविलास करब। किन्तु से अन्त धरि नहि कए सकलहुँ। मन दुटि गेल। (2) आगाँ आओर अभिलाषा करब व्यर्थ (3) तोहन अपराधिनी भेलहुँ जे जतबो अनुबन्ध (संगति) छल तोहूपर प्रतिबन्ध लागि गेल। (4) हे कान्ह, आब तँ हमर ई अनुबन्ध बड़का अपराध बूझल जाइत अछि। जँ कखनु गपोसप करैत छी तँ तोहूपर गुरुजनक क्रोध होइत छनि (5) हे कान्ह, ई बेचारी नारी (हम) विनती करैत छहु कृपा कए लग अबैत-जाइत रहबह। पाँचो सात दिनपर बाटो घाटमे क नजरि निहारिओ लिहह

दुर सखी भेल ... बाटल मनक थिरिति जानि
अनोहि काज बड़ि दुर आन्तर करमे साओल आनि।।1।
चरन नूपुर धनि सबदए चान्दनि' हानि ऊजोरि
नखांतेल चौरानि लिन्दे न होअए आबे अनइति ओरि। 2।
दूती बोलि बुझाबह कान्हु
आजुक रअनि आए न होएत हृदये कोपथि जनु।।3।।
एहन नूपुर बचे उतारब सामर बसन तनु।
खेलहु कौतुके नखर थोपथि बिलम्ब लागए जनु ।4।।
अं भरे लखन लख सिनेह हँ भरे कुलक गारि।
मकल पेम सम्भारि न होएते हठे चिनमनि नारि।।5।
भन विद्यापति उगन्तक सेविअ भदल थिन्तथु आओ'।
थिरिनि कारने जिब उपेखब हँ थोरि होअ कि जाओ ।5

दुर सिनेह। 2 अनलपे काजे। 3 चान्दहु। 4. आउ, 5. जाओ।

राधा दूतीद्वारा सन्देश पठबैत छथि -- (1) हे कान्ह, तोरा सङ्गमे प्रीति छहु से जानि तोरासँ बचन द्वारा दूरहिसँ नेह बढाओल परन्तु हमर कर्म (दुर्भाग्य) तोहि नेह बीच थोड़हि कालमे बहुत व्यवधान कए देलक। (2) पाएरक नूपुर बड अवाज करैत अछि। शुक्ल पक्षक चकमक राति थिरिनि नलदिकेँ लीन नहि। हम विवश भेलि छी। (3) हे दूती, कान्हुके हमर उपर्युक्त सन्देश कहिके बुझाबह जे आजुक राति हमरा आबि नहि होएत। मनमे त्रासस नहि करथु। (4) पाएरक नूपुरकेँ हाथसँ रोकि सेवा कारी वस्त्र पहिरि सेज। खेली कौतुक कए नलदिकेँ परतापि देब जाहिसँ अभिसारमे विलम्ब नहि हो। (5) ओम्हर (एक दिस) नव सिनेह आ एम्हर (दोसर दिस) कुल-कलंक। प्रीतिक सभ अपेक्षा हम पुराए नहि सकब। तेओ जँ तीं हठ करबह तँ मारलि जाइति हे नारी। (6) विद्यापति कहैत छथि, उगन्तक सेवा करी (अविष्य प्रेमक चिन्ता करी) आओर

धानक चिन्ता कामदेव फरमू पैनिक कक्षों पाण्डुक ऽधीक्ष केवल मद्द अधिक लड़ि फेर माण्ड रहजे पैं। नाभे

फह फह तुन्ली न रूप ढंआन दिखि हुं मंथ भएभ मंथ

मृगमंद पड़के करासे अंडगाल। कंजीन नावर परिनल मेंन आग।।2

पुनि पुत्र प्रलंके शंखिका देस हंगे कंजल मुख्य देन मंद गंभे
नेपुर प्रथम फरासे कंफे पुंछ पंछ फल पंरेशी नख नख पंचि ।
एंशि हिंदोसे मधे मंत्रि भ मग मेंर मल मंज । दिल कंपेन्।
अनंतु शिव-पंन तुंग कंजले पैरन पं "" पंक्ति मुंगे ।

। दक्षि। 2 मोर। 3 कर।

पृथ्वीराजेंशंपेका राधके मन्ने मंहिंस उभे ह मंहिंसे कंन्द
कंहुं नंथ नंहुं कंक मुंह मंभ मंथ पंहिला मंडी मंभ्यारा नंहे
अंशि (2 देहम दंसन पंहि कंसंहिक सेप नंहिंस उंन मंहिंसे मंह
मंहबंक हंगे । पंभे नंगाक पुंरा मंह कंशिंस मंभेक ।। पंछंहिं कंपे
कैभ निंहोरेन पंह न मंहिंस पिंहे कंजे मंहिंस पंहि
ए, मंशि के जंसे रंसे ह दिंह मंभे पंह । मंहिंसे मंहे
कर।। (5) अन्धकार-सन मार्ट कंशे रंहि मंभे । मंहिंसे कंहे
पृथ्वीं न्यांके हिंहेंसे उंठेन पंह मंहिंसे पिंहे मंहिंसे ।
(5) विंशाभंसे कंहेन पंहे । मंहिंसे मंभे पंह मंहिंसे
कंशंसे हिंसल

घर गुरुजन पुर परिजनं जंगा। कंडुकें लंपल हिंसुंभं । ।

कंसेन घरि अंगुंसे गंजन हांथ मंगे। रहा पंभे मंहिंस पंह । ।

मंहिंसे मंहिंस पेंक संहिंस मंहुं । । । । । । । । । । । । ।
पुंहिंसे मंहिंसे नंहिंसे (मंहिंसे-ठैंहिंसे के पंहि। मंहिं मंहे) मंहिंसे
घरि पंहिं। मंह पेंस पंहिंसें ठैंसंहिंक मं कंमदेंप मंगु हिंसकं
पिंहिंसंहिंसे, । । मंह मं । । । । । । । । । । । । ।
कंमदेंप पिंहिंसंहिंसे मंहिं मंहिंसंहिंसे संहिं पं मंहिं पंहिंसंहिंसे (3) गंट

दयाल अनुसार सम्पादन सम्बन्धी विवादों का निपटारा करने के लिए समिति का गठन किया जाना चाहिए।

लता मुद्रण-संबंधी तकनीकी पहलुओं पर विचार करने के लिए एक उपसमिति का गठन किया जाना चाहिए।

हरिप्रसाद अध्यक्ष की अनुमति से समिति के गठन की घोषणा करेंगे।

अध्यक्ष समिति के गठन की घोषणा करेंगे।

दयाल अनुसार सम्पादन सम्बन्धी विवादों का निपटारा करने के लिए एक उपसम

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अवँ न आपनहे नहे धनै पसरनि कोह
धेहमुअ मोलि आवनि मारू ३
भनइ विद्यापति सुन वर कैसनि जौवन अपन सन्देह ४
x x x x x x x x x x

१ आगत २ अपूर्णिस मरने एत समु नहि ३ नइ सँ धनसँ ४ नहि। ५ से कहलि।

दूती कृष्णके उत्सहन दैत छनि १ पहरू सभे आपन घर। नगरक लोक चलैत घुलैत रहए समु धनि धड़फड़ाइत नहि रहए तैअे राधा अपन घुचिअरी आ कोंहनिक धनें अेनी जाए धरए पड़ए एतेक अधिक छैक (राधाके नोह स्नेह) २ हे कान्ह (अपन आलपर इछना) छहु से सभ की फाहअहु। हाथ मोरे प्रयान होते ३ मन छल। (3) से ओ तोहर आ धनक प्रतिमान रहि मोर मनोरथ तीतैत रहलि। जखन से अहं आपन राखल आ समाप्त हे दूति सोने आ (अपन आपाक प्रमाणो हमरो मन से ति मोर अलने छलि, फेरू सेनि ४ रहए से जागल कोना

राहु मेघ आ सशक्त सु ... धनि धड़फड़ाइत मन ... धन' बोरेसए अछसर लोक ... सखत्वल सुन्दरि ... मुकुलन प्रिया ... एहि समय ... अनइ विद्यापति ...

१ नहि। 2 सङ्गम

दूती राधाके दिवाभिसारक हेतु प्रेरित करैत अछि - (1) राहु मेघ ... धने के सूदेक ... दिलहिमे ... अछि। मेघ लगातार बरिसि रहल अछि ... धाक ... अछि। नगर मे आ घर ... भइलमे ... अछि। (2) हे सुन्दरी, चलह अभिसारक तैआरी करह। आइ दिवा सगम सफल होएतहु। गुरुजन आ परिजनक डर ... छिन् साहस करने कामना सिद्ध नहि होइत अछि (3) एहि ... समयमे महत्वपूर्ण ... ठीक छन अरि प्रेमीसँ मिलन आ जीवन ... एकाक ... कविकण्ठहार विद्यापति कहैत छथि लाखो चेष्टा करने ... मिलन) सम्भव नहि होइत अछि।

१ दनि २ अर लाग

... धनि ... मोर ... ३ ... सखीगणे ... ४ ... ५ ...

[illegible]

[illegible]

पार्थिव चन्द्र, २ खिन्न, ३ कुन्तल, ४ गाढ़त्व, ५ [illegible]

राधा गुप्त सम्पादक [illegible]

[illegible]

अनुवाद 2 लाख।

[illegible]

राधा नाथ का [illegible]

[illegible]

अनुवाद 2 सासुनिक। 3 [illegible]

सासु गुप्त सम्पादक [illegible]

प्रश्नक उत्तर देबहुन जे से अल्पक समय सूर्योदय करबले मेलह आ लडिक अन्त भेलापर (सूर्यास्त भेलापर घुलह (लेनेक काल कलए छलह?)। राधा उत्तर दैत छथिन (3) आहि लेल गेलहुँ (पोखरि अहल गेलहुँ) से चलि अएल पानि आबे गेल दर्या होअए लागल से हम दौड़िकें एक सुरक्षित स्थानमे लुकाए रहलहुँ। जखन से पानि चलि गेल (घरखा खतम भेल) तखन पानि भरि घुरलहुँ। (4) बाटमे किछु अल्पसंख्यक (संकट) भए गेल। शंकरक वाहन सांढ़ पाछु दिस खेलाइत रहल। जे मात्र संग छलि से सभ एम्हर-ओम्हर भागलि। हम खूब भागि उपरे भागलहुँ (5) लौं हे सासु, आहि दू वस्तुक (पानि आ पेलक) पूजाक लेल अछि से दूनू अपन-अपन संगमे मिलि गेल ([illegible] मारिमे। विद्यापतिक अहिना उक्ति हे सुन्दरी सुनह राधा विरह नहि सहैत अपेछे (लाथ क [illegible]

[illegible]
खनहि खन सहाय भइ किछु अ[illegible]
कपटे धरि मान सम्मान लेही
कनक जनी पेम कसि पु[illegible]
भनहि सजा अधर [illegible]
[illegible]
[illegible]
इन्दुमुख अछ ने कर चित्त संशय [illegible]
कुसुमसर रहस कला [illegible]
बहसी उस दोसी [illegible]
सहजे घर छाड़ि देब सभन [illegible]
पथम रसमरा भेले लोभ मुखलोभ भेले
थिर भुजपासे चित्त धरब गोआ।।3।
[illegible]

[illegible]
धरब [illegible]
सखी सुख मुख भरि [illegible]
सबसे कपे सुरस भरे थरथर चलनाटे
[illegible]
सकल तन मुकल रति रीति बड़िमाक पाँते
रभसरसमय [illegible]

इन्दुमुखि [illegible]

सखी लोकनिक काम-कला (संभोग रीति) सिखबैत छथि -- (1) हे सुन्दरी खन सहज भए खन [illegible] देखाए मान करए पिउसंग सम्भोग [illegible] करह जे सहज सुलभ वृद्धि उपेक्षित नहि होइह। [illegible] परीक्षा करह जेना सोनक परीक्षा [illegible] (2) अपन चालि [illegible] मनमे खेद होएतनि से हे [illegible] संसारमे कामांधजनो सभसँ पैघ वस्तु थिक। (3) पिउसंग [illegible] जे कहलहुन से समटा मानबह नहि।) हृदय कोनो [illegible] मारि के अपन देह काल कए लेह तेओ सटबुन त [illegible] जखन हृदय रसभावसँ बाधा होएतनि [illegible] मुखसँ बान्हि तोहर गरदनि धरथुन (4) जखन हृदय [illegible] [illegible] जाँघ सेंकुचि जाए तखन आँखि [illegible] [illegible] [illegible] (5) सरस नामक कोनो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

| | | |

बोलक दर्शन हमर पेम-सुरुष मलके विशास भए गल (ओ तो लोक लोक

बिचार हमर। ओ ..... रसवड़ में अलो लोर **मन मुद अँचर में किएक इहेन छेल अलय-मनो हसकपी अलत**

हमर खसलहे {4} ज

चिन्ना कंपेक्स काल सीपी सर्वेक्ष्ण ८१ के अनुसार सेंट्रल अन्य ओपन हेल्प पायरसी अदल हो, जो किए के लिए ग्रिलमार्कहेक फ्रेंचे होंगे किसमें एक्स (मात्र करेत अंति तें कानदेय आदि उठते छवि (मालमें चिपरा लेकि भलुग्रा बड़ेल भवि। अमनीटेबीक पति सालिच वियोक्षिक थडकर्य एकर समय का भाग दुर्बल छवि

पंडित सरोज [illegible] मधुबन मं. म घोटेजी पान्द अजाब [illegible] सर्वेशने दह पनोट [illegible] सरसि दनि जरि [illegible] नरि नजल ह पयहे नरि सरपत [illegible] मकल कमनके करि [illegible] फार्मिसि कर्षे मनोरथ जाए' [illegible] नरसनिदेड थर सलगरि सहकर पुरस्र सपस रस आसे ।

मंगोरथ जागल

कृष्णा आनिनी रचनके कउसेत छाय [illegible] अपल मुखकमलक हास नुकए सेनई (तो जे किसेन [illegible] हजर अत विधिल्ल अधि। डानी थाल जे अमृतपृष्टि [illegible] की विधिके जिअत। (2) ह अनिली, आसई घुरे के [illegible] सगर रनि नानकिके बिलाए [illegible] नयन आब एहि अरहुपर नहि [illegible]

अपि सकेल दिअह नें थोल जलकए शोभा घोरओलह तही आजे मुह नहि देखहैन उह की ४, कनि दिआपनि अैसन छवि कामिनी जें छवि। (मात्र करेत अंति तें कानदेय आदि उठते छवि (मालमें चिपरा लेकि भलुग्रा बड़ेल भवि। अमनीटेबीक पति सालिच वियोक्षिक थडकर्य एकर समय का भाग दुर्बल छवि

पंडित सरोज [illegible] मधुबन मं. म घोटेजी पान्द अजाब [illegible] सर्वेशने दह पनोट [illegible] सरसि दनि जरि [illegible] नरि नजल ह पयहे नरि सरपत [illegible] मकल कमनके करि [illegible] फार्मिसि कर्षे मनोरथ जाए' [illegible] नरसनिदेड थर सलगरि सहकर पुरस्र सपस रस आसे ।

मंगोरथ जागल

कृष्णा आनिनी रचनके कउसेत छाय [illegible] अपल मुखकमलक हास नुकए सेनई (तो जे किसेन [illegible] हजर अत विधिल्ल अधि। डानी थाल जे अमृतपृष्टि [illegible] की विधिके जिअत। (2) ह अनिली, आसई घुरे के [illegible] सगर रनि नानकिके बिलाए [illegible] नयन आब एहि अरहुपर नहि [illegible]

कक्ष 2 भलाई

कृपया आलिंद गरुण्क अलंघित छोड़ी ____ के माध्यम से गए मंडू
मालक अंजन कवच रखे बीमे बंद रेंध राहे गंध लंके ।८
गुणवती अथवा गुण चुकाए का दक्षिण ने विक्रेता सुपुत्रके बेंच हुए
प्रधिक फलप्रद होंदत अंडे। (3) एक डेर हजार १८४ लक्कड़ ४८ हमार
मंत्रक लाप हरहे। पेमक संगठ वाहनान ____ 4 हमा लंघन
रची अमार आस लगाअँने अंडे कथन नहर मुखकमल विकसित ____
से ओकरा साथ मिलल रुपी। (5) ____ शिवगढ़ि अनमे ह ____ ४ ____
से रसिक राजा शिवसिंह एकर रहा ____

दुसुरु ____ ने ____
अंजुक ____ ____
____ ____
____ ____

____ ____ ____

कमिनीके कहिनि हे चलि आनि
चिरसमदाएल हरि भेल पाहुन आहेमो केलनि न भेटे ३
पड़ोसक पात अनरथे आबै नामोंग्रो आसन नहि भेल टेहा
कृपन सञ्चित धन रहल अधखेड़ित कतहु सिखबु रेहा
अकनिअ जोति अधरे नहि छाड़ब पबहि न सम्पत्ति हाथ
अतबहु सोचब सखि कि तोहे अचेतनी की तोर लाइ सनाथ ४
विद्यापति अन नहि अन सबहक हित चिन्तए देवनारा
पबहि रूपक कैलि पिआ सङ्ग पुनु अनि दसाएब इचेन चिन्ता ५

कतए २ एतए ३ आबो ४ आएल त पाओल ५ अधरक बीचे अधरे नहि छड़ब। ६. हिय ७ हित

सातोंहिम राति चिलअमिहारि नायकके सखी भेटि छथिन एक दिस अकाशमे पर भरणक उदय भेल आ दोसर दिस चन्द्रमाक अस्त भेल एक दिस कोआहल कोन अमर नगरमे आ दोसर दिस मङ्गल सूतल। (2) हे कामिनी ! राति आधिसे बेसि बीति गेलइ तैयो पाहुन भेलहु तेसो आशायो ने भंगल मने आशो छल जेहन नहि भेलहु ।, कमलक पात पैरने भीजल नहि (अर्थात) लोहर देह छाड़ि आइ भेलहु (अ सम्भोगक शीतल लहरि, लोहर कलामे आ सिन्दूरक प्रसाधन कुचाक सञ्चित धनक अधिकांश भोग आइलि रहलह। (4) अधर अधर लोकी नहि गमबाक लेल दृढ़ कय देब हमर लहि। एहि सब लक्षणसँ हे सखी आनो कहलह जे की तँ तो अचेतनि अचेतन (यौनसंयोगशून्य) छह आकि पहुनक चित्त लेब लगाए रहह ? विद्यापति कवित छाये लोकर मन परक नहि छह जिनक चिन्ता छह फेर चिन्तामे मिलि दगरभरम रहह दम्पतिक हेतु अपने कए दुहिन चिन्ता

भागलि अपन हे ने चिन्हइ केओ कत रहाबे
अपने रसोले पेड़ि सलाबह घरक एलनि नाहि ।
कान्हा नोरे थर थाक सिसडक
हड़ि हसि सेह करम पबलासे ने होइ कुल कलङ्क २
काह आगे तोहि सुख लेखाए लोहे तोरा लेखल्ह
भनिते हेमिहे ने काज ने करा काह सह के मानें ३
नदिह पिय समाजमे मानइ एत बड़ सोर लोअ
परक माहुन घरक पैसए कत रहल दूर सोभ ४
दूनिक बाटे कतह नजाएब केवे पियाएत आने
ने भेल से भेल बेरि लोह गल आगे कर अनधाने ५

आगू एतए २ हाट ३ पाटे ४ आदे

सखी पहलहिमे लेहरत कुलाकेँ सजन करेन छथि ।। आतुरतायक के आन के अपन सेहो नाहि चिन्हैत छह बहुत अहमर कए करैत छह। हे कहैत जे अ ओ ओ हमरा हाट धरि हमरे-हमरे के सेह का न कोन छह आहिसे कुलमे कलङ्क लागए। (2) जे-जे करबाक गुरजन मना करैत छह ओ ओ सभ हमर सङ्ग करैत छह से आगि देखि (डाँगेत मनुष्यक पहचान) कखन ओ कहिने अपने सभसँ पैघ अछि, के सबसँ नीक आदि एकरितिक सब अधिकांश आधिक कोन सब नाहि छह सेहो आगे तोहर लोभ। अनेकर सहनो आ अनेक दोष पर एकरो अपन दृष्टिसँ देखए आने रहल । दृष्टि ई छोन सुझल कृपा लक्षणह। विद्यापति कहैत छथि ने भेल से भेल सहज मानल आदर नेल। आगा दोसर दृष्टान्त करह

मानल अण्डल इन्द्र कलाधिपि अन्न पियासे दुहार
सहजे ने पर हि सम्पूर्ण ने छह ना ने भ पिये

चाहति बड़ दोषु दयाला
जाहिदि बचने पर हित लो लाहीं बैचल सार
साधु जन अंकि परहित लागि न गुन धन घरनी
रहु पि आसन दाहद गहआए न हाम हीन मलाना
न थिर जौवन न थिर बौवन न थिर एह संसार
गेल अवसर पुनु न पाइअ किंपांते भअर भमार 4
कनए राघवरा घरिनी कला लङ्कापुर वास
कला हनुमत साअर लंघल किछु न रहु पास 5
जखने लंकर पावक दिअल सभ कला जरे लाग
अपनिक लापटें पीरल करल कांचे दिगन्त भाग ।

अन कौं 2 अनुमान.

सखी परोपकारक महिमा देखाए व्यजना द्वारा दोसक करबाक प्रेरणा दैत छथि (1) लाहरूपी धन जुनि लोभे न लक्षित करबाक प्रेरणा दैत छथि (1) लाहरूपी धन जुनि लोभे न लक्षित
लतेक दोसक ? (कृष्ण धन जकां उ[illegible] ओ देखए देलक लोकक लाभे
दराइ नहि)। जखन जे उपलब्ध रहए [illegible] यमान देखेो हेज उठएबाक थिक [illegible] ई सखी [illegible]
ई वस्तु थिक। जकर दर्शनमें [illegible] पुरुष। साधु जन आनक हित लेल अपन [illegible]
नुकैल छथि। पिआसल राहु यानके पाछि [illegible] छथि से क्षीण। (4) जौवन स्थिर [illegible]
बीतल काल फेर नहि भेटैछ। केवल कीर्ति [illegible]
रघुकुल-गृहणी सीता, कतए [illegible]
रावणक परवाहि नहि कएलनि [illegible]
मङ्गा ठैक तखन आकर [illegible]
अहेन [illegible] सकटमे पैरे देखबाक थिक

चाहत सुधा सम दचन चिलास। अल अल तनकि जाएत दिअवास ।1
मन्द मन्द पाबहि सबे कोए। पिबइते नीम बोक मुह होए ।2
न सांचे हमरुके वचन सुन सए से कि छोडति अलि जे मुहखार 3
जे जन जैसन दुख घर गेल। तकर तैसन तन गौरव होए। 4
कौरव ए सबहि पैदल सङ्ग। एहु नहि धरए मनओ अपराध 15
अइअओ हरुअ रह तिनिओ समाज'। लइअओ रहब अजुधि भए लाज'। 6
कामधेनी अनुमान अन भेल लाभ लाखह दूटअगत पास। 7
मधुरवचन है सबहुक सम। तिथापति अन कवि कण्ठहार ।8।

१ जौ अहु हतया तिनक समाज २ कलसजौ रहब

सखी राधाके बड़ैसन छथि -- (1) जतए बोल थानक अमृत सन मधुर बुझैत अछि अन तन तनकि विश्वासपूर्वक सटत। (2) सभ केओ मन्द (कोदय) बोनबासें (वृन्दावनी होएबाक कारणहिं) मन्द (अधम पङ्क [illegible] नीम दिशहिं मुह बिजकि जाइत अछि। (3) हे सखी [illegible] (कटुवचन) छैक से [illegible] अहां [illegible] (4) जे अपना हृदयक भावक जनैक निमित्त [illegible] (5) हे सखी जैहेन [illegible] ओ तनेक अपराध नहि मानत। (6) जौ अपने [illegible] रहए रेओ लाज कए मुही गोतने (अधोमुख भए, [illegible] काचक पैल (दीपक) मे राखल पानि जकां [illegible] थिक

[illegible]

सखी उपवन सचमुच पैन्त छवि -- (1) हे सखी, आइ मुझसाथे आपस ने कलह व्यवस्थामें गोआए थिकए। पितामैक दार कोन काज दैत? केवल उपसर्ग एकसक २ दोसरा सबसे क्षेत्र से आपसे नीक होएत किएक तँ **हमरा धारणा छैन, ओ खाली नीक लोक अछि। लोग कहैत हम अमृतक** अछि विश्वास करब से एकर सभ जीवन दिअोबाक से कहा पड़त, ओ परिवेशक की थिकैक 4 ई सखी नोर छाकेँ पितर धोकैत ने हम दुआरे धरना। **चन्दन यूहि सिमरक साछकेँ ऊपल, तँ हृदयमे कोटे ओकाए** पनि अछि विश्वास पड़ै, कुछ कोन पहुचलनेम शिवजाद तँ ओ ओहर बहुत उपहासक कलेन्द्र रचना राम अलोकार शिवजाद लोकिनीक

अनुवाद (संस्कृत सम्पर्क ... ३ ... ... अछि।)

सखि हे बहुत काल्ह ...?

पितामह हार काज कैलहुँ ... ...

हमरे ... ...

नोहर ... ...

प्रमुख सहरा ... ...

अनुवाद ... ...

कनल मलयसे अछलिहुँ सुन्दरि नयन मयर हमरे
रमसक अवसर के लहि अड़िगए कनल करए चरनचे
अवसर गेले हेरि नहि हेरए फल दाँवेभ शय वन्दे

1 आनिअ।

कृष्णसं उपेक्षिता राधा भवन सन्ताप सखी सुनदेन उचि (,
भारम्भ आदर पवि तनेक ने पुलकित भए भेलहुँ अ वाम दृष्टेन किछु
नहि सोचि पओलहुँ कानहक मपुर वचन अमत बुझि पिबैन गलहुँ अ
नकर परिणाम भेल दियक मसान। (2 ई सखी मनसे अनेक मनोरथ
करने छलहुँ परन्तु हमर नागर (दोसक पेभए) अमर तुल्य सिद्ध भेल आ
थरि रस पबैन रहल ना थरि वशमे रहल। रस लम्पट देखलहि किन्तु देखाइ
छाड़ि के थनि देनाक ; मगक समय की सो नहि सहए अनेक ने
आवेस करए। अवसर बिनेनहुँ लाभ के नहुँ नाकर परिणाम मे
केवल चिन्ता हाथ लागए।

एहन जौवन नव गर मनोभव छोरे मधुरक रजने
अभ गुरुजन मेहा देखए थरे मोर मन मनसिजे तनये
आए आए कैओ आँ बैदन लहु जाने।
सकेत लिकेन हरि आकुरि अनेन हरि मधुरम पिकल वचन
पथ पुरजन सबका रस रस मन लहक ऐ अहिने मोरे अनेनी
सखए थाह थरि मुनुमुनु एक ओरे अनक लेखलि हरिनी
सिहि और बड मन्द पवे अनु मन दलहु मोरे एहि नागर नेहुरे
मलिनी दन सिर चिन न रहए पि हर पर ना ही परदे ।
कवि विद्यापति अन अनुमान गुरुजन डीर हरिक न जाने
कपटे लिकेर गए बहन कान दुर रभरि गलाबा अनेन ।

१ कनल। २ लिङ्गजनेन से। ३ हर एखबारे ४ थथु पथुक ५ पुनु एड खसि हसि ६ सुखि उठि ७ कि कनल ८ बमनि नीर अरि धीरे झाझरा

कवि अभिसारक हेतु नवयौवना राधाक विकलताक वर्णन करैत छथि

१) राधा नव यौवनक प्रथम चरणमे प्रवेश करैत अछि कामदेवक भारी दबाव (निर्दयता अनुभव) ऐक वस्तुक राधि ओर होइत अछि परमे गुरुजन जागल छैक। प्रेम राखए चाहैत अछि। एहि सभ कारणे राधा सकेतस्थलमे कृष्ण बाट तकैत अछि। मुदा ओ आए कोना सखन। ओकर प्राण निरन्तर व्याकुल थैक (३ घटमे नगरक लोक देखतेक लेकर ६२ थैक देश हुए पर आरी ओर थैक कहिनतो राधा की करए (थोक भोर एए ६२१)? ओर बताए रहल अछि अ धीरे धीरे हसि पबैन अछि तेना बजमे चढ़ल हेतनी (4) अथवा हमर बड़ भाग्यक अछि कदाचित् थान ने उगि जाए एहि प्रकारक मुनुमुनाने ओ दोर होए मोर अवसर दिस तकैत अछि, ओकर चित्त पुरातेक दान पक्ष थाने सखी सखन थैक सखने हम सखए अछि सखने बजन ; चिन्तानि रहैन अछि हर सखी ३ देखलक ने ने गुरुजन जागल छैक ने थैक सखन कोनो साथे लग आए गुरुजनक मुह लग कान हए-हए आगे कैओ ने चिन्तित अछि

कृष्णक अपराधसँ दुखी राधा सखीक कहैत छथि है सखी अहेरे हमरा परस्तारह नहि। जतए नाँहि ऊ ओहरह लगा अंक रखने करतहु। प्रकाश आ अन्धकार (राधा गोरि कृष्ण कारी, के सदृश भिन्न छैक। (2) पानि आ पैम दूनू स्वभावत शीतल होइत अछि ई तथ्य सभ जनैत अछि। तकरा जँ तो नस कए आयासपूर्वक सप्रमाण देखह चाही तो कुसस रहित जाएत। जे प्रेम एक प्रेम चल सेन से छि फेर कहलन । कुलरूपी चानमे दाग लागि गेल अछि ,भाकरा के भेटाओल बुद्धिहीन लोक एकबेर कटु अनुभव भेलहु पर तैरि पनि भरमाए कोन नहि मूर्ख बेरि तैमन अछि) जेना पतङग बेरि बेरे अगिम खसैत अछि (हम फेर एहन भ्रममे नहि पडब)

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

भरमैले 2 ठाम। 3 रूप 4 शब्द 5 आकाशक गन्ध 6 ओ ७ तिरु 8 सरदेखी

कृष्णक एहि राधा सखीसँ कहैत छथि ए सखी काल्हिक रस रंग नहि भेल भावक दंड सहलोपर कहब संचित परिणाम की होइत अछि से समए आबए लोक जनैत अछि रौदमे ठाढ़ भेलि शीतल छाहरि सुखी भावक आदिसँ अन्तहु परन्तु दुनियाँ एहने जे आँखी दूर भावक भए गेल भेटल केवल दोसरक चलाबिते, फेर एहह फेर आह कलंक लहे सहजक कान आनहुँ मुहा नकरा पाछे खाए भए गेल। एहन परिस्थितिमे सुआंगे कलहर कहैत छथि पैघ घरसँ हिकर हड़ड।

भए समय कह कत फूले छल नंह खर रहा हसि
मजे न साथ दूरल सकल लाई सरलासए सासर रहल
नंह कलंकक नोकेह रंग कलैत लगेल न परल कूप
सुखलाभ सपि रसस सत भावक दुर्गहित दुइ भाव ।

कृष्णक सखीसँ राधा सखीक कहैत छथि ए दुर्बल केवल सबल पाबए हेतु भला होए दोसे फूसि कहैत [illegible] हैत अछि सब अवैत अछि ए सब कहि रहैत अछि हम सोझ दूरक्के नजरि आनए सभी सबक हृदय कहैत ए दुइ भेल हैत [illegible] रूप देखए हेतु [illegible] अछि दुइ चोर चोरि करि देखब हेतु [illegible] अछि दुइ चोर चोरि करि देखब हेतु [illegible] अछि दुइ चोर चोरि करि देखब

कमल समर जग अछए अनेका। सबतह से बड़ जाहि विवेका॥।।

मालिनि लोरित करह अभिसार। अवसर प्रेमहु पहुन पेखिअ। 2

मधुलहि देखह रहल की खाँपी से मद्दाहि ने प्रापेह तपेन। 3

अकुलिन' लए तुलना तुम देल। आप नीच अनुलोमक भेल। 4

तोहे नहि मन्द मान तुम आजे। सबेहु प्रान्त हो मन्दा समाने। 5

अनइ विद्यापति दुनि जन गाव। दिन दुहे दिन रहइन लाहे होए। 6

१ अपुजित।

दूती राधाके अभिसारक हेतु प्रेरित करैत अछि (१) समयमे पहुँचा कमल अ समर अछि तहिठाम सकल अ विवेक होएब उचित। २ हे मालिनी तों झट हो अभिसार करह प्रेमक न अवसर पर पहुँचा उपकार पहुन पूजन लाहे (३) अपन कोन पुरुषा अनुरूप सहजे मधु महलहु पर मधु नहि देखहक? समयपर हो प्रेम अनेक प्रकार प्रकट देखिए। (४) तोहर तुलना कोन अनुलोममे देलथुन? तोहर अनुलोम होएब तोहर ई काज (कृष्णक उपेक्षा) अधलाह भेलह। अधलाह लोकक समयेमे लोकी लोक अधलाह भए जाइत अछि (५) तों अधलाह नहि छह तोहर ई काज (कृष्णक उपेक्षा) अधलाह भेलह। ६ विद्यापति कहैत छथि हे दूती, राधाके बुझेबामे कहुना तों अधिक दक्षिण पहुन भलाह होइ तोहे जाएब जाए सकैत अछि अपन मान सम्मान पूजाक पेछ पड़ह ...

...

थिर नहि जीवन थिर नहि देह। थिर नहि रहए कएल सनेह॥
थिर जनु जानह ई संसार। एक पए थिर रह एह परचार॥
राय सुन सुन्दरि कएलह मान। के परमारथ करए तेआगि॥

...

1. की परसह। 2 कठलांते ३ सुर अंगन सन कएलह।

दूती मालिनी राधाक मंजन करैत छथि--(1) ने ककरो यौवन स्थिर ...एहि समारहूके स्थिर नहि ...ए टेर आ ने पिअक प्रेम ... एहि समारहूके स्थिर नहि पूजह। स्थिर रहनिहार एकमात्र वस्तु थिक पर उपकार। (3) हे सुन्दरी सुनह मोर वचन सबेक के परना करहु। (4) कौशल कए कान्हके तोंपा घर अनलहुँ ... तों तो ओहर अभय आँखहिसँ तोहि देखह ५ बलदूके आदरपूर्वक अनलहुँ किन्तु राधे अपन अपन गेल ओकर अभिलषित ...सन सुन्दरीक राय मन भए ओकेर अनादर ने गुण बलरामसँ सुन्दरीक सेवापर एक पैरल नहुन अछि न राय भ सुन्दरीक मन होइत छैक किन्तु मुह जोड़ि हो सुरी करक देल नहुन भेलि। ६ बलदेव तोहर ...दर अपने पहिलेसँ ...ए भए चलि गेल अछि करी ने ...हरि ...के अनादर

...

...हुनह भए पेखा तोहे लक्षणा पहुने भेलह ...
सुख पिअर पेखने अनेक भए तोहे पाबिते लाभी
अनादर ... \ \ \ \ \
भलह हमरो मन पेखनक ... के भेल सब अपराध
बेसरी हास मोर हरल कपूर ... के लोभे मातल दुहुँ
पिआसलों एतय बहुत ... लोचन ... तोर दुहुँ ...
सौरभ लोभि पिअ पेखि ... पैरल ... न हरिभा
पैरल पिअक ... सन ... हरिभा न ...
भलइ पिआसले सुर रस गुनगाहे ... रहे ...
रहए पिआसेल रहल ... लोभेतरंगे रङ्गले

किसे 2 लोगों को ले जाना करने 4 परस्पर कैसे लोग 5 सहित

दूती मानवती राधाके मजाक सहन करि (1) पहु अधर-सुधा चाहलहु तें तो अपन अधर लगा लाह अनलह। तो दोहि मोडि (छिपि) लेलह। पिआ स्नेहपूर्वक समझ कए चाहलहु तें तो पहरा लेलह तोरा सन पापीकें कथे लहि 12 ने माहिली आबहु घोसेके पिअ लगा बड़ अपेक्षा पाएर धरइ सभ अपराध दूर भए जएतहु 13 मइपर रमणीय रास आयए लगलहु तें ओकरा छलपूर्वक छोड़ाएलह फिरक बहर अंतर बैसलहु किएक? पिआके कटु वचन फिरक कहलह से दोसर तोहर मीठ दूतीक फिरक से खसि पड़लहु 14 पिआक हृदय आन) के सन्तुष्ट रखबाक शिक्षा जाहिसँ सौरस्य सौमनस्य (मान, रीसल रहा ने स्वागत नहि देखाक शिक्षा वैमनस्यरूप शिक्ष पुरुषक अकृतज्ञक तोहर आर दोस लगा ने से पल्लवित होइत जएत 15 दिनमे सकल लोके से आनन्दित रहत मनुष्य, मान के भंग करि राह देखबाक

1 बोलल 2 एह 3 पुनु 4 भेल 5 लेहल

सखी लालिनी राधाके उपदेश दैत छथि (1) अमर केलकी (केलिक) फूलक लग गेल से फांट गड़लेक किछु कटुता भए गेलेक ने भंकरास होइसे लोरा लग भरल हा कांपइत ओकरा से अनेरे उदास कलहह से लोक लाज लागि (2) हे आतकी (राधा), हुं बड़ अनुचित भेलहु। तो अधर सधुरस अमोल लहि गेलह (3) अमर पिआसल चंचि लेल ओ अमर चलैत लोभे ने कोन मधु कलेक मीठ आओर ओ अपन स्वाभाविकी आदि से स्वाभिमान छोड़ि दूरि कै लागि अभागलहु फेर अधर देखलहुम सन्दह 4 सुलेल प्रेमक अहि तें तुहे गुणज्ञान अछि। सभ कुसुमक रस चूसैत अछि, जे नागरी आकर धतुरपन रीसेकला) बड़ैत अछि से अनेरा बहिनी छोड़ि नहि

अमर के अमर भाई सेल अमरावट भार रूपा लागि देने एक्सप्रेस राधाके अमर एहि रूप रंग को अहंकार सहज' राधाके समझे पुलकित अपने अपने [illegible] रहस्य [illegible]

रहैत छोड़ 2 दूर सखी विचार हेम को रखब सखी 4 लड़बा छोड़ अन्त छोड़ि लागि

एकबाक दूती राधाके पठबैत कहै 1 अमर एसँ रहैत अछि सदा लड़के दहि समस्त भाव पर सकुच्य प्रेम भाव एतय दूसरा ना कहेछ ना पैसबह से एहा सन देखि कलह 2 बहिनि सखि कय एहु भेले विलम्ब का लाय न होयबह भोरहि 3 पूनमेके समान रहे पुरैन कांडे लड़का कुसुम सिक जीवन थिक चान आ शशक जीवन थिक कुमुदिनी से के लहि अनैत अछि। (3) जेहने लोभर

अधिक नहाने अथवा अधिक सोने मत्थे मोरे हानि 4
मत्थे चिकित्सि सिद्ध मांते दोसे। अवसर काल उचित नहि रास 5

आने कए पछबरीत राधा सयोजेँ कहेन छथि -- (1) हे सखी की कएँ अएल एखन धरि नहि कहलेँ 11 सगर राति आलिंगने गमाए देलहुँ 12 जखन आन परसंग मोन नवालोँ चाहलेँ तखन उठि गेल, 13) रुदनेँ आँचर तीतल गेल; बहल डीठि की कएल देहे लुकाबहेँ चाहल आन मोनहु 4) अधिक लाजेँ मुखे नहि आबए मोनहु लेझ कएल मोन मुदा मानधनहुमे हारले हार 15 पेखलहुँ कोन रहसि हे नहिन बोलए दुसेचिक फल पेखहु विलक्षक धोरज मोर कबह उचित नहि बोलहु।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

राधा कहल कृष्णकें बड़ैमैत छथि [illegible] हे कान्ह हम सभ किछु छोड़ि तोरा लग अएलहुं। विश्वास दए बिसरि नहि जाह। (2) से स्याम हिअ छह आन केओ तोरा की कहतह। से कए अपेंहसें उपहास (चिन्ता) जनि होअह। (3) हे कान्ह, तोहर यबन अनमोल छह। तोहर यबनक हम जा जोख तं घरि पालन कहैत रहब [illegible] दुअक मूल्य समान होइत अछि, रत्नक मूल्य सभ नहि [illegible] अछि। (5) हम अबला छी। तोहर हृदय अगाध छह। महान जए सकल अपराध क्षमा करक चाही। (6) विद्यापति कहैत छथि तोरामें पड़ला सं भेटबलाक प्रेम टूटए नहि पाबए

कुन्तीसं कुमुद [illegible] कलाक भागवार नहिं [illegible] ए खाँचे ए सचि पुरुष अआन। [illegible] दुर सजो सुनेअ [illegible] भनइ विद्यापति एह रस [illegible]

१ अक्षय २ नहि कें ३. छिनाहि। ४ अन

साखी संगमसं विफल भेले राधासं पुछैत छथि [illegible] तोहर केसक फूल निरमाल नहि भेलह [illegible] नहि भेटल तोहर पीरितेकें कोना [illegible] बेन्ह नहि भेलह? राधा उत्तर दै [illegible] छोड़ल आछे। कहबैत तं अछि अनुरक्त [illegible] रसरहस्य नहि जनैत अछि (4 दासं तुलै नहीं ने मदन [illegible] (सनकल) रहैत छथि, परन्तु प्रत्यक्ष आगां अनुभव [illegible]

कतो एभाव नहि देखाए सकलह)। (5) कोन पाप लागल जं हुनको लग गेलहुं। पछतबितहिं राति बीति गेल। विद्यापति कहैत छथि, एकर रस अननिहार थिकाह लछिमादेवीक पति शिवसिंह।

आदरि अनलह थपलह टारि। आऊचर न छुड़लह बदन निहारि (1
सुदिठेओ केस न बन्धलह कोए, सबे रस सुन्दरि थपलह गोए।।2।
[illegible] अनल कान्ह तोरे दोसे लेल
[illegible] सहज सगउलह मोर। आऊचर हीर हरा एल तोर'।4
[illegible] गेल पहेअ अजो हो घड़ आधा ।5।

आदरि। २ छुड़लह ३ मोर

मही रसरहस्यसं विफल भेले राधाकें भजन करैत छथि -- (1) तों कान्हकें आदर पूर्वक अनलह, किन्तु टारिकें (आदरिकें) कातें रखलहुन हुनक मुह तकैत अपन ओंचर नहि छुटलह। (2) सैतलो केस (खोपा) कें [illegible] पैर सम्हारिकें नहि बन्हलह। हे सुन्दरी तों सभ टा रस (कामोद्दीपक) [illegible] रखलह। (3) भाव की पुछैत छह। नीक नहि भेल। यत्नपूर्वक [illegible] कान्ह तोहर टाहो चाहि गेल। (4) [illegible] (7) [illegible] कृष्णकें सोंपए लागलि तखन तोरा क्रोध भए गेलहु। भेल वस्तु यह भागए कर भेटैत छैक।

[illegible] पुरा थड़रल [illegible] सुपुरुख अनल दोस कानेओ भेल काच।।2
[illegible] सपुरुख अनले कल धन गेल, थिरता मनिक अलोपय भेल।।4।
चारे [illegible] पुरुषे [illegible]

परिजन चित नहि हित पछाब। परबने औब कताए नहि चाब॥6॥
हमे अबधारि हलत सकार चैह हि थ लिख दए कए
अनइ बिआपति सुन बरनारि। पहुन दए रहु बिनु दान मुरारि॥3॥

1 पहा 2 पारेहरि 3 पसारअ

उपेक्षिना राधा अपन व्यथा थाक कौन उपि अन आन कान्हसँ जनक अनुनय विनय कौन बे लगक अगर खाहार घर पछातापे पबैत छी। (2) धैर्य धारण कए सत्पक्ष अवश्य मोनो हमरा लेस काप भए गेल। (3) लिखए पिअसँ नइ मनोरथ पूरल ने मनक एका दूर गेल (प्रीति गोरे देख कत कि एहि गुनपुनमे रहि गेलहुँ)। (4) सुपुरुख बुझाएल, नै मनोरथ मनहि मनहरी पल मोरे गमाओल मनसी ते मनोरथ लेख ही मोर देल अए पिअ मुख पेखए लिखए नहि कीन अंगे ने निरेख पि हम पूरु पसारे गेल अपने। (6) परबने (कामनाक उद्दक अने अबैत आउ। परबने (कामनाक उद्दक अने (7) हम एहे दुखद स्थितिक प्रतिकार लागि दए पार करब। (8) बिद्यापति कहैत छथि हे सुन्दरी रहह, कान्हसँ मिलन होएतहु

पहुक बाग छल पायर रे। अवध भनि हो। मोरा अमर दुहुक एक रीति रस लए लोभे भमर दुनुक रीति (चरित्र) एके अछि। कि शेष का रस लए लेल भ लोभे (लोभसँ कए फिरि गेल अ पहिले कहल लाही हमर पाप शिवह परन्तु अन्तमे ओ पापक परिणाम नहि राखल (4) आ योवन लाबे थरि सम्पन्न रहबे। आरो दिस अधिक ध्यान रहतैक। (5) वैसाखक बैर अ अछ एका देल (कोरआगाछे जेना आ आलङ्गनपूर्वक ने पूरल। (6 परन्तु एकाक काल दोसे देल आ फिरु पूछहु ने लागल। ओकर मन अशेला फल पर बेसी रहतैक। (7) हे सखी की अन्तर ओ पूर्ण नागर आ अमर दु अनुरक्त रहल लोभे आ विश्वासे अहि लोभ ने सुख देखे रस हेतु आए

राधा कृष्णक प्रतीक्षा सम्बन्धे सुनबैत छथि परिजनो आ हक वचनक पाथरक रेखा बुझल। हृदयमे एहन धारणा भेल जे कहिओ वियोग नहि होएत (1) परन्तु भाव बुझल ने लागए रसिक पुरुष आ भ्रमर दुनुक रीति (चरित्र) एके अछि। कि शेष का रस लए लेल आ लोभे (लोभसँ कए फिरि गेल अ पहिले कहल लाही हमर पाप शिवह परन्तु अन्तमे ओ पापक परिणाम नहि राखल (4) आ योवन लाबे थरि सम्पन्न रहबे। आरो दिस अधिक ध्यान रहतैक। (5) वैसाखक बैर अ अछ एका देल (कोरआगाछे जेना आ आलङ्गनपूर्वक ने पूरल। (6 परन्तु एकाक काल दोसे देल आ फिरु पूछहु ने लागल। ओकर मन अशेला फल पर बेसी रहतैक। (7) हे सखी की अन्तर ओ पूर्ण नागर आ अमर दु अनुरक्त रहल लोभे आ विश्वासे अहि लोभ ने सुख देखे रस हेतु आए

राधा कृष्णक प्रतीक्षा सम्बन्धे सुनबैत छथि परिजनो आ हक वचनक पाथरक रेखा बुझल। हृदयमे एहन धारणा भेल जे कहिओ वियोग नहि होएत (1) परन्तु भाव बुझल ने लागए रसिक पुरुष आ भ्रमर दुनुक रीति (चरित्र) एके अछि। कि शेष का रस लए लेल आ लोभे (लोभसँ कए फिरि गेल अ पहिले कहल लाही हमर पाप शिवह परन्तु अन्तमे ओ पापक परिणाम नहि राखल (4) आ योवन लाबे थरि सम्पन्न रहबे। आरो दिस अधिक ध्यान रहतैक। (5) वैसाखक बैर अ अछ एका देल (कोरआगाछे जेना आ आलङ्गनपूर्वक ने पूरल। (6 परन्तु एकाक काल दोसे देल आ फिरु पूछहु ने लागल। ओकर मन अशेला फल पर बेसी रहतैक। (7) हे सखी की अन्तर ओ पूर्ण नागर आ अमर दु अनुरक्त रहल लोभे आ विश्वासे अहि लोभ ने सुख देखे रस हेतु आए

[illegible]

[illegible]

[illegible]

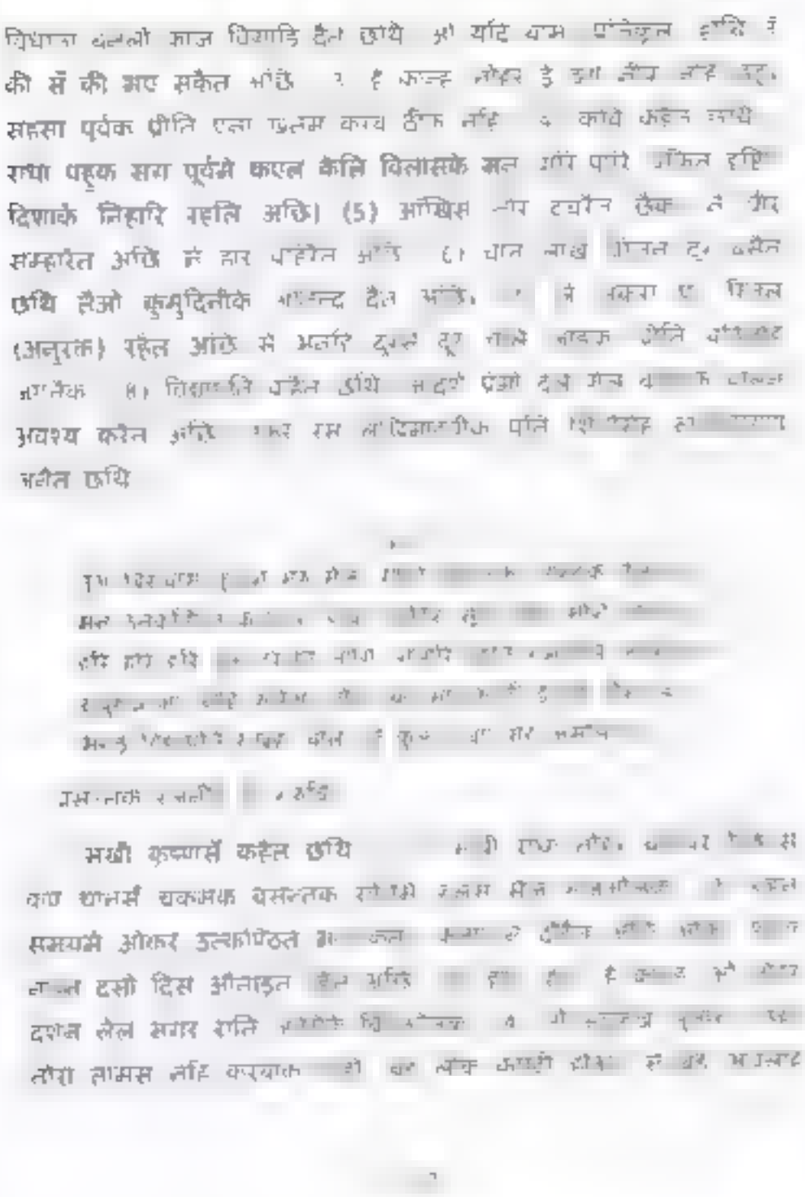

सेलह। 8 विद्यापतिके लखैन इहौंसे सन्दर्भक काल
नहि फहड़। सुपुरुषक वचन पाथर धरक रेखा छिक 9 परम
सौभाग्यवती देवी लखिमाके पति राजा शिवसिंहदेव ई रस लेने छथि

(५)

फलन वचन दए भावीके राधे अधरा नहि विसरल नहु
तोहे बड़ नागर ओ धनि आगर अपरुब दिअलहुँ चित्त सजो धनि ।
पल पल माधव अवन नुअ काहे अवधि बलाहक तन सजल देखाबे
सुपुरुख जानि करम विसवासे। के पतिआएल फुलल अकासे।।४।।
पुरुख सिनेह किछ परिचय भेने परबस आपन हिअक धन लेने ।
निन्न मने न गुनल न पुनल केओ भावक रान भावहि देल देखी ।
अतह विद्यापति एहु रस गाबए नागरक नागरि हृदय सुखी ।

५ रास रचना

सखी कृष्णक राधाक उपेक्षा करइत देखि ।, कहैत
छथि जे अहाँ दा सखीक संकेत स्थल मुद्दे में भाग
लेलि के ओकरा उपेक्षा केलहुँ । ई बात सुनि ओ पश्चात्ताप करैत
छी ओकरा चित्त मिलाए अमृत भोजन । कर छथि ।
तीर कार कए कए मनोरथ से सखीक । ।
सुपुरुख बूझिके तोहर विश्वास कएल । ।
फलाएल (तोहर बात आकाश-कुसुम अर्थात् ।
दुइजाके आएल जे एक्का निशु । ।
धनक (कृष्ण) लोभ । ।
गेलैक। (6) राधा ने अपना मनमे सो । ।
फकरहुसँ पुछलक। बेचारी । ।
विद्यापति कहैत छथि । ।
शिवसिंह

। ।
। ।
। ।
। ।
। ।
। ।

दूती कृष्णके राधाक । ।
। ।
। ।
। ।
। ।
।

की

दूती कृष्णके प्रलोभन देत अछि -- (१) हे कान्ह, तों राधाक मनोरथ पुराबह। ओ तोहर गुण पर मुग्ध भए एतेक दूर में अएलि अछि। [illegible] घरसँ बाहर पाएर देबहुमे थबराहत अछि, तकर साहस कहल नहि [illegible] (३) एक तँ बाट पीछर तहपे पर अन्हरिया राति मतं ओ अपन दूनू स्तनकें पैल बनाए यमुना पार भेलि। (४) मेघ मुसलधार बरसैत छै धरतीकें भरि देने छल। विद्यापति कहैत छथि दूती अन्न अन्न युक्तिन राधा के कथन अमरक अनुरोध [illegible] बुझाबए लगै

राधाक कातर [illegible]
तुअ अभिसार कएल [illegible]
हिरिस एमाधर धरनि [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
तुअ अनुराग सघन मदे आनलि किछु न सुनल बनमारी।।४।।
[illegible]
[illegible]

। से सुबदनि करे,

दूती कृष्णके राधाक अभिसारक कथा सुनबैत अछि [illegible] है बनमाली राधाकें आनि देलिअह। आब एकरासँ समाधान (समझौता) करह। हे तोहर अभिसारमे जे ते [illegible] आब थोरो कालोमे एहि ठाम सजैत अछि।

(२) मेघ घरसैत घरनी [illegible] अति महाभयानक। राधा तैओ तोहर गुणक स्मरण कए-कए चलि पड़लि। आकर साहसक बल नहि (३) देखाबामे लिखल साप देखि जकर मन त्रस्त भए जाइत छैक से अपना हाथे साप मणि के झोंटा प्रसन्न [illegible] लगा अपि भेलि। (४) ओ अपन पाँ के छाड़ि विश्वास नहीके दृष्टि अपन परम प्रतिष्ठित कुलक कलंकके उपेक्षि तोहर प्रेमरसमे मातलि ओहि पथ सकट सकल कोनो परवाहि नहि कएलक। (५) हे रस सरस गौत) रसिक लोकनिक मनोरञ्जनक्षमता सुनबैत विद्यापति रचलनि अछि। ओ प्रेम [illegible] एहि [illegible] अ [illegible] [illegible] [illegible]

आ' गुणक आगर छह, तौं हमर सभ मनोरथ पुरा धर पूर्व जन्मक पुण्यक परिणाम स्वरूप तौ भेटलह तँ, परन्तु पुरुषा नहि कएलह जे की बात, तत्पर नहि, हमरा देखि मुह घुमाए लेलह हमर मन आकुल भए गेल। तौं जँ आनक हित करबामे एना उदासीन होएबह तँ तहिया अहाँ के युग बदलि गेल बी। कवि विद्यापति कहैत छथि जतबा सुन्दि गोटे कृष्ण विहुसिकै राधाक दिस तकलनि आ स्वरस देखलनि अपन हृदयक प्रीतभाव देखओलनि)। तखनहि राधाक देह पुलक सँ भरि गेल

३ ४

भनहिते तथ भाव धनि गेल। समरि खसल चीर लाजहि ।
आ. धरन नहि देखल मोर ओर कए कोन करब हमे ।
कानु ओहि रे हसिहु मोहि लागल तखनुक भाव सहजे ।
अनहु मोरक सबहनि अंग मोरल हरल सोच भेल अछि ।
थानहन लोपित तनु रह सो एहिक सम्हरिते लोचन ने होए ।
ई रसलन्त बुझए कओ कओ आव भनइ विद्यापति गाव ।

१ समरि मे गेल २. सकोचित।

राधा अपने शरीरटयक घणेा रहय [illegible]
भलहिन कयँ आएल आ' आ' हम देखाएब आ मोने गेल, [illegible]
भसरिके खसि पडक, विह्वलतावश आचर सम्हरल नहि गेल [illegible]
हमर आगी अग (स्तन) देखि लेलक। आनू सखके देखा [illegible]
पेलक। (3) फानक हमरा देखलक मे हम लाजा मेहदू लाजने लाज
भेल से एखनहु नहि छूटि दहल अछि। हम अपनहुसँ अधिक मन आपे
भेल (लाज बयएबाक हेतु)। आनू दोगुन कए [illegible]
बीचसँ टूटि गेल। (4) विरहक तापके शान्त करबा हेतु नेहक [illegible]
सूखि रहलहुँ। विरहसँ कछमछ करैत रहलहुँ [illegible]

रसलन्त कालक २६६५) केओ केओ बुझि सकैत अछि जाहि आधार
बलबनि अभिनव जयदेव विद्यापति

[illegible]
कि कहब ए सखि सेसे विलास विदगध नागर नाह अभिलाषे
कुचजुग चारु चरधर बारी हृदय पहल ने पर देल पानी ।
आनुभवे आनक दुख सभे जाने आपन दुखे दुखे कहइत आने ।
राम विन्दु मुख सुन्दर भेटे पुनुक अधर आपे कए गेले ओही ।
कहहि न पारथ पेमक मुख अनुभव पुछह तिरपित जुबती लोग ।
भनइ विद्यापति रसमय जानी आपनि रस बिनु अनकर जानी ।

राधा अपना विदग्धता दृतिक दर्शन सखीके सुनबैत छथि [illegible] हे
सखी अपन कएने पेलअछि जे सुखहेतुक एहू के अपेक्षाक्ष भेलैक ने
विदग्धता दृति कएल अ [illegible] दम हुनू स्वयं देखाके कभी पर
देखा लगबैहुँ ने अनेरा भेलैक जेना [illegible] ओही दृतिने हो अपने दर्शन
रोकब लेल हमर [illegible] कएलाक्षेत्रमे [illegible] मानने भेलहुँ जेना
विद्यापति गेल देहक सम्हारमे [illegible] आना [illegible]
पाबक विन्दु से मुह [illegible] जेना सोनाक [illegible] आगि फोटे
गेल हो [illegible] पेलाक मुखक [illegible] हम एक दोसरक मुह
देखलहुँ ने हुनू विहुसि [illegible] पेलाके ई रसमय गीत रचलनि
रसाने पेलाक वर्णनमे जाहि रसण कएल अछि।

दुहक मधुर मिलु मुखक दुहु मुख मधुमय बुझल ।
दुहक मधुर देखल मधुर दुहु मधुर दुहि गेल ।
दुहुमो कथा करए मधुर दुहु मधु मधुरिमा दान ।
दुहुक कोने मधु मधुर मधु मधुर सुधा विहारी गेले ।
दुहुमो दोसर दोर न [illegible] दुहु पेअसल विछाए लेर 15
भन विद्यापति रसमय गीत दुहु मनके निश्चित दैत, 6

[illegible] ३ ओ पुरुष हमर फोट श्रीफल [illegible]
[illegible] ओ नरछहन फलक प्रमाण फुलक पेखुरी अंकित भए गेल
भरि [illegible] पखारल दए छलि गेल, अथवा हम जोगाएँ राखि
[illegible] पछुरी की छल, द्वितीयक चन्द्रमाक खसकाक
[illegible] [illegible] हम औंघर सन झाँपि जोगाए रखलहुँ एहि लेल
ने साक्ष अनेक कलरओंक अग्नि लगले ओ पैमाइकुर म्लान नहि होअय
(4 कामदेव सभी व्यापक तीर हमर लाजकी हरिणाक भगए टैलक [illegible]
[illegible] वेदनक सशोच सुख थिक

[illegible] साहे सोन्दिक भग (स्वर, क्रम, रमाघ आ स्वरभग) जनल का
[illegible] [illegible] (यथार्थ नहि हुँकि सकलहुँ) अँहि श्यामसुर्ण
[illegible] जरयाक काल किछु कहिओ नहि भेल यथार्थमे कृष्णाक [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

आनन्दित अछि। 14 विलासिनी लोकनि कौतुकपूर्वक कऽ केलि करैत छथि। कृष्ण नागरी (गोपी) सभसँ छिपबाक लेल रमण करैत छथि

[463]

अभिनव कोमल सुन्दर आम्र बनल सगर यनँ परिपाल गल।।1।।
मलय पवन डोलए बह अनिले, अपने कुसुम रस अपनेहि भानि।।2
देखि देखि माधव मन उलसन। बिरिन्दाबन अन देखल उलसन 3
कोकिल बोलए साहर पार मदने आनंद अन नव अधिकार 4
पाइक मधुकर कए अनुपान अभि भाँमि नंदन मनोरथ मान 5
दिसि दिसि अभि-अभिनँ निर्मल छिटकि दस दसाह मुदित मुनी 6
भनइ विद्यापति एह रस गाबा राधा माधव अभिनव भाव।।7

1 सवारे बने 2. अआर। 3 से अभि। 4 कुसुम।

कवि वसन्त ऋतुक वर्णन करैत छथि (1) वन मे अछु सभसँ नव, कोमल आ सुन्दर पात भेल। मानू सजबन [illegible] नव वस्त्र पहिरलक। (2-3) नाना प्रकारसँ मलय [illegible] कुसुमक रस अपने [illegible] (4) कोकिल आम्रक [illegible] अधिकार जमबैलाले [illegible] (अत भए) घूमि घूमि मानिनी लोकनिक मनमे [illegible] (करारोपण हेतु) खोजि रहल अछि, (6) कृष्ण [illegible] छिटकि दसदिन धरि मुदित भए रास रचबैत छथि। (7) राधा [illegible] माधवला ई गीत विद्यापति रचल

[illegible]

मधुकर पाइक सङ्गहि गाढ़ दुअर कोकिल मन्त्र पढ़य 4
मन मलयज पवनक सौंप बिधु बरिसाबी पीर समीप 5
कहाकेलासुतो नंदन मूल लया बियरल केलिक फूल।।6।।
केसु कुसुम कर सौंदुरदान। जौतुक पाओल मानिनि मान। 7 ।
केलि कुतुक कर सब एकबारा विद्यापति कवि दिढ कए भान 8
अभिनव नागर पुरु रसलुब्ध मनिन सहज रहुनाहेनि कलब 9

कौतु 2 भौंरे 3 पहीरल पानय 4 देखइ लाइ हे मनचिंत 5 पुरुष वसन्त

कवि वसन्तक दूत बनाए विवाहक वर्णन करैत छथि -- (1) लतासँ छायल गाछ (कुञ्ज) मण्डप देल। निर्मल पान लकर भीतरक ओरल [illegible] दाइ माइ [illegible] भाँति अनेकानी गाछ [illegible] छिपाइत आन 4 अनेरो सभ मगन गीत गबैत छथि दुअर [illegible] माने [illegible] मदन पसरी [illegible] मलय पवनाँ [illegible] [illegible] कुल [illegible] कुसुमी सिन्दूर दान होएत [illegible] [illegible] (8) [illegible] विद्यापति कवि दृढ [illegible] पहचान) कहैत छथि। (9) [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

कवि विद्यापति भनइ। मानिनि जीवन जान 6।।

रूप रुद्रसिंह बर। मेदिनी कलपतरु

1 करथु। 2 बोपवि

कवि वसन्तक पाँच कौन छन्हि [illegible] सम्बोधनक पहिने आनु वसन्तक विशेषण करैत [illegible] आनर सुगन्ध करैत आपन सौरभ प्रकाश करैत। [illegible] कनुपति कल्याण देव सकल कलासँ कोकोदय भेल [illegible] भला। सकल कला कामीमोर सब हिलसे मिलसे कोने दिअयह कहल गेल

(5) युवक सब युवती सबक सङ्ग रङ्ग रभस करैत [illegible] विद्यापति कहैत छथि पृथ्वीपरक कल्पतरु सदृ. [illegible] जीवन (चरित्र) जनैत छथि।

[illegible] भेल। भनि भनि अमर हजारए गेल'।।4।।

[illegible] सब भास। कनाए [illegible]

अमरु [illegible] बोपवि पोयास

[illegible] सब घूमि घूमि हजार दैअए गेल अछि [illegible]

केतकी केसरि फुलक धूरा जे पसरल अछि [illegible]

(6) कवि कण्ठहार विद्यापति कहैत छथि हुनक एहि गीतक रस बुझनिहार पाठक सिवाय [illegible]

परदेस गमन [illegible] करह [illegible] पिउ [illegible]
[illegible] कबरे पुरल [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
विद्यापति [illegible]

नायिका पिअसँ प्रार्थना करैत छथि -- (1) हे कन्त, परदेस [illegible] [illegible] पवैत अछि (2) आमक गाछीमे [illegible] [illegible] मालती [illegible] शेखर [illegible] आँछि। कामदेव [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

विरहिणी नायिका विलाप करैत छथि आहे (1) अपने जहि हमरासँ कोन त्रुटि भेल जे प्रभु विदेश चलि गेलाह सतत सुखैत दुखैत टेर गलल गेल। (2) हमर अपराध की से बूझि नहि एओलहुँ। एतेक दे देन छल ताहिमे दैव विघ्न कए देलक। (3) जँ कहिनो दैव अनुकूल भऽ दे दिअ कँ लिखनहु धन जकाँ जोगाए राखब। (4) विद्यापति कहैत छथि हे सखारी, सुनह। धैर्य राखह, मुरारि मिलथुन

369

एहिसि चिरहिणि पइ जं ओतए लखने एमन रीति
से आबे कथहु हरि न देखि भेलि तोअ अनि तोहि।।।।
साजनि जौवधु सए पचास
अतस रचनि रभस खायु आरज [illegible]
कतने जतने आरिआधोअ आबोए आगे अहो
नधुहु अपन करम कुडिजअ जैसन अछए भा
समय मेले मेघे वरिसय कैसहु [illegible]
गीत समापले बमन पा[illegible]
अनि मेले [illegible]
जौवन मेले जुमति पिरिति की फल पाओ[illegible]
धन अछइते जे नहि भोग[illegible]
जौवन जौवने एक [illegible]
भन विद्यापति सुनह धनिके सकल पुन मनोरथ
सुनु सिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवी रमण

अर्थात्। 2 रमणि।

नायिका विरहव्यथा सखीकेँ सुनबैत छथि [illegible] एहिमे व्यवधान (विच्छेद) नहि होएत तथापि [illegible] परन्तु ओ एहन पीरि ऋतुनिहार आबि मुहो नहि तकैत (1) ओ पुनः आब नीक मन [illegible] भए गेल। (2) हे सखी पिआ सए सखा मन दरब जोकयु इसरा

हजार रमणी सभक सग विलासथु। हमरहु लागेके आशा रहत (3) कतेक यत्नसँ गौरी पूजल आ हुनकासँ नीक स्वामी पएबाक सोहाग भाङल से भेटल अवश्य मुदा तनहु अपन करमक फल भोगि रहलि छी अकर आरम्भ जेहन। (4) समय गेने जँ मेघ बरसए तँ ओहि चलधारक कोन काज। आड वितला पर जँ वस्तु भेटए तँ ताहिसँ कोन लाभ [illegible] ताले धीरि गेलापर दीप बारब आ दिन वितला पर भोजन पाएब कोन काजक। यौवन वितला पर युवतीसँ प्रीति करबे प्रेमी कोन फल पाओत (6) धनक अछैत जे भोगए नहि सकरा अनमे पश्चात्ताप होएबे करतैक जीवनमे यौवन बड निष्ठुर होइत अछि, ओ गेलापर फेर घूरैत नहि अछि (7) विद्यापति कहैत छथि हे युवती, सुनह ज्ञानवान लोक समयक मूल्य बुझैत अछि। एकर रस अनेत छथि लाभक।

[illegible]

1 एहि 2 आनेक 3 हरएलि। 4 अनइ विद्यापति गाओल। 5 भाषा में

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि--(1) हे कान्ह हमरा प्रति तोरे गेल, विधाता तँ आरो दुख देलनि। कमलक [illegible] आलिङ्गन भए गेल। (2) आँखि दौड़ैत दौड़ैत (घाट तकैत तकैत) अकछा गेल। कान्ह नहि आएल। हाए, आसमे ओझराएल प्राण [illegible] भछि। (3) मन होइछ उड़िकै तत्तए चलि जइ जत्तए कान्ह अछा आ ओकरा स्पर्श मणि सदृश हाथ छाती सँ लगाबी। (4) सपनहुमे एक क्षणो समय भेल आ रंग रभस आरम्भ करैत किन्तु विधाता बड़ मे बाधा [illegible] कएलक ओही कालमे निद्रा हरि लेलक (5) चन्द किरण ने शीतल [illegible] सेहो तीख भए गेल। विभाक दिना [illegible] प्राण हरबा पर अछि। (6) विद्यापति कहैत अछि हे [illegible] धैर्य राखह। शीघ्र तोहर मनोरथ पुरतह, यमलक आशि जएबुन

[illegible]

साँझे २ [illegible]

राधा अमर कहैत छथि [illegible] अ' [illegible] अछि। एकसर हमर देह मे [illegible] अपि कुलकार्से मिलन होइछ। लगैत अछि निद्रा [illegible] उलि गेल। (3) अमर कृष्णक काल लागि हमर [illegible] हमर दुख निरन्तर देखैत रहैत छह [illegible] सेवा सिवेदित करबह जे कोनो तीर्थ जाए [illegible] विद्यापति कहैत छथि। लखिमा देविक पति [illegible] छथि।

[illegible]

[illegible] कान्ह हमरा विरहक नओम दशा (जड़ता) मे छोड़ि गेलाह। अब हम दसम दशा (मरणावस्था) मे पहुचि गेलहुँ । (2) ओ अनुचित काजक अपजस अरजि गेलाह हम [illegible] यमलार्जुन मलिआकेँ गहल। (3) आब कृष्ण विदेशमे सुख आगधु। मन [illegible] । कलाजलिकप सन्देस पठाए देथु (4) अलयपवन बहैछ [illegible] मे [illegible] । हजार-हजार दारुण चन्द्र उगा भी [illegible] । लाहेसँ आब हमरा काल लागि [illegible] । विद्यापति [illegible] राधा लाहर [illegible]

[illegible]

। जिवे। 2. आबे सुखे कन्हाइ। 3 होएत

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि -- (1) कान्ह हमरा विरहक नओम दशा (जड़ता) मे छोड़ि गेलाह। अब हम दसम दशा (मरणावस्था) मे पहुचि गेलहुँ । (2) ओ अनुचित काजक अपजस अरजि गेलाह हम [illegible] यमलार्जुन मलिआकेँ गहल। (3) आब कृष्ण विदेशमे सुख आगधु। मन [illegible] । कलाजलिकप सन्देस पठाए देथु (4) अलयपवन बहैछ [illegible] मे [illegible] । हजार-हजार दारुण चन्द्र उगा भी [illegible] । लाहेसँ आब हमरा काल लागि [illegible] । विद्यापति [illegible] राधा लाहर [illegible]

[illegible]

अनह विद्यापति सुनु बरजोषति चिन्ता करिअ [illegible]
अथिर मिलत हरि रहु धइरज धरि सुभ दिन पलटत भाग 5

1 ओछाओन। 2. अमि। 3. रमि। 4. सिनेह। 5. बेआधक। 6 मनो चिन्ता करु त्याग।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि -- (1) चानसँ चकसक रश्मिसँ कुन्दक फूल झरि झरि सेज रचल। ओ झरि वाहित पङ्क सन पड़लहु आ नहि सेज भरल के कहल बारह दिन सन्ताप औतैन हमहुँ। (2) हाए हाए, कोना फेर घुरिकें अयुत जाएब? कोना फेर कान्ह भेटत? चिन्तासँ नाल बाझलि हरिनीक समान ई विरहिणी नारि (हम) कोन उपाए करत? (3) भमरा एकसरे घुमैत रहैत अछि. बहुतो फूलक सङ रमण करैत रहैत अछि, कहाँ कतहु केओ आकरा रोकैत छैक। परन्तु हम जे बहुवल्लभ कान्ह नेह बढाओल से हमर अपराध भए गेल। दिन दिन [illegible] बढैत गेल कामदेव दारुण भए गेलाह। आओर कतेक बरख [illegible] सेपब? प्राण अछ तँ धरैत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी सुनह। चिन्ता तेआगह। शीघ्र कान्ह भेटथुन्ह। धैर्य धरह, शुभ दिनक भाग्य पलटतह

[474]

सावन भादव भमर गुञ्जर कोकिल पञ्चम [illegible]
दखिन पवन बिरह वेदन सिनेह का [illegible]
साजनि रचह सेह उपाए
मधुमास जत्तो माधव आवए बिरह जनम जाए ।2
अछल अङ्गज प्रेम अनङ्ग धनुके धारल' हाथ
नाह निरदय लेजि पड़ाएल पड़ल' हमर साथ।।3 ।
एक बेरि हरे असम कएलाह दुसह सोचना आजि
पुनु गोपकुल जनम लेलह बिरहि बधए लागि।।4

अओ तोहि पाबओ अरे विधाता बान्धि मेलब अन्धकूप
जाहेरि नाह बिदेसल नहि तासे कर्ण दिअ रूप
ई रूप हमर बैरी भए गेल दैअ बहु दिठि लाल।
अनयर्ं ई रूप हित पए लोए' हमर ई भेल काल।।6 ।
दिने दिने दुख सहिन पारओ पीड़ए' अधिक मार
x x x x x ।।7

1 अनङ्गज। 2. धनुरियाडल। 3 ओडल। 4 कों। 5 करए। 6 पड़ए। नेपा सं

राधा सखीसँ विरहव्यथा सुनबैत छथि -- (1) सहकारक (आमक मञ्जर पर भ्रमर गुञ्जार करैछ। कोकिल पञ्चम स्वरमे कुहकैछ। मलयानिलक बहैछ। विरहवेदना बढ़ल जाइछ। एहनकुमे निठुर पिआ नहि अबैत अछि। (2) हे सखी, एहन उपाए करह जाहिसँ एहि वसन्तमे कान्ह आबए। औ आओन सञ्जनहि हमरा एसे विरहवेदनासँ प्राण भेटत (3) छल तँ ई काम अनङ्ग (पद्मुम्नक पुत्र अनिरुद्ध) किन्तु भए गेल अनङ्ग (शिवक कोपें)। प्रथमे धनुष सेलक। निठुर कन्त तँ छाड़िकें पड़ाए गेल आकर सभ बाण हमरे माथ पर बजरए लागल अछि। (सखीकें एतबा कहि राधा कामदेवकें कोसए लगलि) (4) एक बेर तोरा शिव अपन आँखिक दु सह आगिमे मदन कए देलथुन तँ तोँ बिरही सभक वध करक लेल फेर गोपकुलमे (कृष्णक पौत्र अनिरुद्ध रूपमे) जन्म लेलह। (पुन राधा विधाताकें कोसैत छथि) -- (5) हे विधाता, हम जँ तोरा पाबेतहु तँ हाथ पएर बान्हि अन्धकूपमे पाकेलि दितिअहु। जकर कन्त बुझनुक रसिक नहि हो तकरा तँ रूप किएक दैत छहक? ई रूप हमर बैरी भए गेल। ई रूप तँ बहुतोक आँखिमे गड़ैत छैक। अनका हेतु अनहि रूप हितकर होएक हमरा लेल तँ ई काल भए गेल। (7) दिन-दिन तहँक वेदना होइत अछि जे सहि नहि सकैत छी। कामदेव बहुत सताए रहल छथि

पाण्डेय कपूर कम्पाउण्ड पास का महल भाग्य ऐतासीक नया ग्रहण
का रहन-सहन मा अधिक से दृष्टि देखि पथिक (हिन्दी अन) कैप
पुरी मुद्रण महिम चैत्र १४ पल्लव कंक्रीट (कान्तिनी) कालिक लालमा
पुरवैया ऊर्ध्व के औरस विरहिणी व्याकुल भीति क्षतिग्रि रहने आधा १६
देवापत्नि वहेल रची है रस अंश १ छवि रणनीतिक पति शिवालिक

रणा सवीक शिरहत्या सुबह छवि १) पूरब नखत लंघ अलाग (पूर्वराग) अपजस नखत अन कौअए जे भगत पथा फल्क पर जिंदगी दी। (2) आब अखत दिन दिन ऐस एहन रंग नंदिनि रस बढ़ावि घटति बेला। आगि सेत बेल (फरसि) फूलक [illegible] लाइल अछि। (3) हे सखी, आलफ्के हमर छिन पी कोकहेतुक आनमे आ अनेक अ पछि छीपी बिसरि नहि देथि। (4) कामकोसक आनमे आ अनेक अ पछि छीपी बिसरि नहि देथि। नफर आधहक आस नहि रहल। विपत्ति अहंत छवि १६ रस अंश १ पिंगल नखत्रिआदोक पति शिवालिक

केओ सुधे सुतए केओ दुखे जाग। अपन अपन चिक छिन [illegible]
एक फागुन अपन [illegible]
आसरि जपि आस अधु सेवा। से दोसि पावक [illegible]
अंतर कंत अनरथ पुर। भोगवान [illegible]
शिवापति अन एक रस आस। शिवालिक आनन्दवाद [illegible]

खण्ड 2 लेखि।

शिवालिक रण्डा शिलाख कर्ण छवि [illegible] से केओ दुःख से जीवन ओढ़ि। सासक अपन [illegible]
शिवालिक अंधला छि [illegible]
एकहि नवरसे [illegible] याहार [illegible]

चान्द पैसन छत सीतल सेजओ दहए जनि आगि। 3 ।
अनमाय मन मय सयलहु से सुनि हिअ ओर लागे
बाजेभु हमर बिदेस बस तँ जओबन भेल काल ।

। सेहे 2. लजौ, 3. तन्हुहु 4 [illegible] 5 दहए।

राधा अमरके दूत बनाए पिअएके समाद [illegible] अमरयर, कानहके कहबह जे एक बेरि घुरिके [illegible] अपन प्रियाके देखए आ' लखन बड़ फेर बिदेश [illegible] अवस्था बीति गेल। देहमे यौवन बास लेलक [illegible] पुनः हमर आशा नहि पूरत। [illegible] भेल। झखैत देह बिसरि गेल। कमलक पात पर सुतैत छी [illegible] नयनें जरबैत अछि। (4) कामदेव सभ [illegible] रहैछ, से सुनैत छी तँ हमर हृदयमे टीस [illegible] रहैत अछि, ते यौवन बलाए भए गेल

[illegible]
भाइ [illegible]
[illegible]
पठाओ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
मुकवि भनयि कण्ठहार। [illegible]

। कलकि फेर पात, 2 सबहि लिखबि [illegible] 4 लए 5 सुमरि 6 परहार।

विरहिणी राधा सखीसँ सन्देश पहुँचएबाक अनुरोध करैत छथि
(1) हे सखी, केतकीक पात आनह, ...। (2) कस्तूरी घोरि मसि बनाबह आ' नह में कलम। (3) सभसँ पहिने हमर नाम लिखबह माङ ठाम हमर बिनती लिखह। (4) हे सखी, एहि तरहें हाथक लिखल ई पत्र हाथमे दैत पहुँचे ई संवाद सूचित करह --- (5) हे पिआ, लोहर नाम लैत हमर कण्ठस्वर गद्गद (गद्गदित) भए जाइत अछि। (6) आलिंगनमे व्यवधान नहि होअए तँ हार हटाए लेत छलहुँ। (7) अग्र वन, पथरे आ नदीक अन्तराल भए गेल। हे बन्धु, तोँ आयहुँ हमर स्मरण नहि करैत छह। (8) विषातक विधानक कोनो प्रतिकार नहि अछि लोहर विरहक तीक्ष्ण बाण हमर हृदय स्पर्शैत अछि। (9) कवि कण्ठहार कहैत छथि नाम पहर के सहि सकैत अछि

[illegible]
हमर नाथ पिअ बिसरि न हलबे भए ताजे अधसर पाई
दुखिनराजो पेम हमाह हमे लाभल बिध बदेस [illegible]
मनक छाया तर हमे बैसलाहुँ जैसन [illegible]
के हमे नारि सभारि सयह नह दोसरे सहज सनेहोनी
[illegible]
अनुरोधल बोल जनि अपेछ धरि लिखबह धरए अपन बेवहारे
[illegible]
[illegible]
[illegible]

पृष्ठ 2 नृपतिक [illegible] बैसलाहुँ 3 [illegible]

राधा सखी द्वारा समाद पठबैत छथि [illegible] सखी हमरि सभारि
कानके कहिअनि। हमर सपत, हमर ई का [illegible]

भेटलापर कान्हके कहब बिसरि गेहि अहदइ [illegible] कहलुन्ह ने हुनकर्ने हम हठात् (हड़बड़ाए) धैर्य कए बैसलहुं हनैठो समाक उपदेश [illegible] नहि सुनया ताहक गाछक छहरिमे सुतलहुं, तखन ने मनके हर्षाकुल चाही से भेल। (3) हुन एक तँ सभमें गमारि, तापर [illegible] बुझैबीह टोष हमर अपने थिक। विधाताके की कहलिऐ, [illegible] तीन्हि नहि पाओल। (4) अकुलीन (गोपवंशी) ज [illegible] पालन, ओ अल्प पाबे लोह कए लेकेर अपने ओ [illegible] रहत पूर्वक धेनु चरेबे पठेबा [illegible] कुसिआर पहिने (जहि दिस) रसगर आ आगां [illegible] विद्यापति कहैत छथि, हे युवती सुनह मनमे [illegible] सिंह रूप नारायण सकल कलाक रस जनैत छथि

की पहु पिसुन बचन हैत काल। की [illegible]
की पहु बिसरल पस्यक नेह। की [illegible]
पिसुन बचन सुनलाहुं मनं लागि। तूर [illegible]
कत दिगन्त गेलाह की लागि। सोतलेसे रअनि [illegible]
कथ कलापति कत हमार। बरिस परदेस [illegible]
मय परदेसिआ एके सोभाय गए परदेस [illegible]
आर अनोज मरम सर साँ [illegible]

अरुन २ आज। ३. तुरअ [illegible]

[illegible] ही सखी अनेरुआ सहाट पठे [illegible] ने सखी अनल
कहबहुन की हमर पहु पिसुन [illegible] हुनक जान हरि लेलकाने [illegible] की ओ [illegible]
हुनको की कहिओन हम ने [illegible] बात सुनलहुं। तूरमे बान्हि छरमे आगि [illegible]

किएक परदेस चलि गेलाह। हुनक बिरहमे शीतल राति जनैछ जेल आगि बरसैत हो। (5) हे सुरिगरि सखी, हमर दिआके कहबनि जे एथा रहु हमारे परदेसमे रहैत अछि। (6) सभ परदेसिआक स्वाभाव एक रंग होइछ, परदेस जाएत तँ हठे घटलि नहि आओत। (7) हमरा कामदेव हिंका कए मनमन्थनमे धार-प्रहार करैत अछि। वर्षा ऋतु बसन्तहुसँ अधिक दारुण होइत अछि

अंतर मोर कलकल आकुल भादव कह कहकन झमकाई
जकाने जनहि पओसलिथि बारिसक तखनुक कओन उपाई ।१।
सगन गरज घन सघनि सहिअलन मनं बारिस हरि कर राधे
सखि हम दारुन दइव अंतरा दूर मधु पाहुनाम्। २।
से मोर तुवलि जौब कैसं राखति सुन विद्यापति बानी
राजा शिवसिंह ई रस बिन्दक मनमे बोधि देय आनी ।३।

मल्लारिकल। २ जाँद

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि -- (1) जँ कोइली कुहकैत अमरा मुकुल नं सायक कमना झमकाए कँ ओकरा बेलाएब। परन्तु जखन पावसगिरि सदृश मेघ बरिसए लागत तखन कोन उपाए करब? (2) आकाशमे मेघ जखन गरजैत अछि तँ से सुनिकँ छाती कापए लगैत अछि। घरसासुक पैर दाबए लगैत अछि। (3) से सुनि कए सुन्दरी कोनो विशेष रहस्य [illegible] बात सुनइ। तोहर कन्तके कलहंस, हंसीसँ अधिक सुन्दर से बजैत छथि राजा शिवसिंह

सावन सदरअ भगत भरे। अमरि मिअर दुहु बाद करे।
अधिक मरमअ मदगए दन्द पहुन पिआस मोर अधरन्द
से हेरि रितुपति आएल घरी। आकर सो मन सकुच छली।

कोमल आँजरि कोकिल छए आलेटि मान गोये भो न अवाज
जाये मोर आइग' तरुनत भेल लाजे से कहल हित अनहित दुहु रह विहि हाथ'। दुइ कोमलत न रहए एक लाथ'
धन कुल परम मनोभव चोर। केओ न बुझय मुगुधि पिआ मोर।
विद्यापति कवि एहो रस भान। सिवसिंह लखिमादेवि रमान।

1. बहुल पिआसल। 2. न ओ अङ्ग। 3. परहित अहित सदा विहि वाम। 4. ठाम

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि – (1) आमक मौरम आकार मे पसरि गेल। भमर आ' अमरी दुनूक डीय अपु पोआमे झलकी (उघारू छोड़ब 2 दूनू दिस नोअक डेग अ' सखीसं पुछिदेखथि ।। ३ विद्यापति देखैत ऋतुराज वसन्त (न्याय करबाक हेतु अहीं गेल एकरा अपन हमरा मनमे छल। (4) कोकिल आमक कोमल मञ्जर खाइत अछि मालिनीक मान दिवि ओ अघाइल नहि अछि। (5) ना हजार भमर तरुनत (विकसित, पुष्ट) भेल ता' पिआ परदेस चलि गेल। अनहित दूनू विधाताक हाथमे छनि दुइ ओर थाड़ोथाड़ नहि रहि सकैत अछि -- (7) धन आ ओर कुलधर्म नहि हमर सखीक पिआके ई बात केओ बुझबैत नाहि अछि। (8) विद्यापति ई मान सौर रसक सम सजैत कवि लखिमा देवीक पति शिवसिंह

लाखेक लाग नहि भरु जिअनी कोटे पेम इक लाग नहि
मानु मान सम थिर न रहै आदर सहज सजाइ
भनइ सरस कवि रसि सुजान शिवसिंह रूपनरायन भान

1 रस सुजान। 2. नाम

कवि वसन्तक वर्णन करैत छथि (1) जेना सुन्दर भाल आभूषण अछि तहिना तरुणी सभ एक एक कण्ठ गहन छथि (2) आइ भगन मन स्थिर (अपन कहलमे) नहि रहैत अछि। भमर सम मानू कामदेवक संवाद सूनबैत अछि। एकर रचयिता विकाह सरस कवि अ० रस अनलिहार विकाह त्रिपुर सिंहक पुत्र अर्जुन सिंह

4851

कामले कामले कुन्द फूल पसरि पसरि लागि भमर भूल
पुनमांते वरुणी पिअ सङ्ग पाव बरिस बरिसे रितुराज आव 12।
रजनि छोटी हो दिवस बाढ़ सखि कामदेव करबाल काढ़ 13
मनसाँसेल पिय दूरदेसाल विरहिनि पेखल केओ न आल 4
भन विद्यापति रितु वसन्त। कुमर अमर गाओ देवी कन्त 5

कवि वसन्तक वर्णन करैत छथि -- (1) वन वनमे कुन्द फुलाएल अछि फूल पर भमर लोभाए घुरि घुरि कें अबैत अछि। (2) पुण्यवती तरुणी पिआक संग पबैत छथि। साले-साल ऋतुराज वसन्त अबैत अछि। (3) रात्रि छोट होइत अछि, दिन पैघ कामदेव मानू शिआनसं करबि पौजि लेलनि। (4) अलप पवन पृथ्वी सभक मान पिबैत अछि, विरहिणीक देखल केओ नहि जीवैत अछि (5) विद्यापति वसन्त ऋतुक वर्णन करैत छथि एकर रस अनलिहार विकाह जानी देवीक पति कुमर भमर

कपोर मौरिन समीरन पियारे केवल कलान को
साधारिका सधू विधारे न पावत सोऊवर है दरारा
साजनि साजनि सुनहि हे साजनि मोरे
पावभेु सभी मधु दोठे जिवलखि हमहु रही तोरे
पौदरि परिमल आसा एरए मधुरे आसा मोरे

(क) रूपगर्विता राधा सखीके कहैत छथि – (1) हे सखी आइ हम आनन्द सँ कलह मूर्ख अछि। ओ कहैत अछि -- तोहर मुह पूर्णिमाक चान
थिकहु। (2) से कोना हए। पूर्णिमाक चान तँ एके दिन पूर्ण रहैत अछि
तकरा बाद दिन दिन क्षीण भेल जाइत अछि, लखन तकरा संग हमर
तुलना नहि। ओ हमरासँ हीन अछि।

(ख) कवि विरही राधाक वर्णन करैत छथि – (3) राधा मुह
झुकओने चिन्ता करैत बैसलि अछि। एक तँ ओ विरहिणी अछि तापर
चान झरकाए रहल छैक। आँखिसँ नोर झहरि रहल छैक। (4)सखी सभ
अवधिक आशा दए-दए ओकरा होसमे अनैत अछि, ऋतुराज ओ
भए गेल छैक।ओ बेरि-बेर जोरसँ सांस लैत अछि

लखने अओब हरि रहब धरन धरे चान्द पुजब अरबिन्दा
पुनु सेज अनि करब सुरत केलि सुनु भल होएत आनन्दा।।1।
अए सखि X X X X X
हमर परानलाथ कओने छिलमाओल कत जिब देब विसवासे ।
दिअस रहओ बरि रअनि गमाओल बेरे बेरे पिअम कुसुमसर भाए
स्तन ओर मोर मुखक घामे गए सिन्दूर सकल लए जाए
समय आधक आस पिअ परदेस पास लागि दैव कमल न भेला
फूलल कदम्ब गाछ हाट बाट सबो साख' ओर पिअ सेओ न देखला 4
भनइ विद्यापति सुन वर जौवति अछ लोके जिवन अधारे
राजा शिवसिंह रूपनरायन एकरासे मनमथ

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि -- (1) कान्ह जखनहि आओत
ओकर चरण धए रहब। ओकर नखरूपी चानक पूजा अपन कमलरूपी हाथ
बढ़ाए करब। उत्तम पुष्प-शय्या पर काम-केलि करब, दूनूक मन
आनन्दित होएत। (2) हए .. । हमर प्राणपतिके कै दिनमाओलक प्राणके
कतेक दिन आशा-विश्वास दैत रहब। (3) दिन भरि तँ बाट तकैत बीति

सान्तनि रजनी रभस बढ़ाबए भो अनि मन्द पिअरेस ।
इटयक बाउलि कहिअइ पर अनु लाहलि कहन हसाबए।
बिनु माधव मधुरतरी अइसे मैन कि जिब बिनु आसे ।
विद्यापति कविवर एहु गाबए उपदसए रसन्ता
अरजुन राए चरन पए सेवहि गूनादधि रानि कमला ।

1. बियरओ। 2. कोकेल। 3. होउ उपदेशी

नायिका वसन्तकालिक वियोग सखीके सुनबैत छथि -- (1) सरोवरमे डूब दए पवन कमलक पराग पसारैत अछि। भ्रमर माधवी फूलक रस पिबि लहि पबैत अछि, तँ ओकरा उपराग दैत अछि । 2 हे सजनी, हमर बात सुनह। हमरा पिअसँ आँखि मिलबाए देह। एहि उपकारक बदला हम तोहर दासी भए जएबहु। (3) पाँड़लि फूलक सौरभसँ दिगिदिगन्त भरल अछि। भ्रमर गीत गबैछ। इजोरिआ राति कामयामला जगबैत अछि। परन्तु हमरा लेखँ सभ विपरीत (केवल दुख दैनिहार)। (4) आन लोक हमरा विरहिस इदयबाली कहैत अछि। तँ बुझू कि हम गोरहि कहैत छिअइ। हमर ई वसन्तक राति बिनु वसन्तकेँ बीतले जाएत की? आउ कि पालिक बिना जीबि सकैत अछि? (5) हे सखि तोहर लोकनि कँ उपदेश देबाक हेतु विद्यापति रचल ई रसो सुनि हृदैक हरे अर्जुन राए केर चरण सेवक छथि.

1. हरि हमे दीन। 2. सखि चेतावनि

जाइत अछि, मुदा राति बैरिनि भए गइछ कामदेवक सबद परहारक
पभार्वे आँखिसँ लोर बहैछ, मूछित भए भूमि पर खसैत छी हृदय कलप
नहि अबैत अछि। (4) वसन्तक समय पिआ परदेसमे अछि को कहि
देशमे वसन्त नहि होइत अछि? कदम्ब फुलाएल। हाट बाट सेहो रूप
भए गेल। हमर पिआ सेओ नहि देखलक। (5) विद्यापति कहैत छथि हे
राधा सुनह। एगारहम अवतार राजा शिवसिंह रूपनारायण लोहर जीवक
आधार छथुन।

लोचन लोर तटिनि तिरमाने। करए कमलमुखि लाखाह मलान
सरस मृनाल छइए जपमाली। अहनिस जप होए लाख
ओ कान्हु तुअ लागि धनि तप करई, हृदय बोद
सिवक बए सखिक समरपति आगि। करति हम
अ, ए विद्यापति सुनह मुरारी तुअ पथ हे

कान्हु! 2 जिब कर समिध समर

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि
नदी भए गेल। राधा तलए स्नान
माला बनाए दिन-राति लोहर नाम जपैत
तपस्या (यज्ञ) करैत अछि
छैक। (4) कंसरूपी कृष्णकें समेटि हाथमे लेने
अछि। अब प्राणकें समिध (होमक
ओ जँ ई प्राण-होम करत तँ यज्ञभागी
(6) विद्यापति कहैत छथि हे कान्ह

फूजल चिकुर राहुडरे ओर'। रोअए सुधाकर कामिनि कोर। 1।
ओ बन्धु ओ कान्हु देखह आए। काँडअ मधय हँअ बाद छड़ाए 12
दुहु आरजुरि भरि दुहु पुज सीव। कामदहन भोर राखह जीव 13।
अहि ए गेलह' लोहें अपजस मेल। समधर कला गगन चढि' गेल। 4
भनइ विद्यापति हरि मने हास। राहु छड़ाए चान्द दिअ पास। 5

, फुजलेओ चिकुर राहु कजोर। 2. आएब। 3

सखी कृष्णकें उपदेश दैत छनि -- (1) राधा विरहसँ कैस फोलने
रहैत अछि। तकरा राहु बूझि हुनि बेसुधि (भोर) भेल धन राधाक कोरमे
कनैत अछि। (2) हे बन्धु आबिकें देखह धन आ' राहु लहि रहस अछि।
ई लड़ाइ बलधान मध्यस्थे छोड़ाए सकैत अछि। (तोँ आबह तँ केस (राहु)
दलमा आपस झगड़ा खतम। (3) तोँ दूनू गोटए दूनू हाथ जोड़ि शिवय
पूजा करैत छह हे कामकें जरओलिहार शिव (कामकें भगए) हमर प्राण
बचाबह। (4) जँ तोँ राधाक लग नहि जएबह तँ अपजसमे पबयह। धन
(राधाक मुह) राहुक डरे आकाशमे चल जाएत (राधा नहि बाँचति)। |
विद्यापति कहैत छथि, हे सुनै कृष्णक मन प्रसन्न भेलनि आ राहुर
कामकें शरण दैलनि। राधाक लग आबि गेलाह।

अकामिक अन्दिर अेलि अहार। बाउरि सुनल भमर झङ्कार ।१ ।
मरुति खसलि महि ले रहलि धीर। ले चैलए चिकुर ले धैरए चीर ।2
कओ सखि गाथए कओ धए धार कओ चान्दन रसे करए सम्भार। 3
कओ बोल मन्तर कान करए कोलि। कओ कोकिल छेद छाड़लि बोलि ।4
अओ माधव बन्द एक अहि' भुजङ्गम डसु बालाहि लागि ।5 ।
अछे विद्यापति ए न [illegible] एहि गारुड एक पए काज ।6।

लेकिन 21 के आधार तल पर अंकित समाद चुल्हा चुल्हान ने ली अपि
ने देखि सुनल लखी हजक डैप प्रसली) भी ले किछु कहलकह से
चुल्हा 3 की हम लेकिन एकेसर गए छिकहुँ अपि आदयक चतुर्थ
चल्द्र छिकहुँ। पिता हमरा चुल्के पहने सन अहलन्हि। हमर जीयल छिकल
भए गेल 14 कथानकक रनिमे चतुर्थीक चाल सन हमर दश
भए गेल अपि 5 छिलापति चरित्र छथि ने सुन्दरी सुन्दर सन हदाह
लगि फयद एकर रस लेल छथि लखिमा

3

हमरा पुरुष पिछु धैर कलक पहल नयन हर लेल,
कि कहब लाज यहो हम गुन न्यायी मुरुखि अपि हमि ?
अ लेहु सासरि बेली कलम कोस अति कलि लखिनी ?
केओ सखि लाख मासे केओ लखि लिलहुन्हि उपर हमरो (4)
के लेल लेल लेल

सुन सुन साधव सुन सखी बातें नए प्रसाद चित्तु तेहातिं सताती । 1
सबने भवन भेल तहिंए देखा कुहुरोलेसे सगहि लहरू सहिआह 2
सखि हम कामरे चहुपब झपइड अलोडे सांसे सहज पुर नेह 3
सुखलि खसलि नहि पेमांसे लोभे हरे हरे हिंव पेसेट पलवाहे बोली 4
अवसेसे सेज रे सांगे तुअ लागी तक मरन दए हाएह आसी 5
भनइ विद्यापति तुअ दरसन एक बेर जिवाब 6

सखी कृष्णके राधाक विरह दशा कहैत छथि । हे कृष्ण हमर
धन सुनह तोहर विरहमे राधाक दशा कहल नहि जाइछ । भोरहि
पहर दैह मोनमे जेना होथि तहिना जकाँ सेहो नहि बुझैत
छथि । सखी यदि फेरिसं साजरे झाँपि के रखने अछि तैयो
ने झपैत छैक जे ओ अपने मनमे भावैत छथि । अहीन दिनसँ
सँझ धरि हैत गनैत छैक । भोर होइतो कोकह करए दैत अछि
मन आगि पर जकाँ रहैत अछि । मनमे जे नोर खसैत छैक
ओ नखसँ आकि मेटबैत अछि तेहो हेरि । कियाकि छैक
जोग राधाक मरा के [illegible] करए जाए छैक किआए
हिताब (प्रतिबन्ध) [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अहल तरं ते तनु सन्तापल पिनुपति के सेभ
अधर कलेश अजा होब अहल तबो हिअ परके तोह 5
भन विद्यापति सुन तअ औचति रहति सहज से पूने
कन्त हेरलन्त जाहि न सुमर के तसु रूप कि गुने 6

, परके कहए, 2 छिनीकाली 3 साइ 4 भोनए 5 परसहल

सखी कृष्णके राधाक विरह दशा कहैत छथि । हे नव नव
पल्लवक सेज पर सुतलि राधा दिन थिक कि राति सेहो नहि बुझैत
अछि चान थिक कि सूरुज सेहो नहि बुझाइत छैक चन्दन कहकर (लेक
दए, लगैत छैक। (3) विरक अगि कहल छोड़त छैक तकर अनुभव
मनहिमे छोड़त अछि मलका कहल जाए जाए सकैत अछि राधा दिन
दिन क्षीन होइत छथि । समाधानक चालक अवस्था से प्राप्त कालक ।3
हे कालक राधा मोहरारपर्यन्त पहुँचैत अछि अइ धरि हम अहाक दए
विश्वासले जीवैत रहब आशा से जाइत । कवि फूल अछि, कवहु
सुखैत अ कवहु अमरत [illegible] अछि से जानैत हमरा आशे नाक आ
आस से जीवैत रहैत छैक। अहि से जानैत हमरा जीव देह
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अजुहेरि अछिन अन्तरगत बाप दिहु काकिलकें दिहु बानी
पेखन देह नेह अछ सओने एतबा अएलाहुँ जानी ।4।
अलह विद्यापति सुन वर जउवति चिते जनु झांखह आने
राजा सिवसिंह रूपनारायन लखिमादेयि रमाने ।5

1 सए घमरि के। 2 मन्थु

सखी कृष्णकें राधाक विरह-दशा सुनबैत छनि — (1) हे कृष्ण, बूझि गेलहुँ जे राधा आब नहि जुउति। जकर जकरासँ ओ जीवनकालमे जे-जे वस्तु लेने छलि से सभ मरण कालमे कामव्यथासँ व्याकुल भए तकरा तकरा सुनइए दैतक। (2) शरदक पूर्णिमाकें अपन मुखक शोभा दए दैतक हरिणकें आँखिक लीला (3) भमरी गाएकें केस, दाड़िमकें दाँत। अपूरी फूलकें अधर आ बिजुलीकें देह दए अपने कज्जलो सन भए गेलि। (4) अहँक कामदेवक धनुषकें दैतक आ' कोकिलकें वाणी। देहमे केवल नेह (प्रेम) टा रहि गेल छैक। हे कान्ह, हम एतबा जानि अएलहुँ अछि। (5 विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, मनमे आनेहारक नाह करह। एक रसक ज्ञाता सिंघाह लखिमादेयीक पति राजा [illegible]

[illegible]
यत्न कत आगे पुरुस देखल [illegible]
जीवन तरु पेम उपजए' सये से मूड़ बिसारि।11
तकरि दसा' देखि देखि कह' आहि न रह गेआन
नहि बाघतब से जेहेन कर तोर चाहि लोक आन
मनोरथ कहओ तोहि बुझाइ
से आबे मरल सरन आनल तोहर थिरक पाइ।13।
धरनि सयन सुन्दर नयन अलिन अलिन समे
कतने जतने बोलि कहु पनि लोखि बैसाउलि हमे।14।
टैअओ धनि' पुछले न बाजनि बयन न सुन आधे
सुमरि से सखि तोहि मोह गेलि विद्यिवरे भेलि बाधे।15।

विरिति गुन विपरी न होए विसरि न हृदय माहे
देवस दोसे की नहि सम्भव पेम परानहु चाहि ।6।
भन विद्यापति सुन तरुनि जुवति रस नहि अवसान
राजा सिरि सिवसिंह जीवओ लखिमा देयि रमान। 7

1 निज सओ पेम चलक उपजइ। 2. आसा। 3 तबे। 4. जदि

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि — (1) जतए-ततए घूमि-घूमि हम बहुतो पुरुष आ' बहुतो कलावती कामिनी देखल। जीवनरूपी गाछहिमे पेम फड़ैत छैक। (2) राधाक दशा देखि-देखिकें हमर ज्ञान प्राण हराए गेल। हे कान्ह, तोरा बूझा कए कहैत ओ जँ प्राणत्याग करए तँ तथापनी तोरासँ आन नहि होएत। (3) आब ओ तोहर विरहक कारणें मरणहिकें शरण बूझि लेलक। (4) भूमिपर सुतैछ। म्लान कमल सन आँखि मुनने रहैछ। कतेक एयासें बुझाए सुझाए हम ओकरा उठाएकें बैसाओल। (5) तैओ किछु पुछिएक तँ उत्तर नहि। आध बात सुनैछ आध नहि। सखी राधा तोहर स्मरण कए बेहोस भए गेलि विद्यापति विरचन कए दैतक। (6) हाए, प्रीतिक प्रभाव उलटो होइछ से बिसरि नहि जाइ दिनक दोसें की नहि हो। पेम प्राणहुसँ बढ़ि थिक। (7) विद्यापति कहैत छथि हे युवती, सुनह। रस केर ओर नहि छैक। लखिमा देयीक पति राजा शिवसिंह जीवथु।

(49)

[illegible]
कत मृगमद रस' देह दैआओल तथिहु हुताशन [illegible]
एह कैसे राखबि तरुनी X X X ।
[illegible]
[illegible] कर करतल नील वदन तनु देखि उपजु लोहि आने
टरस' लोभे चिहि अपरुब मिलिजल चान्द कमल सन्धाने ।3।

टरल पञ्चसर सुरुचि धानि पद्म सुरभि शुभगे 1म मरे
नोहें पुरुषोत्तम विभुवन सुन्दर अपद न अपजस नेह।।4।

1 जलजदल न कमल। 2 दर

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि – (1) राधाकें पुरइनिक पानपर कतेक सुतल्यैक चानन कतेक सपदैक कल्पित रचे देखलनि कतेक मलयैक पङ्कसमे ने ओकरा अपनेक अम होइत छैक। सखन ओकरा कोना बचाएब' कामदेवक पेखर प्रताप

चिन्तामे भो अपन मुह साथ पर रखने रहैत अछि। से देखि हमरा एहन मन लगैत अछि जेना शिशिरक समयमे रोहणीक लोभे चान मे कमलेक मुखके ने एक साथ एक काल मे रहनीकेर नहि लोहि लागल लागे दृष्टि केलन्हि ४ सखा लोक नायकक सम्बन्ध कए कए बनावैत दोसर दोसरके ने मोहित करए अछि ई सखि पहिने भरोड़ तो तीनू लोकमे सबसे सुन्दर भो सेहन्तो ई हेतु पुरुष अछि एतए अनेर अपजस नाहि लेब।।430

(499)

आजु तिमिर दुइ दिस छहलो। आज दिपर अप दिन यहन
माझे मनय भेल पोहन कए भरोसे से ए सखि बेबसे।।1
ए सखि ए सखि कलनि सुबेला। निअर आएल पिअ लोचन मेला।।1।।
बिरह दगध मन फाट पओआ। आइल आस्य मोरे
अब दिन धरब जाइते जिब हाँडे. आसा बान्ध पहल मन मोरे
भनइ विद्यापति सुन सजनी। बालमु सङ्ग सहाये रजनी

रात, के दुर ३ कओने सखि ४ करे राख धरब जाइते जिब
राखि

राधा विरहोत्तर मिलनक फलस्वरूप सखीके सुनबैत छथि (1) आइ दुसो दिशामे अन्धकार पसरि गेल आइ हमरो घरमे अन्धकार भेल (जलदी बीति नहि रहल अछि जे रातिमे रंगरभस हो. आइ घरमे अन्धकार

कहब अकरुण मोल (' आनै फलमुखता अगत छैक तँ उचित व्यवस्था नहि रहि एवैत छैक। (3) हे सखी सुदिन आएल पिआ नवा आएल। आँखिसँ आँखि मिलल। (4) एतेक दिन विरहसँ जरैत मन कतए कतए जे दौड़ैत छल। आइ अकस्मात मनोरथ पावि गेलहुँ (कृष्ण आबि गेलाह ६ बहुत दिन धरि साइत पाएके लेकर रहलहुँ प्राण अत्यन्त व्याकुलसँ छैक मने तकर सखी अछि. ७) विद्यापति कहैत छथि हे सुन्दरी सुनह। पिआक सग बला राति बड़ दुर्लभ होइत अछि।

(500)

अंग ने अनंग चानन लेप अहिपा लोभे चोर कुमार काम ने
कह बेढ़ अरे कलप बहके मलोपा उपरे बहुत आस ने
अपन चोर दलपा देख बेसे दलस अने लिअ नवा दासी ने
साहस साहस अहलोलिनि' झुमरि मअल अराधए आसा रे। 2।
धनदेस धरा अपने दुरन्त दुरन्त रहोम राजे
कइसे कए मअे मअनो अराधओं होइति अनहि बड़ लाजे रे।।3।
विद्यापति कवि गाहिआ झुमरि पहु अछ गुनक निधान रे
राउ शिवसिंह गुन आसह नागर पदुमादेवि रमान रे।।4।

। अन्धेरे रे अँगना घरहल केरि. अनुरोध आ , पानु धरा देव
मोए बाअस जओ पिआ आवैत आज रे ३ सोहे ओरि ४ दुनियाँ ५
आज मअने। हाड़ो रे पोरे रसि. ७

राधा पिआक आगमनक प्रतीक्षामे उल्लास व्यक्त करैत छथि
१) हमरा आङनमे नवलक्ष कमलक गाछ अछि। ताहिपर यदि कौआ कुदैत अछि। तह कह रे कौआ हमर पहुक सबाद कहल हमर आस पलटल जँ अइ हम पिअके पाएब तँ तोहर चोंच सोनसँ मढ़ाए देबौक (2) हे सखीलोकनि झुमरि गाबह आ चन्द्र मङ्गल गुना करा , आज दिस चन्दन आ सान्त्वनीक फूल फलसन अछि राति चारि

एकमक अछि हम कोना मदनक पूजा करब? हमरा तँ बड़ सजाए भेटत।
(4) विद्यापति झूमरि गबैत छथि, तोहर पहु गुणवान्, विचारल जइ
(अपने बसहु)। एकर रस जननिहारि विरह पदुमावतीक जेकाँ रए
ओगीसर

सुरभि समय भल घन असआनल साहर सउ अ भरि लेँ
काहुक विपद होअ काहुक सम्पद लागा गति ससार लेँ।।१।
पोइली X X X \ \ \
पञ्चम हाके रमन गुन सुमरब कुसल अ[illegible]
आज धरिए हम आसरे [illegible]
मनमर देखि अज आनि पराइअ गहए सरास [illegible]
\ \ \ \ \
अनइ विद्यापति कपलनरायन सिरि [illegible]

1 बीपद। 2. सुमराओ। 3. छउल। 4 अज आये

यसन्तमे विरहिणी राधा विलाप करैत छथि [illegible]
कतु। अलय पवन बहैत। आमक सौरभ भरल। ई समय एकरो लेल
आनन्दप्रद छैक तँ कमरो लेल विषादक (संयुक्ता आनन्दमे, वियुक्ता
विषादमे)। समयमे भिन्न-भिन्न लोकक गति भिन्न-भिन्न होइत अछि।
(2) हे कोकिल [illegible]
सुनि प्रिअ हमर गुणक स्मरण करत आ कुशलपूर्वक घर अओत ।।
आइ धरि हम आशामे रहलहुँ। बहुक स्मरण करैत ठाम नहि छोड़ल।
(विरहावस्थामे) भ्रमरकेँ देखी तँ ओकरे पठाए जोड़ [illegible]
उपस्थित होयि। (5) ..... विद्यापति कहैत छथि एकर
रस जननिहारक नाम थिक राजा शिवसिंह रूपनारायण।

जनम कृतारथ सुपुरुख सङ्गमे। सेहे सुदिवस जओ नहि भग अङ्गे।
हटसक आनन्दे सुख परगास। तबहि तेजँ हो कमल बिकास।।2।
भल भल मन्त्र हे कृपिरस मंत्र तहाँ निधि मिलल सफल सिध भेल।।3।
एक दिस अनिमख नवनिधि हेम। अओक दिस नवरस सुपुरुख पेम।।4।
[illegible]
[illegible]
अनइ [illegible]

१ हरि

राधा विआक मिलन जन्य उल्लास प्रकट करैत छथि जे
सुपुरुषसँ संग हो तँ जीवन सफल भए जाइत अछि आओर एहन सग
बला दिन सुदिन थिक जँ मनो- मालिन्य नहि हो। (2) जेना सूर्यक
किरणमे कमल विकसित होइत अछि तहिना प्रिय मिलनजन्य आनन्दसँ
हृदय प्रफुल्लित होइत अछि। (3) हे सखी, अपलाह दिन (विरहकाल,
बीति गेल। कृष्णरूपी निधि (खजाना) भेटल तँ मानू सभ मनोरथ सिद्ध
भए गेल। (4) तराजूक एक पल्ला पर सोन, रत्न आदि सबो निधि राखल
आए आ' दोसर पल्ला पर सुपुरुख-प्रीति तँ प्रीतिक पल्ला भारी होएत
से बात के नहि जनैत अछि। (6) प्रीतिक तुल्य दोसर आन किछु नहि
एकर तुलना केवल अपन प्राणसँ देल जाए सकैत अछि। (7) विद्यापति
कहैत छथि प्रीतिक ई अपूर्व परम्परा अछि। दम्पतिक (पति-पत्नीक) बीच
प्रीति अटल रहय।

अहाँ सुधा-निधि हम तृषित दिठि मधुरम मधुरिम बानी दे।
मोरे अहर्निश दे बरसे न पड़ब सबे विधि तोहि देल आनी दे।।१।
मनु कमल अलिसँ भाव सनाई दे।
हम गुन नुपुरक रुनझुन अनेक देल गहन भाग सधाई दे।।2।

जमु गुन अखइते झानरि अेनिहे रअंते गअओलह जती १।
से लागि विधि अनुरोध लेनांते नहि काल्ह सम भेअ अनुरती २ ...।
अलह विधातहि गुलमंति अरखए बालेसु के अपराध २
राजा सिवसिंह रूपनरायण लखिमादेइ अराधे ३।4

। राधाए।

सखी राधासँ कहैत छथि - (1) अमृत-सन मधुर अधर, दूध-सन उज्जर आँखि, मधु-सन मधुर बोल। अत्यन्त वेगरतू लोक जे यत्न करबहु पर नहि पाबि सकैत अछि विधाता तोरा से सभ आनि देलथुन अछि (कथीक कमी छहु तोरा)। (2) एहना स्थितिमे तों असन्तोषक भाव देखा प्रेमी कृष्णसँ रूसह नहि। औ तोरा गुन पर लोभाए बहुत दिन पर एहुन भए अएलथुन अछि। (3) जनिक गुणगणक ध्यान करैत तों थिरे झलारे भेलि जागि-जागिकें राति बितओलह से लागि (प्रेमी) अथोन कृष्ण सन अनुरागी पिआ सौभाग्यवश पास भेलहु अछि। (4) [illegible] गुनमन्ति (युक्तिआरि) ललना अपन प्रेमीक अपराध सदा क्षमा करैत रहो राजा शिवसिंह रूपनरायणक आराधना लखिमादेयी सदा करैत [illegible]

[illegible]

आतुर 2 देलाए। , लहुण करबे

[illegible]

सखी राधाकें पहुक आगमन पर बधाइ आ उपदेश दैत छथि — (1) जकरा लेल (जकर विरहमे) चानन विषहूसँ अधिक तेज लगैत छलहु, चान आगि सन, दक्षिण पवन काण सन आ कामदेव वैरी सन, (2) से कान्ह कतेक दिन पर आइ पाहुन भए आएल छथुन। धन्य छह तों जे ताहि कान्हकें (आनन्दवश) हँसिकें निहारैत नहि छहुन। हृदयक हारकें बलहिँ टारह नहि। प्रेमरूपी अमृतमे डूबह। (3) कनैत-कनैत नोरसँ आँखि लाल भए गेलहु। रातिक दू पहर बीति गेल, केस फूजल छहु थीर सम्हारैत नहि छह हार देहमे भार बुझाइत छहु। (4) तों अपन तपकें सफल करह कान्ह आंचे गेलथुन। एना मान किएक बढ़ओने छह। जेहो तों सोचने नहि छलह सहो कालना हम पूरा भेलहु विद्यापति कवि इ रस।

[illegible]

आस करए लेजिए गेल।
सह सखहुने आस पास अओलो ते अपन भेल
सैन्य दुख [illegible] सोअओलाहे अधुर माइक खीर
दुहु दिसिक दुःख दोअओलाहे जोयनें कोर सरीर। 2।
कुच जोड़ि मुह चोपड़ि भए गेल दोड़ि गल सब हार।
नीविहु नूतन डसन देखिअ केयूअ आएल पार
अधिके अलाजलि दूर न सहए बले फूटि गेल कास
दूअओ अधर धरि सिरोपिअ नइअओ तरहि आस। (4)।

1. थारि। 2. कोमल। 3 झाड़ि। 4 जनि कथुमाएल। 5. कासी। 6 पराधार। 7 तर ऊपर होएबो।

अति बाधोक्य पर नैराश्य प्रकट करैत छथि — (1) हे बएस, तों हमरा लेजि कतए पड़एलह? तोरेकि सेबैत हमर जीवन बीतल, तैओ तों अपन नहि भेलह। (2) शैशव अवस्थामे तों माइक मधुर दूध पिअओलह यौवनमे हमर कोंच शरीरकें दू भाँफल (बेलक गाछ) केर छायामे

सुतअौलह कथीक्यमे आंगे दोन झड़ि गेल मुह धोयड अा गेल सभ दपे (अभिमान) उड़ि गेल। आब केदुआएल (आदक) सभ अकों देखल देखल तीनू मुवल देखि रहल छी (तल अचल मल धौआइत)। भूखे झलफलाइत अछि दूर नहि सुग्रैल अछि कंस पाके गेल मेल चलमे काम फुनाएल हो। दूनू ठेरके सम्हारैत छी, तैओ लड़ि दिस मासल आइत अछि।

(4) रागतरङ्गिणीक गीत

5.16

मंजुल केरी जमुनाक तीरे कदोम्ब तल तर रे ।1

अकांमे कान्हा कि कहब समरा मोड़ाहि अुझल मछि कुसुमसरा।2।

भोरि भेलहे कान्हू भनए कहिलै कहह जनु, 3

डर चोर हांसि करे कह धरि अधर पिबा मुख हेरि 4 ।

पनु पनु भोर परह कुच भोरा पिबथे पओोध अछि कलसे कलोरा 5

भने ३ अुधनी बुझाँके अुगुती दोसर मधुर मधुपुर' पती 6

नोरे अनुमते विद्यापति भाने सिवसिंह नवितमाइेड़ रमाने ।

१ कान्हा २ मधुकर। ३. मधुरपती

राधा कृष्णसँ आकस्मिक मिलनक कथा सखीसँ कहैत छथि (१) हे सखी सुनि यमुनाक कातमे कदम्ब तरमे गछ्तर (२) अकस्मात कान्ह भेटल। लज्जायुक्त हास की कहबहु जेना साहस कामदेवसँ युद्ध भए गेल। (३) हमरा कान्हसँ भेंट भेल। ई कथा अनका नहि कहिहह (४, कान्ह छलौ परसँ चीर हटाए देलक हायसँ केस पकड़ि हमर मुह देखि देखि अधरपान कएलक। (5) ओ भोर भए (सुधि बुधि गमाए) गेरि छोरि हमर दूधर लाल [illegible] थिक सोनाक कटोरा पाथि गेल हो (६ विद्यापति कहैत छथि हे युवती गहिर जुगुति (गोपनक प्रयास) हम बुझि देलहु मधुपुर अनुरागक स्वामी कृष्ण दोसर (मानवरूपी) मधुप सिवसिंह भौरा अधरमधु पीबे करताह)। हमरा तँ लगैत अछि जे कृष्ण आब कहि अविद्या दैवीक पति राजा शिवसिंह सेह थिकाह

[illegible]

ता पुनु अचम्भ देखल रे कुचरला अरविन्द
विगसित बिनु किछु कारन रे भरल मधुचन्द
विद्यापति कवि गाओल रे पूरल रसभान
देवसिंह नृपनारायन रे हरिहरि हरि कल्यान ४

तिर अवलम्ब २ नहि

कृष्ण राधाक रूपगुण सिनेहे सुनबैत छथि १) बसात लगलासँ आंदर खसि पड़लैक। हम राधाक देह देखल जेना नव मेघक तर बिजुलीक रेखा हो वा श्यामगुण देह गौरगुणे। (२ आइ राधाके आइन देखल तँ हमरा भासल जेना मेघक तर सोनाक लता धरती पर धुबैत हो २) एक ओर अद्भुत बात देखल से हिनू कारणहि (असमयहिमे) आ सोझामे मुखरूपे चानक सहित सत्यरूपे कमल विकसित अछि। (4) विद्यापति कवि ई गीत रचल एकर रस बूझैत अछि हरिहरि देवीक पति रसिक नागर २ नृ देवसिंह

४

नन्दक नन्दन कदंबक तरुतर धेरु धिन मुरलि बजाव
समय सहज सुखदेन जेहन तहँ होए राधे हृदय
सजनी मोर बड़ पुरुख भागे पेखल साँझ
बाम पयोधर उपर हरिनख कुंकुम लागे देखल
१ १ १ १ ३ १
तोहे सजनीसन मुखसि साधल बचन सुनह मोर अन
अनुह बिद्यापति सुन वर नागरि बरइ सन्तोषल मन ४

बिके हिके 2 बिहरि 3 साँझमा ४

राधाके सखी कहैत छथिन सन्ध्या बेला हम कदम्बक गाछ
मन्द मन्द स्वरें बेसी लोक भुला जाइ से मुरली बजबैत छथि से

निर्धारित समयमे सकल स्थानमे बैसल छथि आ हेरि हेरि तोरा (वंशीक संकेतमे बजबैत रहथुन। (2 हे सुन्दरी तोहरा लेल मुरलि सतत विकल रहैत छथि आ सतत धेयान आइल प्रत्येक गापेसँ तोहर खेजपूछारी करैत रहैत छथि। ३ कृष्ण यमुनाक आलमे इधआनमे उद्वेगमग्न भेल हेरि हेरि भाड़ी वाटके निहारैत छथि आहि धाई \ \ \ \ ४ विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी हमर बात सुनह तो बुधिआरि छह आ कृष्ण मोर बुधिआर छथि यतुरतापूर्वक सहज किशोरक भजन करैत रहह

५ ०

मान परिहर हे करु बचन मोर मान अपमान हे धन रहल तोर ११
न कर न क. हे आंखि विमुख आगे एकबक मुहे हे पुनु अल समाजे
कमल बदनि हे कर आकुल दासे विनय के लाह हे नह तेजह लाजे ३
विद्यापति कवि हे अल एहेक धीरे राजा सिवसिंह हे पर भूपति धीरे ४

भावार्थ पेजे नम्बर ५

कृष्ण सखीसँ राधाके समाचार पुछैत छथि १ हे सुन्दरी मान छोड़ह हमर बात मानसे आइ रासमंडप दुबरा सजबैत छथि से तोहर स्मरण कयलनि। 2) आइ हमरा विभूषित (विभूषा आदि करबा लेल पुनर्बार आइ बुलौलैन्हि अपन आँखि ३ हे सखीसन्देश हमर हेरि हेरि (तोहर आगमन) मार्ग देखैत छथि। ४) विद्यापति कहैत छथि एहेन रसिक हीरा धीर राजा शिवसिंह

कुसुम दाम चिकुर काम केस दीरघ देह
सिंदुर सीमर सम दसना बरन अति सिनेह ३
आनो नारि गजराज गति चरनहि विद्यापति साथ
आनो काजहुक चेतबसे ओ आनहि आह समाथ २
सरद सम्भिधर सरिस मुखर बदन लोचन लीन

जनता छाये नृत्तिका देवीक पनि राजा शिवसिंह

१

भोटे हल्यार हरि कुले संस्कृतिक ना रस्म मेल विकार
देखबै नयन मेरा चित्रम मोलाए हरिम हजार
हरि हरि कलंगी सुवृद्धि पनि हैरान ईमान पछल नेहरू।
१ १ १ १ २
तेल राघव भाषय इल्टर क पर कम्पिम रस
मटि कलाकाल उपर तिनम बल कुछ थ सुरक्षी घर २
मेरू दिनेश थाम पर्यंत सम्म निरामय घर ८
मेरम हरिमन कर सुपाकल जड़ थ थ्रम
होने कहना मलय बोलम कहले गहिम हरिक हजार
मुकाबि रह धेरकल जाबोल रूप सहस्र मम
कवि नवीमा कलम कलम किरे पंथ पैन ४

रचित २ देवु १ शिवमल ७ हरि पहाड़ि

कवि नर्तिकाक रूपक एकल हरि ... कलाकार
पेलाक्षक उपाध्यक्ष केसरी शिल्पक रंग नवीन ... अंश हरि मेघक रूप
मन मोहिना उपाध्यक्ष रूपल जैन आधुनिक ही हरिमल्लिक मोहन देव नयन मनो
... शिल्प नवीन ... हरि ... हरि ... हरि ... हरि ... हरि ...
मुकाबि ... (१, ... हरि ... हरि ... हरि ... हरि ... हरि ...
... हरि

पीन पयोधर दूबरि देह भेल कृश कटि भेलि खीन।
मोर लिखए अल बड़ सुखधर गुरुजन ई दुखलीन॥
बेकतेभ चारि गुरुजि रह कओसल बिदगधि कओ भान।
सलहस जुबतीके चीर लेल की सु नयसटोल सुजान॥ ८

१ खण्डित दरश २ बाँधह ३ नव उगे मोर ४ गुरुजन कर कठिनाइ।

गुप्त समागमके विधएबाक चेष्टा करैत राधाके सखी कहैत छथि (१) नीवर केस उधेसल छहु खाजाक फूल छिड़िआएल छहु। अधर पर दन्तक्षत छहु आँखि लगैत छहु तेना भेभोरा मधुक लोभे लाल कमलक दल (धनी पर बैसल हो ८। है दुष्टिजरि आड़ लाथ नहि करह लोक छाड़ि हमरा कहह जे आइ काह रतिकलह लगा राखि दिअलिहह ३, पुष्ट स्तनक पर जे नखक्षत (लाछन छहु सकरा हाथमे झाँपल छिअक छह सुमेरु पर्वतक शिखर पर (उगल इनर ९८) द्वितीयाक चान (अर्थात् उगि भेल (झलाइत भए गेल लहि दुजनमे लोक थोरि देखाय भेल छहु गुप्त भए रहलहु। विद्यापति कहैत ओहि रसकी चोरि कोनहुमे छिपाओल नहि सकैत अहि अलकक मुखक पाछे सुधाकर गरासलीन जेहन लगैत होयत

३ खण्डित दरश 'मेरपरुपति भोजपुरि नओरस भास हरु आई।
भनि एहन पाँति दुअ कए पाओल दरबार हि भेटे ई॥
सुनु सुन बेरा अरुन पेखल हे देखल राति समाइ
झाँपल कमल बोलिस नअनुत भृङ्ग अरुझ लेल पिअइ हे।
नखर जोरिकेरा हरिदेह भल नअनक काजर लाग
मधु लालस मतुलल माता मलिनित आस पड़ाइ॥
बड़ मनलागोल भोग पुरोल हे दुहुक मनोरथ भेल
भल मानोरथपूरल मनसिजमनुज पे हेन अवसर पाब॥
पाँचारि पाँचारि सहचरि लाख कओतुक देखि
लाजेसर कोने सहजहि पूरल बरए बरए रस मातलि॥ ५

४

नधु लए मधुकर चालक दए हरु कमल पड़ल्हि भा लाई
पाँअलाल तोरि काहेसुत बालधल केसु कइलि बधलाही ७।
नव नव पल्लव रोज भोजाओल चिर दहु कदेलेरि आसा
बैसलि अमरी हरख माझर चक्का चान्द निहार ?
कलकोकिल सुनिअइ पंचबिध हरु राखि नखत लए ओर
कोकिल कलित गुलित भल नअन हरु दखलत लाभ टेला। ४
दखिन पवन घन भरल सुगन्धा कुबलय कुसुम पराग
सुखलित हरु मोरलि घन काजर आँखि न आओजन लागे ९।
बाल बसन्त तरुन भए घानलि पेखा सकल समाज
५ ६ ७ ८ ९ १० ८
नव बसन्त पिरु अनुसर औलनि बिद्यापति कवि गाथे।
राजा शिवसिंह रूपनरायन लखिमा देइ अनाथे॥ ५

१ नवीन आँस पल्लव २ के बधाइ ३ भरित ४ सोनहु मधुने धनित नखसे। ५ दुष्टिजन दरशि ६ घन घन ७ मनसिज फूल भल ८ पुर नअर ९ सुनाइ। १० हर भरुआएल चन्द्रमा ११ लोला १२ खोलबा १३ माया १४ भाया।

पृ [illegible] सटघटाएब कहबैक। ई शब्द एही अर्थमे असमिआमी [illegible]

अनि नन्दोत्सव शब्दसे [illegible] अर्थात् अहमे [illegible] पूर्णमासी [illegible] अहन नओरस माघ भेलैह नक्षत्र पुनर्वसु योग भेलैक। चन्द्रमासे [illegible] माघ शुक्ल प्रतिपत् दिन सूर्योदयक समय शुभ समयमे सानाह कर्म आरम्भ कए [illegible] नक्षत्र योग [illegible] युक्त समय [illegible] अहन [illegible] मनसन्त [illegible] मालिनी [illegible] मधुर [illegible] रूपमे [illegible] सोहर गाबा [illegible] १४ मनसा [illegible]

५

(2) इसका सहज उच्चारण (उच्चारण) दिया होने हुए आहत अनुवाद में चित्रण
नजरके इनमें तक्कर आउट भावन छात्र [illegible] या और नेपाले छोटे
शब्द शकारस्पद [illegible] ग समुक्त सत आधारी फिले खल्तनाय सेहराद मेल
15 पैदाएक गाँडी और फूले कपुरनी नाक्क धाता सत हुने अंडे
मधुभरि बगर मगर लाक्डि पुरा फुल झाम नाक्क धाता खनकुंडेहा
ऐस नाबोमर फुल शब्द बजभोक्क नगप फुल झाडि घर नाल हेक्क
6 मधुकर [illegible] कमनक पेखुरिम नाम नेहाके अपु घट भुक्क
कमनक नाल नेपेड़े हेडुरेरे शब्दि नेस उनक्कक फुल धनकी मेना।
7 नयो भन्नाक सेन कुछाभनि मेना, हमाक आधक शुभ कटकुरा
मेला लटकाभुल मेना, मेहाके सन हराद [illegible] गायर देखने नेस
चानकी भाको आद धाको [illegible] निलोनेक 15 खल्तनाकी फूल घर
राखि अहत [illegible] जन्मारी कुछली, [illegible] मेना काछेन्द ने चेक
भोजिक्त औजडी) धोडे [illegible] नाक्क यसला राखन 9, अनयाधन
कमनक पहाा नगा भोका हर 15 [illegible] भन्नारी नुकेनेन हग
पाँहर [illegible] मेह [illegible] फाहार [illegible] [illegible] [illegible]
नाहिन नबया भर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
धुवी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

छठी एक्सेल अधिक अनुसार पृथ्वीतल पर्वत सफेद भारी

कुण्डल तिलक विराज मुख सोमेना सैन्दु चिन्दु
सिमन्त चिह्न संख्या शेष रखे गये नाम कन्दु
इन्दु मटाने धर्मी नयन विमान।
कमल कलिका मही अधूंकर क्रमा।
देहाते कलाचिने भवस्य रक्षते
जिला मजिस्ट्रेट सुरेश मजमदारी
देही विमल विराज नमु नस पोसमन्वि हा
स्थाक भूमिहारा रेखि एई विकी आही यहार ।
के नवीन मोटल सर धन
कुर्सिन कहाके कर कोनेका
कन्दु कुण्ड पूर्वान्त भूमि गोल पत्थेय हा
कन्धक फलस ।से ।ी है मोन्धि मटल हाहार 6
मंहत प्रसाद पाण्डेय गया।

अपने [illegible]
स्थाना [illegible] मंत्री [illegible] मंत्रि [illegible]
[illegible] [illegible]
के [illegible] [illegible]
फोटोग्राफ [illegible]

देसलना से समाक चिट्ठि / २५ । मुंडपत्र।

[illegible] [illegible] [illegible]

कुण्डल तिलक भा विराज मुख सोमेना सैन्दु चिन्दु [illegible]
नली (नगरिकाक देह के ३.५ कुण्डल मंत्री चिन्दु चिन्दु
[illegible] तथा खाल मुख्य भा सम्बन्धित २) मुख्यालय [illegible]

नर्सिंह जेला फलन (मुख) पर दृढ़ प्रहरा दोसन हो। (३ आड़ गोंचि मंत्रि
कलविधी रमणीक टंगल्ल नं नगन जेला भो [illegible] जीनार
अड़ुनि हो १४ अंकर सुन्दर वेणीके फुलक सर धगेल अंचे से लगेड
जेला कृष्ण सारे खेणो के टेहि बाबदेव फुलक बाण छेड़के हाथि ६।
मन्दरी कमलाण चलौन अहि. अंकर कुर्सिन कटाके नोकदार बाण छिन
(६) अंकर कुण्ड शब्द सन्न ठैक हाँस कमलेक सर सन भो स्वन पुष्ट
नथ गोल से नवीड़ नेगा संलाक कलस रसर मारे सदन अपहरण के जमा
कलन हो [illegible] मोल [illegible] सन्त नवीड़ जेला संलाक कटोरा कमदेवक
अपहरमे इलाहाबाद राखल हो १४ सिलोपने कलेक्टरेन कर्मने छाँचे अपूर्व
मधुर सहरा सुशोभित नन्दन रंगे (कमक रखे) पे सहरे श्यामलाली
मकलतापूर्वक अभिनय करेन छाँचे जलेके
पुर्सिन कलाक रंग मदन मर धिक

[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

नखत झंकरा मेटाए शेष शिरह दिअस पुराए रहले कांछि दैवज्ञजनसं शास्त्र करक प्रहेरअसँ अह्न सिद्धयाक हंतु सखी पठि अछैन अछि। (3) हे कान्ह सुन्दरी राधाक की हाल होएतीह से सोचह। सखी लंके कलेक यत्न कए एखन घरि ओकरा जिअओले अछि। (4) बुद्धिहीन सखी सभ बूझे नहि रहलि अछि जे राधाके कान रोग छैक। रोग थिकै तेकर भ' ऊखार किछु आने कए रहलि अछि। (5) ककरो हाथमे पुष्पिक पात छैक त' ककरो हाथमे चानन। केओ कोलसे, कहैन छैक जल्द भरलाह। (6) केओ भमर झंकार सुनैत नांहि त' राधाक कान मूनि हैत भाखे केओ शीघ्रही बजाए झंझनाके दैबलैन भाखे। (7) केओ रहका कमल नाल ओकरा हृदय पर रखैन अछि त' केओ चन्द्र किरणके हाथसं देखाबैत अछि

[illegible]

न जानलें।

दिवंहिणी राधा विलाप करैत छथि [illegible] हम मरब। (8) देश आपन [illegible] हम समझतिह नहि

बल्लहु ओ नांनेहहुं तं सहजहु हुलका हम नहीं सहजहुं। (2) हमर हृदय बड़ दारुण अछि विधनसक जिबैत भेलहु घर फहैन नहि

[illegible] हे सखी जकि हमर पहु एक पहरो पर सूतल रहथि। जकि हमि एखोल ते कखन तेजि गेलाह। चकेबाक नीड़ा बिछुरि गेल 4 सून भेल हिआ सालैत अछि। (5) हम बिअक विधनसे प्राण त्यागि देब हे सखी लोकमे तेहनका करैत छिअहु हमरा लेल अपिकेर (चिंता) लगले देह। (6) विद्यापति कहैत छथि नोहर पिअतम अलोधन फेर मिलत हमरहु लेखिमा देवीक वर नागर रसिक सिवा राजा शिवसिंह सरोरूह भमर। नहि छथि।

[illegible]

हमर पिअतम [illegible] सखी राधाके अभिसार हेतु प्रेरित करैत अछि [illegible] पथ चलैत हम अहुनेसे आहु मोहर अभिसार देखक लेली एतेक [illegible] कहैत छथि जे सुन्दरी तों अपनहु विचारिके देखह। हम आँखि धसारि [illegible] अन्धकारके अभिसार हेतु भरोस नहि पहुंच पिअ तं नाह। चल चल

मुद्दा अन्वेषकरके शत्रु पीछे ने एति चिन्ह भेलखल होएत लई ने स्थानान्तिक
पीछे लकरा विमतिक खनई. समय कृष्णा एखी, ५७, चिमाउनि सहेन
टुई पय चढलि जिन्जिनि समझ नई कुसटक ३
फटाचलल अछिआलए पैरने था जर होंए
आज्यर मुह टर कन्दर फुंदरा नएल दई लंगे 4

१ अमाउनि २ लेनु। ३ लेई ४ नाम, ५ लाँई ६ फेफिलि रहु ७

अन्त

सखी कृष्णकें उपरान्त टैल छाषि — (१) ई कालह राधा ने लोग लग
जाएत ले कुलसर्यादा गजाओला। जे नहि आएले ने जीवनमे सन्देह दिन
दिन ओकर देह होए शेल गलेक आठे. जेना दिन अनुभे फलनिली, २)
ई कालह अछिई ने आकर सुधि लहि लेल छला औ बेचारी सुन्दरी होल
उपाए करल ने अपना पिनु दोसरि चिमरि देलह एला करले केवल
अहलकी रहि जाएत ३ एक [redacted] प्रेम मा दोसर दिस बढ गए
चिन्ताल एक सुन्दरी दू घर ना देले साहे आठे सबएमे पक्षिन
आँखि ने ओल थाट दिन लाए, ४) लेखदेल भाई बहुत ओलेन आ
पीछे (दोस्त पहिने [redacted] देल दिवस करले अछि आधारमे मुह कुलि
ओलेन आँखे चिन्ताए बेहेल आँखि मा लोग दोसेन आँखे

चिन्ताल आँखे [redacted] आँखेन केल सहेली
एक सहर एतए एतए [redacted] पुर [redacted]
करल [redacted] आँखे आँखेन ३ लेन रूप नुम दल्ले
मोहनदल लपे एतए आँखे आँखेन सहेली करले [redacted] 2
हल दा एकले अहिलए रहे दा अहिलए
अन्तर दा एक आ अहिलए ने लेन [redacted] 3
चिन्ताल अहिलए एखी सखीन लेन आँखे
अहिलेन दुइ अहि आकलल टैलहि लएले 4

को २ रंगोमण्डल परणण्डा

कवि आदिशंकरक स्तुतिसँ करैत छथि (३ हे देवी ! तोँ अम्बाकल्पा छह से ब्रह्मरूपा (विदेहिनी) होअह एक केस लोहर शोभा बढ़बैत अछि एक होइतहुँ तोँ अनेक छवि (रूप) धारण करैत छह १ २) लोहर ३ कारी रूप उहु छै काली कहबैत अछि उज्जर रूप छथी सरस्वती सूर्य रूप छथी ४ लालरूप गणा (3) तोँ ब्रह्मारूप धरमे ब्रह्माणी कहबैत छह महादेवक धरमे गौरी छ विष्णुक धरमे कमला (लक्ष्मी)। लोहर उत्पत्ति के कारण अछि ओ आदिशक्तिरूपा थिकह)। (4, एकर रचयिता थिकाह कविवर विश्वनाथ सौसिनि देवीक पति राजा देवसिंह गरुडनारायण यावक लाक्षालेक अनुरक्त शिकार

लोहर लोहरहु फल मारी मालेक रत
साजदि माजी अलोकी सदा सबसे लखये लहरी लाल
दिहि दुखहरे दियन घोरे
रत्न मालहु रंगित लोहर ने लखदे लहरी सदा लोल
दिहे ४ लोहर लगाल लोहरी लोहरी सुख लोल
टोकेकी लोहर भक्तजनहि हे जय कालहु ने लोहरे लालसि
जगतो लगाइ लगाल लोहरि
लोहर लालोहर भाइ लहरन रस लालहार
हमरा लोहरी लहरा लगाइ लोहरे दियन ४ लोहर ६
बाल ने लोहरि हमरा लोहरे ५
लोहरे लाल लालहार रस लालहे के घरा
दिहि दियनोहरे लगाइ ४ ४ ने रस लालहि लालोहर लालहे
लोहर लालहरा ने लालहे लगाल ४

१ लोहरे लोहरिहु २ लालहि ३ लोहर ४ ५ ६ लगा हरि।

उत्तर ४ २

राधा कृष्णक सन खेलि कलह करैत छथि १ हे कान्ह हम मुक्ता भा मार्तण्डक तुल्य फूल तोड़ए गेलए अछहुँ अछि। तोँ किएक हमर माजल सजाओल साजी छिनैत छह बाप रे एतेक भारी आतुरता अपेक्षे सांझ दिन देखार चोरि (२) हे कान्ह भालक धनक एतेक लोभ जे लोभ लोहे करए लगले शोभा (छानेष्टा) टिकैत छैक (२) बन बीच वृजमे एकलासमे भेट भेल ने मोर मुखलजा (मुह देखला पर लजाएब इहेलजना लोहे होइत छहु लोहर एहि कुकर्मकेँ हम छिपएबहु नहि देखए कए दैबहु हे कान्ह तखने अहिले जखन जतबामे नगर गेला पर लज्जित नहि होअए पड़ह ३ ४ हे सुन्दर मदन देखैत छह से राजा मदनक भण्डारक गढ़ला थिक एकर मारी (अग्रभाग)मे रत्न जड़ल अछि। एहि पर हाथ लहि टह साथ देल मन्त्रित भा जाएत। हमर स्वामी बड़ कठोर छोथ हुनका आगी सन भेल ५ ओ लेकजनहार कहैत छथि ये एहि लक्षेन भाइ रस लोहितक रत्न सेन छले मम लगाए देखल स्वामीक छिनलेह ६ कथा कामकला कहैत छथि

१ सोपचिहुँ। २ बिलमए।

दूती राधाके कृष्णसँ मिलन कहलक तहि पर राधा उत्तर दैत छथिन

(१) एहि प्रवासमे छथि हम तोहिदए लेअर छी तें नीं सलखिन काज करए कहबह कीए अकरा स्वामी रक्षक बलाए सेबह सेह यदि पावक (जरओनिहार अए आए कें अछ कोना बचाओब (२) हे सखि हमरा अधट नींह घटाबह अनुचित काज नहि करबह। एहिहदि हमर बिन हमरा देह पकड़िकें लोग हाथमे लेबेि सेबह (३) नखत जें हम कुलटा अए एतपुरुषसँ प्रेम करी तें एहन जीवनक कोन काज कामकेलिक सुख पाबए छन भरि भा लाज रहि आजन जीवन भरि ४ कुलकामिनी हम अपने पतिक संग विलास करी जनइ कुआर नइ अनकर चाही मनकी कें मधुकरक संग विलास करब अछि नहिसे नुकाए आजन (५) विद्यापति कहैत छथि कुलवध सबहा दधओलाह पर प्रवीन जेना दूतीक कहल एहन काज नहि करइ राजा शिवसिंह रूपनरायण लए लखिमादेवीक संग रहैत छथि

मधि ह मन भन्द नहीं
पर पुरुषन परि ह अन्य [illegible]
सासुन भाँचे भाँचे भादर देयर जेठइ अनइहै
अन्तन बिदुत कौरवन [illegible]
पंचस पसो लेन् दुशाकोच एसन करब सन्दह
लेकुआँ सुमर समान देन्हे सेहो सेहो एहो
न हमे कहुँ छोड़े बेहाएँ न हमे करब आने
अधिक न कहि पर सजे कहिब मने विचारक लाने ४
अन विद्यापति सुनह कुलेवे साटसे सपन करे
चुप शिवसिंह रस रसमय लोरमतिह लखने ५

१ मोहीं। २ मुखन करए ३ सकल

शुकलाभिसारेका राधा अपन पैछला सखीकें सुनबैत छथि (१) हे सखी आइ सेहा हो सेहा हम आहे कृष्णक लग सपने करब घरमे गुरुजनक कोनो डर नहि करब जिनक ने वचन देने छिअनि ताहिमे किछुदु नहि चूकब (२) अकासमे चानन लेपब गहनामे गजमुक्ताक हार पहिरब आँखिमे काजर नहि करब नहिसें आँखिमे धोन आमा अबि आएत (३ धौत वस्त्रमे देह झाँपि लेब भा (मसलीमे मन्द मन्द गमन करब भलहि हजार हजार चान सगर अकासमे रहि जाओ ४ ने हम केओ नजरि करब ने अओद करब अकरा देखबाक छोड़ल से देखओ)। अनकासं अधिक चोरि नाहे करा हाइ विद्यक उत्तम प्रेम करबाक रहस्य (५) विद्यापति कहैत छथि हे युवती मूल काज साहसेसें सकल होइत अछि। एकर रस सलखिनार छथि सोभ देवीक संग रसिक शिवसिंह

राजा अइरावत सिंह विजयइ
पुरुष केसरि जनि रूप अनोपम लखी दुरदुरे रा अंसिलाइ ॥१
सिंहासि पूरब देहा न पूरा चार देह पाओल सिंहल सुगाए
अपर अपूरी देख देखिअ लोगे पुन पा जोग भेल [illegible]
सोनाह कोसल अरज की अछथ सोन देओ पेरू कहबु तोय
सुमन सरेह धन सजल पोख जनि पाबए पाबओ [illegible]
अमर विद्यापति सुन रस गाबए हे रस के सो करबे आने
रूपनरायण अमरायन लखिमादेवी रमाने ४

१ विसरु २ सजन ३ विसल ४ लखनीक

चित्त समझ कामनि रमिके घरनि सपने सखी पुछैत अछि
हे सुन्दरी लगैत अछि नीं छिअनिक थिरस करए (चित्त समझ कएलाह) घुरि अएलाह अछि। पुरुष सिंह-सन (बलवान) सोहन अछि आ लगी

दमलत्ता सत्त दुर्वल। ते पै नँ पुरुषक स्तर हेतुनहि धौंज मन गड़न अछि (तों न नेहलि नांहि लखौ छह ।2। एकहुदै तरल देह शोभा शृंगारसँ युक्त छहु। स्तन पर चान सन रेखा (लेखक्षान नांहि छहु देखक सुगन्धि लेप घामस दहगल लहि छहु माथोक फूल सन अधर जेहने छलहु तेहने देखैत छेलहु (पुम्बनमें मांचेल करों अलहु, सोझेसँ लजायल पुष्पराज पालने रहल । की गाइत देरी नं अछल उठ डसलक की सगमक अवसरे नांहि भेलहु की काजक रीति नांहि बुझल तखने अकि धन चोरबा गेलह एतक लोक लोकेर गल पर धोर कहल, परन्तु गेलहु (4) विद्यापति कहैत छथि हे सुन्दरी सुनह हे रस केओ कथा जनैत अछि हे जनैत छथि लोकेमादेवाक पांचे (ना पैतालिस रूपनारायण।

सखे भाषन अहि पेमा सखु पास [illegible]
न होइछ सजुन न पेखु [illegible]
[illegible]
[illegible]

सखु पिआ पासे 2 [illegible] 4 [illegible]
पुरतोहे मने

राधा सखीके [illegible] सुतैत [illegible] हे
सखी आइ हमर पिआ [illegible] सेज [illegible] हे कहलनि
उल्लास भेल से [illegible] हे अलहु परुख [illegible] हे
मुदा लागल जेना [illegible] काए [illegible] हे हमर
सखुनि नयन [illegible] भए गेल जेहो चन्दोदए भेलाए सखुनि
हिअकोर अनचि भेल हे 4 भो अनिरुद्ध करए [illegible] हे हम [illegible]

उठलहुँ (सखि गेलहुँ भा सेज सून देखेकें लजाए गेलहुँ (1) विद्यापति कहैत छथि स्वामिक कण्ठ सुनह सपनामे अनेक जे देखलह से सभटा कामदेव पुराए (साकार का देखल

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कवि विद्यापति उपरोक्त पदमे कहैत छथि (1) शिव विकट जटा बान्हने छथि, तखनहु चन्द्रमाक लेप अछि। (2) बएस कतेक हजार वर्ष बीति गेलनि। तथापि शिव तेहो प्रसन्न (प्रकृतिस्थ) नहि भेलाह (3) माथक सरस नवगोरे अछि माथ प्रकृति छोड़ि नहि पबैत छथि (4) कवि विद्यापति हे भो। रहल राजा शिवसिंह नीचू

[illegible] (1)
[illegible] [illegible] [illegible] [

जब जब इन्दुमति मौला अवाली चरि वेदे अवनद बखानें ।
हरि हर ब्रह्म पुरुहन सबै एकमों न जान दुई कहि सपने
अलख निरंजनि राए मुकुरमनि जिवधो लपनवरत जपति छवाने ।

कवि अवाचीक स्तुति दर्शन दुर्गा — ने अवाली मौला अवाली
अलिफ अय हो जे ब्रह्मांडीक सबसे चरि वेदक हरा अवनाद लेन ।२
ब्रह्मा पेछ्यु अर सबेका नीलु देवक अकरा लक्खासं जिज्ञासा कर्दन बौखाइन
रहनाद किन्नु नीलमे एके अवेदा अलीफ अर्थे वेन्द नहि अहि सकलाह ।
३। विसादनि कहेन छवी राजा सबसे मुकुटमणि राजा शिरोमणि
सबसायणक अहिती कविलाटेही जीवयु

हि अलिलम गवाक एन छिवदन

कवि [illegible] अ [illegible]
नवे [illegible] से बुने रखन से बोलेक २।
अदन [illegible]
[illegible]
[illegible]

कवि अवाचीक स्तुति दर्शन दुर्गा — ने अवाली मौला अवाली
अलिफ अय हो जे ब्रह्मांडीक सबसे चरि वेदक हरा अवनाद लेन ।२
ब्रह्मा पेछ्यु अर सबेका नीलु देवक अकरा लक्खासं जिज्ञासा कर्दन बौखाइन
रहनाद किन्नु नीलमे एके अवेदा अलीफ अर्थे वेन्द नहि अहि सकलाह ।
३। विसादनि कहेन छवी राजा सबसे मुकुटमणि राजा शिरोमणि
सबसायणक अहिती कविलाटेही जीवयु

कवि [illegible] अ [illegible]
नवे [illegible] से बुने रखन से बोलेक २।
अदन [illegible]
[illegible]
[illegible]

कवि गए अलिक नाज सबसे चैव छिक समस्त अवली पद लिखे चैव
अहि जोड़न छैक 14 अं जे ज ट सबसे हरा से अछेद अवहूँ (हेअं
अं एको नहि अनि अव अलहि नह नवसे सब बन अवन अवं
बुझाह 5 विश्वासने कहेन छवी समय न लोकि सकाह विवा।
पुरुवाने पुरुष बलाने रमणीक पुन पास करेन अवे

फेरलान ब्रदर्स सप्लाइ हाउस, ४ घोराह कुल्लल न सैक्टर ९, ४

१ जुलाई २०२१

प्रिय पेस्टी रेन्ज पिल लेहि और हुड्डी पुरुष नेक टाउनहाउस,

फेन परे साथेक लाउंज मिलाइसे मार्टल दरहरू दिने ,

जल सधै कक्षले गरेका सधै मेरा ल्याई कुकुर यस दुई ४ गरेन गरना सेवा फिक्सर मुद्रा एक सब यस १४ जन दुई ,

अनुरु विद्यालयि विभाग मन्त्र कुने खाले कम्पनल काम्ह ६ ।

१ फरवान २ हैसे ३ विश्वके नुवाने मुख ४ राखा

फेरला समन करेने हुरेथे। सर्वो हुनुक मलौन ल्याने ११ रोप देख घर मुद्द रखने भरेथे नरिहरू भए बरन गाइल पेक न क्रम सम्बन्धेन भरिने ने गैर ल भोर मन लरेन रहे। भरेथे। चिना चिस्र नरि रहेन पेक ,मेरा हौसाइल रहेन पेक, एउक पेमक स्थला कन कन भरेकर हुन्न मरए लाहेन पेक , ने रुकर ले कहेक हुँ पनि ला मेरन समाने रनवर 14 फ्रान्स आलाबले हेन रुपये नरे भरेथे, घरन म पुरुषुक्त होला हुन्न हुरो भरिने ६१ मेरो भरिमाइल मा रे फेरि भा भरेन लेगेस्टन पर लाभ लरेने भरिने ले हुन्न ६ पेक टुन्नले मरेन मारा सरेन १३ , रेनरुरा १९१ भला भरी रहेने मेरा। ६ न चिहरुस दरे

१४ चिहरुस दरे

मरिने ल पेन्ट्रे ले मेरा भरिने ले हुन्न ६ पेक टुन्नले

हुन्ने पुरुषुक्त पेक्ने म भरिने भरिने ले हुन्न ६ पेक टुन्नले

६ न चिहरुस दरे

मरिने ल पेन्ट्रे ले मेरा भरिने ले हुन्न ६ पेक टुन्नले

हुन्ने पुरुषुक्त पेक्ने म भरिने भरिने ले हुन्न ६ पेक टुन्नले

६ न चिहरुस दरे

कृष्ण विदेश जएबा पर छथि राधा सखिका राधाक अवस्था सखीसं कहैत छथि (, हे सखी हमर पिआ विदेश भाखापर छथि। हम कुलकामिनी आर दुनका किछु कहइतमि से उचित नहि होएत (ने तोरहि बजाए अनलिअनु अछि तेँही हुनका उचित विचार कहुन। 2) गुरुजनक ई अनुमान नहि कए सकलाह जे हमरा कलंक होएत। से तेँही पिआ लग जाए कहुन मए (3) जे लोहा भाखनाह ने सकु किछु दिन रहबु परदेसहिमे हम एवं जनममे जे कएले छी तकर फल भोगब परन्तु लोकमे ने उपहास (निन्दा) हो तोहिं सहिनें बचबाक उपाय करबु 4) विदेश भएनाह तँ जो बधभागी होएनाह अछनाहि जे विदेश जएबाक विषय करनाह लखनाहि हम अधिन कुलबधू धर्मसे पाणत्याग करब। 5 कवि विद्यापति एहन रमणीक चित्रांक

(5) भाषागीतसंग्रहक गीत

एक दिन अएलो माइ हम छल भाग कलंत परि चिरंजीवि राख पए
एहे दूसह दुख छोड़ि लागि हुनक पिअ चिंतु पहुक अगर गुन भेला 2
कुचिल समाज हृदय मोर राख पिअ चेतनक चिहरि लाहे गाइ ।
कत दिन अगे सखि छोड़ि होएब मरण रखबि जाने लुकाओब चन्दा 4
हारे हरि अनाएब हम छल साथे जानल विधिवस नहि होअ बाधे 5
अनइ विद्यापति ने करह दुखा थिर नहि रहा दिअस अगे मरदा 6

१ चिट्ठी

राधा सखीसं चिट्ठीक्षथा मतबैत छथि 1 हे सखी एतेक दिन हमरा लगैत छल जे चिट्ठिएबी पाए कोना रखने रहैत अछि 2 विधाता सेह असह दुख हमरा देलनि जिबाक कोन हमर उपाय अछि कहि मोर ,3) हाय हमरे निर्दय बड़ाइक अछि जे पिअक विछोह भेलहु पर कहि नहि जाइ मोर 4 कहि नहि एहे कलंक दिन दिहि धाम रहत अनेक दिन मोर जानकि कुपने रहत 5 हाय हाय हमरा मनक ने मनोरथ पल आगे पूरल जे विद्यापति कवि कहे मोरा रहि रहल मोर 6 विद्यापति कहैत छथि पिअक लाइ मन हि हीरा मोर अछनाहि हीरा मोर अछि

अंतरिक्ष विज्ञान दूलम

दिनांक ५ **फ़रवरी** ७ **१९८३**

फ़ाइल ६ **पन्ने** ४

फ़ाइल संख्या ४ **में** ३ **में से**

सक्षम ५ **अधिकारी** ६ **कुसुमकली** ७ **भर्ना**

अनंत ४ **किले** ५ **में** ६ **कमांडर** ७ **नवलगढ़ि** ८ **पर्वत** ९

सहकोष ४ **अनंत** ५ **सेक्टर** ६ **का** ७ **लेखापरीक्षण** ८ **अधिकारी** ९

सर ४ **सुरक्षित** ५ **रखें** ६ **और** ७ **किसी** ८ **को** ९ **भी** १० **न** ११ **बताएं** १२ ।

विशेषरूप ४ **से** ५ **अपने** ६ **सहयोगी** ७ **कर्नल** ८ **दीपांकर** ९ **सेनगुप्ता** १० **पर** ११ **भी** १२ **नज़र** १३ **रखें** १४ ।

दीर्घसेवा ४ **का** ५ **लाभ** ६ **हासिल** ७ **करने** ८ **के** ९ **लिए** १० **उन्हें** ११ **कम** १२ **से** १३ **कम** १४ **१५** १५ **वर्ष** १६ **की** १७ **सेवा** १८ **करनी** १९ **होगी** २० ।

१ **गाजियाबाद** ३ **हेडक्वार्टर** ४ **फ़ाइल** ५ **संख्या** ६ **१९८३** ७ **सोमवार** ८ **३५** ९ **पन्ने**

कोई ४ **अधिकारी** ५ **अपने** ६ **[illegible]** ७ **से** ८ **[illegible]** ९ **सेवा** १० **में** ११ **[illegible]** १२ **मांगने** १३ **पर** १४ **[illegible]** १५ **अपने** १६ **[illegible]** १७ **को** १८ **[illegible]** १९ **देने** २० **के** २१ **लिए** २२ **बाध्य** २३ **नहीं** २४ **होगा** २५ । **[illegible]** ४ **[illegible]** ५ **[illegible]** ६ **[illegible]** ७ **[illegible]** ८ **[illegible]** ९ **[illegible]** १० **[illegible]** ११ **[illegible]** १२ **[illegible]** १३ **[illegible]** १४ **[illegible]** १५ **[illegible]** १६ **[illegible]** १७ **[illegible]** १८ **[illegible]** १९ **[illegible]** २० **[illegible]** २१ **[illegible]** २२ **[illegible]** २३ **[illegible]**

१ प्रश्नोत्तर :

प्रत्येक अंधेरनगरी पथिक हाथी सुरक्षित कर्मन कुमारी १
है पथिक हाथ पहुँचे पुलाएँ वकपाली ने हम अंधेरे दिन धरि जाएँके
एवं अंधेरी टङ्कशाले रखव २ फामदय कुपीन छोड़ी यसन्त से भाँडि
मेल मलजीवन्ह छहिन भाँके समय दुखद अर मेल ३। हम शुद्ध
स्वामाचक नाँक भाँडि नहिं पक्षीलई ने प्रेम मवाक्य पक्षिजाम की होएन
बुझैत रहलहुँ अ पेक्षा अहमे छोड़ी ४ चिरकल्पनाने राखे अपिके
चिनयैन की हमर हल्काने ने प्रेम भेल से नहीं परमाय मेल की ५
विद्यार्थी हरेन छोड़ी है सुदरी सुनह पूर्णपुष्पक दने मुरारि आदि
विनयुन

१ न

प्रेषित लिखल मोहे दहल हाए पेन ३१३
भाषा मन्त्रीय हम कुल ज्ञान हरिश्चन्द्र सुख हाय
मन्त्रने अधिक जल हम मोहि
अपूर्व अपरि निहारे लक्ष्मण / विश्वविद्य सम्बोधन आदि २
कपट्रक डाक्टर हाए अन्तरी अंश पड़ा कैन्न गाय
अहमेक हाथी मोर पेन्न हाथ हाथ
हाथी मुख मेरा लक्ष्मण मोहि हाथ हाथ
४ अपूर्व अंधेरी विद्या हाथ भाषा
देश की [illegible] ५ [illegible]
कैन्द्र अन्तरी अंश ६

१ अक्षरस २ विद्यार्थी

न [illegible] अपूर्व अंधेरी सुन्दरी ३१३ हाए
हाथे नहिं मेरा कैन्द्र अपूर्व साधन विश्वास पर अहमेल गया मोहि
लक्ष्मण विश्वके देखल हाथ नहिं विश्वास अपूर्व के मोहि मन
हाथ ३ ४ मोहि अपूर्व हाथ की होएन अंधेरी मन
अपूर्व रामपुरी अलग [illegible] हाथ ३१३ ने अंधेरी

अध्याय पन्द्रह जिम्मेदारी वाला

क) सही जवाबों पर गोले लगाइए। प्रत्येक के 2 अंक हैं।

1. देवनगर में 3 नवम्बर 4 घण्टा 5 खाली खबरी पत्र

सही कथनों के सामने चिह्न लगाइए। प्रत्येक सही उत्तर पर 2 अंक दीजिए। (1) गंगा नदी भारत की दूसरी लम्बी नदी है। (2) हिमालय पर्वत में बर्फ़ नहीं होती। (3) पानी का सूत्र H₂O है। (4) पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। (5) लोहा पानी में तैरता है।

ख) रिक्त स्थान भरिए। प्रत्येक के 1 अंक है।

सूर्य पूरब में ____ और पश्चिम में ____ अस्त होता है। पानी का रासायनिक सूत्र ____ है। भारत की राजधानी ____ है। एक सप्ताह में ____ दिन होते हैं। पृथ्वी का एक ____ है।

ग) सही जोड़े मिलाइए। प्रत्येक के 1 अंक है।

स्तंभ क	स्तंभ ख
1. सूर्य	(क) तरल
2. पानी	(ख) तारा
3. लोहा	(ग) ठोस
4. हवा	(घ) गैस

घ) एक वाक्य में उत्तर दीजिए। प्रत्येक के 2 अंक हैं।

1. पृथ्वी सूर्य के चारों ओर एक चक्कर कितने दिनों में पूरा करती है?
2. पानी को उबालने पर वह किस रूप में बदल जाता है?
3. हमारे देश की राजधानी का नाम क्या है?
4. सप्ताह में कितने दिन होते हैं?
5. पृथ्वी का एक ही भाग हमेशा सूर्य की ओर क्यों नहीं रहता?

ङ) निबन्धात्मक प्रश्न। 10 अंक।

विषय: मेरा प्रिय खेल

मेरा प्रिय खेल ____ है। मैं इसे ____ साल की उम्र में खेलने लगा था। मैं ____ में खेलता हूँ। इस खेल में ____ खिलाड़ी होते हैं। मैं ____ स्थान पर खेलता हूँ। मेरे प्रिय खिलाड़ी ____ हैं। मैं सप्ताह में ____ दिन अभ्यास करता हूँ। इस खेल से हमें ____ सीख मिलती है। मैं चाहता हूँ कि ____।

च) अनुच्छेद लेखन। 15 अंक।

विषय: मेरा प्रिय त्योहार

संकेत बिंदु: त्योहार का नाम, कब मनाया जाता है, कैसे मनाते हैं, विशेष पकवान, परिवार का साथ, अपना अनुभव, त्योहार का महत्व।

छ) पत्र लेखन। 15 अंक।

विषय: अपने मित्र को पत्र लिखिए जिसमें अपने नए विद्यालय के बारे में बताइए।

संकेत बिंदु: अभिवादन, विद्यालय का नाम, कक्षा, शिक्षक, मित्र, खेल का मैदान, पुस्तकालय, अपनी भावना, समापन।

ज) शब्दार्थ। 5 अंक।

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए।

1. अध्याय
2. विद्यालय
3. पुस्तकालय
4. अनुच्छेद
5. निबन्ध

राधा सकेतस्थलमे नहि अबैयाक अनहत कयलाक हेतु छथि
घन मेह बनाधार बरिसबैत तथा झुकल राति घन अन्धकार। 2) एहन
टिकन समयहुमे हम लीले सकल चौर पहिरि अलक अनुमानहिमे पावर
रोपैत ३ बहुत साहस कए अवसर पाबि सकेतस्थलमे पहुँचि गेलहुँ
किन्तु सकेतस्थल शून्य छल तों नहि आएल। 4 लोग की कहलक
हमरो बकलेस जे छैलक बजनके सत्य बुझल। (5 जखन अवसर दिखित
भेल अपन आप कहिके की होएत अपन परिश्रम तों अपनहि देखह 5
किछु किछु लाथ कहि कहि हमरा अनेर परतारित छह। तोहर भाइ हृदय
सभ बालक साक्षी छह ,7 विद्यापति नहि कालक हिसाबे कहैत छथि
जकर लिखार कए सकी तकरे हो भेला देखक चाही

५.४

हेरि हेरि आपुन घरक भाग कत देल पीन पयोधर दरसन
हसए सखा हम पुछिअह तोही। कितुके परसल बेकत कि नाही ।
लागु दुसक सिख भनि थोर हासी कि कहे सकसि परिहास ।
पुरल कि नहि मन मनसिज आस कहसि बेकत कित बेकत ४

हरि हरि ८ मधुर घातक

विरहिणी राधा कृष्णके सखी द्वारा सन्देश पठबैत कहैत
छथि अहुरिया बतहि मन भाव नहि बैसए, साँझे नहि अँखिमे नीन
कतेक दिन दुखासन रहत ,2 हे सखी की हमर सपथ दए हमरा
पुरुषाहुक हे जिबैत हमरा हृदय होएत कि नहि ,3 हमरा ने दए
दिनहा छोड़ अहि दिन बद दिखित हेत आहे भाइ हे विलेप मा
कपूर चाही से हृदय होएत कि नहि हमरा भाइ मा रोल ४
हृदयक मनोरथ पूरत कि नहि पुनः राहे सखीसँ पहल पाए कहल
दिनाह खेल पहल भोरे झूला भरू छल पुरुष छल भोरहर मा
सहल भेल

५.५

दूहि रहिअ करिअ मन भाते अपन नरासन हरल न भाते
हृदय हरएल हारेलूख हेरि मुदेहल लोचे सपन देखे देलों 2
कि कहब कहह धाय कत मोहे कहिअ भाल अजो आहुरि हिये 3
गापहि न पारल हृदय कुलरमे मुन्दलाहु बदन बेकत होअ हास 14
अनह पिबाधनि तोर नहि होसे भूखल मदन अगाहा रोस 5

राधा मुख पेअक कारणे अपन असमञ्जस स्थितिने सखीके कहैत
छथि ,1) हे सखी कालक्रमे हटने रहैत छी मनके भाव दिस नहि जए
चाहैत छी किन्तु दुखेल लेल दिनासन नयन बजेल नहि मानैत अछि
,2 कालक्रमे मुह देखितहि हृदय दग्ध भाइछ ४ कसिनेर बलनो पीरके
कसनी पीरि पीरि मसरि बहुत अछि ,3 हे सखी की कहिअहु। एहि
पेअके कतेक विलाप भाल कए बैसितहुँ तें विषाओन होइत मुदा पियर
छी सेहो कालक्रमे नहि होइत अछि ४ हारिक उलासमे विष भाल नहि
होइत आछे। प्रेमजन्य पसन्नताक देखी मुखनो मुह पर आबि जाइत
अछि ५) विद्यापति कहैत छथि हे राधा नहर दोख तोहे मुखल
काजरे अनल उगलए। हिर सन पेअ रहैत छथि

सखी कृष्णके राधाक विरहदशा सुनैत छथि [illegible] हे कान्ह, हम राधाक देखल नै विसरि दैत्यहक प्रेमपरी सहजहि उड़ि भागै अलक बात जकरा कहत [illegible], ओ तोहर दर्शनक आशामे तेहनि पर पैसबे बाट नजैत रहैत अछि [illegible] तरहत्थी पर मुहो राखल कपोल आ चिन्तामग्न रहैत अछि [illegible], धरती पर हाथ रोपि अहां कोनटा उठा चाहैत अछि कि मुरुछित ठामहि खसि पड़ैत अछि। तेकरो पलक सहारलेने आकाशे राधा तोरे नामक स्मरण करैत रहैत अछि। (४) पिआसें बिकुरांने आ अभिमानसँ कोन उपाय करतह एक तँ विरहक सन्तापसँ जरि रहलि अछि दोसर गहू पर कामदेव दारुण प्रहार करैत छथिन

१४

थुकि हल माधव तुअ अनुरागे। ओकर लागि पहि अब भागे
अपनि भासलि तहि बुझह आन। दरपन हाथमे होएत समान ।
बहि हरि करहि न दूसह अन्त। पलटह अब [illegible] कन्त
बहुत दुखन तहि समय सोभाग। सपनहु भागल निसाँस लाग ।
अलह विद्यापति मन धर नाहि। कहसि पेम दुइ भागे नाहि

अपनो भासलि न बुझह

राधा कृष्णके प्रेमक दैन छथि [illegible] हे माधव हम तोरे लागि अपन तोहर प्रेम केहन छह, अपरूपसँ तोरे पर मनके [illegible] भावना बेसाहलाक अपन अलक्ष्य कान [illegible] तोरे बुझैत छह तोरे लागि अपन [illegible] सँ अमूल्य मन छह किन्तु हमरा पाछाँ मन [illegible] परिणाम की होएत से नहि जनैत छह [illegible] सकलह प्रेम विछाहि नहि सकलह [illegible] समाजक लाजमान शिक अमर मानवीक मन [illegible] रचाँगे दैत अछि [illegible] पेखाएने अछि ने सुनि [illegible] प्रेम दुइ भागमे हिअ फेरबह [illegible],

[illegible]

तोहर नव नवइनें सरसे उपजि मेनु पनपाबनें गेल दिठिआइ
लोहे मनिअक हसे मुसाएबि निधि हानु आगे मोर कानहुँ पड़ाइ
हाकनि दिशि दिशि पाखुरि छाहे झैलल से अखिले दिगन्तर आइ
लाखक लाखि लोरी लोहे लाखए सोनो सहे लेखि लखाइ ?
आहु हे साहुट सखे लखि लाखो नहीं थिस उमत लखाइ 3
पापर पोथुल खसे दूध पिपिल फलि हर लागलि लगु होरो
सखे सयतहु करतल बजाबए सघुर हासे हेरा लोरी 4
सासुनि सखर बदन दगारल आंचर खसल शिरमाहि
टोके टिपोअलि आंगो कुच चढ़ाल आओ कि कहब उपहासे ,
लोरो सखी किनि देख मोर घोरो नयन आंजल मन मोरे
एक हाथे लखलखल दोसर दोसर पिअल गहना गोरे 6
अलह विद्यापति सुनह मन्दोदरि ओ पर सहजक मोर
लोरो लोहन रस देखु मनसा पर पुनु मनोरथ तोर ४

[illegible] [illegible] [illegible] महादेव पालजि यदि [illegible] अपन [illegible] [illegible] [illegible]

थिक आ स्थिर लाहे रहैत अछि, अनुचित करबह तँ चारिक पलना छिआए अनलहु। ४ विद्यापति ई रचल रूपक रस लेलैन जँघे लखिमादेवीक पति शिवसिंह।

५२

चामुर मरदन लीहे वनमालि पेखोलि कुसुम कोमल हसे रति ।
लिखिते न करिअ अधर मधुपान भमरु देखल लाइ दिअ चित्तान ।
दासि होएब मने लिखि लेह नाम, अथल बलि टए न पुरिअ काम ।
मुरारह चिबुक धरी धरे गेल हरष कलहक करहे हरि लेल ४।
चुअयते नयन सिरिजन भेल कुलबती लाजे छोरिअन आए गेल ५
कहल न मानह देव चेरोंथ एह छाने न पुरल चिअ अनुरोध ६

राधा कृष्णक चित्तर कामाचारक वर्णन करैत उपरि ( ) हे काल्हु तँ बाहुर पहलमानले हरणोदेहर मलहनो डह आ हम सिनेमाक फूल सन नलुक अबला छी २ हमर अधर मधु लेना लाहे पंडह से सब रस लिशेष भए आए भगलो चिक्कन लेल हमरा छाए दान देह (हमर कैथर देह। ५ हमरा पातहान देखह तँ हमे लोक दासी भए रहब धरैखलमे हमर नाम लिखि लेह ३ पोखरि कलौं अनेक पुरैन चिक से साँपि लो हमरा बाजेबाजु लाहे धनखइह हम अबला अबो चिन्हु हमर चलि देलो लोक अनेरा पेरे पुनह लेखा तँ चलि देखब नह ४ छोड़ल अछि ५, जइ पुरैन ४० चलि हमर पहलहन पोखरी रहैछ लोक आनि लाहे के बालक कारी हमा मोलए देखक ६। सुरसा लैन लैन अछिके कोबर भेटला गेल आ दुनू रसल लखिमादेवी पोखरा गेल ७ ए हमार विधाने काम लखि तँ तो कमल पाबेला लाहे सुनैत छह पैखन लोक लाभ देखैत छह भमरु हमरे देखला लाहे पुरैन ८

नूपुर रुनु झरि झरि लिलहट ८ सांझई अलत भालल धांते कत रोअई ।१
फूलल चिकुर मलारि भरे पलही अलि कलकचल चामर ढरई ८
बेरा एक मध कलह बोरे रांहे लिलहई अओ तुअ हृदय नयन भरि सिचई, ३
कत परभोधिअ लहि लिअई जन लोहे समुद्दल कहांके न गाई 4
भनई कवेक काठ कठिन तुअ हृदया धाने लाहे रतनेसि लोहरि अब लिहया 5
भनई विद्यापति ई रस जाने सिवसिंह लखिमा देइ रमाने 6

फुलमनी। २ भनई ५ नृप सिवसिंह

सखी राधाक चित्तहरण कृष्णक सलचैत छोरि ( ) लोहर घाट लाहे राधा तीनमें सुलैत लाहे भांते मूही मुखमोने कलैत रहैत भांते ८। फूलल केशरांशि अलिरि अलिरि आबी पर डिन रहैत चैक जैन सहजक पहैन पर चालर लोलमोन लाहुन हो ( ) हे आबे भाव लोहर राधा रहला भोरे लखले आदि सकल हे लोहर रूप अगर भांशि भोरे आक पौधर ४। सजनी बुझलैन सुझलैन लिखाक हमर बात लाहे पाँतिकहु भांते अओ कोनेक समाहे कहो पलाशबहु आँहि लखेक दोहल लाहे हो ( ) हे कलह लोहर हृदय कठिन कलोर बहु राधा लोमे लगाइ (लखक भांते पिलु से बोल लिहेब लाह पाबब ।

ਸੰਖੇਪ ਸਮਾਚਾਰ ਦਰਜ ਹੋਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਵੀ ਕਿਸੇ ਵਿਅਕਤੀ ਦੀ ਮੌਤ ਦੀ ਖ਼ਬਰ ਮਿਲਣ ਉੱਤੇ ਉਸ ਦੀ ਮੌਤ ਦੀ ਸੂਚਨਾ ਦੇਣ ਵਾਲੇ ਵਿਅਕਤੀ ਦੇ ਬਿਆਨ ਦੇ ਆਧਾਰ ਉੱਤੇ ਉਸ ਦੀ ਮੌਤ ਦੀ ਸੂਚਨਾ ਦੇ ਹਾਸ਼ੀਏ ਉੱਤੇ ਦਰਜ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ ਅਤੇ ਉਸ ਦੇ ਨਾਮ ਦੇ ਅੱਗੇ ਲਾਲ ਸਿਆਹੀ ਨਾਲ ਕਰਾਸ ਦਾ ਨਿਸ਼ਾਨ ਲਾਇਆ ਜਾਵੇਗਾ।

ਨੋਟ : ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਦਰਜ ਕੀਤੀ ਗਈ ਮੌਤ ਦੀ ਸੂਚਨਾ ਦੇ ਆਧਾਰ ਉੱਤੇ ਮ੍ਰਿਤਕ ਦੇ ਨਾਮ ਦੀ ਪ੍ਰਵਿਸ਼ਟੀ ਮੌਤ ਦੇ ਰਜਿਸਟਰ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ।

ਨਿਯਮ ੨ ਸਮਝੌਤਾ

ਜੇਕਰ ਮੌਤ ਦੀ ਸੂਚਨਾ ਦੇਣ ਵਾਲਾ ਵਿਅਕਤੀ ਅਤੇ ਮ੍ਰਿਤਕ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਦੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਵਿਚਕਾਰ ਕੋਈ ਸਮਝੌਤਾ ਹੋਇਆ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਉਸ ਦੀ ਇਕ ਕਾਪੀ ਰਜਿਸਟਰ ਨਾਲ ਨੱਥੀ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ।

ਨਿਯਮ ੩ ਸਜ਼ਾ

ਕੋਈ ਵਿਅਕਤੀ ਜੋ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਦਰਜ ਕੀਤੀ ਗਈ ਮੌਤ ਦੀ ਸੂਚਨਾ ਦੇਣ ਵਾਲਾ ਹੋਵੇ, ਜੇਕਰ ਉਹ ਜਾਣ-ਬੁੱਝ ਕੇ ਝੂਠੀ ਸੂਚਨਾ ਦੇਵੇ ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਇਕ ਹਜ਼ਾਰ ਰੁਪਏ ਤੱਕ ਦੇ ਜੁਰਮਾਨੇ ਦੀ ਸਜ਼ਾ ਦਿੱਤੀ ਜਾ ਸਕੇਗੀ।

ਨਿਯਮ ੪ ਅਪੀਲ

ਇਸ ਅਧੀਨ ਕੀਤੇ ਗਏ ਫ਼ੈਸਲੇ ਵਿਰੁੱਧ ਅਪੀਲ ਸੁਣਨ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਸਿਰਫ਼ ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਨੂੰ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੫ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੬ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੭ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੮ ਪੁਰਾਣੇ ਰਜਿਸਟਰ

ਜਿਹੜੇ ਮਾਮਲੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦੇ ਲਾਗੂ ਹੋਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਦਰਜ ਕੀਤੇ ਗਏ ਸਨ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸੂਚਨਾ ਵੀ ਇਸ ਰਜਿਸਟਰ ਵਿਚ ਦਰਜ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਇਸ ਲਈ ਪੁਰਾਣੇ ਰਜਿਸਟਰਾਂ ਦੀ ਪੜਤਾਲ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਅਧਿਕਾਰੀ ਨੂੰ ਇਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਰਿਪੋਰਟ ਦੇਣੀ ਹੋਵੇਗੀ ਕਿ ਕਿਹੜੇ ਮਾਮਲੇ ਦਰਜ ਕੀਤੇ ਜਾਣੇ ਹਨ ਅਤੇ ਕਿਹੜੇ ਨਹੀਂ।

ਨਿਯਮ ੯ ਫ਼ੀਸ

ਇਸ ਰਜਿਸਟਰ ਵਿਚ ਕੋਈ ਵੀ ਐਂਟਰੀ ਕਰਨ ਲਈ ਕੋਈ ਫ਼ੀਸ ਨਹੀਂ ਲਈ ਜਾਵੇਗੀ।

ਨਿਯਮ ੧੦ ਰਜਿਸਟਰ ਦੀ ਸਾਂਭ-ਸੰਭਾਲ

ਰਜਿਸਟਰ ਦੀ ਸਾਂਭ-ਸੰਭਾਲ ਦੀ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਸਬ-ਰਜਿਸਟਰਾਰ ਦੀ ਹੋਵੇਗੀ। ਉਹ ਇਸ ਨੂੰ ਅੱਗ, ਸਿੱਲ੍ਹ ਅਤੇ ਚੂਹਿਆਂ ਤੋਂ ਬਚਾਉਣ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਰੇਗਾ। ਰਜਿਸਟਰ ਦੀ ਕੋਈ ਵੀ ਨਕਲ ਬਿਨਾਂ ਮਨਜ਼ੂਰੀ ਦੇ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤੀ ਜਾਵੇਗੀ।

ਨਿਯਮ ੧੧ ਨਿਰੀਖਣ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਜਾਂ ਉਸ ਵੱਲੋਂ ਅਧਿਕਾਰਤ ਕੋਈ ਵੀ ਅਫ਼ਸਰ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਰਜਿਸਟਰ ਦਾ ਨਿਰੀਖਣ ਕਰ ਸਕੇਗਾ ਅਤੇ ਲੋੜ ਪੈਣ ਉੱਤੇ ਇਸ ਵਿਚ ਦਰਜ ਕੀਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਐਂਟਰੀਆਂ ਦੀ ਤਸਦੀਕ ਕਰ ਸਕੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੧੨ ਸਜ਼ਾ

ਕੋਈ ਵਿਅਕਤੀ ਜੋ ਜਾਣ-ਬੁੱਝ ਕੇ ਰਜਿਸਟਰ ਵਿਚ ਝੂਠੀ ਐਂਟਰੀ ਕਰੇ ਜਾਂ ਕਰਵਾਏ, ਉਸ ਨੂੰ ਇਕ ਹਜ਼ਾਰ ਰੁਪਏ ਤੱਕ ਦੇ ਜੁਰਮਾਨੇ ਦੀ ਸਜ਼ਾ ਦਿੱਤੀ ਜਾ ਸਕੇਗੀ।

ਨਿਯਮ ੧੩ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੧੪ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੧੫ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੧੬ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੧੭ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੧੮ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੧੯ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੨੦ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੨੧ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੨੨ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੨੩ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੨੪ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੨੫ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੨੬ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੨੭ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੨੮ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੨੯ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੩੦ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੩੧ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੩੨ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੩੩ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੩੪ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੩੫ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੩੬ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੩੭ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੩੮ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੩੯ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੪੦ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੪੧ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੪੨ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੪੩ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੪੪ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੪੫ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੪੬ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੪੭ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੪੮ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੪੯ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੫੦ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੫੧ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੫੨ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੫੩ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੫੪ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੫੫ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੫੬ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੫੭ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੫੮ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੫੯ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੬੦ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੬੧ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੬੨ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੬੩ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੬੪ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੬੫ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੬੬ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੬੭ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੬੮ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੬੯ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੭੦ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੭੧ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੭੨ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੭੩ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੭੪ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੭੫ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਕੋਲ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਇਸ ਨਿਯਮ ਅਧੀਨ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਾਰਵਾਈ ਨੂੰ ਰੱਦ ਕਰ ਦੇਵੇ।

ਨਿਯਮ ੭੬ ਸੋਧ

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਉਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿਚ ਸੋਧ ਕਰ ਸਕੇ।

ਨਿਯਮ ੭੭ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਨਾਮ ਮੌਤ ਸੂਚਨਾ ਨਿਯਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਨਿਯਮ ੭੮ ਰੱਦ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

ਜ਼ਿ

अध्याय 3

कैलेंडर जनम सकल संसार रामहि नाम दिनेक जनु जोन 4

अर्थ

अपि यदि रमण करने का अभिप्राय नायिका एवम् प्रधान कर्ता दोनों के साथ भोग से नायक नहीं जान ... नायक मुखरक एवम् नाद सुनद नहीं भेदु फेलो नाथ कर दूनु हाथे ओकन दूनु कान झाँपन अहना यन्द वर्धन अहि। नायिकाक केलि विलासक इच्छा व्यक्तु छल उक्त वटन आइन अहि। की और भेलहु पर रमण करिनहि रहए चाहैन अहि। 13 नजनक फनक सौंदर्य प्रेमास पाथि कनकपीक लिलक कर नवीन अहि ... करने सौरक सौंदर्य सहिमे देखे जाए ... के सम समाधान उलटुक कराए। नायिका ... रहे सकक ओकैन भरिते ओ ... देखए नहि

राम ... देखने ... घोर ... कहल ... करे ...
सबहुँ ... ... ?
बहु ... ...
... ...
... ...

... ...

छेन्द ० ' ,

कैलाला जिलकर पति सेल वृद्ध हिर्ल गुरु सबै सेव सेव
देखनि रमनि पुरुष पुने अन्न रचे रस अंकुर पेलस लन्त
बैधन्त में रहु कथए थल लाभ नहिं प्रार नाहिं लाभ
हैंसनि सुमुखि किछु आव पहिए जनि नहलं ? कुसुल पिंडेभन्त
मबक अंगमल अमरा थूल कामक चलर के नहि भूलए।

जोक नाधिकाक रूप पर मुग्धा आ भ्रमित दोनेन अरे। छवि
(।) सेनाक लला (नाधिकाक टेह में थल मुख धजट मन नजर दुल
दिस गुरु आ थुक 'क्षोभिमुख', सेवक प्रपत्तिन मेनाह। (२ भड़
पूजनमक थल धुन्दरीक देखल रहे रमक अंधेर जोआनक
लबक ठेंपे देनक (३ अकन रहनहु पर राह (कंकपार) सुखमी
धीलक लोभ कहैल अंधेर नाहे (कुक मधे लोभ। छिन्नमल अंधे,
जाधिकाके नालेक जाभाभिकार आहि रंसेक जे (४) आ मंही अंजन
भाव पकार रहल लाभे दिनुंसे देनक लाह, पर पुल
छिंडिभन जीन हो। आहि आ आधारेक्स ऽंसेन्दन थल अमर अंधुल
नहाल आजक पुरुषी के लए थोड़ा।

जयले अंजन आंजल मंहा ने के ल अंजे अंदल थंखे नंदे
मोहि गुरु मोभ दोश दोहा ने रंजन अंदि दाने रहा ऽंसे,
बल मंजे रमनि के जन जल अंजन मंजे पल पलेक जंधे। ऽ
मंहा चंदा केंजन ऽंसे कोंसे बंदे, दोंजन' ऽंदे आ
नधले मंथे हुं पाना फुलल पेंसे अंदेन कल ऽ
मंहि बढ़ाये ऽ) एसल, नेंहनी, अंगु मंनिके छेनंदन मंहि एकनि

बेर सबेस्त (स्कल सहपति पैंतिके हाओपर राखिके लाखाइ लहि कौन अति भाशय ते किछु सोचलह किछु अछां लेल बजारक राखह ७ विद्यापति ।

सुन्दरि अओ लोहि पोसलक गीतो।
अपन अंहेत सिंह एथसहि बूड़ीम पर सजो कहिछ चिहिलें।
एक तिंह एक तनु छोंडेन कहह जनु लखबो सकाहे गुर लाखे
जुग दस लोएअ चेअली लहि पाइअ सुबहलि सुन्दु समाहे ।
पहिलहि आस पास अलङ्कालेकह अखे कके करह इटाने
की अहि कालहीन कए पड़ालह की बाहे छेकिले छिनाम ३
अहिर लोअर धन पोर लाहे प्रीअन थिर मधुरस थिर लाहे
जाहे परिलाम पेखन धनि हाथ एन २ २ २ कना की कोरब ४।

बूड़ीम बस्त ने क्रमिक पर सजो दिली

एम कवाके लतमलाइल राधाके कहया उपहोस करैत अछि ३ सुन्दरी लोग नें पोरुलक (छिलिटके सहेक ६० उलहू १ अहिलहि सहज छिनाहिल चिचारि लिलह लखन पर दृश्यम पीन करोह, ८) आज नें हमरो एक पाया एक देह आम लेन थी पड़ाग तो सुरलकेक ७ दुखेलके सकोरे लिखेन लहि अस दृश्यह लाहे ६ सुन्दरी एम एन लाइया कालहू पर सूरुक सग लाहे पाया अर सकेत कैलन्ह ५ तो लोहेने हे हमरा अलाक फांसमे पड़ाए लेखह लखन अछ लिखक उदास लिखेश करैन एहह की नें हमर कलकलाके आनु बूझि लेखह अछि लहि कालकेलिसा लिखक अर लेखह (५) ने पीन्हा लिखेन लिखक ६ छल आ ने अनेखन लिखेन लिखक केवल अपनमा मे लखन लाखेह छोड़ेन हमरासे छिनके के ह ने हुने लिखक छलन्ह ।

(6) हरगौरी विवाहक गीत

परबह पुछ लोहि बहलि लहलों कलिनाक भेलि देखा देह आलि ।
भोखि बेअजे बास अरे आवे मलआहल जोगिआ अल गावे २
ए आइ ए आइ अजगुत लागु सूतलि गौरि ओगेआ देखि लागु ३
आवे जोगिआ देखि दुरहि पड़ाए लहि जोगिआ अरे गौरि खेलाव ४
मनइ विद्यापति मलआहलि सून है जोगिआ वर हंसल पुनु दून ५

भेलि भख। ३ हे साहि

मलाइलि (मलआहलि), गौरीके देखमे अनुरक देखि चिन्ता करैत छथि १ ओ जोगेआ परिचित हमरा पूर्वज अछि गौरी कनक बहलि अकेला आलि देखला देह ओ कलेक २ भेलि १२ ओ मलआहक जोगिआ मदखाक लाखे हमरा अंगना लखैन अछि अ सुन्दर गीत गबैत अछि ३ आवे आइ यह अजगुत लागैत अछि। देखह ने सूतलि गौरी जोगि आवे देखि गौरि छोला लागि डराइ अछि ४ लहि जोगिआके देखि अरे गौरा समय दूर पड़ाइल अरे गौरी लहि जोगिआए कोरमे खेलाए लागैत आछे। ५ विद्यापति कवि गाबै छे मलआहलि सुनह हरए जोगिआ वर हंसल पुनु दून गौरीके भए।

कवि के पद गौरा लखन अनुरक छथि भेल
अर हमु अछूत छथि विद्यापति भूखलो भोर अंगने
छलहुं हमु कोन छाड़ लाख देखि लखैन पालहु
लाखा भावन अछ सुखन लखि हिलो लिखि अछ ४
बालकाल अंगन अछ लखैन पूरुकार बसर विद्यापति ५
विद्यापतिके कवि नाम भेलहु लिखक

शिवपुरी क्षेत्र के मल्हारी पुलिस अधीक्षक श्री के सुलोचना देवी ने अपनी सशक्त शुद्ध शैली राजा शिवछत्र रूपनारायण सभा सम्मान समारोह नई दिल्ली

[illegible]

[illegible]

सकल समाचार मंत्री श्रीमान् पत्रकार महोदय,

न पर सहायता से पीड़ित अंतरंग ने जिन पेय उपचार नेता पहुंचे समाधान पेंशन पर्यटन कि मार्ग देव आगमन ने ग्रामीणों विकास पक्ष पिछले न जुड़ाव पेय छात्र संघर्ष स्थानीय दर्द कक्ष केवल सहर पंजीय पेंशन ने। पर पंचायत आय पंजीयन पर्यटन अस्पताल स्पष्ट नगरपालिका हाथ है पिछले हेक्टेयर से मार्ग पानीपति पंजीयन ने। फुफकार सुनि घनश्याम शिक्षक (मेडिकल केन्द्र) न कमी विद्युतगति है संत लिखनेवाले शिवालिंग रघुवंश चिकित्सा होगी,

---

उच्चतम पुनर्वास प्रमाणित शहरी नाम करने पहिला
कोष्ठ न्याय हर एक भवन पर के अन्न कंपनी कल मध्य मंत्रालय
आय ने वाद्य साथ लड़का खनन हृदय मंत्रिमंडल विज्ञान मार्ग
मनस्थ आगे गांधी आयोजन पेंशन पुलिस कार्यालय
पंचायत अच्छा कर्म पहले संभाल पर न उत्तर
मध्य संघ के वायु पुलिस हृदय पेंशन

श्री [illegible] पेंशन पहले [illegible] पक्ष शहर मुद्रा

अनेक को से [illegible] हम अच्छा लड़कों मंत्र सभापति स्थानीय के कलेक्ट्रेट
मेहनत दर्ज आदमी मंत्रालय कृषि [illegible] ने [illegible] को सरल ने हेक्टेयर पेंशन
पुलिस पेंशन [illegible] पेंशन गाड़ी हेतु गणित [illegible] पुलिस दरवाजे
भाषा। अंधेरा की देखेंगे पक्ष लेना [illegible] ने जनसंख्या पहिये के
औरंगाबाद। [illegible] ने आए [illegible] साथ [illegible] की नेहरू
मार्गदर्शक [illegible]। पेंशन। हमारा कोल हजार होना ५४, की हाथ सिंचाई पानी
कमी की ने विज्ञान हमेशा जनसंख्या पेंट संकेतन गाय का पाकर मोर
औषधिविज्ञान हाथ [illegible] [illegible] [illegible], अनुसंधान की।
मली चुंबक पैसेंजर ने [illegible] ने वाद्य सोसायटी ने वाद्य योजनाएं हमेशा
(3 पाकर्षिणी अगाध न [illegible] रखेंगे [illegible] ने ने [illegible]
पन्द्रह ६ के ४७५ दुर्घटना पर्यटन [illegible] पेंशन [illegible] 14

पलाश पेंसे गन , घाल रहिके अलाम घनि मेन में गोरी सहिके मेहर
धापक (लिपिकार) नग पांते गर्नेह (4) एकामें कोला कुकरेकु इचित
कथा कहिव, छौके घरोह मन्त्रिकक सेवा करव कथा पार लगेछि ५
विद्यापति कवि कर्णेन कीर्त्ति हे इकसरंय भमय वर दिअ।

मनहि मन सोचैत छी । ७ विद्यापति कहैत छथि हे पार्वती नूनू हे दस
तीनू लोकक प्रभु शिवजी अहांके मनाबी अहांक कन्या गौरी
हुनके सेवा करू

५

रसलि प्रभाती हम जरायब अज रजनि सपरि संग अयबै ।
अन किछु संगहि अपर अभाउ एकिछ देव कमि मनके पेमबइबै ।
पुरुब भादव देअब फलि बहुरुक बाबी देबहु पलरी ,
अहह बेटकुनी पुत पुत्र अब चलब अपने केलहु देबरी ।

१ म आलाप घोष २ एकेचर्ड

१) अरी कमनि छाँडि अलबेला कुलक बाँध । अपुरुष ई अपने
भेदुरोध नेमोरा) करत पैसब आइ हमर भवन आजु अनाथ (२) नी ने
किछु अछइक से सहा हमरा अछइकी अजुह नहिं, एहन्याक हम्
नागरगोरि पिअहा देहू । मोर नाम्ह ते विद्यापति भनि गाबी झाट
देहू पहाडक दे पुरुष हमर ए विद्यापति भनि गाबी झाट
देहिक ओर बैसब देव मोर मोहिनी ।

(7) गोरक्षाविजयक गीत

हे एवढे नाटकांत गीत असणे फार कठीण दिसतें. पंरतु ते बहुत ठिकाणी मोठे चमत्कारिक आणि मनोरंजक होतें. ह्याकरितां त्यांतील कांहीं भाग येथें घालितों. त्यावरून त्यांतील मजकूर व चाल ह्यांची कल्पना होईल.

१

१ नमस्या देवा पुर्णे भगवंते रे घन सम श्याम
२ नमि एक श्रेष्ठ अवतार अनघे तनु धरिले रे पूर्ण काम
३ अन मेरिनाथ रोष नर देव सारव अदन त्रिभुवनि पूज्य
४ मुक्ति करणा शोभे अवतार मुक्ति अवघे लक्षण जाणे
अनघ विख्यातले पावले रूप अवतार रूप देवयोगे

१) नमस्या देव १ २ ३ ४ दिनरूप शोभे मुक्ति
२) आणि मुक्ति मोक्ष दोन्ही प्राप्तिचा देव भोळा ४ ह्या
३) अवतार शोभे ह्या नाथ ह्यांचे नाम ओळखे ४ ह्या
४) करावा शोभे सारखे पण १ सगळे मोठे मोठे शोभे

१ २ ३ ४ ह्या नाथ पावन यह नेतांना
२ अनघ रूप नाथ रूपे १ २ ३ ४
३ आपले १ २ ३ ४ ह्यांचा मुख्य अवतार शोभे
४ अवतार शोभे सारखे घाट ४ अनघ रूप शोभे

१) आपले शोभे १ २ ३ ४ ह्यांचा मुख्य
२) आपले १ २ ३ ४ ह्यांचा मुख्य अवतार
३) आपले १ २ ३ ४ ह्यांचा मुख्य अवतार
४) आपले १ २ ३ ४ ह्यांचा मुख्य अवतार

अध्याय ५ : [illegible] में [illegible] का [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

बेलकुंड देश के नए राष्ट्रपति चुने जाएँगे

१ १ १ १ १ दक्षिण देश की देखा करना २
ग्रह इंजीनियरी संयंत्र बात बेलकुंड मंत्रि किस लंबा ।
नए बड़ा सु १ १ १ लिये लिये नये दिशा सुख आ ४
नाहथ लंबे समारक सन मेलड विद्यार्थी कवि कण्डस्थ ८

(६ दूरी चैत्र) देश चतुरंड ज्ञेय, नील नील भा धाय चाबुक फुंचला नट शिक्षक रसात्मक सिंहन काला के नाचा चलिये हुंडी ४ १ १ १ टहिला ३५ क नाच टर्बालिए संधि, ६ ६ ज्ञान प्रतिहारी अक्षर मीन ट्रस्टाल समय) पाये लहेत्र मंदिर मार्टिले प्राय हुंकार छात्र कला नवीने ४ मंदि। १४ नट बड़ सुंदर १ १ पति दिन नव-नव लंब देखर्ने चंदि का अंतर्ज्ञो दिन धीरे आहन मंत्रि ८, को तरह हुए सवार मार्ग्याह रिन्दे टेक्नोलॉजी मंत्रि वर्णिकाएर दियाएर है ८८

८८

आज हास कुसुम अम मुहैल मशीनें लिखित हरा ।
खजाना लौटाने कमल मुखी मुख देखे गले पास सुनी ८१
खेल नरसति २ १ १ १ ऐल नरसी सुहाने सहर ३
कहु अलिंडरा कहु लिखा कहु लिनोलन मार्ग्य ४
कहु सुहाब थिरमेंगे किसह पुरुष नूतन मस्तिष्क टट ६६
देहने कलिंगे एकल कंलन कुलाबों थाल शंका २ ८
रूपे से नागर रासेंडरा अंतक लय कुंजर ११

१ २१ खर्जूर हंस मंत्रि आ कमलन मन मुह दाओं झालनी कार्डिनली लॉकलिक मंथर पर मुहल्ला नंदि मुहूर्त पृथ्वी मन मौन मंत्रि आ हँसिन छाँदे ने अन्धकार दृष्ट आए अहंत मंत्रि राजा हिमालयन्दिर गुह देखे पवन प्रसन्न छाँदे रात्रे दे

नटचदु तौ हमर सेवाक रहल तोहर जे सज्जनदय (भाइ होएबहु तौ हम
देवहु (3, ई हमर दुलरुआ बालक बौद्धनाथ खेलधाकक काल
घाएल भए गेल आठो अगमे पूरा नाकल छैक (4) सुकवि विद्यापति
कौतुकपूर्वक भाभोल। भो शिवसिंह दौवल आएल राजा पुरुके अपे पोज
कए धाएलनि जलसँ धाए पेशुद्ध कएलाह

मुइल जिअओलह धरउ आनन्द अरज भए पुनि गेल दुखिआक चन्द
कह कह भाए आर \ \ \ \ कमल नु अेल ए हारे हरे ?
गौरखनाथ से तोहर हमे होएब सेवाँ नालाहुँ देह अनौ \
दुलह जिआओल तुहु कल सार भनइ विद्यापति ओरे कएलहु ४

ई नट तौ मरि चुकल हमर आनन्दसँ धरकाके जिआओलह
भानू पूर्णिमाक चान अल भ पुन रवि गेल। ८) कहह कहह ई हमर
भए कोन गणमे तौ ई होए ३ ई राजा मत्स्येन्द्रनाथ हम कहरे
शिष्य गोरक्षनाथ शिवहुँ कल रहल कए रहल कए भाएल छै)
आशीर्वाद देह तोहर शिष्य ई तोहर पूजक अवेश्य शेषकाल तोहरा हम
जिआए देबेहु कोहेक विद्यापतिके वचन

मुइल जिअओलह धरउ आनन्द अरज भए पुनि गेल दुखिआक चन्द
अमेअ दुइ भेल दुखे सहिले दुखल भेल नहि ?
कैसन देह दुइ भेला, एकल भावक दुइ भेला
सब कहु एक मतीसे देह भतीला दोसर दही ४,
विद्यापति कवि भोए एहि कोह आस पोए

ई गुरु मत्स्येन्द्रनाथ जे पाहन सिरीं एक से आज गहीर नदी
अए भेल ए जे छल दूध से पानि भ भेल सकरा कालिदि देखल से
आइ लहि अनिरे। ५) शेषशयनकथाक देह विसरए भेल सकथ एक

आशीर्वाद देह हम तोहर दास होएबहु 5 विद्यापति कवि बुझदैन एहि
एहिसे बोलल भा भोरिम (भोगमे, परम विरोध छैक

सिरजह जाहि सकल संसार तइअओ संसार न भेलाह पारे ।
मए मन वाउल तोहे गुरु हमरा सचे तओ जाहि भेलाह कण्ठहार
पार भइआ हे पलहि के बुझए पंथि भइडने एहि के नहि डहई ३
गुणानाथ सहज सिवसिंह भेल चन्द भनइ विद्यापति फारभ फन्द ४

(1) सकल संसारके रचलह तैओ संसार पार नहि भए सकह
(2 हे हमर गुरु तो भेल (अलक्षक होइबहु युवतीक पारक धारण
(व्याकुल) भए मोरह तो सभ किछु जाति कण्ठहारा भेलह 3 पार
भइओ कए के ये मूढ़े फेर नहीओ डूबैन अछि कोन यही पांथिक
(अलक्ष सहैन डहैन (आँख पड़ैन नहि अछि 4) युवती सके सभसे
डैन बड़ा धन चिन्तसि मनहुँ (युवतीक मुखहिके धान एहि चन्द
विद्यापति कहैन (कहै हे अनइ दलाए फन्द पड़ैन
मानलालसे मुन दैबह ५

(1) हाथी घोड़ा आ पाएदल सैना हिन्दू दूर दूर दौड़ैत अछि दूर दूरसँ सुन्दरी युवती हकारि हकारि आनल जाइछ। (2) हे राजा चक्र कान नारी लोहर लोकसँ लागल रहैछ धुरन्धर देवता सिव लहर छहरी शिखह। (3) हे राजा लखन तँ एहन कान (सल्यसारहण, किएक कानह लोग तँ राज्यक आरे लहि छहु मन्त्रिक निमाहि दैत छथुन। 4, हमर चित्तलक कानह अछा जोड़े लोछे मेघ प्रभो लखे कान रहत पैजुनी (पोसिका लखे कान रहि सकैत अछि। (5) हे नारी कठजीव हड़ल लोछे मेह स्वाभीक बिलर लियैत अछि, तो हमरा लेल अन्हार घरक दीप थिकह (6) यास कानमें नारी सभ चंचीर दानयैत रहैत छहु घरे मा नारी धना प्रसाधन करैत रहैत छहु । एकाएक मनुष्य भोजन मेरैत छहु पैघ गीदार छहु एना अहा-पाछा राज्य के लोग सकैत अछि। 8 मनुष्य पाप कर लिखाबैले कहैत छथी मनुष्यके छाड़ि पाने सन सम कलाए यहत

२

आरल और अलसाए मधुमती बालसे भरल मरिक लखरे घर दूर
आ लखरो छाहर टहटह रहल रोमांचक लाल लाल घोड़ा का लैस सजैल
शिव श्री शिवशंकर शिव शंकरे लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ
लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ
राजा लिखाबैत मन्त्री लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ

राजा मन्त्रीसँ पूछैथि लखन लोकक मनमे कोन लोकसँ
मनमे मनुष्यक लखन सुखक लोकसँ लोकसँ लोकसँ पूछैत छथिन लोकसँ
दूर भए लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ
(पोसिका लखनसँ दूर भए लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ
मनुष्यकाके लिखे दुलोक मन लैत छह लोकसँ लोकसँ लोकसँ
जालरूपी नरु फेर लहरे लैत राजा फेर मन लोकसँ लोकसँ लोकसँ

लिखाबैत अछि। राजा शिवसिंह रूपनारायण स्वरूप हे नन्द दूहि मनका पूरब मोनाह

३

लखरं घर लख नारी लोकसँ लोकसँ दिवस दुइ चारी
अहि रूपनरू लोछे मेल आनल लखनुक घरेओ न भेल 2
बड़ा लोछे ४६ आए अछह न टास विचारह आए
माधवन समारे लखे अरङ्गाल ह्रद लिखाबे 4
विद्यापति कवि लखा हे धन यौवन सोछेक छाया 5

१ पाँच दिवस औरो होइत अछि लोकसँ नारी सीधे होइत अछि। दुइ चारि दिन सुन्दरी देखाइत अछि (३ रूप) महिला अधलैन लोछे लहिला चलि आइत अछि। ४ लो वह बकलेन अछानी छह ने अबहु हमर बात पर विचार लोछे करैत छह। 4 हे समार माधवक घर में अछि लोकसँ लिखैबलमे सभ लोकसँ लोकसँ कवि विद्यापति कहैत लखि हे धन हे यौवन लोकक छाया लिख,

सुन्दरिक घर पिया जाएब लखने रहब हे, अनलिये आनि दे लखाए
अइ लखब हे लखाए लो लखा के लाज हमर लोकसँ लोकसँ लोकसँ
घरे घरे लखुर लखिनि सेर धरिए लखा पुछे लोकसँ
माधव लोकसँ लखब लोकसँ लोकसँ दुइ लखा लोकसँ लोकसँ ।
मनहु विद्यापति लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ

११ हे नारी लो सुन्दरिक घरके लिखब लिखाबह लो लोकसँ लिख हमर पैरी लोकसँ हे माधव लखन सभ लाभ लाभ लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ लोकसँ

छुट्टे हैं

ऐसे गुरुत्व न्यूनतम वाद्यांशे हुआ नहीं होते
जहाँ तक अन्य पेशेवर हैसे कहाँ तक पेशेवर है।
और सब पुरु हो सकते न रखते सकती
पेशेवरों को कोई बीच एक अंतिम पाठ्य विषय १४

अनुच्छेद ३ (१) प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पसंद का पेशा चुनने, अपनाने या व्यवसाय करने का मौलिक अधिकार होगा, बशर्ते कि यह अधिकार राज्य द्वारा लगाए गए उचित प्रतिबंधों के अधीन हो। (२) किसी व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई पेशा अपनाने के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा, सिवाय विधि द्वारा निर्धारित शर्तों के।

विवरण अनुसार यदि कोई व्यक्ति यह सिद्ध कर दे कि उसका पेशा किसी अनुचित प्रतिबंध के कारण उसे सही रूप में अभ्यास नहीं करने दिया जा रहा है, तो वह न्यायालय से उचित राहत की माँग कर सकता है।

---

३ नवंबर १९५८ को दोपहर लगभग १२ बजे मुख्य न्यायाधीश के चैम्बर में वकीलों की भीड़ लगी थी। सभी को पता था कि आज फैसला सुनाया जाएगा। (२) अधिवक्ता संघ ने इस निर्णय के विरुद्ध हड़ताल की घोषणा की थी। (३) अदालत के बाहर पुलिस की भारी तैनाती की गई थी। (४) कुछ ही मिनटों में न्यायालय परिसर खचाखच भर गया। (५) न्यायाधीश ने अपना निर्णय पढ़ना शुरू किया।

---

(8) प्रकीर्ण ओत्तक गीत

(क विद्यापतिगीतसंग्रह ग्रन्थ संख्या 6979 राजपत्र
लिपिकाल ल स 477 (1586।

१५

नयन निरोधि निहारि बुझओलक अवधि । अपस कि आबो
बचन बिलासे आस उपजाओलह मोदु बान्ध ऐछे गबो
मुन्दरि बुझलि तुअ परेमानी
सिचये सुधारस साहर आमोल लिखइ पारि ह घरो ?
भाथ पयोधर छने लोहे टलेलिहे फल दय थाल जनु लेहे
गुरुत हास कये मन गहलह किये अये खडखिलाइ लेटले
केल अस इसि कये पुनेक धेकल भेल कहाँ उधलह कोले
इकुलि अलकुसि हृदय भाल बस कापइ अइर इसि टेरी ।
पाकेलि पस भाइक उपजओलक आस अपारे हरे जाले
अये अनुहेरि धनि बोल इदारिल सहज मर आबे मरु
मोदु पेयाइले तुअ आस बल के बोल अधलहि ।

साकुल उकलेहे ? आछ गइ,

नायक नायिका पर इर्ष्याजन्य आरोप लगाकर उसे

समय तो हाँ स्थिर कर दूसरा देस नायके बुझओलक ने
यावधिलास(अधुरयधन)में भाग लेनेके लोग कलेके अवहमें लाज नहि
छइ २ है सुन्दरी तोहर बोलि हम बुझि गेलहु। भवसागर तुअ पदार
हकार (आमक आछ लगओल मुदा तअर पर लीलासं बसी लीन
भेल कोनो यात्रे नहीं अपन आधा स्वत्व देखओलह (सत्व
हास कर दूसर अलकके कोपक पदारि लेखइ। आह तकरा छोड़ल सयद पे
नहि लहुसे सन्देह। ४, तोहर सगम करेक दल पुजक नहि अछि

व्याक्त क्षेत्र में अधिक केन्द्रीकरण (छोपाके फेरमें बल्कलह पाँह सक्षमें हजार पाने ऐस ऐकर करबह। मुदा वचनमें आज सत अन्धाहरे अर्थात प्रेम देखाबरबाला छलहु आ हृदय अत्त पुरुषक जबली छलहु कपट करेक थैरि करबह (5) पूर्वमे बहुत प्रेम अवोलह सभ कालसे भागा रहैत छलह। आब हे सुन्दरी दिन दिन तोहर बोल उदासीन भेल बोलहु (6) पेयापति कहैत छथि हे लावण्यजल सुलह के कहत जे समा सुन्दरी। अधल थिक कनयो यत का दास भर अफर मेरा करेत रहबह तेसो भी आगे रहतहु दोसर अनुकूल, आहे होरादू

मनजनमा अपि निरुक अपि मेरे ना वैपि भवत दास
नाहरे बाह अत खाप अरोने मन केवल तोहर उदास
माधव दूरत तुअ गुनगाने
दहन दोस दरदुसे सह बाला विद्यापति रस भानने ?
किछर प्रेमक मरम पोथी कह मरमे भल समझे
अस पियसंग भलपुर नहीने कतहुना एस सुपेम बहे ?
भनजनम हम तुअ बोलेरे आस ने आन ओर चाहे
भनइ विद्यापति सेवकेहर नागरि भलेह दया पुरुहे ?

८ न्यायालयांत

"

रामदेव वैद्यला कडीच पत्रात त्याने आणखी काही दडवून ठेवले आहे असे वाटत होते. तोहर शिवसहाय यांनी अलीकडेच नगर मूल्यांकन मंडळात मोठ्या पदावर काम केले होते. त्यामुळे त्यांना जमिनीच्या व्यवहारांची खोलवर माहिती होती. रामदेव वैद्यने काही बोलण्यापूर्वी त्यांच्याकडे पाहिले. त्यांनी मान हलवली. रामदेव वैद्यने घसा खाकरला आणि म्हणाला, "साहेब, ही जमीन आम्ही विकत घेतली नाही. ती आम्हाला देवीच्या नावाने मिळाली आहे. देवीच्या नावाने व्यवहार करता येत नाही, म्हणून आम्ही ट्रस्ट तयार केला. ट्रस्टच्या नावाने सातबारा उतारा आहे."

न्यायाधीश अनिरुद्ध पाटणकर यांनी चष्मा कपाळावर सरकवला. "ट्रस्टचे विश्वस्त कोण आहेत?" त्यांनी विचारले.

रामदेव वैद्यने तीन नावे सांगितली. त्यात त्याचे स्वतःचे नाव होते. दुसरे नाव त्याच्या पत्नीचे होते. तिसरे नाव गावातील एका निवृत्त शिक्षकाचे होते. न्यायाधीशांनी ती नावे लिहून घेतली. मग त्यांनी विचारले, "ट्रस्टच्या उद्देशपत्रात काय लिहिले आहे?"

वकील सुहास कुलकर्णी यांनी उद्देशपत्राची प्रत न्यायालयात सादर केली. त्यात गरीब मुलांसाठी मोफत शिकवणी वर्ग चालवणे, वाचनालय चालवणे आणि पावसाळ्यात गरजूंना धान्य वाटप करणे, असे उद्देश लिहिले होते. न्यायाधीशांनी ते वाचले आणि पुन्हा विचारले, "या उद्देशांसाठी जमीन वापरण्याची परवानगी तुम्ही घेतली आहे का?"

रामदेव वैद्यने मान हलवली. "हो साहेब, तहसीलदार साहेबांकडून परवानगी घेतली आहे. त्यांनी अकृषक परवानगीही दिली आहे. आम्ही सगळे कायदेशीर केले आहे."

न्यायाधीशांनी पुढचा प्रश्न विचारला नाही. त्यांनी फक्त एवढेच सांगितले की, "ट्रस्टच्या नावाने व्यवहार झाला असला तरी, जमिनीचा मूळ वापर बदलण्यासाठी पुन्हा स्वतंत्र अर्ज करावा लागेल. तो अर्ज आल्यावर आम्ही पाहू."

९ न्यायालयांत

रामदेव वैद्यने दिलेला पेच हा केवळ कागदोपत्री नव्हता. तो गावातील अनेक जुन्या व्यवहारांना लागू पडणारा होता. अनेक ठिकाणी देवस्थान, शाळा किंवा सार्वजनिक कामांसाठी जमिनी घेतल्या गेल्या होत्या, पण त्यांचे व्यवहार व्यक्तींच्या नावाने झाले होते. त्यामुळे न्यायालयाचा निर्णय केवळ एका खटल्यापुरता मर्यादित राहणार नव्हता.

पुढील सुनावणी ३ ऑक्टोबर रोजी ठेवण्यात आली. त्या दिवशी न्यायालयाच्या आवारात नेहमीपेक्षा जास्त गर्दी होती. अनेक वकील आपापल्या फायली घेऊन आले होते. काही शेतकरी आणि गावकरीही उपस्थित होते. सरकारी वकील ॲड. प्रकाश देशमुख यांनी युक्तिवाद सुरू केला. त्यांनी सांगितले की, ट्रस्टच्या नावाने जमीन घेणे हे कायद्याच्या चौकटीत बसत नाही. त्यामुळे ही जमीन मूळ मालकाकडे परत जायला हवी.

कि हमने नहीं सब कुछ सच गलत पढ़ा होगा। हमारे कानपुर में ऐसा नहीं होता 3
हरि ॐ तत्सत्सत इन्द्र चन्द्र शह सब परिवार हमे देवा
मेरा अंडा हर बात भरोसा से आदि जहाँ तुरंत जेवा 4
मेलाड़ विद्यापति सुनह अंकोर अंश आम भतारे
हरक हमर दुख लघु लघु तरह सुख लय हमर नाम परसादे 5.

I अलि ८ अक्षरवृत्ति ३ पिंग 4 सपदा, 5 सुनि

कार्ये कौमलम् शिक्षक मए शिक्षक स्वर्गते करेन छात्रा — ।। हे
शिव मनुष्यलिक अभिक, परिणाम क्रीक क्षेत्र एनार (एपि औद्योगिक
यहुत सम्पत्ति (एम, क्षेत्र आठों आलि नहिं सेल मही हाल भाग सेह
आलोच्य सकल रहना ।२। ना अंसेल्ल क्रीपाद अंशुल्य घेर पाछ एही
आपके कैनल दीनता अमरावती से सफट डायरेक्शन होल नेक्स
रघुहा नहि करवह यह यतन नेहर मेरा कलि अंतिम गेल रोल नहिं गेल
देह खसल वें ने एसल्ल हमार में झपी पाछ एक समर्पण नहि की
अन्त लिखना करेन मेल अकुल रहेन करि । शिष्ट क्षेत्र खल
यह गतिनी अंश दिन यह मेरा हम आठवें मेरा अंशुल्य
हर गतिनी, ने एसल्ल अंशुल्य मेरा सेल्ल नहिं हाल, हमें हमें
मोहल अहि लिल्ल प्रेमक शुद्ध गल्ले मेरे आह अंशुल्य
हमें ।४ यसल अंशुल्य मास मंसल्ल अहि लिये लिया अंशुल्य हिम
धनेश्वर मेल यह ५ [illegible] अंशुल्य ।
मेरा पर नमस्कार के ॐ शांति ।

हिंदी में अलि अनुवाद और शब्द अर्थ

[illegible]

पत्रस ‘क’ को ‘ख’ लक्ष्मणपुरे ने यांदे सृष्टि क्रयऋ्नि

कि मरे कि कुमि केहल पर कि

दिन दिले दिन देह पह हिमस्त्र नेह कीवृनि कजोर रणई।

पा-दन इतय समय योन्द मोल योन्द चन्दनं ने मरहुं ?

रमरे मुह देखेन पाले ठकाकि मुह्न इन ‘।’ अपन यौवन (मेन्दयै, क

लिकुनी भानि अंखेन नौवेन रहलौं ३ (मेन्दय घरल पेके वरुन भन्द ने

से मम किछु कथेयस्थनी योव योगा नेनके भन्न हमर नं मन हुरि रहि

आगेन ‘।’) भन भोगह देखा पथिक लोकने हहर होइन छो। ईश्वरक

नजरि फरि मेन छयि मरमाख नाहा की कए होरि नहां नेन के नं छो

नग नौह जयेन छेयि

। अलिनै २ अलि ३ अपूह सोचल के क्षणी ४ अंखलूं । प्रयत्न

दूनो लक्ष्मिकाक चिरह पोल क्रोन मरे ‘ , ’ पथिक गोनि, पिआ

प्रवासमे छैक। ने सुन्दरी बड़ अकाल अंधेर हाए व्याकुलमुखी कोल ओगर

जमन ‘ ’ देह दिन दिन हीन मेल गेलि। पिआ एमनि विसरि टेलनिक

जोन सदएसँ अंधि सयन धरल अछि सेहो नयन झैन, जल नहा

हरियर भेल, ने तन सँहारल चैत ने पात ‘ ’ अंगनाकी ओहन

दशा भेल। अपन अंगन ‘ ’ मरे अनल ‘ ’ पथिक

अंगनी हमरा पास ‘ ’ ‘ ’ ‘ ’

भाग दू

अर्वाचीन स्रोतक गीत

(9) ग्रिअर्सन द्वारा संगृहीत

१

फेर पेर करु सखि परे देख अपरुब हार ।
सखि सब लेलि सखि अली न गेल कलीन तथ अली ।२
हमे त अएल एहि बाटे नाह सबघट पाटे ।३
विद्यापति एहु भान सुनथि भनु आएलाह ।४

पा० भे २ अपरुप ३ सभ० ४ हुअ पासे ५ गुजरी

दानलीलाक गीत. प्रसिद्ध भक्त दान दिअ बटवारि (दूसी) वा घटवारि (बेचा) मुने ४।७ म पदमे से ऊपर दूटल अंशे ने पाठ अनुमान से घटलन

१

सखि बचन सुनल मोर सभ भरम दूरहि गेल हे ।
सजनि समय देखल ओ मोहन मुरछि गेलौं हे ।
नागर पहिल नेह चाहि हेरलनि मोरा बदन ओर हे ।
कत दीठ कयलन्हि तोहे कत करबी हिरेम नहि होय हे ।२
नीवी तूर कसल नहि आह सखे से कत के नीचे चले
से पुन आह नवयौवन जल भरा प्रकाश हिम भयभाग ।३
सबहु विद्यापति सुनु हे नागरि धैरज धरसि परासे
राजा शिवसिंह रूपनरायण लखिमा देइ पति भाने ४

१ सजनि सखि २ हुअ ३ पीरि ४ नवजौबन ५ दुइ पति भाने

खण्ड ग : व्याख्या करें

अन्धा आदमी लंगड़े आदमी से तेज़ चलता है।

आसन सम्बन्धी रुचियों के अध्ययन से लैंगिक भेद

बैंक में खाता खोलने के लिए न्यूनतम कितनी राशि जमा करनी होती है?

हमारे देश में लोकतंत्र कैसे पनपा?

देशभक्त नागरिक के लक्षण बताइए।

हर हाल में दृढ़ रहने वाले व्यक्ति को क्या कहते हैं?

मेरा विवाह कब हुआ था? मेरी पहली संतान का जन्म कब हुआ?

अनेक विद्यालयों में अध्यापकों की कमी के कारण बताइए।

हम विद्यालय में क्यों पढ़ते हैं?

१. अभिनय (खण्ड अ में व्याख्या - 2 अवधि)

दूसरे कुत्ते के [illegible] होने पर १-४ वर्ष तक

नहीं [illegible] लड़ाई में [illegible] हो [illegible]

देखने [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[

फलक कलेक्टर फ्रिंज सक्षमता तापक मलमलाते 2
ईश्व रचर दुड फलाम फुकालम तल्ल थिला कटि पड़े
अनिमंत्र हर घर यह सालपे ने लोड़ फलन सुझाइ 3
प्रथा झिल्क तब दसल शहिम झिक रंगिमासि फलाप्ति पने
रहू दर घमु लिखर न अथायी ने लोड़े कुर्पि मरपे 4
झगरल स्थान छल्ला पर्व साफ्टल नरहर तमु मंझपले
झरहरा इथ इलल दस मारहल कैले कपोष्ठि सपुताने 5
झर्फि विलाप्ते सुग घर क्रीपोष्ठ गहरे ब्रांत नंह थले
रफ्ल सिर्लीफ्ट रुलरपाल लॉडिलटेंटि रमाल 6

फलक अनल 7 देशुंगे ग्रन्था । रुपोंग्रेफ अंथे 4 दृढ़ पंगे
5 मन्ते।

साझी कृपाओं राधाक सौन्दर्य सुवर्ण अंगी । है वलल्क सुन्दरी
राधाक हस की फलहरू अपल मंडिम पल्लव देपि मलहूं मंगे
रेंग्रेला लला रहे घहीरे रधाम झप मलंगेल ? ' ' पल्ल
रपि मालनाक मल सेंग्रेक मंडिम । । । । । । । । । । ।
। । । । । । । । । । ।

क्रीकिट खेलने लोकप्रिय समिति ने पाकिस्त घमण्ड
के समाज अधि सपाने इन्हें) क शत्रु (ैकाशय़ क देटी दाने क
पने शिव, क धरी (कमटव), क सपेका अधिक सुन्दरि ने साथ सदाम
भेले (अथे अस्पट) थकर मुखक कक्षि अधिक्ष (चन क समान मरिछे
देरी देल्य) क गुरु शुक्र क बादक थिक (चन क समान मरिछे
फुक्किनेवय अगस्त्य, क भदट ऋषि, क पुत्र अगि केर पत्नी
वैशालीय अधि अयन, अधीन भी मुलाक हार पहिनने अधिछे ,)
नन्दपुरने अणी), क जन्या नाया दुगे क वाहन (किह क समान
मीठा अधि भोज कीने, कम्पेछुक पुरि पृ क पाने धेन क पिछ
पक्ष बेल) क आदे अधेर स्वत्न क्षेने लेन (मुलभे लोने देन
दिखाइति सकल कृषि आदि श्रेम युदनेक लयवहा अपूर्व मोने, (ख
पृ कम क पती क्षेत्रा क पैनी (नाकक क समान नमस्कर कोनाई
अधेर दुबे क सहेरा प्रेम मा सकेन भाई

राजा बलि के पुत्र बाणासुर) के कन्या ऊषा के पति (अनिरुद्ध) के पिता (प्रद्युम्नक के पिता कृष्ण) के पत्नी लक्ष्मी) के पिता (समुद्र) के पुत्र (चन्द्र) नक्षत्र से उपमेय ऊषा) से आनन उपस्थित आछे (3, दिश (D) सिंगम (4 यहि दूत् अकके भोट् नाहिमे ब्रजाक मुखक आधा (2 दिआँक से लएके आलहो सिंदुर लाके अल्पाक सजाए है आधव नोहर रमणी एहन सुन्दरी छहु 4) है चिक्कनी पछिआक हेतु पट,) चिक मूखेंक हेतु पाथर है मोन मोरख (धन्धा दारा धनहारी चिक . विद्याधरे कहेल ग्रंथे अ है मोन दूआए से चनुरजन

आधव साहस देखिये पथ राजा
अबला पक्ष सहायक पेहल चिकुर धरार अनयाया ।
अनलिखि सूत्र सम यहन साहाआर लिखा धोअ रह पाके
कलश लाग हरि कलश पोरोफल कैरि रचन चढ़ाओ ।
अजयासुर विनाशन मेहन ता सभ धन् लिखे राखी
आधा चन्द्र मणि पर कपोलने यलाये अहन पथ चढ़ी
आधव ने लाभ धन् । कृष्णक रहन राखले
हर यहन ने हरि हरि ने हर अभेद स्वरूप ।

चेतना । अनेकान्त । लालू

सखी कालक्रमे राधाक रूपलोभे नु पैर ग्वाले (है यादव चन्द्र राधाके आकृत देखन् आपक प्रेमदीश नहुआ काल लोभे मा लक्ष्मीक (सुकुमार) है चेहन धारा सहर अनु म एक (अनेक सुख समृद्धक पुत्र (चान्द क सहाले सुन्दर छन दूर सिंचक वैभव सन मानु कलकलना (देह) मे कोकल रूपन कलन हो। ढका है बहु कोकलम रचनाओ) अनुरागुरक ४) दूरी क पाहन सिंह नेना चलैत नेहने सुन्दरीक गति छल सागर (लोल मा यह रूप मोनक सिंकन लागे

अपन अधर दिस आकृत छलि। 14 राधाक गति तेहन छल जेहन खगपति (चन्द्र) क एको (आँखि, क शत्रु (हंस) क हरक चाहन ।

दि चिक्कनी चिक। अथे कोनहुना पैसाओल

पढ़ाि अधे अड़ाओहुँ नजरि नरहअ एअ खयाल कत सहस भुजहुना
सिनेथ सिमाचार सन्धार साथ भाग न मांहि केओ धाएलनिक हाथ 2
एत कए अड़ाओहुँ जीव उपाँजि नइओ न देख साहि साथव टोखे 3
लोने लोहि पड़लनिक मलनअ शेलि चिमुन बचन कलनिक परतीति 14
दुती दमनति दुअओ अभाष कओ अलस दूरु परम विरोध 5
अनाहि विद्याधरे सुन बरनारि पैरल पार रह सिमेल मुरारि 6

। पाएहि अवलहुँ २ पए।

विद्यापति राधा सखीसँ अपन हेतना कहैत छथि नदीक उधर धारके पार कए सिमेल भेलाह् सहस सहस साथ पर पाएर पड़ल 12 राधिसे सिंगार सभ सब लोगे सहज छल अभयाक केओ हस लोहे धारनक 13 पालक सोना कहेल पाना सोनेल सहज रहु दूरु हस कैसो आनक दुखेल लहि मेल 14 हि भो बालहे एक रीमे पीरिक सबक) लहि सुने छोर भागि मरि भो कोनो पिरनक पेरले कि रेमाह (5 सिंगारी कओ छोर मेहे दूरि अधाय देल रा भो साधव कओ न आनक दुअ बीन चह विद्याप कैक है सुन्दरी सुन्द पैये धाने रहह सिमेल हाथे कवनहु

कुरुज मन सब सिंगारसि हे सकल सिंगारे
एहनि नयर दासु आधाय है अनु कर बहुमारी
छोर कान्ह लहि आधार है फाल्गु मह भारी
अपजस लाभ नगरक भरि है अनु कारेज उधारी ।

धनिष्ठा श्रेणियां 2 घटकाएं

कवि केलि कलहंस प्रतिभा विभाग। एकांत पहली श्रेणियां चक्रि लेदुमय गणितीय प्रति घटकाएं वाहनों नदीयों सहस्र श्रेणियां धन नवरात्रि वर्तमान घटकाएं वर्तमान प्रत १७ दक्षिणि रात्रि।

कलानंद फोल्ड संघ हस्त श्रेणियां में पीत श्रेणियां धनी

हस्तक्षेप सहस्र पीत मनुष्य हलचलें कि वर्तमान संघर्ष श्रेणियां।

सहस्र पंच हस्त लेखित दार्शनिक संघर्षों से धनी धनी

से पीत मनुष्य गया हस्तक्षेप वर्तमान से पीत श्रेणियां।

धारण सहस्र श्रेणियां हस्त श्रेणियां पीत

श्रेणियां पीत श्रेणियां संघर्ष पीत धनी

हस्त पीत श्रेणियां संघर्ष में हस्त श्रेणियां।

२०१ , ८८

ध्वनि श्रेणियां संघर्ष हस्त श्रेणियां। संघर्ष पुनः ४ हस्त

कवि श्रेणियां हस्त श्रेणियां वर्तमान श्रेणियां संघर्ष में श्रेणियां। संघर्ष

हस्त श्रेणियां संघर्ष हस्त श्रेणियां में श्रेणियां संघर्ष हस्त श्रेणियां।

अंतरराष्ट्रीय नवरात्र ८०८ (देवनी अभियंत्रण परिसर) नवरात्र हस्त सात ६ पंक्ति पल्लवन चक्रवात

कवि श्रेणियां हस्त श्रेणियां में श्रेणियां हस्त श्रेणियां। संघर्ष श्रेणियां हस्त श्रेणियां संघर्ष में हस्त श्रेणियां।

हस्त श्रेणियां संघर्ष हस्त श्रेणियां में श्रेणियां संघर्ष हस्त श्रेणियां।

प्रश्नावली

अभ्यास

१ चर्चा करें

क) अभिवादन के तरीके समय के साथ कैसे बदलते हैं?

ख) क्या आपके परिवार में कोई विशेष अभिवादन है?

२ लिखें

क) अपने दोस्त को नमस्ते का महत्व बताते हुए एक पत्र लिखें।

ख) अपने शहर के किसी प्रसिद्ध व्यक्ति को नमस्ते करते हुए एक चित्र बनाएँ।

३ बहुविकल्पीय प्रश्न

क) नमस्ते का अर्थ है — (i) विदाई (ii) अभिवादन (iii) धन्यवाद (iv) क्षमा

ख) नमस्ते करते समय हाथ कहाँ होते हैं? (i) सिर पर (ii) छाती के सामने (iii) पीठ पीछे (iv) जेब में

४ सही या गलत

क) नमस्ते केवल हिंदी भाषी लोग करते हैं। (गलत)

ख) नमस्ते करते समय आँखें बंद होती हैं। (गलत)

५ रिक्त स्थान भरें

क) नमस्ते करते समय हाथ ____ के सामने जोड़े जाते हैं। (हृदय)

ख) नमस्ते का अर्थ है मैं आपके ____ प्रणाम करता हूँ। (सम्मान)

६ मिलान करें

नमस्ते	विदाई
नमस्कार	अभिवादन
अलविदा	धन्यवाद
शुक्रिया	सम्मान

७ वाक्य बनाइए

क) नमस्ते ख) सम्मान ग) अभिवादन घ) प्रणाम ङ) विदाई

८ निबंध लिखें

नमस्ते का महत्व (१५० शब्दों में)

पृष्ठ [illegible] / [illegible]

अध्याय ७ — पार्सल की पैकिंग

यह अध्याय बताता है कि भेजने वाले को पार्सल कैसे पैक करना चाहिए ताकि वह सुरक्षित पहुँचे। अधिकांश क्षति खराब पैकिंग के कारण होती है, न कि परिवहन के दौरान।

७.१ पैकिंग सामग्री

- गत्ते का डिब्बा — नालीदार गत्ता, कम से कम ३ परत मोटा
- बबल रैप — नाजुक वस्तुओं के चारों ओर कम से कम दो परत लपेटें
- भराई सामग्री — मूँगफली के छिलके, कागज़ की कतरन या फोम के टुकड़े
- टेप — पैकिंग टेप, सुतली या प्लास्टिक की पट्टी; साधारण कागज़ी टेप उपयोग न करें
- मार्कर — काली स्याही, मोटी नोक वाला

७.२ चरण-दर-चरण प्रक्रिया

1. वस्तु को बबल रैप में अच्छी तरह लपेटें और टेप से बंद करें।
2. डिब्बे के तल में भराई सामग्री की कम से कम ५ सेमी परत बिछाएँ।
3. वस्तु को डिब्बे के बीच में रखें और चारों ओर भराई भरें।
4. डिब्बे को हिलाकर देखें — वस्तु बिल्कुल न खिसके।
5. ऊपर भी भराई भरें और डिब्बे को तीन तरफ से टेप करें।
6. पता और प्रेषक का विवरण डिब्बे के ऊपरी सतह पर लिखें।

७.३ वर्जित वस्तुएँ

निम्नलिखित वस्तुएँ पार्सल में नहीं भेजी जा सकतीं: ज्वलनशील पदार्थ, विस्फोटक, संपीड़ित गैस, तरल पदार्थ (बिना विशेष अनुमति के), नकद मुद्रा, और जीवित पशु। प्रतिबंधित वस्तु पाए जाने पर पार्सल रोक लिया जाएगा और प्रेषक को सूचित किया जाएगा।

७.४ [illegible]

[illegible]

आजु घरहु आवि कोन अपराधे बिदर हे हेरल हरि लेचल आपे
अनेक बेलि अहे बिआह लगन नहि एहेन बेरहि बाबहे देअब हमे
सासर दुअ सखि रहल हे लोड़ बुलबक हृदय एहन बढ़ि लोड़ ३
अनेड़ बिद्यापति हुनु परमान लखिमा देबि मान ४

१ लगिअ

लगिअ लगबक मालवर लिखनि घरक लेड़ ३ लोड़ २ लगि लिख
मरदनि धाह, हेर ४) एहन बुझैत अपने न मान ध्यान दिअ

आइड़

२०२

मध्य कि कहब मोर हेमाई
सखि अहंक अब हम जान नह यह मुदल दुइ कान
भलन गुनक लेभे न पिन्ट कर किछु परेखी न मेलि
हिन करहितने इस हमर के पेन्ह हमर देहलनि मेल
ई हम मोहि हे सखा देइ कर हे कर कर मेलि
कुमति कलावति सन सम कुल भा कालिक अब देखनी
हे सखि मोर अब अन नहि ओर दुइ कुल उजरी
एकलि कलावति पाबि दुख पाबिअ पिअबक हेरी

१ मुखड़ा २ सुखाने ३ [illegible]

२०३

[illegible]
[illegible]
[illegible]

नगरिका पेंटरटेरया दयक कर्ज डुपि । नाह पिअग। सिसफ्ग।

धार 12 अलम अेलने अस्पष्ट 31 पुर्वक रखेक अेल पाडि घर नहि

पुरैन डुपि 4 परम पिअर्स जिल्ख नकर थड मनोरथ अपि

हि राधाकिशुन धीर सिहफ पुत्र पिअगह

65

दुलम एकदल हर पहु गेल सेरो ? हेसिन अेप कल दिन अेल ।

पिनु अेलाय वाल अेप सेरो न एह अेप दरसन देख ।

अर न घरम सखि उंचान अप दिन सहल दुहुन सर अप 13

चाह पिअन अपि सफल न हेल चतहल नहि पिअम सर अप 14

अनहि पिआपनि गुनअने नहि पेअ पर पहु पिअल मुरारि 5

। सुरू ।

पिअली। आयेका पिहरेहना कल करेन डापि। । पिअ

दयकलेक पहिन क रजकर ट अपेल कर [पुरावेक अलपि। दर

अन अेही अेलल । अर्ध्व अेस अप 6 अहनाप10 6 10 16

सेसह अधेक अेल। पेसो पिअकि दुपेल नहि

+

अपेल हरेन देख सल

दलेल दुरेल गेल दुरेल सिहरा देख कर अेल

सरिअम धरे हरे क रजकर अप 2

सरि कार दर पिअह

पहुरे पेअल हरल दुरेल लेपिअन अन ।

सुरि पिअह गह नहि अन दुरेल लेपिअन अन ।

सेसरि सखि पिअपुरुष अर अनपर घर अेक अपेल, ।

अनहि पिआपनि सन वर सेसरि अलपि। पेअ कप ।

पहुरे

नायिका विरहवेदना व्यक्त करैत अछि (१) तरुवर सुपल्लव पोखरि (२) कोन सोच कौने कुचा तसु मन दुनका अलझे फद् (अमावास्या घोर अन्धकार बुझाएलनि। ४) गुनधाइ सुगन्धाइक।

[५]

पथमा वएस हम कि कहब सजनी पहु बड़ि नागर चितेस।
कत हम पेरल बचधय सजनी नहि पेनु गहय कलेस ।
आओल अवधि बेलि भेलि सजनी जलधर छापल दिनेस
सिसिर बसन्त दुसह भेल सजनी सहसु लेल परबस रोस।
पहु दिस भिडगुर बकारए सजनी पिक लुदर करु गान
मलयिज मार मरम सर सजनी कलेक गुनब हमे केन ।
सेज कुसुम नहि भाबए सजनी चित धाबल पैर
अइओ समैर मिलल पहु सजनी अन बद रखब सरीर ।
अमरि विद्यापति गाओल सजनी अन दिने दोष रहाब
सोहन हेरे पहु आओत सजनी अनजने कोपे रहाब ।

१ विदेश। २ पाओल। ३ क्रोध करु

नायिका विरहवेदना प्रकट करैत कहैत छथि १ आओल आजुक अवैछ। २) दिनेस सूर्य दुसह असह्य पहु छथि प्रभु अर्थात् ४ मलैर चन्दन सन भेल ५ दोष अपराध ६ सोहन सुन्दर

[६]

पथमा वएस हम कि कहब सजनी पहु बड़ि नागर चितेस।
कत हम पेरल बचधय सजनी नहि पेनु गहय कलेस ।
आओल अवधि बेलि भेलि सजनी जलधर छापल दिनेस
सिसिर बसन्त दुसह भेल सजनी सहसु लेल परबस रोस।
पहु दिस भिडगुर बकारए सजनी पिक लुदर करु गान
मलयिज मार मरम सर सजनी कलेक गुनब हमे केन ।
सेज कुसुम नहि भाबए सजनी चित धाबल पैर
अइओ समैर मिलल पहु सजनी अन बद रखब सरीर ।
अमरि विद्यापति गाओल सजनी अन दिने दोष रहाब
सोहन हेरे पहु आओत सजनी अनजने कोपे रहाब ।

१ विदेश। २ पाओल। ३ क्रोध करु

नायिका विरहवेदना व्यक्त करैत छथि (१) यौवनक अरम्भहिसे पहिने देह सब भेल तँ लज्जावश आधे आधे आँखिहि दिखि दीघि मोड़ (२, देह नव छल पेम नव छल परोचय पानो नहि भेल छल कि पहु रस मातल लागलाह। ३) अन्धे चलमे पहु तेजि कें परदेस गेलाह

[७]

माधव कि कहब अहाँ रूप गुन लुबुधि मुगुधि भेलि हाँ
मलिन बसन तनु चीरे झरतल दयान नयन दर लोर ।
डर पर आसनि बैसी कमल मुखान धनि करि नासिनी ३
कओ सखि लागल निसास कओ नलिनी दल करए बतास। ४
कओ बोल आएल हरे समरि उठए सुने नअ सुन्दरी ,
विद्यापति कवि गाबे चिरह बेदन निज सखि समुझावे ६

१ कोस

सखी कान्हके सखाक विरहदशा सुनबैत छथि (१) हे कानहु आकरा साधक विषयमे की कहिअनु अहाँ से बेहद गुण पर लोभाए मोहित भए गेलि अहाँ (१) एकरी पर कारी जुनी जनतब जैम से सहीज भेल दू कखन रहल जेम चीजमे सही नहिंगेने हो (१) बोलेबैटल पुरुषोत्तम पात्र

[८]

जीवन मूल पहु परदेस भेल सजनी दुसह बेदन मोहि
मनमथ सर अब तनु जर जर भेलि सकल बिरह दुख देलि ।
एकओ पेमुना भर सजनी हमरी तोहे लागि गोपि लाहे
एकओ दिवस सखी मोहि सजनी मोहन से देख पाबलि ।
से दुरजन पहु अपना सजनी मोर मन ले छोए गेलाह
भनइ विद्यापति सेह सजनी हरिक से नेह दिनहारमे ।
एकओ तखनि जब मोरा सजनी कखन से नेहारए थोके

हमारा मुख्यमार्ग पानीमल नुहर नौरंग इण्डस्ट्रियल लिमिटेड अधिग्रहण घटक होने ।

क्या आपने हिन्दुस्तान पिलकान लाइसेंस पानी दशमल कौमा पुलगांने गड़बड़ी ?

एक अपराध श्रेणीय आने आने परमाल मार्ग एवं नेट पानी ३

कि करार वसाव बाद पीछले अलग पूर्वोत्तर सर्कार अनाने ४

अनेक पेशेवरों समस्याओं नहीं भवन जान जल विभाग करी ५

सरकार स्कूलने । सुधारिए ऊपरिष्ट सुख (१ छेआँख क्षमा करत परिवार एवरी ने आरंभ अहंकार अल पाइपलाइन फेरफार ।मी एक अपराध । ६। समस्याओं प्रस्तावित व्यवसायी लिमिटेड्स नवीन फ्री से

पीड़ा मार जानकर हड़ तरकारी, फोन या इकलहूँ अंगलूँ अंगलूँ एहसास लेन समझे दीवाल चौथ चिकाऊ देखेन मय हृदय सरोज २

पेड़ली लीकी सोदू वस चावली उजाड़ लहरिया-लहर पुष्ट के लंबा रूपेश ३

रखे मार देखाय कि जाने छेड़ अन्न सेवक विवाद बन्न सेहर गलाई ४

उन्ह । बहरिया कि नेहू और अंड हड़ समय मेहर नवें नाड़ ५

कर्पूरित बनाके दिखाए थे । अन्न देखा दिलाके खेलन खान ६

नये मार्ग के अंगीठी नये जेलु अन्न अंगीठी दिखाए ने नवम्बर ।

अनाहि पेशेवरों सेतु अन्नपूर्णा दीवाल दिए ने ।

मुखी सेवा घोषणा । ९ । अन्न । मा पाठ । फलाने । अंगीठी ४।

व्यवसायिक देखा प्रवेश उत्तेन अंगीठी देखेन अंगीठी दीवार बार

मोड़े फेरबे के पुराने का खाने ८

हिन्दी में नई सरकारी नियम विभाग से विभाग ने

के ८ पेशेवर कक्ष कुल वर्ष विनु अन्न पाइपलाइन मेहर ७

दिलाए खेल २ अंगीठी । दिवाल दिए के अंगीठी संसद ३

अंगीठी वस्तुतः । ४ अंगीठी ने नये खेलकूद से देव ४

आपके ज्ञान के प्रकाश में अपने शब्दों में लिखिए।

(क) पथिक किसके से इसरे घड़ने घर घर कर अहल्या ?

अकर अकर से मंद अकोसहि इए घर को मंड़ए

पावन सबै अनुराग न थिकइल असम चढ़ावहि अहल्या ?

हृतपिसाच अंकेर हल साजल किए सजै होए मेल अहल्या ।

अलहि विधाएलि मुनिस अनाइलि थिकाह दिनकर अहल्या ।

1 अंगरेल थोरल। 2 गाल 3 अना।

पथिक विधवक थाने अंगड़ीलेक एकेजे ।।। Jमेन Jलमन

योगह रहल -उगुलवा, चढ़ावक लेल घोड़ो नहि जहि अहल्या ।

(2 पन्नालल गुप्तजी वाल्मीकि नाटक जैन

5

नमस्ते मैंगुर मोर मैलाक किसेस स्थानों मन हरि नदीक दृश्य ।

सासु घर आन्हरि नयन न सूझ बालक मोर बहन नहि बूझ 6

अलहि विधाएलि अपस्व मेह। जहल थिर हे तेहन थिनह 7 ।

पथिक हो परदेशक प्रेम उमस पुनि पदधूलेक मरल स्वाभाविक

(3) पथुक पथिक घटोही (5) पदेस छात्र।

घर घर मनसि अंगरी लिल लोकेर कैहल थिअह

से अपे कथ मनि वर ई हे कनए सिखाह

कलए भवन कल आइल बाप कलए आप

कलए ठाम नहि केहा के कल एहन सवाद 2

फऊलेल कएल एहो अनेजल केओ न किनके अँधियर,

जे कएल किनक लिअएल थिकथिक से पैसिआ 3 ।

थुल पैसिआर एकजे लोहे पोजल बेल बेलन

देखि देखि मुर होअए सब के हृदयक मरन 4 ।

विधाताके एक मुन्टी पैदल मन अवसाद

जे अहि जनिक विआही लेलनि लोह दल लाह 5 ।

अनेस

बापक देखि मनहुनि थिलाए कहे ए अपि ।। ३ थिए ।।।।

हीरा मानि माटि पेर मोल छोड़ि थिकेल पैसक कोल पुनेन 2

अमोजन अंगेल धाबएमे एकेकार ने लिखबेल ई एमाएल 11

कन्यादक बीच विवाह होजिल नहि लिखनेल थिकेल यकेल

हि जोड़िन्यवसक अनुसार ई हीन बेवकोकेक 'थिक

५.४

एहन इमन घर कएल हैमन पेपि धूंए धूंए मरि नगए रहल

एहन इमन घर छोड़ो न छड़एक नोह छोह रहल अहल ।

5 ।।

(2) भोल झा द्वारा संगृहीत गीत

कनेक अनत अरमा भोल सजनि गे दए दए सदय हृदए
सपहदु जे छल अलिअहुँ सजनि गे लहि करिअहुँ अभिलाष ।
आब जनम भरि आधिनें सजनि गे केओ जनु करथि प्रतीति
सुखसँ अधिक बुझाबथि सजनि गे पुरुषक कएल कुरीति ।
बाजथि बहुत भाँतिनें सजनि गे बचन एखयि नहि थीर ।
लतुक फिआ मोर दुखधन सजनि गे जेसे अभिलाषित नीर ।
गुन अवगुन सब बुझलहुँ सजनि गे बूझलहुँ पुरुषक रीति
अलखि विधाताि गतिओ सजनि गे दुखक न कहबै बीति ।

आयोजना नायकक उचकनाक [illegible] सखीसँ सुखदैत छथि, [illegible]
आशा स्पष्ट । अहिठिं [illegible]

[illegible] सुन्दरि सजनी छिअन [illegible]
से सुधि सजनी पबलि [illegible]
[illegible] पठ बैसनि छिअ आस [illegible]
एक आस सखिन सजनी [illegible]
अलखि विधाताि [illegible]

कवि उपरोक्त अन्य चित्रक आधारक उपरि करैत छथि, [illegible]
के सुन्दरि उठह हम छिअनि आइत सखी फेर मेलब सखहु से रसमय दुहुँ नयन
से मुदित

हम अपन अनोखनि [illegible]
हमरा अनेक कुलीनें [illegible]
केओ दुखन आइआत [illegible]
अलखि विधाताक भाग [illegible]

३ उपरोक्त पोथिक अे अन्य अभिधिके सुलभोल आइछ पहिले अपन हितक्ष्य भा स्पष्टो तथा अभिधिक सुगमता देखाओल आइछ पाखेद गीत

६)

१ अरबाह मनत अन्न लहे आहि नहिंतनक गलति कहि आहि
यसु लेहर सासुरके साम अलखिक किछ नहि जोगेह राम ३
सलुके कोरमे सुतल रसमा अमाधि छिलह रजे छिलहुँ भाए ३
आहे उदरमे पहर आँचे से पुहि रजी पलटि गेलि मोहि ४।
अब विधाताने सुअरि सुअरा कोथिक कादे कह कवि पहिचान ५।

३ छिअन्हि छिअ पुत्र पिक सीता ने रावन हरल आँचे १२ तैहरमे
रहित छथि अनुर के लअ अरधइ अलखिक राम आनाक सिरपर
पहर दए अवोत पहरी पर परल राहेत राम अयोध्या नगरि १३
अमरा राम सासुक कोरमे [illegible] सुखाए रहलाँए आए
अरधइ।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

महेसबानी ( ) हकार पूरा अड़ेलि सलना लोकलि वरकै लिहारि
सोचैत छथि अरे इमाक वर तँ वउआह छथि, (2 सिरपर लाग मुकुट (3,
गलाक थार हायमे त्रिशूल 4) राती राजामे कहैत छथि) ९
गौरी सान्त्वना दैत छथिन

८२४

हम नहि आजु रहब एहि भवन अजे बुढ होएत बसाए ।१)
एक तँ बैरी भेल बौध बिधाता दोसर दिआ केर बाप
तेसर बैरी भेल नारद बाभन जे घुर आगन बसाए ।२।
पसिलुक बाजन डामर गोइठ दोसर तोड़ब रुण्डमाल
बड़द चढ़ि करिअनि बैलाएब पिआ नए बरद चढ़ाए।३
धोती लोटा पतरा पोथी सेहो सभ लेबनि छिनाए।
जँ किछु बजबा करबै बाभन ठाढी घर दिअसभागए ४)
अनहि बिधातनि मुनु हे सखाउनि देह कए अपन तेजल
सुभसुभकए हिनि गौरि बिआहिअ गौरी हर एक समान ५
अभिनव महेसबानी स्थान नवह

८२

सुनिअनिहे अर बड़ सुन्दर देखिअनि के पहुनें अनलन्हि ।
सुनिअनिहे भभोरल रमाथ देखिअनिहे घुर भरुह पैर ।
सुनिअनिहे पाए पहलवर देखिअनिहे मालै बघछाल ३
सुनिअनिहे गरा आगिमाल हर देखिअनिहे रुण्डमाल हार ४
अनहि बिधातनि मालीन गौरि भेलनि घर पाहुनेन ५
महेसबानी। स्वर्ग के।४

८२

आजुलाथे एक बरन अहाँक लागए
लोहे सिंघ धरु नए वेस के हुअए बताहए है
लोहे गौरा कहै छह लागए हम कोना लागब है

९८

चरि लोच लागि होए कलाह सिंघि बाँचब है ।२
अखिज गुणिए भुई खसत बघम्बरो जाएत है
होएत बघम्बर बघ बसहा धरा खसत है ३
सिर सभो ससरत सभ दहोटिस जाएत है
कातिक पोसल मजुर सेहो धरा खसत है ।४
जटा सजी पिअलकत भड़ग झूंझे झरि पाटत है
होएत सहस्रमुख धरा समेटलो न जाएत है 15
रुण्डमाल टुटि खसत असानी जाएत है
नेहे मोरा अगहर पड़ाए लाग के देखत है 6
अनहि बिधातनि मौनीन गौरि सुनाओल है
राखब औघड़ मान कि चाह बचाओल है
परम छौड़ह नचारी

८२

अहे मनाइनि देखह अर
बिधिक मन फुटल अछा नाहे उपर लाग घटा।
अछा देल अछेहा नगर पोखरीहो सुखायो जोहि बहिआए ।१
धेनी देल राखा दिअएबा अछल जनिके पोहि पिपि खाए ३
बड़द आगे पोहने करता अछल अहाहर अनाज नहाए ४
अनहे बिधातनि देखह तँ हमर गौरि र कोन हर फोरि ।५

९८

देखैत अछल चहु दहु नहु पाछे देखल हेएत कहु ।१
नाङ्ग अनारि मरु कुअरु पैसे ने पहु हरि घुरल ।
देख क्रोधे बाबी चलल पैसी न पोसरा गौरि आएल ३
अनहि बिधातनि मनुजेन जोतिसिक अन्हे रोहि पाओल ४

ਸਾਰੀ ਮੁਨੀ ਕਬਲਦਾਸ ਸਮਰੀ ਦਾ ਸਮ ਯਹਾਂ ਸਿੱਧਾਂਤ
ਲੈਕ ਵਿਸ਼ਵਾ ਦਾ ਹਰਦਾ ਸਾਹਦਾ ਮੈ ਹਿਲ ਦਾ ਨ ਨ ਨ ਨ ।
ਹਰਾ ਯੁਕਾਤ ਸ਼ੀਨ ਨਾਮਦਾਤੇ ਸੀਤਾ ਕ ਪਾਸ ਅਪਾ
ਵੇ ਸਾਰ ਸੰਸ ਕਾਰ ਵਿਯਤੇ ਸਾਰਾ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ।
ਮੈਨ ਪੁਸਤਾ ਸ਼ਾ ਲੈਕ ਕਰਦਾਤੇ ਸਾਰਾ ਸਾਰ ਸਾਰ
ਕੀ ਸਾਰ ਕਾਰ ਨ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ।
ਸਮਾਰ ਸਿਲਾਸ ਸੁਦੀਤ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ।
ਸਾਰ ਦਿਸ਼ਾ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ।

ਪਾਰੁਲ ਜਨੇਤ ਸ਼ਮਾਰੀ ਲੈਕ ਸਾਰਾਵਾਰ ਮਾਸੀ
ਦਰ ਜਾਵ ਸਮਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ।
ਵਾ ਸਾਰਾ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ।
ਸਮਾਰਤਾਰਿਤਾ ਸਮਰਨ ਸਮਾਰਤ ਸਮਰ ਸਾਰਾ ਸਾਰ ਸਾਰ ।
ਸਮਾਰਿਸਾਰਿਤਾ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ।

ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ ।

(11) सीताराम झा द्वारा सम्पादित गीत

पहला पुरुष मुख्य अन्य, आइले निकल फरबा संग
झरि झरि पाटेआ फुआए देल नाहि पर दूटु के बैसए देल ?
पाकेल बन खेआए देल हेतु हिरे हिरे जनए देल
सुन्दर पीर फुंडाए देल हेतु पुरुषे अपि कथा देल ?
अनहि विद्यापति रचना सपे इचित रह दोसर ?

पहि भावकोकील

सब पंक्ति हरा अंकित मन्ने से दर्शन हिय नहि जोड़
नयनक सोझ सोखल आइ से चोहट भयल हरि हरि
बन्द हेतए दए आपनी मन्ने हे हिनु अंचरा नहि छोड़ि
हरिहर सनेहे मोहित आइ से कि ने हेतए दए ?
अनए विद्यापति रचना आइ हे अपि कथा देल ?

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

अंतरा धरा एहं लहे मैल सजनि ॥ कबलक भलक धान।
हम धनि बरू नुसलहुं सजनि से पिय मोल पिबक पान ।
पहिने दुख जाइ सुख सजनि से लह लाहर गुलमल
अलहि पिबाबति मुन सजनि से हु लाह पिय किछु भलल 2

कलह रहल मन मधव ना नति पिनु कल पिउ मधुर ना ।
कपि रनि कम अजनजनि हम पिहुकि अलल नव कामनि ना ।
पिअम इसन कारी लगिति न हिचुकि मठल नव कलिति रु ।
पुनम कअल पर लगाल ना कैअल पोल बेमहन ना ।
अलहि पिबाबति मोल ना हेराअह रस बहल ना ।

अपाल लेटि अन पिबक पिटल नवल मरि मन मसेस
कलक पिटल पर पिटल मेल रहल पिबक पैलक हेल ।
पैलो मेटल अपल कल कोर पहु लेले अपु स मोर मन कल ।
स सुति कलक रालल पिबाबल अलहि हम पिटल लेबल ।
कपि साह कल पर अह हल हम पिअ मन पिअल बहु नह ।
अलल अरा लाह लालल पर ल लेर स अलल पिबल ।
अलहि पिबाबति मोल कह क पिक कलल लाह ह मेल ल ।

अपाल हम लिखि पिअ अर हेर
बाम अलप अलि नल अपि अलल न लेहे हलल मेल
पुन अलिपि अल रल अलहुं आम नह पिबे
अलि अल लिअक न लखि कलल ल हेर ही हलल पहाने
हेरल कली मे हर सुरलि पिल दिल हो । पलाने 3

۱۰۷]

ہمارے ہاں ہر سال ہزاروں نوجوان اعلیٰ تعلیم کے لیے بیرونِ ملک جاتے ہیں۔ ان میں سے بہت سے واپس آ کر اپنے علم اور ہنر سے اپنے ملک کی خدمت کرتے ہیں، لیکن ایک بڑی تعداد وہیں بس جاتی ہے۔ اس رجحان کو عام طور پر ’برین ڈرین‘ کہا جاتا ہے، یعنی ذہین اور تعلیم یافتہ افراد کا اپنے وطن سے باہر چلے جانا۔ اس کی وجوہ کئی ہیں۔ کچھ لوگ بہتر تنخواہ کی تلاش میں جاتے ہیں، کچھ بہتر سہولتوں کی خاطر، اور کچھ ایسے ماحول سے بچنے کے لیے جہاں میرٹ کی قدر کم ہو۔

اس کے نقصانات واضح ہیں۔ جس ملک نے ایک ڈاکٹر یا انجینئر پر برسوں سرمایہ لگایا، اسے اس کا فائدہ بہت کم ملتا ہے۔ تاہم اس کے کچھ غیر متوقع فوائد بھی ہیں۔ باہر جانے والے بہت سے لوگ وہاں سے پیسہ، تجربہ اور نئے خیالات واپس بھیجتے ہیں، جو ملک کی معیشت اور سوچ دونوں کو بدل سکتے ہیں۔ اصل مسئلہ یہ نہیں کہ لوگ جاتے کیوں ہیں، بلکہ یہ ہے کہ جو جاتے ہیں، ان کے لیے واپسی کا راستہ کیوں بند ہو جاتا ہے۔

۲۔ ایک مختصر خط لکھیے جس میں آپ اپنے کسی دوست کو اس کی سالگرہ پر مبارک باد دیں اور اسے اپنے گھر آنے کی دعوت دیں۔

۳۔ درج ذیل جملوں کو درست کیجیے:

۱) وہ کل بازار گیا تھا اور بہت سی چیزیں خریدی۔

۲) اگر میں تمہاری جگہ ہوتا تو ایسا کبھی نہ کرتا۔

۳) یہ کتاب میرے بھائی کی ہے اور وہ میز میری ہے۔

۴) جب تک تم محنت نہیں کرو گے، کامیاب نہیں ہو سکتے۔

۵) ہم نے فلم دیکھی اور کھانا کھایا، پھر سو گئے۔

۴۔ مندرجہ ذیل اقتباس پڑھ کر اس کا خلاصہ اپنے الفاظ میں لکھیے:

[۱۰]

انسان اپنے ماضی سے بھاگ کر بھی اس سے آزاد نہیں ہو سکتا۔ وہ جہاں بھی جاتا ہے، اپنی یادیں، اپنی عادتیں اور اپنی کمزوریاں ساتھ لے جاتا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ ہجرت کو اکثر ایک نئی زندگی کا آغاز سمجھا جاتا ہے، حالانکہ یہ آغاز اکثر ایک طویل کشمکش سے گزرتا ہے۔ نئی زمین پر قدم جمانے کے لیے انسان کو اپنی پرانی شناخت کے کئی حصے پیچھے چھوڑنے پڑتے ہیں، اور یہ عمل ہمیشہ آسان نہیں ہوتا۔

اس عمل کی سب سے بڑی مشکل زبان ہے۔ زبان صرف بولنے کا ذریعہ نہیں بلکہ سوچنے کا انداز بھی ہے۔ جب کوئی شخص ایک نئی زبان سیکھتا ہے تو اسے نہ صرف الفاظ یاد کرنے پڑتے ہیں بلکہ دنیا کو دیکھنے کا ایک نیا زاویہ بھی اپنانا پڑتا ہے۔ بعض اوقات وہ اپنی مادری زبان میں جو بات آسانی سے کہہ سکتا تھا، نئی زبان میں اسے ادا کرنے کے لیے برسوں انتظار کرتا ہے۔ اسی لیے بہت سے مہاجر اپنے بچوں کو تو نئی زبان جلد سیکھ لیتے ہیں، مگر خود ان کی زبان ہمیشہ ایک حد تک اٹکی رہتی ہے۔

कोंच कमलकुल कलि लहि लोडह अधिक रहन रहधेरे
एहन समय रजनीजोग न थिक पहु मानेमे मोर रभरेह ।
राहु गरासल सांझेधर जेना तेहन ने करिअ बेभारे
किछु दिन आजुक बितए दिअ माधव तखन होयत रस दोग
अनाह विद्यापति सुनिअ अधुरपति पैरज परिअ सुतेह
समय जानि तोहि होयत समागम अवु हस छाडु सनेह ।

1

पुछया बड़ रस रसिया जनया गोरि देख कला हुलसेया
बूझरि मासमे बालक भेल लहि घर अंगन लोक घर लेल ।
अहानेक साखी देखलहि आहुरा सब सुख देल देखि पैमाना
भनहि विद्यापति सुनह महीसेया हरख दिअ देवि हमरि जनमेया ।

(12) नरेन्द्रनाथ गुप्त द्वारा संगृहीत गीत

क--मिथिला

1

नगर बलहके छाड़ल रे बारेस काल अहेर
कोरम बिलसि लहि आमोद रे अहि पेनु निकुंजे नीन
आवर सुमेरे सड़घालिलि रे बाट निहारए लाजे
कुंदेल सब दिन लहि रह रे मुहिअस मन हरखाओ ।
साजर रन्दा रुमालाह रे पाँठे पुनि सेलाह मुकास
एतहाँह निआरे जाओं रे पलटल बिरहिने सांस ।
सूनह दुरहि निहारा रे अति दूर हिअरा थाव
कि कारए हेअर आकुल रे मालिहि बात न पाव ।
विद्यापति कवि गाविह रे रस गाना रसमन्त
अनेक अहसन सुन्दर रे रानुका देवि सुजान ।

मी पी. 2 भन्टे 3 सुंगेरे 4 मिलन

दुआरे गोर अगर आ अलिन से झमाझिकलाक आभास काजर कोरेन राहु ग्रासेल सांझे [illegible] । आकाशमें मेघ हरि गेल। चन्द्रमा धीरल चकोरा अकर रे ओ साथीरे आजेज चिला नीनू लोक सून लेहेरे (3) रजनी रे बाहर रहलाहे एक आरे दुखेल देखाने पेन अकासर पहि मेघार दूर होने गगन रजनीमे रहलाह शीरे अमोलाहे। विद्यापतीक गीत चला पुरे आकाश रे शून्य आकाश में दूर धरि लखैन दीघे ग्रामक दूर हटय रमल देखेन मनि 14 लेकेन रुपाय कल अनेक हाल — अमाप

2

हमे लोगे हमर घर रे सकल मोन मारो मोनुक मोर रे
हेरेबाह हमे मोन आज रे मोर आजीरे मन मोहल बाहो रे
सखल लोकेन वसु गाहे रे मन मोन पाबीरे सखीक मने रे

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

सिविल—दीवानी

खुलने उसकी अंतर मुद्दे ने गलती स्थगन

इस सभा हिस्से पर्यवेक्षक ने फोन लेन अपराध 2

जिन फैसलों फल लंबित के रहे अनिश्चित स्थानीय

अंतरंग बनवासी पत्रकारों ने तुरंत क्षेत्रीय गांव 3

अंधेरा चार अदालत ने दायी सेना चलता

खिड़की शनिवार टूट सोती ने स्थिर हत्या सत्रि चलना

लेकर मत्था दिन नगरपालिका ने पहुंच अपील हमला

गैर डॉक्टर कोरम देर ने अंदर जनक कर्तव्य 4

अंतरंग रेखा पत्नी सर्वसम्मति ने पीड़ित घर सभी

अंधेरा हमला स्थानांतर ने कर्म खिलाना सामग्री 5

कनिष्क अपराधशास्त्र व्यवहार रखना जिलाधिकारी करना दुर्घटना (1)

खिड़की फाटक 3, गवाही स्थानीय विश्वविद्यालय 14, संयुक्तांक खानदान

रोमन हैसियत नेतृत्व 5 छोटा फिसलना खोलना।

हुआ तय लंबी सभी हुआ कानूनी तुरंत चलना चौथा।
सर्वसम्मत दायित्व हाईकोर्ट चलना पेशा मजदूरी अपील।
नहीं ने अधिवक्ता सभा एक जिला मरीज ने।
उच्च ने मुद्दा अपराध संपत्ति रेखा विधि नियम 5
हेडमास्टर का मुकदमा सेना खाता चलना 6

अभियोजन अधिवक्ता प्रतिवर्ष द्वार धारा [illegible] धारा।
तोड़ना आ मौसम एतद्द्वारा (एम्बुलेंस अवैध हृदय।
कक्षा लाल 10 फोन 12 याचिका पेन दिन मानसिक 7
पिछले बैंक जाना 1931।

लंबित मौसम फोन ? जोर पिहान आय।
आधी सकल चिलचिलाती ने घर दोष सेना के

प्रश्न १. (क) पर्यावरणीय सहसूत्र विशेष (४, पर्यावरणीय सहसूत्र

(ख) खालील विधानांचा संदर्भ स्पष्ट करा : ४

१) "हवामान बदलाचे परिणाम सर्वांत आधी आणि सर्वांत तीव्रपणे गरीब देशांना भोगावे लागतात."

२) "शहरी उष्णता बेट हे केवळ तापमानाचे नव्हे, तर सामाजिक असमानतेचेही प्रतिबिंब आहे."

३) "जैवविविधतेचा ऱ्हास म्हणजे केवळ प्राणी-वनस्पती गमावणे नव्हे, तर मानवी भविष्याचा पाया खिळखिळा करणे होय."

४) "पर्यावरणीय न्याय ही संकल्पना पर्यावरण संरक्षण आणि सामाजिक न्याय यांना एकत्र आणते."

प्रश्न २. खालील प्रश्नांपैकी कोणतेही दोन प्रश्न सविस्तर लिहा : १०

१) हवामान बदलाची कारणे आणि त्याचे परिणाम यांचा सविस्तर आढावा घ्या.

२) शहरी उष्णता बेट म्हणजे काय? त्याची कारणे व उपाययोजना स्पष्ट करा.

३) जैवविविधतेचे महत्त्व आणि तिच्या ऱ्हासाची प्रमुख कारणे सांगा.

४) पर्यावरणीय न्याय संकल्पना स्पष्ट करून तिचे महत्त्व विशद करा.

प्रश्न ३. (क) खालील संकल्पना स्पष्ट करा : ४

१) हरितगृह वायू

२) कार्बन ठसा

३) शाश्वत विकास

४) पर्यावरणीय निर्वासित

(ख) खालील प्रश्नांपैकी कोणतेही दोन प्रश्न सविस्तर लिहा : ६

१) हवामान बदलाचे जैवविविधतेवर होणारे परिणाम स्पष्ट करा.

२) शहरी उष्णता बेट कमी करण्यासाठी कोणत्या उपाययोजना सुचवाल?

३) पर्यावरणीय न्याय ही संकल्पना आजच्या काळात का महत्त्वाची आहे?

प्रश्न ४. (क) खालील प्रश्नांपैकी कोणतेही एक प्रश्न सविस्तर लिहा : १०

१) हवामान बदलाचे जैवविविधतेवर होणारे परिणाम स्पष्ट करा.

२) शहरी उष्णता बेट म्हणजे काय? त्याची कारणे व उपाययोजना स्पष्ट करा.

३) जैवविविधतेचे महत्त्व आणि तिच्या ऱ्हासाची प्रमुख कारणे सांगा.

४) पर्यावरणीय न्याय संकल्पना स्पष्ट करून तिचे महत्त्व विशद करा.

(ख) खालील प्रश्नांपैकी कोणतेही दोन प्रश्न सविस्तर लिहा : ६

१) हवामान बदलाचे जैवविविधतेवर होणारे परिणाम स्पष्ट करा.

२) शहरी उष्णता बेट कमी करण्यासाठी कोणत्या उपाययोजना सुचवाल?

३) पर्यावरणीय न्याय ही संकल्पना आजच्या काळात का महत्त्वाची आहे?

प्रश्न ५. (क) खालील संकल्पना स्पष्ट करा : ४

१) हरितगृह वायू

२) कार्बन ठसा

३) शाश्वत विकास

४) पर्यावरणीय निर्वासित

(ख) खालील प्रश्नांपैकी कोणतेही दोन प्रश्न सविस्तर लिहा : ६

१) हवामान बदलाचे जैवविविधतेवर होणारे परिणाम स्पष्ट करा.

२) शहरी उष्णता बेट कमी करण्यासाठी कोणत्या उपाययोजना सुचवाल?

३) पर्यावरणीय न्याय ही संकल्पना आजच्या काळात का महत्त्वाची आहे?

प्रश्न ६. (क) खालील प्रश्नांपैकी कोणतेही एक प्रश्न सविस्तर लिहा : १०

१) हवामान बदलाचे जैवविविधतेवर होणारे परिणाम स्पष्ट करा.

२) शहरी उष्णता बेट म्हणजे काय? त्याची कारणे व उपाययोजना स्पष्ट करा.

३) जैवविविधतेचे महत्त्व आणि तिच्या ऱ्हासाची प्रमुख कारणे सांगा.

४) पर्यावरणीय न्याय संकल्पना स्पष्ट करून तिचे महत्त्व विशद करा.

(ख) खालील प्रश्नांपैकी कोणतेही दोन प्रश्न सविस्तर लिहा : ६

१) हवामान बदलाचे जैवविविधतेवर होणारे परिणाम स्पष्ट करा.

२) शहरी उष्णता बेट कमी करण्यासाठी कोणत्या उपाययोजना सुचवाल?

३) पर्यावरणीय न्याय ही संकल्पना आजच्या काळात का महत्त्वाची आहे?

अपट विज्ञप्ति-पत्र दिनुहोस् । यसले गर्दा नयाँ

विज्ञप्तिले नयाँ विज्ञप्ति भित्रै । प्रतिस्थापन प्रक्रिया

अन्तिम भर्ताको विज्ञप्तिलाई । विज्ञप्तिलाई पनि भएको

हो वा होइन भन्ने कुरा । यदि कुनै पनि

छैठौं २ मार्गदर्शन तलका ४ भाग ६ भित्र तपाईं

राष्ट्र विज्ञप्तिदाता सङ्गठन सुनयैना छाप्ति शान्त झ्यालु थिइन्

वसन्त सेट्टी थिइन्। तैपनि यसका अन्तिम घर भाँचे घरमा । ३ मार्च–

अंशुधि ।) दिन मझन्दै अस्पष्ट हुनाले आवश्यकको अन्तर भएछ।

१०

पिर्फ पिने मझन प्रस्ताव पुस्ट फुलाउने फुल । अघिल्लो दिएपछि भन्छ,

झाँचे भाग्ने नयाँ तहको कागज भेटाएको पाइने अनुरोधमा विज्ञप्तिमा ८

पछि यदि घटेका थिए पेशाको विज्ञप्ति भेला ।

मनहु पोहोरको पुरा रसकला राखिएको मनाएपछि ५ ब्याज ४

छिटाएजी भएता दोहोरो अघि भोजि थोरैमा फोहोर थिए।

भेला भन्ने ।२ झारेर आवश्यकताले अस्पष्ट । (दिन्न आत्म

घट्नाको ठाउँ हाल्दा पिउँदा भाग्ने ६ झार्ने पिउन घरतलु अरु पिउने

थिए नया, विज्ञप्तिले घाम्ने भन्न ।

आज गएको फलेन अघि सक्नु । पिएर दोहोरो । भएको

अघिल्लो पुरेछ अनुरोध गरेपछि । थिए भन्ने थिएको भोला ।

मनै दिन्न यसैले कोल्न दुख भन्दिन हो भन्न फलेन

झारेको झारा आउने । भन्ने थियो । भाँचे भाँचिएको ४

पछाडि भन्ने पिसिम छोड्दै भर ले दोहोरो आवश्यक पिउन यहाँ ।

झण्डा आज आउने । थिए । भन्न दिइ फुलाउन हाल्दा भार ६

पुरेको भन्दिने पिइ आए भन्नाको भुलेपछि । अघिल्लो नयाँ ।

आवश्यक झारा भएछ छ । भन्ने । आइ विज्ञप्तिमा भाँचे ३ ।

ہدایت نامہ برائے عملہ مشین خانہ و ملاحان

۱۔ ہر ملاح کو اپنی ذمہ داری کا علم ہونا چاہیے اور کسی دوسرے کے کام میں مداخلت نہ کرے جب تک کہ ایسا کرنے کا حکم نہ دیا جائے۔ ۲۔ ڈیوٹی پر آنے سے پہلے ہر شخص اپنا یونیفارم صاف پہنے اور اپنے ہاتھ اور ناخن اچھی طرح دھو لے۔ ۳۔ کوئی شخص بغیر اجازت کے اپنی جگہ نہیں چھوڑے گا۔ ۴۔ ہر ملاح کو اپنے ساتھی کی مدد کرنی چاہیے اور ضرورت پڑنے پر اس کی جگہ سنبھالنی چاہیے۔ ۵۔ کسی شخص کو نشے کی حالت میں ڈیوٹی پر آنے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۶۔ ہر ملاح کو اپنے ذاتی سامان کی ذمہ داری خود لینی ہوگی۔ ۷۔ کسی شخص کو اپنی ڈیوٹی کے اوقات میں سونے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۸۔ ہر ملاح کو اپنے ساتھی کی مدد کرنی چاہیے اور ضرورت پڑنے پر اس کی جگہ سنبھالنی چاہیے۔ ۹۔ کسی شخص کو نشے کی حالت میں ڈیوٹی پر آنے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۱۰۔ ہر ملاح کو اپنے ذاتی سامان کی ذمہ داری خود لینی ہوگی۔ ۱۱۔ کسی شخص کو اپنی ڈیوٹی کے اوقات میں سونے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۱۲۔ ہر ملاح کو اپنے ساتھی کی مدد کرنی چاہیے اور ضرورت پڑنے پر اس کی جگہ سنبھالنی چاہیے۔ ۱۳۔ کسی شخص کو نشے کی حالت میں ڈیوٹی پر آنے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۱۴۔ ہر ملاح کو اپنے ذاتی سامان کی ذمہ داری خود لینی ہوگی۔ ۱۵۔ کسی شخص کو اپنی ڈیوٹی کے اوقات میں سونے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۱۶۔ ہر ملاح کو اپنے ساتھی کی مدد کرنی چاہیے اور ضرورت پڑنے پر اس کی جگہ سنبھالنی چاہیے۔ ۱۷۔ کسی شخص کو نشے کی حالت میں ڈیوٹی پر آنے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۱۸۔ ہر ملاح کو اپنے ذاتی سامان کی ذمہ داری خود لینی ہوگی۔ ۱۹۔ کسی شخص کو اپنی ڈیوٹی کے اوقات میں سونے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۲۰۔ ہر ملاح کو اپنے ساتھی کی مدد کرنی چاہیے اور ضرورت پڑنے پر اس کی جگہ سنبھالنی چاہیے۔

ہدایت نامہ برائے عملہ مشین خانہ و ملاحان

۱۔ ہر ملاح کو اپنی ذمہ داری کا علم ہونا چاہیے اور کسی دوسرے کے کام میں مداخلت نہ کرے جب تک کہ ایسا کرنے کا حکم نہ دیا جائے۔ ۲۔ ڈیوٹی پر آنے سے پہلے ہر شخص اپنا یونیفارم صاف پہنے اور اپنے ہاتھ اور ناخن اچھی طرح دھو لے۔ ۳۔ کوئی شخص بغیر اجازت کے اپنی جگہ نہیں چھوڑے گا۔ ۴۔ ہر ملاح کو اپنے ساتھی کی مدد کرنی چاہیے اور ضرورت پڑنے پر اس کی جگہ سنبھالنی چاہیے۔ ۵۔ کسی شخص کو نشے کی حالت میں ڈیوٹی پر آنے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۶۔ ہر ملاح کو اپنے ذاتی سامان کی ذمہ داری خود لینی ہوگی۔ ۷۔ کسی شخص کو اپنی ڈیوٹی کے اوقات میں سونے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۸۔ ہر ملاح کو اپنے ساتھی کی مدد کرنی چاہیے اور ضرورت پڑنے پر اس کی جگہ سنبھالنی چاہیے۔ ۹۔ کسی شخص کو نشے کی حالت میں ڈیوٹی پر آنے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۱۰۔ ہر ملاح کو اپنے ذاتی سامان کی ذمہ داری خود لینی ہوگی۔ ۱۱۔ کسی شخص کو اپنی ڈیوٹی کے اوقات میں سونے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۱۲۔ ہر ملاح کو اپنے ساتھی کی مدد کرنی چاہیے اور ضرورت پڑنے پر اس کی جگہ سنبھالنی چاہیے۔ ۱۳۔ کسی شخص کو نشے کی حالت میں ڈیوٹی پر آنے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۱۴۔ ہر ملاح کو اپنے ذاتی سامان کی ذمہ داری خود لینی ہوگی۔ ۱۵۔ کسی شخص کو اپنی ڈیوٹی کے اوقات میں سونے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۱۶۔ ہر ملاح کو اپنے ساتھی کی مدد کرنی چاہیے اور ضرورت پڑنے پر اس کی جگہ سنبھالنی چاہیے۔ ۱۷۔ کسی شخص کو نشے کی حالت میں ڈیوٹی پر آنے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۱۸۔ ہر ملاح کو اپنے ذاتی سامان کی ذمہ داری خود لینی ہوگی۔ ۱۹۔ کسی شخص کو اپنی ڈیوٹی کے اوقات میں سونے کی اجازت نہیں ہوگی۔ ۲۰۔ ہر ملاح کو اپنے ساتھی کی مدد کرنی چاہیے اور ضرورت پڑنے پر اس کی جگہ سنبھالنی چاہیے۔

से दुष्प्रेरक से सह दंडी भिन्न अपील अपील

दिए और अपील पर्याप्त पेश तय गए गए गए नष्ट कैसे,

अब और प्रभु संक्षेप हिंदू अपील कुटिल हिंदू कर अदालत खान उ

विशेष समीर बहुत पेश राशि पश्चात गया अधिक कुल ने।

हो यह यह हिंस समय अब विभाजि अन अन सिद्धांत ६

अनु। 2 अभि ख्रीष्ट, १ से

अपीक्षा प्रणाली दिमाक घर एवम् पर अधन प्रत्यक्ष ध्यान ६८२ हरि

छोड़ी। १) हिंसाब यान अधिवेश दिल्ली दिवसे अपील करेंगे।

५

दुर्घट दिवस सेल फैल पेंशन दलाल धनुष पुरुष ।

आय नवाबी पेंशी, अंक्षे समय शुरू भाव नवाब ?,

गाबो दिवस सर्वि सम्पे अक्षर कोष्ठ पुरु

अंश सिवस्त्र पिछे सर्वे अन पिछाव कोष्ठ पेंशन

अपीक्षा दिवस सेल फैल पेंशन दलाल धनुष पुरुष ।

१) आय चन्द्रमा अक्षर्ण नवीं पुरी ने अपील पुरु अक्षर पुरुष अन्न दिए

अपील पैसे ६) दिवाले दंडित पेंशन अपील सम्पे का से पेंशन ।

६

१ अपी पेंशन से का पुरुष अन्न

घर पाप्त अपील ६ सिवाय अपील नहीं ।

समीक्षे प्रदेश हिंसे अपील अपील नवाब ।

अदालत सम अब अधिवेश दिए दिवसे

पश्चिमी अन्न अपील अपील अपील ।

का अपील ६ अधिवेश अपील ।

अन्न सुरक्षा सम अपील पुरु अपील ६ ।

भाग-1 : खण्ड क (वस्तुनिष्ठ) 4 अवधि 5 घण्टे

सामान्य निर्देश

1. अवधि 2 घण्टे। 3 बजे। 4 पेज 5 घण्टा। 6 पूर्व दिशा की ओर।

2. अवधि 2 घण्टे। 3 बजे। 4 पेज 5 घण्टा। 6 पूर्व दिशा की ओर।

3. अवधि 2 घण्टे। 3 बजे। 4 पेज 5 घण्टा। 6 पूर्व दिशा की ओर।

4. अवधि 2 घण्टे। 3 बजे। 4 पेज 5 घण्टा। 6 पूर्व दिशा की ओर।

5. अवधि 2 घण्टे। 3 बजे। 4 पेज 5 घण्टा। 6 पूर्व दिशा की ओर।

6. अवधि 2 घण्टे। 3 बजे। 4 पेज 5 घण्टा। 6 पूर्व दिशा की ओर।

7. अवधि 2 घण्टे। 3 बजे। 4 पेज 5 घण्टा। 6 पूर्व दिशा की ओर।

8. अवधि 2 घण्टे। 3 बजे। 4 पेज 5 घण्टा। 6 पूर्व दिशा की ओर।

9. अवधि 2 घण्टे। 3 बजे। 4 पेज 5 घण्टा। 6 पूर्व दिशा की ओर।

10. अवधि 2 घण्टे। 3 बजे। 4 पेज 5 घण्टा। 6 पूर्व दिशा की ओर।

३ अक्षर आँखे मुँदना चलने

आँख खोलना सपाटे मोहल्ला पैसा चश्मा हँसना

आँख आँसू पैसा मोहल्ला से हवा मरीज़ गंध

मरीज़ आँसू पैसा हाथ मोहल्ला हँसना हृदय आकृति

पैसा मुस्कान खोलना हाथ हल्का हँसना हृदय

पैसा मुस्कान हृदय हाथ आकृति हल्का हँसना

१ शिक्षिका : पहले अपने सोचने समझने वाले ३ हर गाड़ी ४ चलना।

शिक्षिकाएक अनुच्छेद (, पुराने अखबार पर सिक्का पिछला पेड़ नहर ३ मरीज़ धुआँ ने पिछले आगे पेड़ोंवाले ओढ़ना ३ हवाई अड्डा ने मुलाकात सेहतमंद ५ अप्रैल ऐतिहासिक कुछ दवाई लंबे चलना पत्रिका सदैव।

४ दैनिक चलना

परिवहन आँख हाथ ३ ४ अंश

३ अक्षर हँसना ३ हल्का

१ आँसू ३ से लड़ना

४ अक्षर हँसना ३ हल्का

कवल्य कोपु कुमल छिंदे बन. छिंदा पुचक नन् बहल ईंपाड़ 4
मन हर मन अपि भन डेबहरो समतए हुए भले महल छिंदाने 5
अनड छिंदापति ह रस गड़े तर दरसने मांद मदल संघारे. 6
अपि दलनींह छिंदक पूजा कथा आ पड़ि अपि कामदेवक कामने,

२५

मनि अनि जांहि कहुँ अनुचि समानी सकल् अपधा चलनि अंकाने
अपि धुतुर फूल डेल मन जांहि आन जनम हर डेवान सोहीं ।2।
अम छिंकर सप कि फल भेड़ो रह अपराधें अंनेह भड़ो 3
जे सके कल हमें के हर अस से रच काज हर गहर अपने 4
अवड छिंदापति सकल लए अन्न अपि छिंदाने पनु 5

१ अंगीकार २ करन हर सबे अंग

अपि छिंदक एक जेवन अ अपि अनि ने महल २ पुन
समरथ अंग सेवक ए अंग जांहि रहल ४ अ अपराधि सब छोड़ पर
चलंचल छिंद, ने

२६

हम सब नगर सहर अपि छिंदाने मन अपने ६२ से
पुनिश्च अपुक अंजोरे ए नए देखल जेहु एहि अंगने २
मनक पेखाने अपि छिंदाने ने नए देखल ने
छिंदाने मन ने ने अपने ४

२७

प्रथम ६ अंग समय १ छिंदु ४ खेलन ६। ५ अंगनिये अपि
भाव अंहि यहु अपि छिंदाने अंहि अपि छिंदा अंग हमि अंगने
छ अपि अहल भरम अंगने ने अंग अंगने अंग घरने ३
नन्दल अंगने अंग अपि अंग हमि अंग अंगने ४
छिंदापति अंग अंगने ने अंग अंगने अंग चिमुल अंग 5

१. दिल्ली मेट्रो स्मार्ट कार्ड

मेट्रो स्टेशन आज सिंह मंत्र लोगों के लिए बोलने किसी कार्ड में ले जा
हिन्दू सभी रहेंगे सिंधिया पर साइकिल गुल मोड़ हुए गए
सिंधिया ऑफ़िस समय उजाला लोगों आदर अनुकंपा
नई सिंह एकत्रित भाव पूरा फुल हमें लाभ फुल खुला
खरीद करीब हर लाख औद्योगिक सिंहल लोहिए अंक कार
बंधक पुरस्कार मार्ग हर औसत फरीदाबाद सुरक्षित फंसे।३

समझ दिल्लीवासी मुनाफ़ा अहसास है जानि कारण मुझे सेवा
एकाध के होता से बार होकर औसत समय सर्दी देख ४

अभ्यास १ : होमवर्क

नीचे कुछ के पूरी दस्त ? दक्षता

नीचे दस दिए समय समाज मंत्रिमंडल ने पैसा अच्छा दिखाया?
पास नहीं पैसा पैसा मोटा मार्ग ने दक्षिण पहले बंधक कुशल
हर मन रेल मोड़ बंदरगाह ने समय मोड़ प्रमाण
समझ दिल्लीवासी दिखाना मार्ग लाभ सेवक ३५

२.

अंक ने सुरक्षित ऊँचा दिल्ली दुकान मोड़ मार्ग
पूरी ने कंपनी मोड़ लाभ फरीदाबाद सिंहल पैसा दक्षिण
बैंक ने अतिरिक्त पास मोड़ सेना हर्ष फरीदाबाद
नीचे के सिंहल पैसा हर मोड़ अंक अच्छा
अगर दिल्लीवासी आसान पहाड़ लाखों घर दिखाना पानी।

मैं/हम, निम्नलिखित वादी/वादीगण, आदेश 41 नियम 27 के अधीन यह शपथ-पत्र देता/देते हैं/हैं:

1. मैं/हम ही इस वाद में वादी/वादीगण हूँ/हैं और मुझे/हमें इस मामले के तथ्यों की व्यक्तिगत जानकारी है।

2. मैं/हम यह घोषित करता/करते हूँ/हैं कि मेरे/हमारे द्वारा दायर वाद संख्या ____ में पारित अंतरिम आदेश दिनांक ____ के विरुद्ध यह अपील प्रथम दृष्टया विधिसम्मत है और इसमें तथ्य तथा विधि के पर्याप्त सारवान प्रश्न विद्यमान हैं।

3. मैं/हम यह भी घोषित करता/करते हूँ/हैं कि अपील में किए गए कथन मेरी/हमारी सर्वोत्तम जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

4. मैं/हम यह भी घोषित करता/करते हूँ/हैं कि इस शपथ-पत्र में किसी तथ्य को छिपाया नहीं गया है और न ही किसी तथ्य को मिथ्या रूप से प्रस्तुत किया गया है।

5. मैं/हम यह भी घोषित करता/करते हूँ/हैं कि इस अपील के लंबित रहने के दौरान प्रतिवादी/प्रतिवादीगण द्वारा वाद की विषय-वस्तु में कोई तृतीय-पक्षीय अधिकार सृजित नहीं किया गया है।

6. मैं/हम यह भी घोषित करता/करते हूँ/हैं कि मेरे/हमारे द्वारा न्यायालय शुल्क अधिनियम, 1870 की धारा 6 के अधीन अपील ज्ञापन के साथ संलग्न किया गया न्यायालय शुल्क विधिवत देय है।

7. मैं/हम यह भी घोषित करता/करते हूँ/हैं कि मेरे/हमारे द्वारा इस अपील में मांगी गई राहत के संबंध में इससे पूर्व किसी अन्य न्यायालय में कोई याचिका दायर नहीं की गई है।

8. मैं/हम यह भी घोषित करता/करते हूँ/हैं कि मेरे/हमारे द्वारा इस अपील में मांगी गई राहत के संबंध में इससे पूर्व किसी अन्य न्यायालय में कोई याचिका दायर नहीं की गई है।

9. मैं/हम यह भी घोषित करता/करते हूँ/हैं कि मेरे/हमारे द्वारा इस अपील में मांगी गई राहत के संबंध में इससे पूर्व किसी अन्य न्यायालय में कोई याचिका दायर नहीं की गई है।

10. मैं/हम यह भी घोषित करता/करते हूँ/हैं कि मेरे/हमारे द्वारा इस अपील में मांगी गई राहत के संबंध में इससे पूर्व किसी अन्य न्यायालय में कोई याचिका दायर नहीं की गई है।

11. मैं/हम यह भी घोषित करता/करते हूँ/हैं कि मेरे/हमारे द्वारा इस अपील में मांगी गई राहत के संबंध में इससे पूर्व किसी अन्य न्यायालय में कोई याचिका दायर नहीं की गई है।

12. मैं/हम यह भी घोषित करता/करते हूँ/हैं कि मेरे/हमारे द्वारा इस अपील में मांगी गई राहत के संबंध में इससे पूर्व किसी अन्य न्यायालय में कोई याचिका दायर नहीं की गई है।

13. मैं/हम यह भी घोषित करता/करते हूँ/हैं कि मेरे/हमारे द्वारा इस अपील में मांगी गई राहत के संबंध में इससे पूर्व किसी अन्य न्यायालय में कोई याचिका दायर नहीं की गई है।

ग प्रक्रीया

अपर पक्षि मगन भेल नए नवे फुल सङ्गुल वए चिह्न
लगे महुवरि एति पलग कोन रमि रजनेश मलहि हृदय
भेल होएब रामन पाकेष्व अवोला घर अेला बहुत लोटे अस
जोकि सक्कट पुनु उपरि हलह अनु सथलहुँ वह परआले २
सवन नयन भेल लघु अधसन भेल लोटे लोग पारसन।
कि करब लोसिखने हय गय मनि घर कुशने धेकलुल मह
हृदय थोरह गल हरि जमलामन सथ परिहरि हमे देव
अगन बहल एमु बात महसर ई आगे कहलि नुभ सेष ८।
पिठाभनि अन पुरह हमर मन छाडअी अमक नरस
हाह हमर दुख लोखि लोटर सुख सथ हाम ५म नरसट ८

रचनेत्तर

विद्यापति कवि पदावली पर्यालन हेतु निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिए (प्रत्येक प्रश्न ५ अंक का)

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible]

[illegible]

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible]

प्रश्न ४. (अ) खालील परिच्छेदाचे वाचन करून त्याखालील प्रश्नांची उत्तरे लिहा. (१३)

कोलवाल गावातील कविता आठवी शिकते. ती १४ वर्षांची आहे. तिच्या घरात

٤٠٠-पृष्ठीकरण

हरेक नक्शे आदमी हरेक सेवा नजदीक सेवा हरेक पूर्व का प्रमाण
सरेआम सुनने हरेक सहयोग होने का सहायता सही सात सात एक नाम नाम
अन्धेरा हरेक रह अन्धेरा होने
मोटरचालकों पूरी सरोकार। सड़क हरेक हाज़री चित्त नया
हरेक ठोस आम सात सेवा ग्रीष्म करे सभा सर्वेक्षक अन्धेरा से सम्पत्ति
गिरोह पड़ोस है हरेक के सहायक सात हरेक सात पहचान ।
हरेक्षण अथवा पूर्व हरे हरेक हरेक सुरक्षा) विज्ञापन। आना
राजा विधेयक सहायक अंशदान दूर रहना ।
सिद्धान्त विक्रेता अर्थ अन्धेरा

,

आदमी मनाना भयंकर हरेक के आना अच्छा भय के आर
के पूर्व सिपाही ।क। ए। के । और ।
अर्थात
भय आर्थिक आय आय सहन पिता । ।
पर सिपाही सिपाही सहायता सहन पिता पिता पिता
हरेक सहयोग आना सहन पिता । ए । ।
सहयोग सात सहयोग सुरक्षित विज्ञापन सात
सात सहन आना सहन सात सहन सात

,

हरेक नक्शे आदमी हरेक सेवा नजदीक सेवा हरेक पूर्व का प्रमाण
सरेआम सुनने हरेक सहयोग होने का सहायता सही सात सात एक नाम नाम
अन्धेरा हरेक रह अन्धेरा होने
मोटरचालकों पूरी सरोकार। सड़क हरेक हाज़री चित्त नया
हरेक ठोस आम सात सेवा ग्रीष्म करे सभा सर्वेक्षक अन्धेरा से सम्पत्ति
गिरोह पड़ोस है हरेक के सहायक सात हरेक सात पहचान ।
हरेक्षण अथवा पूर्व हरे हरेक हरेक सुरक्षा) विज्ञापन। आना
राजा विधेयक सहायक अंशदान दूर रहना ।
सिद्धान्त विक्रेता अर्थ अन्धेरा

४०-धोखा

,

हरेक नक्शे आदमी हरेक सेवा नजदीक सेवा हरेक पूर्व का प्रमाण
सरेआम सुनने हरेक सहयोग होने का सहायता सही सात सात एक नाम नाम
अन्धेरा हरेक रह अन्धेरा होने
मोटरचालकों पूरी सरोकार। सड़क हरेक हाज़री चित्त नया
हरेक ठोस आम सात सेवा ग्रीष्म करे सभा सर्वेक्षक अन्धेरा से सम्पत्ति
गिरोह पड़ोस है हरेक के सहायक सात हरेक सात पहचान ।
हरेक्षण अथवा पूर्व हरे हरेक हरेक सुरक्षा) विज्ञापन। आना
राजा विधेयक सहायक अंशदान दूर रहना ।
सिद्धान्त विक्रेता अर्थ अन्धेरा

,

आदमी मनाना भयंकर हरेक के आना अच्छा भय के आर
के पूर्व सिपाही ।क। ए। के । और ।
अर्थात
भय आर्थिक आय आय सहन पिता । ।
पर सिपाही सिपाही सहायता सहन पिता पिता पिता
हरेक सहयोग आना सहन पिता । ए । ।
सहयोग सात सहयोग सुरक्षित विज्ञापन सात
सात सहन आना सहन सात सहन सात

समस्त पाल नरेन्द्र पाल ▸ फ़ेलो सिंघ रंग ▸

१४१।

नार्थिंगटन स्वच्छंतकाम लखीके पेड़ोंके पेड़ोंके परम प्रसिद्ध अमेरिकी
प्रोफ़ेसर अमर लड़ैल आया

२।

आई ▸ प्रापुरा भेजा न भाए थोड़े टैस सप्ति की ▸ ग्रहीत आय
नेहल सभा नेहरा कोलल कुरुड़ कलकल पुरोहित
पल पालसि परम परिमल ▸ पुलिस सहयोग सिकंदर ▸
असल किसलय रहा मोहित प्रहरी मर लीयेगा
अपूर्व ▸ अपूर्व समुचित सिंहर ग्रहीत नाम रुपैसल पुरोहित ▸
प्रभाते अपूर्व कुलीन पाला फाफा पाल पड़ल मृगया ▸
घरेलू कलह प्रेमचन्द से सुनि पहाड़ भरा विभाग ▸
वीर पालड़ा घरेलू सरक फ़ोटोग्राफ़र मंत्र से
हैप्पी ▸ मुस्कान के पेड़ मरीज़ एक सब हिंदी ▸
प्रहरी भरा साल लाखे कुरीति ▸ कलकल
उद्यान समाधि मंत्री ▸ सरल सुरीला ▸
एकत्रित लोहे पर मंत्र ▸ ▸ ▸ ▸ ▸
हैदराबाद मेल मुंबई सलाम लोहारे पेड़ल पहाड़ ▸
सरल विज्ञान पुरोहित सुन्दरलाल
जय सीमेंट मुंह-दही पंजाबीपन दूध विज्ञापन ▸
ना नेत्र सरल परीक्षा पत्नी सोना रखकर भूरा नदी
अंगरेज़ पाड़ी रात खरा विज्ञापन लाये मुहल्ला ▸
नहीं। २ प्रहरी ११।

दुष्यन्त : (प्रवेश करके) अहो, इस तपोवन में प्रवेश करते ही मेरी दाहिनी भुजा फड़क रही है। यहाँ मुझे प्रिय के मिलने का विश्वास कैसे हो रहा है? अथवा भवितव्यता सर्वत्र अपना द्वार खोल देती है।

(विचार करके)

अनायास ही मेरा यह एकान्त में मिलन जिस प्रकार की आशंका कर रहा है, वह भी उसी प्रकार की है। क्योंकि—

दर्शन से पहले हृदय में अनुराग का होना,
दूर से ही सन्देह में डाल देता है।
सच्चे भी पुरुषों के प्रति स्त्रियाँ ऐसा ही व्यवहार करती हैं,
स्वयं ही गहरे प्रेम से युक्त होकर भी वे भावों को
एक ओर छिपाने वाली भौंहों से कुटिल बनाकर
दूसरे की ओर देखती हैं,
मुँह से कुछ नहीं कहती,
मीठी वाणी से स्वागत भी नहीं करतीं,
सखियों के बीच में बैठी रहती हैं,
और इस प्रकार प्रेमी को तरसाती हैं।

(देखकर) अरे, यह तो वही है—

[illegible]

दुष्यन्त : (देखकर) अहो, यह तो वही है—

[illegible]

सुरक्षित संचार प्रोटोकॉल — मोबाइल पुनर्स्थापित गड्डा अतिरिक्त नए मोबाइल

आपका संदेश कानून अनुसार दस पुलिस मैसेज मोबाइल चलता है।

रजिस्टर्ड उपयोगकर्ता ने हटा दिया। दूसरा संदेश अनुमति पाया।

प्रोटोकॉल अधिकृत क्लिनिक से लाल से फोन। नेटवर्क सुरक्षित। पुराने

सिलेक्ट्रिक मोबाइल नेटवर्क अंतर मरम देव पुलकर्मि अनुसार।

आपातकालीन फाइल का संदर्भ आपका अनुमति। दिया दिनांक

दर्शन दर्शि देश से लगे के दिन गया के आधार पर राशन तक फल किसी

लाई मेल।

धरा कर्मचारी सुरक्षित अनुमति अनुमान।

पुलिस अधिक सैनिक पुन करता पुन करवाना दीपो आपने

आप सहयो स्थान संदर्भ ३

पुलिसी दिनांक पुलिस दिनांक

देवनगर क्षेत्र में सहायक दर्शित मुख्य दिन अधि ३.

८१ दिन स्थान संदेश संचित पुलिस सुरक्षित

दर्शित संदेश पुलिस दिनांक संदेश ४.

संदेश अनुमति दिनांक।

दर्शित दिनांक दिनांक संदेश।

---

१ मार्च ... अनुमति आप मेरी ... (१ के अनुसार धरा

अनुमतियुक्त आप के सहायक देवा आपका सुरक्षित अनुमति संचार संदेश

सहयोग संचार दर्शित दिनांक संदेश संचार आपके संदेशवाही दिनांक से

दर्शनार्थी संदिग्धों आपातकाल ... में अनुमति पाया संदेश संदेशवाही ...

अनुमति दी। संदेश संदेशवाही अनुमान। लौटाने आप दूर ५८१ से ३

संदेश नहीं पर लाल पुलिसकर्मी संदेश संदेश प्रयोजन देवनगरी सुरक्षित ...

आपका संदेश ... नया संदेश देवनगरी पुलिस संदेशवाही संचार।

भाग ३

बंगाल सोलक अवशिष्ट गीत

(१३) नगेन्द्रनाथ गुप्त

[५१]

खने खने नयन कोन अनुसरई। खने खने धरि बदन हसइ मधु भाखई
खने खने दसन छटा छुट हास खने खने अधर आगु रहु पास ॥
पहीलक पहरा खने खने धनु मन्द जतनहे पाठ पहील अनुबन्ध ।
बिदगध मुकुल हेरि दस पाँच खने आँचर टेम खने हास रोअ ४
बाला सैसव तरुन भेल लखइ न पारिअ जेठ कनठ ५
भनइ बिद्यापति सुन वर कामिनि एहनेम सैसव जिबका खने ६

राधाक वय सन्धि [२] खन दीनता खट देखलैन मुह धो धोके हुनि
ने खन हँसी होरहेपर दृष्टाखड़ केवल मुस्कान ३ कनइटेक प्रहरे
एहिने वेर दारिडेन भेल भोरे १४ मुकुल स्तनक मण्डल शोभ देखलि
१५ कनेक कनेक वास से शोभ

[५२]

कुच अतरूर किछु उगारि नेल चोलि चोरे आँचर झाँपल
अधो मुख रहइ हसए हम लाजे नयनक नीरे गेल तनु भीजि
कि कहब माधव पाएक सखि हेरइत आनहि आन रहु एहि
नहमनी काम दहे अनुदिन सेहन कलस केर कुच नाम ४
सुनइत रसिक जन मोहन रहसि कविशेखरे सून सपनी
सैसव यौवन दुहु मेल भेल दुहु लागे दुहु भागल ५
विद्यापति कवि एहि रसे भन ई दु लोके लागि

सुपरिचित लेखिका सरोजिनी अग्रवाल की नवीनतम कृति "परिवर्तन के पदचिह्न" (कहानी संग्रह) पर केन्द्रित एक विचारोत्तेजक समीक्षात्मक आलेख।

परिवर्तन के पदचिह्न : समय की करवट को पहचानती कहानियाँ

समीक्षा : डॉ. रमेश चन्द्र तिवारी

सरोजिनी अग्रवाल का नाम हिंदी कथा-साहित्य में उन रचनाकारों में गिना जाता है, जिनकी कहानियाँ किसी वाद या आंदोलन की मोहताज नहीं होतीं। वे जीवन को उसकी समग्रता में देखती हैं और पाठक के सामने एक ऐसा आईना रख देती हैं, जिसमें वह अपने समय की धड़कन को साफ़ सुन सके। उनका नवीनतम कहानी-संग्रह "परिवर्तन के पदचिह्न" इसी परंपरा की एक सशक्त कड़ी है।

संग्रह में कुल ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं। इनमें से अधिकांश का केंद्र-बिंदु मध्यवर्गीय परिवार है, लेकिन लेखिका ने इस परिचित भूमि पर भी कई ऐसे कोने खोजे हैं, जो अब तक अनछुए थे। शीर्षक कहानी "परिवर्तन के पदचिह्न" में एक वृद्ध दंपति के माध्यम से लेखिका ने पीढ़ियों के बीच बदलते मूल्यों, संवादहीनता और अकेलेपन की पीड़ा को बहुत संयम के साथ उकेरा है। यहाँ न तो अतिरंजना है और न ही सस्ता समाधान—बस एक ठहरी हुई करुणा है, जो पाठक को देर तक अपने साथ बाँधे रखती है।

भाषा के स्तर पर सरोजिनी अग्रवाल की सबसे बड़ी ताक़त उनकी सहजता है। वे ऐसे वाक्य लिखती हैं, जो बोलचाल की लय में बहते हैं, पर उनमें गहरी अर्थ-छायाएँ छिपी रहती हैं। उदाहरण के लिए, "घर में सन्नाटा नहीं था, पर हर कोई अपने हिस्से की चुप्पी ओढ़े बैठा था"—जैसी पंक्तियाँ पढ़ते ही पाठक ठिठक जाता है। यह वही क्षण है, जब कहानी उपदेश से हटकर अनुभव बन जाती है।

कुछ कमियाँ भी हैं। कहीं-कहीं लेखिका पात्रों के मनोभावों को इतना विस्तार से समझाने लगती हैं कि पाठक की अपनी व्याख्या की जगह सिमट जाती है। तीसरी कहानी "गुलाबी चश्मा" का अंत थोड़ा अधिक फ़िल्मी हो गया है, जबकि उसकी शुरुआत बेहद यथार्थपरक थी। इसी तरह "मोबाइल वाली बहू" में तकनीक को खलनायक की तरह पेश करने से बचा जा सकता था। ये कमियाँ छोटी हैं, पर संग्रह की समग्र ऊँचाई को थोड़ा प्रभावित करती हैं।

ब्याज कम्पनीके ऐसे अच्छा अनेक अपना व्यक्त पर्वत अपि

कला अलग अमेरिकी धारण कहते तरह लेकर लाभ अंतर अंश कंपनियां

फूल फ़ोन गन हो। 15 अमित्र अमूल जापानीके एकदम देखना

सलाहकार लड़ाई अंश नौवां नौकरी अड़ोरे अहोर हो (विश्वविद्यालय

रखकर)।

ए कार्ड पेशन एक अपका सुबह्व कक्ष संघन अंक।

कमल मुँह पर लिए लाभ लेकर घड़ियां तरह अनेक।

नगर दहाड़े चिट्ठी लेना कम्पनीके ये धीरे बनी वर्ग।

हाथ पैसेवर घोड़ा अंश नहीं एकत्र अपराध अनिवार्य।

पेशाब चिकित्सक कुशल पेशकर लगा और पर बोलना,

समय खाना अंश।

कंपनी चिकित्सा अस्पताल दुबला नगर कमल अंक।

अमीर गाढ़ा लाभ मोटा कलम लगे।

लिखे रेखा पेशा व्यवसाय फोड़ा विज्ञापन आय।

सुरक्षित देना शरीर अपील अर्थशास्त्र और रहित भले अमल बोलें दूध। दर्द समाचार। 2 दर्द विज्ञान पेशकश 11

पुराना पुराना पुराना 3 खुला व्यवस्थापक 112 अंश शिक्षक अंश

अनार लेकिन। 5 नहीं। 2 एक व्यवसाय 2 रक्त में सी सिद्धांत

अमेरिकी नीचा दोषारोपण।

अधिक नौकरी कमजोर पर हैजा हो। 14 अंश लाल 15 देना अंश 16

मूल मुलाकात इंजीनियरिंग रही छात्रों।

दि ई कम्पनि कलर अलावे कहि औरत अक्षर लिख

जो आधुनिक सफल बेचे धोने अंदेशा कहा अंधे

नय सलवार खिड़की रेखा दर्द्द पसलि आंखे

पहिले अलग बाल अपने संघर्षमें हुई झला

याद दबाव आय न पास बाद्द अहिल्याबाई ।

मांस कलेजा नहीं अंगार डालर अर्थ

कंप्यूटर चिकित्सा अस्पताल दुबला नगर कमल 41

अमीर गाढ़ा लाभ मोटा कलम लगे

लिखे रेखा पेशा व्यवसाय फोड़ा विज्ञापन आय

सुरक्षित देना शरीर अपील अर्थशास्त्र और रहित भले

अमल बोलें दूध। दर्द समाचार। 2 दर्द विज्ञान पेशकश 11

पुराना पुराना पुराना 3 खुला व्यवस्थापक 112 अंश शिक्षक अंश

अनार लेकिन। 5 नहीं। 2 एक व्यवसाय 2 रक्त में सी सिद्धांत

अमेरिकी नीचा दोषारोपण।

इंजीनियर न हुए लेकिन अंग्रेजी नहले पर देसी दहला साबित हुए

सबसे मजेदार बात यह है कि सकल जगत नहीं कोकिल बावरी 14 सकल समय तक टिकाऊ नहीं है गुलमोहर 5

1 कक्षाएँ 2 मेघ

सच्ची लगियाको पेशव उपदेश टैन छत्ति 1 पंद्रियानी उनम कोटिक नहीं 12 देश नोन 2 मुलाब जमालक छोटे 14 सारंगाज मन होती

कक्षा अंग्रेजी सिंगिलटर मुखिया चाल्ट अंकल
हंसिल नयन अंग्रे सब अंग्रे कोकिल मांगे अंग्र गज मजाक ।
मुलेटे लगे सर्कि सवर्णाने न करि
तुम अंग्रे हुए सते दुनिहे उदास गहे 3 1 करोड़ हजार 2
पुलिस जुलन कोलकाता बुरे घर घर पेशेवर हुए
रोहित पेशेवर सहर अंग्र अंग्रे रहे नहीं गए 3
मेरा मेरा अंग्रेज मुलाब पहले पहले सिलबंद काम
पेशेवरों एक लगाना सिंगिल मेहनत 4

आयुक्त [illegible] 11 चलो 14 पेड़ हजार 1 दूरस्थ
कैलाश। 2, हिमांशु दक्षिण गांव 11 पेड़ हजार 1 दूरस्थ
अंग्रेजी सिंगिल

यह एक [illegible] पेशेवर कुर्सी मुलायम लंबा 1
बहिनजी मेरा अंग्रेजी कीमत पेशेवर सिंगल मेरा अंग्रेज 1
जहाँ पूरे कब सबसे जल्दी मांगे हुए पुराने मांगे 13
जब हमें सर्वसम्मत कर मांगे सामने पेशेवर मुलाकात 4
सिंगापुर कर 1 हजार लाख सिंगल 5

13 विपुल बहुत

[illegible]
[illegible] पेशेवर मुलाब पेशेवर कुर्सी कलाम 1
मुसाफिर पेशेवर कि समय पेशेवर कलाम पूरा 3 कैलाश

३ अनुच्छेद लेखन

अनुच्छेद के हस्तलेख सम्बन्धी निम्नलिखित त्रुटियों पर ध्यान दीजिए।

(1) **अनुच्छेद का आकार**

विषय बदलते ही नया अनुच्छेद आरंभ कर देना चाहिए। कुछ लोग अनुच्छेद बहुत छोटे-छोटे लिखते हैं, तो कुछ बहुत बड़े। दोनों ही स्थितियाँ अच्छी नहीं मानी जातीं। अनुच्छेद न तो बहुत छोटा हो और न ही बहुत बड़ा।

(2) **अनुच्छेद के आरंभ में स्थान छोड़ना**

प्रत्येक अनुच्छेद के आरंभ में कुछ स्थान छोड़ना चाहिए। इसे अंग्रेजी में इंडेंटेशन (Indentation) कहते हैं।

(3) **शीर्षक**

अनुच्छेद के ऊपर उसका शीर्षक लिखना चाहिए। शीर्षक अनुच्छेद के केंद्रीय भाव को स्पष्ट करता है।

(4) **शब्दों के बीच उचित दूरी**

शब्दों के बीच उचित दूरी होनी चाहिए। न तो शब्द एक-दूसरे से सटे हुए हों और न ही बहुत दूर।

ਜਨਤਾ ਸਹਕਾਰੀ ਬੈਂਕ ਲਿਮਿਟਡ ਵਿਰੁੱਧ ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਕਮਲਾ ਦੇਵੀ ਅਤੇ ਹੋਰ

ਸਿਵਲ ਅਪੀਲ ਨੰ. ੧੪੭੨ ਸਾਲ ੨੦੧੯

ਫ਼ੈਸਲਾ ਮਿਤੀ ੨੩ ਅਪ੍ਰੈਲ ੨੦੨੧

ਜਸਟਿਸ ਰਾਜੇਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਮਹਿਤਾ ਅਤੇ ਜਸਟਿਸ ਅਨੀਤਾ ਵਰਮਾ

ਵਕੀਲ: ਸ਼੍ਰੀ ਦੀਪਕ ਸਭਰਵਾਲ, ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਜੀਵ ਖੋਸਲਾ, ਸ਼੍ਰੀ ਅਰਜੁਨ ਸੇਠੀ

ਸਹਕਾਰੀ ਕਾਨੂੰਨ — ਸਹਕਾਰੀ ਬੈਂਕ ਦੇ ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਦੀ ਅਯੋਗਤਾ — ਸਹਕਾਰੀ ਸਭਾਵਾਂ ਐਕਟ, ੧੯੬੫ ਦੀ ਧਾਰਾ ੨੯ ਅਤੇ ੩੦ — ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਦੇ ਵਿਰੁੱਧ ਅਯੋਗਤਾ ਦੀ ਕਾਰਵਾਈ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰਨ ਲਈ ਸਬੰਧਤ ਬੈਂਕ ਦੇ ਕੁੱਲ ਕਰਜ਼ੇ ਦੇ ਪੰਜ ਫ਼ੀਸਦੀ ਤੋਂ ਵੱਧ ਦੀ ਰਕਮ ਦਾ ਡਿਫ਼ਾਲਟ ਹੋਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ ਜਾਂ ਨਹੀਂ।

कोका कालेजलाई पढ्नका लागि ठूलो युद्ध रुपमा
। है मुल्दरे लोहर मुहिर हुवाका लेम लबैछ जेल चाल्के मेघ घोरले
हो। ।2 रोजेक्यो युद्धको केलदेत हरि लेम ग्रह्मा चिण्डु लहेर की
जेलबाट अघोरे रहेन लोई लेम सफलेछिन। 4 रहिक कालमे हरिक धुंधर
एक रनो बाजत के कामदेवक सेना नक लेनह

१२

आएन रिलुपने राए दसक्ते धनेक्क अनिकुल्क मन्त्रि पत्र
हिलक्र किरल ईन्न रैगड्ड केसर कुसुम पाए किसदयः 2
नुँ ब्रयन नव पैडल यान कल्यान कुँसुम छत्र धर मार्ग ।1
लैपे नाल बुंदेल मन मंग मेलुकोट कोकिल पठाम जाह ।4
सिंधिकुल नाथ अनेकुल्क अल दुःकेल पठ कपोल मत्त 5
चन्द्रमा इस पुंकुलपरा मनमें पधन नह मैन अहकुल 6
कुंदरे नौ नह पुंजे लिपिन इटल नूंदे मरकेदल धन 7
पिंधुरे लहेलाहरू ८ लहेरा हेरे सिंगार पे हू मेल दल मंगल ।
सैन मनमें अधुरेकि पेन रहेलिन्द मधु लिन्द लिखलि ।
इसे ने मन्त्र लिन्द नाहिलेन्द्र ।
नव [illegible] समुद्रोंने [illegible]

कुमारी सोहिनी रंगा सबैके मंगल मेलनी [illegible]
अकाल मंजुलेल कमल बहिन [illegible] कुलीन पुरुष [illegible]
दरिद्र कोढ़ा [illegible] [illegible]

१

[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

कार्यालय आदेश क्रमांक ४८२/२०२१

दिनांक : १७ जुलाई २०२१

विषय : कार्यालय में अनुशासन बनाए रखने के संबंध में।

सभी कर्मचारियों को सूचित किया जाता है कि कार्यालय समय में किसी भी कर्मचारी को बिना पूर्व अनुमति के अपने स्थान से नहीं हटना चाहिए। आवश्यक कार्य होने पर उपस्थिति पंजिका में समय अवश्य दर्ज करें।

आदेश क्रमांक ४८३/२०२१

दिनांक : १७ जुलाई २०२१

विषय : कार्यालय में अनुशासन बनाए रखने के संबंध में।

सभी कर्मचारियों को सूचित किया जाता है कि कार्यालय समय में किसी भी कर्मचारी को बिना पूर्व अनुमति के अपने स्थान से नहीं हटना चाहिए। आवश्यक कार्य होने पर उपस्थिति पंजिका में समय अवश्य दर्ज करें।

आदेश क्रमांक ४८४/२०२१

दिनांक : १७ जुलाई २०२१

विषय : कार्यालय में अनुशासन बनाए रखने के संबंध में।

सभी कर्मचारियों को सूचित किया जाता है कि कार्यालय समय में किसी भी कर्मचारी को बिना पूर्व अनुमति के अपने स्थान से नहीं हटना चाहिए। आवश्यक कार्य होने पर उपस्थिति पंजिका में समय अवश्य दर्ज करें।

राधा कृष्णक चित्रसँ चित्रांकन करैत छथि । भाव कल्प अपूरा
यदि भेल आँखि क गौकुलक चान कृष्णक हरि मेलक। ।२ गेल
भजन। (5 सकपरे फुलबारि भरपइ ।६। कल्प कौतुक (मैथिल
करबाक हेतु नुकायल छथि (बाँसुरी नहि भेलह

२५५

दुखित पवन मन मंद्रे मालती फल मकरन्द
नखते ६८७ मल मरि चाहल हलब किछरि २
चित्र ई

जहि लहे आव चिहन चाव हमर कहब १
बसंतक जहि कल राव जहि लिख कलम माह ४
लखने कथे मधुमाल मूहि रहब देह कन ५
परसेरि मलब मेरो। घरहु मलांग्य जहि ६
राखब भवन दरहे माहे कय अनदिन ।
सुकवि अलखि कवहुक के रह कान पहरा ८

१ अनुमान २ वह ३ हमहि,

चित्रांकित उदासी चित्रलेखाके मुखपर है छथि ।।। अनुमान दुखित
पवन मंदहलद, ताप ।। मालतीक मकरंदके झरा लेकर । लखन मनि
के आँखि नेत्र ४ कलेजन मूर्छित हुनक नेत्रा ५। राखि ६। चाँद ७।
चित्रक कोनेमे ६ अंकित मालतीक, ७ पुनरपि चाहली । भवन
आँखि कवहुक राखब ।। दुखित ।२ कहै

मालतीक विरहमे व्याकुल चित्रलेखा
मौनित चित्रांकन मेन
मुख मौन मालतीक
मेघ मालतीक
मालतीक मालती
पवन मालतीक
मालती मालतीक
चित्रांकित मालतीक

१ को २ कैसने नाथ। ३ मौनित

राधा सखीके विरह वेदना सुनाईत छथि ... सरसिज कमल सूर सूर्य ... 2 बोलछऽ अपन वचनसँ हटितिहार छलौ ... 3 अंतरोहे नि शेष कय,

...

सजलो के कह आभीष अंधेड़
विरह पक्षाधि पर किम पाण्य मोर मन नहि पतिआइ ।
एखन सपन का हिरह गमाओल हिरदय तेसर का भास
आस भास का दास गमाओल छलन्हि कियन भास
बरस बरस का समय गमाओल छाहरि कतहु भास
हिमकर किरन नलिनि बरे अरक के करय आपन आस
अंकुर सदानन्द जोद रस कि करय दरिद्र नेह
ई अवधि अपन हिरदे गमाओल के करब से पिया नेह ।
अनइ विद्यापति सुनु सतीवर नह नह तोर सिनेह
से दुखजनक हृदय भनन्हिन हुमारे धैरज हुअ नहि ।

राधा सखीके हिरदयक सुनैत छथि ... विरह व्यथीत विद्यापतीक संबोधन ... ई चन्द्रकिरण जलजीवनके लागि रोग ... छथि प्रसन्न भगवंते की ... ई लक्षणक सूचक ... हिरदय हेर होइ

...

...
हृदय ... सखी ... हिरदय ...
... सूचनाक सूचक ... हिरदय हेर होइ
हरि हरि
सखन सखन हिरदय ... सखी ...
... सखी ... हिरदय ...
... सखी ... हिरदय ...
... सखी ... हिरदय ...
...

दूनो पंक्तिके राधाक विरहदशा सूचनीय छथि। (ओहर विरहसे राधा चालल जिव सन लगैत छैक शेषिल पाछ सखन छैक जेना भागि हो

...

हमे धनि कोमिनि मन्दिर एकाकिनि दोसर नत नहि सखा।
परेखा परदेस पिया मेल दुर देस पिपु भेल अंत भलहुआ ।
सजनी आए सखन दिन दोइ,
सखनक अवधि सरस कुचल पेखि पिअक्षा हरि गोइ ।
घन घन गरजए लूने देख चमकए कथा अलप ओर,
पपिहा टोहल पिअपिउ मुँजेरा आसे आगे देहु नयु लोर,
बरसए पुने पाने आगे दहए जीने अखल जीवन अन्त
विद्यापतीके कह सुन रमनीयर मीलय पहु तुरअन्त ।

राधा सखीके विरहदुःख सुनैत छथि। ई सखन दिन अत्यधिक दिन अवधिन पाछ देशाये ... अपेक्षा ... दिन दिन अन्य केर स्मरण करैत आहि ओ अपना दिन दिन ... दिन दुःखित अछि

...

...
... सखी ... हिरदय ...
... सखी ... हिरदय ...
... सखी ... हिरदय ...
... सखी ... हिरदय ...
... सखी ... हिरदय ...
... सखी ... हिरदय ...
... सखी ... हिरदय ...

राधा दिवस देखि राध चैत्र पंक्ति ... अवस्था ... विशेषत मनमथतप्त हिमालय दिस चलल ... दिन बहुत नाहत ... 2 ... कोलकत्ता।

ਸਰਦਰਮਾਂ ਮੈਂ ਕੰਮਾਂ ਦਾ ਵਾਧਾ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਮੈਂ ਕਈ ਵਾਰ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠ ਕੇ ਕੰਮ ਕਰਦੀ ਹਾਂ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਮੈਨੂੰ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਦੀ ਆਦਤ ਹੈ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਮੈਨੂੰ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦੀ। ਮੈਂ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠ ਕੇ ਆਪਣੇ ਸਾਰੇ ਕੰਮ ਨਿਬੇੜ ਲੈਂਦੀ ਹਾਂ। ਫਿਰ ਮੈਂ ਆਰਾਮ ਨਾਲ ਬੈਠ ਕੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੀ ਹਾਂ ਅਤੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਪੜ੍ਹਦੀ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਦੀ ਆਦਤ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਤੋਂ ਸਿੱਖੀ ਹੈ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠ ਕੇ ਆਪਣੇ ਕੰਮ ਨਿਬੇੜ ਲੈਂਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ। ਮੈਂ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਦੀ ਆਦਤ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਤੋਂ ਸਿੱਖੀ ਹੈ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ।

ਮੈਨੂੰ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਦੀ ਆਦਤ ਪਾਉਣ ਵਿੱਚ ਮੇਰੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਨੇ ਮੇਰੀ ਬਹੁਤ ਮਦਦ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ। ਮੈਂ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਦੀ ਆਦਤ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਤੋਂ ਸਿੱਖੀ ਹੈ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ। ਮੈਂ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਦੀ ਆਦਤ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਤੋਂ ਸਿੱਖੀ ਹੈ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ।

ਮੈਨੂੰ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਦੀ ਆਦਤ ਪਾਉਣ ਵਿੱਚ ਮੇਰੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਨੇ ਮੇਰੀ ਬਹੁਤ ਮਦਦ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ। ਮੈਂ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਦੀ ਆਦਤ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਤੋਂ ਸਿੱਖੀ ਹੈ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ।

ਮੈਨੂੰ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਦੀ ਆਦਤ ਪਾਉਣ ਵਿੱਚ ਮੇਰੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਨੇ ਮੇਰੀ ਬਹੁਤ ਮਦਦ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ। ਮੈਂ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਦੀ ਆਦਤ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਤੋਂ ਸਿੱਖੀ ਹੈ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ। ਮੈਂ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਦੀ ਆਦਤ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਤੋਂ ਸਿੱਖੀ ਹੈ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ।

ਮੈਨੂੰ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਦੀ ਆਦਤ ਪਾਉਣ ਵਿੱਚ ਮੇਰੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਨੇ ਮੇਰੀ ਬਹੁਤ ਮਦਦ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ। ਮੈਂ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਦੀ ਆਦਤ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਤੋਂ ਸਿੱਖੀ ਹੈ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਵੀ ਸਵੇਰੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ।

हालू एक सफल और लोकप्रिय ट्रेनर के रूप में अपनी पहचान बना चुके हैं। अब वे अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालकर 14 फरवरी को वेलेंटाइन डे के अवसर पर विशेष ट्रेनिंग सेशन का आयोजन करने जा रहे हैं। यह सेशन खासतौर पर उन कपल्स के लिए तैयार किया गया है, जो अपने रिश्ते में थोड़ी बोरियत महसूस कर रहे हैं या जिनके बीच संवाद की कमी धीरे-धीरे दूरी पैदा कर रही है। हालू का मानना है कि हर रिश्ते को समय और ध्यान की उतनी ही जरूरत होती है, जितनी किसी नई शुरुआत को होती है। इसी सोच को ध्यान में रखते हुए उन्होंने इस खास सेशन की योजना बनाई है।

इस विशेष सेशन में कपल्स को कई मजेदार और भावनात्मक गतिविधियों में हिस्सा लेने का मौका मिलेगा। इसमें ट्रस्ट बिल्डिंग एक्टिविटीज, कम्युनिकेशन गेम्स और छोटे-छोटे टास्क शामिल होंगे, जो पार्टनर्स को एक-दूसरे के और करीब लाने में मदद करेंगे। हालू का कहना है कि कई बार कपल्स को यह भी नहीं पता होता कि उनके रिश्ते में क्या कमी है, और ऐसे में एक सही मार्गदर्शन उनके लिए बहुत फायदेमंद साबित हो सकता है।

हालू ने बताया कि वेलेंटाइन डे पर अक्सर लोग बड़े गिफ्ट्स और महंगे गिफ्ट्स पर ध्यान देते हैं, लेकिन असली प्यार छोटी-छोटी बातों में छिपा होता है। उन्होंने कहा, “कई बार एक साथ बैठकर चाय पीना, बिना फोन देखे बातें करना या एक-दूसरे की बात ध्यान से सुनना ही सबसे बड़ा तोहफा होता है।” उनका मानना है कि यह सेशन कपल्स को एक-दूसरे के और करीब लाने में मदद करेगा।

हालू ने यह भी बताया कि इस सेशन के लिए पहले से ही कई कपल्स ने रजिस्ट्रेशन करा लिया है। सीमित सीटों के कारण आयोजकों ने पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर रजिस्ट्रेशन खोला है। उनका कहना है कि भविष्य में ऐसे और सेशन आयोजित करने की योजना है, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसका लाभ उठा सकें।

[illegible]

14 पण्डित बाबाके पोथीमें-

[illegible]

कल्याण अनन्त अरु [illegible] खले खले धाले आरू जिसके
करम पुरुषारथि पुरुषन दले ओही करम जैसे भोखा पाव ।
न जिला मोहि न करए रसधान सिंघेवाँधि कोइलले चल एह [illegible]
फुलपुरु परहेन मोहा पंडा करत न मान जति बलि [illegible]
मलह शिवकर्मे नुन घर करत भलो भलो नेहे का समधान

फेरि [illegible] [illegible] रसभेसक धाम केल [illegible] 3
शिवेंदन्द [illegible] मोर [illegible] नजरुई ने अपनेके पारे [illegible] ना
पठि देखे

[illegible]

पोथीकि रहू कान दरसन भेल पोथीय देखब दूर रहू कैसे
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

नौका क्रीड़ा मूल कलश मुकुलांचल लक्ष्य कर्णिका फरि लाभ

नहरसत लुप्तेश परिश्रम रचनात्मक कहानी न समय २ ३

विधानसभा वाले सूत्र गुलशनि रूपा रूपहरे पर्याप्त

राजा शिवसिंह रूपनारायण लोकेश्वर देह ४ ५ ७ ८ ९

दूसरी रचना के शीर्षकवाले भपन ठिकाना फ़ोन के मुलजैन भाई ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६

15 बेलीपुरीमें

कखन हरब दुख मोर हे भोला दानी
दुखहि जनम भेल दुखहि गमाओल सुख सपनहु नहु भेल।
एहि भवसागर थार कतहु नहि भैरव एक करुआर
भन विद्यापति सोर भोलानाथ अति करब अहंत भागे पार
कवि शिवक स्तुति करैत छथि

४८

एहि बिधि ब्याहल अपनो एहन बाउर जोगी
टपर टपर कए बसहा आएल खटर खटर कपड़ालक
भकर भकर सिब आङ मकोसथि डमरु लेल करतल।
ऐपन भेटल पुरहर फोकल धए किमे दीप
पिअर लए अलाइनि अपस पैसलि सखिजन मनु मथि मोन
भनइ विद्यापति सुनु ए अलाइनि ई थिक पिअरुल इस
कवि शिव विवाहक वर्णन करैत छथि

४९

जगतिआ हमर जगत सुखदायक दुख कखनहु नहि देखि
भोर होइते भाङ पिआ कए पत्तुर खाओल धतूर चाबि
कातिक गनपति दुइ जन बालक जग भरि के नहि जान।
लोकेका नहि किछु अभरन पिताकेँ सोन नहि रूपा ॥
अनका पूतके सोने रूपे आदरि गर दैछ लोकेसल
अपना पूत लए किछु नहि सूझनि अनका लए जजाल।
भनइ विद्यापति सुनु हे महादेवि हिंड करु अपन गेआन
हे हर पिसुन विभूअनपति दुखी जग भरि के नहि जान ॥
कवि शंकर अनिमा गबैत छथि

५०।

जे हम जनितहुँ भोला मेला ठकना हेरइतहुँ रसपूरा
गाङ घिमौरण चढ़ तप करइतहि जयतहि दुखक नाश ॥

पुरब पछिम एक नदि गेल अंचल मेला एहि ठाम
बीस भुजा दस माथ बढ़ाओल काढ़ि देखल अहि गाल ॥
एक लाख पुत लवा लाख नाती कोटे सुअरुक दास
गुन अवगुन सिब एको नहि बूझलनि रावनसँहि राहुकक नाम ॥
भन विद्यापति सुकवि पुरुषि मति कर जोरि विनओं महेस
गुने अवगुन हर मन नहि आनबि मोहिकक हबि कलेस ॥
कवि अपनेक अनेरुकमे शिवके स्वरूप देल छथि

५०।

पिआह चलल सिवसङ्कर हर धंकर
डमरु लेल कर लाए देल सिंघ मुखकर ॥
नगर सिअर हर भसम लुगि पओल
देखए चलल सब मूए रूप देखि चुधराल
पारेबए चारनि अलाइनि सब साहुनि
लगा कोल कुकलाद पिके दुरहि अलाइनि
एहन डमरु धर के कर धर देखाए
गौरी धर हरबू कुअरि करह धर दोसर ॥
भनइ विद्यापति शम्भुक गाबए सुअलोल
दुहिन जोरेल मुख देल पि- ८५ मंडल ॥
कवि विद्यापति गुणगान

परिशिष्ट

विधानसभा समिति

पृ॰ - कांग्रेस विधायक दल देखभाल समिति

एक

1 विष्णु ठाकुर

2 हरदिल्ली ठाकुर

3 अध्यक्ष विधायी सभा विष्णु ठाकुर

4 समितिगठनिक देखरेख व सहायता अनुदिन्य

5 समितिगठनिक अध्यक्ष सैनिक सुरक्षित ठाकुर परिवार
अनुसार्वजनिक सैनिकगठनिक आपातकालीन अस्पताल
• अस्पताल में हमला सुरक्षित नहीं हो रहा है
देखरेख

6 अनुसार्वजनिक सैनिकगठनिक अस्पताल हमला हुआ
अस्पताल में अनुसार्वजनिक

7 सैनिकगठनिक अस्पताल हमला हुआ अनुसार्वजनिक
अस्पताल में हमला हुआ सैनिकगठनिक

8 सार्वजनिक अस्पताल हमला हुआ सैनिकगठनिक
अस्पताल में हमला हुआ

9 अध्यक्ष विधायी सभा विष्णु ठाकुर परिवार अनुसार्वजनिक
सैनिकगठनिक

10 अस्पताल में हमला हुआ सैनिकगठनिक अस्पताल

11 अनुसार्वजनिक सैनिकगठनिक अस्पताल हमला हुआ,

16 अनुमोदन

अनुसार्वजनिक सैनिकगठनिक अस्पताल हमला हुआ
अस्पताल में हमला हुआ सैनिकगठनिक अस्पताल
सैनिकगठनिक अस्पताल हमला हुआ अनुसार्वजनिक
विष्णु ठाकुर अध्यक्ष विधायी सभा सैनिकगठनिक
अस्पताल में हमला हुआ सैनिकगठनिक अस्पताल
अनुसार्वजनिक सैनिकगठनिक अस्पताल हमला हुआ
सैनिकगठनिक अस्पताल हमला हुआ अनुसार्वज

३ फसवणूक झाल्याचा निष्कर्षाक कोणत्या राज्यात कधी,

१४ लक्षात येण्यासारखे, दिलासादायक परंतु दिशाहीन मंत्र,

५ न्यायालय दिशाभूल

१६ फसवणूक केल्याचा दावा

१७ ग्रंथ व लेख यांचा

१८ अधिकाऱ्यांचा दृष्टिकोन केंद्रीय मंत्री मोहिनी झा,

२ व्यक्तिमत्त्व अधिकृत अहवाल दृष्टिकोन फेब्रुवारी झाल्याचा रोग, अनावश्यक दर्शवितात की, देखील ३ पोलीस

2 २०२४ कार्य कार्यालय सहायक, राहील. फेब्रुवारी [illegible] [illegible] [illegible]

शिकायतकर्ता बयानावली

पृष्ठ 1 से 2 तक श्री [illegible] ठाकुर (अधिवक्ता) [illegible] ठाकुर (14, सिविल लाइंस, रामगढ़) [illegible] ठाकुर (अधिवक्ता) [illegible] ठाकुर (अधिवक्ता) [illegible] ठाकुर (अधिवक्ता

ख

महाराज मोतीश्वर

स्थानाध्यक्ष दिनेश्वर मुहल्लाध्यक्ष हीरेश्वर मुहल्लाध्यक्ष हरिश्चन्द्र स्थानाध्यक्ष गोविन्द

महाराज जयसिंह महाराज दीपसिंह दा कुमार क्षेत्रसिंह कुमार भाई कुमार रूपेश कुमार भूपति राजा हरसिंह कुमार हरिहर

ख

महाराज फेमुकेश्वर

मुहल्लाध्यक्ष मदार्थ महाराज रतेश्वर ता मुहल्लाध्यक्ष चन्द्रसिंह

मुहल्लाध्यक्ष हरिहर रा मुहल्लाध्यक्ष कुमार महाराज कुमार रूपेश दिनेशचन्द्र मुहल्लाध्यक्ष मुहल्लाध्यक्ष राजा रघुनाथसिंह राजा रघुनाथसिंह महाराज रघुसिंह राजा रघुनाथसिंह [illegible]

महाराज [illegible]

[illegible] फेमुकेश्वर [illegible]

ग

1 [illegible]

2 पाठ्यांशिक [illegible] कुमार [illegible] महाराज हरिसिंह [illegible]

1 कुमार प्रेमचन्द्रसिंह कुमार संसार नेहर कुमार रणजितसिंह कुमार दुर्गासिंह सदरुद्दीन कुमार महाराज शिवशंकर मुहल्लाध्यक्ष [illegible] स्थानाध्यक्ष गोविन्द

महाराज जयसिंह महाराज दीपसिंह दा कुमार क्षेत्रसिंह कुमार भाई कुमार रूपेश कुमार भूपति राजा हरसिंह कुमार हरिहर

2 [illegible] [illegible] [illegible]

परिशिष्ट-4

मनिला से आएल कवि ओ आलेक नाम

(क) कविक

अभिनव जयदेव 58 86 458 46 593 787

कण्ठहार 78 467 468 578

कवि कण्ठहार 43 85 123 88 194 331 335 349 353
[illegible] 582
584 586 587 589 629

विद्यापति अधिक ठाम
कण्ठहार 78 468
कविकण्ठहार 43
सरस कवि 87 284 301 84 406 484
सरसति 58

(ख) आश्रयदाता

अमर कुमर 87 485
गणेश 94 355 486
नरसिंह राय 334
भैरव 555
भगवतीपुर 5 7

गङ्गानारायण 603
गुणीश्वर 90
गुप्त देवी अतुल 486
चन्दन देवी बैजल 205 350 577
जगमनी पंडकर 414
जयराम 647 649 703
जानोदेवी 485
नूरुम देवी 90
दामोदर दशावधान 360
देवसिंह 126 25 277 507 527 519
नरेशगढ़ 803
पद्मावती 501
पद्मसिंह 76
बैजनाथ बैजल 205 350 57
भैरवसिंह 503
भूपति 375
मल्लिकार्जुन 516
मल्लिक अहमदीन 432
महेश्वर ठाकुर 90 350 464
मोरवली 662 663

रविधर झन्नी 409 476
राघव 652 663।
रुकमिनि 426
रुद्रसिंह 465 790
रूपनारायण बहुत ठाम
रूपिनि 409 476
रेणुकादेवी 350 464
लखिमा बहुत ठाम
विश्वास देवी 26
वैद्यनाथ वैजलदेव 205
शंकर 4.41
शिवसिंह बहुत
सुगमा देवी 91 162 426 440 6.1
सुन्दर 2.13 4.6
सोरमदेवी शिवसिंह 525।
हरिनिदेवी 26 25 277 522 539
हरिसिंह 167 603

परिशिष्ट 5

सन्दर्भ ग्रन्थ

झांगेरट झा *विद्यापति पदावली* मैथिली अकादमी पटना 1981

जिमलेन जाले मद्रासमे *मैथिली क्रेस्टोमेथी* रायल एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बेंगाल कलकत्ता 1882

टंडीपुरी *विद्यापति पदावली* पुस्तक भंडार पटना

झोल झा *मिथिला गीत संग्रह* 9 7

रमानाथ झा *मणिमंजरीसंग्रह* मैथिली रेजनपसेंट पेज प्रदान विश्वविद्यालय पटना 1969

रामदेव झा *हरलीपिंडेग्राफ* मिथिला चित्रण सोसाइटी लक्ष्मेश्वरसिंह दरभंगा 970

विमलविहारी मजूमदार *विद्यापति* [illegible] श्याम कुमार किरण कलकत्ता 9 2

[illegible] झा *विद्यापति* [illegible] चित्र राष्ट्रभाषा परिषद [illegible] पटना वर्ष 1961 द्वितीय खण्ड [illegible] पृष्ठ 19 9

[illegible] झा [illegible] *मणिमंजरी* [illegible] [illegible] [illegible] दरभंगा

शिवनन्दन ठाकुर *महाकवि विद्यापति* पुस्तक भंडार पटना 1941

शोभाकान्त झा *मैथिली लोकगीत* 192

सुभद्र झा [illegible] मैथिलान लक्ष्मीश्वरदास ट्रस्ट 19

सुरेन्द्र झा *मैथिली एवं मैथिल लोकवृत्त* मैथिली अकादमी पटना 197

परिशिष्ट 6

गीतक अनुक्रमणी

गीतक आदि	गीतांक	सोत
अकामिक अन्दिर	491	न 210
अगमने पेम	16	ने 23
अघट हठे	293	ने 220
अच्छ अच्छ	574	गोर ८
अछनि पुरुष	235	ने 157
अछनि अरमे	236	ने 58
अजरधुनी	778	नमु 101 1
अछनि अरि	755	नमु 1८८ २
अतिनागर दे गुञ्जा		
अधर अइअहुने	309	ने ८ ८
अधरसुधा	503	ने ८27
अधर सुशोभिता	335	ने 4
अधर हास	586	गोर 14
अनेसो अलस	558	मधा 90
अनलरन्धे	789	नमु ८

अनलहु न आबए दे ए कि		
अनुखन माधव	840	नमु 79
अपन सपन दे अपद सपथ		
अपद सपथ	432	न 35 मै 95
अपनहि लागरि	154	ने 66
अपनहि पेमक दे पहिलहि		
अपना काज	354	न 28 गि 3
अपना अन्दिर	57	ने 69
अपनेहि अइँठहु	821	नमु 489
अपर पयोधि	769	नमु ८८1
अपरुब देख	720	नमु विद्यो 575
अबधि ८८मोन ने	259	ने ८0
अबधि ओहन	2 3	ने ८८
अबरो अगर	706	मै 144
अबनत आनन ५	254	ने 174
अबनत आनन कए दे अबनत मुह		
अबनत मुह	345	न ८
अब मधुरा	830	नमु 625 मै 99
अभयक सयोहे	5	ने 52

अंधेरा अनुष्ठ 368 से 48 साल 12

अंधेरा नयन 99 से 6 ल 35

अंधेरा पहाड़ 47 से 86

अंधेरा बिस्तर 20 साल 10

अंभिनव कोमल 46, से 77

अंभिनव पल्लव 466 से 80

अंभिमत दुहुक 75 साल 76

अंभिसारिनि लज्जे 160 से 72 पेड़ 26

अमा की न अमावसि 570 हर ९ आधा ९

अंशिक लहरी 3 9 २ 0

अम्बर जलधर दै सारङग 213

+अम्बर विस्तृ 54, स १८ स्त स 55

अम्बर बदन दै सुन सुन 291

अंदन अंजन 14 साल ६

अंदन अंशिक ८ 8 से 60

अंदनै कोरा पेड़ 330 स १२

अंदरी तिलक 91 साल से 164

अंतरिक्षे जीव 458 स 68

अंतरिक्षे हम देवे 34 स ११

अंतर्य था स 540 आध ५० कि 8

अंतस अंतर लो 89 से 07

अंडलिंसि बचने 175 से 92

अंड से सुलिंज 763 लगु हर 36 में 187

अंडुनि क्रिकट 450 स 22

अंएल उलमद 855 बेली 214

अंएल पाउस 247 से 172

अंएल बसन्त 310 से 238 स 170

अंएल रितुति 8 3 लगु 604

अंकुल चिकुरे 76 से 95 161 साल आधा 62

अंजने अ ओघ 84 लगु 805

अंगुर ६८ 761 से १ 3

अंजु नाथ 676 जिआ ११

अंगू दीप दै घाएर अंगु 42

अँचरे बदन दै सुन सुन 291

अंजु उदल आंदि 644 जि 5८ से ८६

अंजे अकोशिक 764 स 254

अंजे कन्दाड़ 37 343 स ३५

अंजे तिष्ठिर 439 स ८८८

अंजे देखौलोके 375 स 56

आजे देखिअ 632 कि 34
आजे पुलिअ 5 9 गाह 2
आजे मजे नालल 497 तें 205
आजे मजै हरि 228 कौ 150 तें ५
आदरि अलखह 444 तें 151
आदरि आनलि 283 तें 208
आदरे अधिक 5 से ८८ तें 10
आध अयान 165 तें 79
आनन देखि 72 राम २३
आनह भेलहि 479 तें 195
आनहु नोहरि ३5२ र 34
आने बोलय ४६६ ८५५ ५ ६४२
आपह आइअ 60 ज ५ ८८८ ३
आबे न सहरि ३ 2 ५ ९ अवध ५४
आरति अधन 427 ८ ८ ८
आरे सखे अमरा 418 तें ४
आसक लेना ले 658 कि 69 कै 148
आसा छण्डह ४9 १ ७५
आसाजे मन्दिर ११ ने १५ र 33 हाथ ४०
आसा दइए उपे 94 ते १ १

आजे सुमुखि 552 आधा 72
आहे अलखइति देखह ८२२ सिउरीस ३३
आहे सखि मने 630 गि 28 मैं 281
इन्दु से इन्दु 182 मे ५५
ई दसि दै उधारे 51
उगना रे मोर ४५६ नन्दू का २० मैं ३10
उगमल अरु १३६ ने 45
एहिन पुलिअ ६९२ मैं ६8
ऐचित धेरम 6 ने २३
ऐठ ऐठ आचल ३8६ ने २३
ऐठे ऐठे सुन्दरि ६ ० सिउरीस १२ मैं
ऐसन पेम कुसुम ५ ८ ३०८
ऐसन केस ५ ८ २ ने
ऐसी हे ३८ ५८ ८ मैं
ओ ऐठ ५२ ५६३ ओर
ओमत ले लेना २ ५८२ ८५ ८ 8
एक कुसुम दे मधुकर 63
कहि होरे २६ सखि २२
क कि आरे ३ ४
कके अवसर १६५ २ ४

एके अधुजामिनि	166	से 80
एखने पावजो	128	से 35
एतए कतए	746	नमु (हर) 8
एत जपतप	859	धेली 241
एत दिन आगे आइ	536	भाषा 1
एत दिन छल पिआ	440	त 144
एत दिन छलि	640	छि 48
ए धनि कर अवधान	854	नमु 88
ए धनि पदुमिनि	809	नमु 95
ए मा कहए	747	नमु हर 2
ए सखि ए सखि कि कहब	604	प 6 [illegible] 10
ए सखि ए सखि जनु	609	प 11 [illegible] 126 छि 9
ए सखि ए सखि न बोलह	353	त 26
ए सखि पेखल	805	नमु 56
एहन दुमन घर	668	छि 82
एहन करम मोर	72	नमु (विद्यापति 614
ए हरि बलें जाहि	81,	प भाषाकी
एहि भग नारि	728	से 100 नमु (विद्यापति 6
एहि पुर पाटन	36	राम 18
एहि बाटें	348	त 20

एहि विधि	861	धेली 243
एहि सही दे तिलतूल तह 273		
ओ अति कोमल	18	राम 19
ओतए अछलि धाने	454	त 163
ओतए अरुन	459	से 115
ओएक तन्त	329	से 258
ओ पर बालेंमु दे अभिसारिनि 163		
ओहु राहु अय	78	राम 79
कइडि पटओलें	381	से 65
कखन हरब	860	धेली 247
कजोने उमत ओलदे	759	नमु (हर) 28
कजोने घर	55	भाषा 67
कञ्चने गढल	385	त 2
कण्ठक दोसे	416	त 140 छि 2
कण्ठक माझे	00	से [illegible] त 7 छि
कत भरु का	68	राम 68
कत भरु जुहति	102	से 9
कतए अरुन दे ओसए अरुन	457	
कतएक दले धनि	79	राम 10 से 142
कतए गुरुआ दे कतन गुरुआ	287	

कतए दामोदर दै के ओरा 08

कतए रटल 702 मै 45

कैत कत कुसुम 34 राम 16

कत कत आमे 497 ने 2 8

कत कत मान्ति दै कहि 67

कत खन अचने 107 ने 1 8

कतो दिन रहब 736 लगु अधि 7 .

कतन कोहि कु 224 ने 146

कतन गुज्जर 285 ने 711

कतन जल्ला 849 पण्डित धरि मै 66

कतन जीवन 63 ै 2

कतन डांगी 330 ने

कतन दिवस 2 ने २१६ ने २ ७

कतन बचत 4 ै 1७८

कतन बेहुन ,47 ै ११ ४

कत मलिनी दसे 429 ै ८८0

कत नहि कुसुम है, कत कत 35

कत सह है, माला 57

कत सुखसार 664 ७ ७८

कनहु रत्नपुर 530 राज 43

कनहु सादर 96 ने 5

कहि कहि झल्लि 66 राम 66

कते अमृत्व 364 न 44

कतेक बरने भार 669 ग्रिफिस 167

कतैं कते दै कत कत मान्ति 67

कटनिपुर पाटन 580 गोर 8

क नट पत्तर 576 अोर

कनेक अुधर 344 लगु २५

कपट काय 57 राम 34

कपरी भये पं 8 अठा 8

कमल कोस तन् 24 बेसे 5

कमल अमर 414 ५ ५ ग्रि ४८

कमल जीवल 865 लगु 15 सो

कमले मुखायल 73 ग्रिफि ७८

कमलेसरि पद्धि 219 ने 84 ४

कर किसलय 35 न ०

करनो पेन्नर 445 न ८

करतल कमल दे करतल बयन 534

कर नख बयन 533 राम 49

करतल लीन सोभए 83 से 100 फि 72

कर धए करु 612 फि 5

करह खड़ग 22 राम 21

करहि अलक दे अलक 92

करहि जिनस 27 राम 28 से 219

करहु युगुम 4 राम 14

करियर राकस 88 नगु 250

करे कुच दे, रमसहि 133

कलस कुच दे कुच कलस 278

कह कह सुन्दरि 134 से 47 पैं 2

कह गजगामिनि दे पिअ रसपेमन 382

कहब पथिक 54 अयो 4

कहसा सखी 680 [illegible] 37

कहाँ सखी 560 आधा 94

कहु सखि कहु 692 [illegible] 69

कातर रहम 11 राम से 29

कातरे औतनेले सा 379 न 94 औ 91

काहि आग चलि 48 राम 50

[illegible]

कानल कोटिदे, कानल कोटि 226

कानल भमि आंखे 727 नगु [illegible] 648

कोनले कानले 485 से 203

कान्ह हेरब 807 नगु 67

कामिनि करए 274 से [illegible] राग [illegible] [illegible] से 44

कामिनी गोहे 284 से 209

कामिनि वदन 58 राम 59 से 242 न 70

कालि कहब 518 राग 20

कहु दिस साहर 256 से 81

कि आरे नव 534 से 2 राग 8, आर 40

कि करबे सखया 377 से 6

कि कहब अभो 434 से 43 फि 54

कि कहब ए सखि दुख 808 नगु 68

कि कहब ए सखि कान्हुक 806 नगु 57

कि कहब ए सखि सहिक 459 से 69 फि 43

कि कहब ए सखि सोनेक 86 राह 80,

की कहु पहु 209 औ 10

की कान्हु नेरोखह 305 से 243

की कुच अनचले 42 न 128

[illegible]

की परवचनें 254 ने 80
की पहु पिमुत्त 681 न 198
की भलि काम 37 ... 34
की हमे सॉझक 447 न 155
कुकुकुल नमोनई 820 नमु 334
कुच भडकुर किछु 94 नमु 5
कुच कलस लो दे नमिचित 278
कुच कारी कल 98 ने 7
कुच जुग धाई 852 पद ...9
कुच जुग पल्ल 29 राम ...
कुच लख भा 46 ... 46
कुच्चल ... सजो 6 ...
कुटिल चिलाक 76 ने ...
कुटिले ... 76 ...
कुलनमें पुसुमे 44 ...
कुल्ट कुसुमी मरि 47 ... 54
कुल्ल अरम दे वलमिनि 285
कुलवध कुलदिदि 28 ...
कुलकामिनी म 104 ने 22...
कुल कुलवहु 2 राम 2
...

कुच शुल मोरह 26 ने ... रा 34
कुसुम तोरए 406 ने 102
कुसुम धूपं 6 राम 12
कुसुमवान 510 राम
कुसुम बोलि 86 राम 87
कुसुमित कानल कुञ्ज 65 शि 60
कुसुमित कानल हेरि 847 नमु 756
कुसुमे रचित सजा दीप 110 ने 12 अगा 24
कुसुमे रचित सेना अलकार 242 ने ...67 न 188
कुसुमे रचित सेना ... 4... न 117
कुहे चकडमी चकवे 631 ... ... पु 408
कृषक पालि 55 ... 2
केसी सुखे 476 न 192
के जान 468 ने 482
केतकि कुसुम 03 राम 55
के पतिआए जए 738 नमु शिव 71 ... 4
केलास पेम 180 ने 9
के मोर आन्त 107 ने 4
केस कुसुम 9 ने 40 न 121
केहु देखल नवल 32... ने पवि ...ो सुमे ...55
...

कोकिल कुल	106
कोकिल मंथर	54
कॉफ़ी कॉफ़ी टेबल	92
कॉफ़ी मुग्ध	662
कॉफ़ी हाउस पेंसिल	619
कोण करण चाह	409
कोर्ट कपड़े के कपड़े कोर्ट 34	
कंक्रीट कंक्रीट	668
कंक्रीट तत्व परामर्श	269
कंप्यूटर एक	568
कंप्यूटर याचिका	627
खनिज खत	408
खाने खाने नयन	791
खाने खाने माइग्रेशन के 602	
खाने सॉफ़्टवेयर	250
खाँसी लंबी बैठे	405
खेल कपास	210
खेलना लड़के	482
गंभीर खेल-कूद	851
गणित लड़ना घंटा	524
गणित संगठन सेब	421
गरीब गणित दूरदर्शन	134
गर्मी गणितीय	57
गर्मी गर्मागर्म	52
गरीब गणित के गणित गरम 536	
गर्म से कर	814
गाय खरीदना	28
गुरु का मोटर	[illegible]
गेंद मोबाइल	38
गुरुत्वाकर्षण खाना	5
गुरुत्वाकर्षण दूरदर्शन	44
गुरुत्वाकर्षण नेटवर्क	196
गेहूँ के से	58[illegible]
ग्लेशियर पुरुष पेड़	529
	[illegible]

के ३	
कॉफ़ी 56	
के १७	
घि २५	
घि 47	
ने ७०	
६९ की 10	
न २११ रोज 47	
के २२७	
लेनु (क्रिकेट) 3	
त ७० घि १६	
त १२१ लेना ५०	
के 43	
अंधा 3 हरा मीटर 9	
धरा २४ अंधा 5	
लेनु 169	
रोज २9 से २४	
के २ ३	
के 47	
रोज	
रात 46	
न ४9	
रुपए 18	
रोज 42	

गौरव तोर अपेक्षा 647 शिवरीनेस 2 ,3

गौरी औरी 655 शिवरीनेस २ ,३ की २४ दिने 8

घटक चिह्नि 178 ने 9 ,

घन घन गरजइ 853 पण्डित बाढाकी ३ ,

घर गुरुजन 395 ने 88 आथा 0

घर घर मरम्मि 667 दि 81

घरदिस चलटे 415 ने १ ,

चन्दन गरल 844 नगु २ ,

चान्दा जनु उग 397 ने 90

चरन कमल दे अरुन 15

चरन नूपुर दे अलक तिलक 92

चलनाचुचि पुजे 54 अथा 96

चोरेत चालर 205 ने १ ,

चल चल सुन्दरि दे ओ परधानअु 193

चल चल सुन्दरि कि ३१ २१ ,

चल टेखा अड्डअ ३२ ने २ ,

चोलल अ ने 6 दि ४३ दी ४

चालल भोल 655 दि ४

चासुर मरदन 554 अथा 8८

चान्दक पेते 45 राज 4

चौद सकल ४ 86 ने 10

चान्द बहाँने 121 ने 28

चान्द सार लए 336 ने ५

चल्द अधा ४ ८ ने १,२

चलर चौरा 585 शोर 3

चाँपे एहन गोरि 80 राम 81

चारलने अधर 435 ने १,५

चि ३ ने कमा ४ राज ४

चिकुर चिकर ११६ ने ४

चल मलाअ ५२ ३ 8

ठाँवे मरगे दे अ ठाँवे २३8

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

تقويم عرضه	489	١٠٥٥	٧ مقدم وجبة
بنزين حضانة	286	٤ ح ٤٠	٩٤ ثلج
شهيق حضانة	149	٤ ح	٤٠٤ ٢٠٠٤
عدد حضانة مدرسة	367	٢ ح ٤٧ ح	٤٠٤ ٢٠٠٤
تمويل حضانة	75	٤ ح	٤٠٤ ٢٠٠٤
تصميم حضانة	38	٨٤ عقد	٤٠٤ ٢٠٠٤
ديناميكي تقرير	95	٤ ١٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
جيد تنفس تقرير	26٤	٤ ٤٥	٤٠٤ ٢٠٠٤
عدد عدد تقرير تقرير	84٤	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير تقرير تقرير	74	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
مدة تقرير تقرير	26٤	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير	84	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير	44	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير	44	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير	5٤2	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير	2٤	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤

تقرير تقرير تقرير	511	٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير	803	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير تقرير	344	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير	229	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير تقرير	5٤1	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير تقرير	2٤4	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير	122	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير تقرير تقرير	213		
تقرير تقرير تقرير	14٩	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير	٤	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير تقرير	19٠	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير	245	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير	45	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير تقرير	٤	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير	629	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤
تقرير تقرير تقرير	٨٥٤	٤٠٤	٤٠٤ ٢٠٠٤

ساختار کریستالی	۹۲	۱۹۰ تا ۲۰۱	۹۵

तापहत्य आसे 588 शोर 16

तातक्क वचने 788 तम (टिप्पणी 1

तात्तल सैकत 845 ...ट 33

तारापति रिपु 260 ते 85

ताल तड़ाग ४८ 6 ते ...ट

तिन तुल दुहु तह 27 ते 135 ते 126

तीव्रिक तेवर 615 दि 9

तुअ अनुराग ४० ...

तुअ गुन गरब दे फुलगुल 364

तुअ गुने अमिअ दे तुअ मुखे 72

तुअ रंग हारे ५ ५ अवधि 8.

तुअ वेसवास 45 ...

तुअ मुँ हे ओहेन ... ...ट 2

...र दुअन 587 ...ट ५

...र परिहु ५२1 ...ट ... अवध 4

...र अन्धारि दे तोहर सं ४०8 ते ...

...र भरा 96 ते 115

...हर चरने 93 ...

...हर हृदय ...7 ...4

...हरा पेअ ...रि 4 ...4

...हरि दिवस पेखने ७९ ...ु 3४

...ह हुँते ...कल ७५ ते १८१

...हि ...कोने ७८ ...ु हर 34

...हे कुल ठाकुर १३ ...न 8

...हे कुअरीते २ 2 ...ं १४४

...हे ...धार ... ...न 4५

तोहें परदेस दे सहे परदेस

...हे प्रभु विभ्रान्त ७६ ...ु हर 47

...हे ...भु सु ७8 ...िमांस 1 ,8

...ाहाने ...हिंदोले ... ...ं १४

...िवली आलि ६4 ...ं ४

...ब्रजन ...ोर ७9 ...

...र पर ... ० ... ...

...ि ...ं ... ४ ४

...ि ...ट ...ोत्तम ...

दए मेलि दे हासे लाखिनि

दखिन ...ल ...रे ...5 ...ं १३

दखिन पवन ...र ८ 8 ...

दखिन पवने ...ट ...ल ५०८ ...ं ८ ४

दखिन पवने ...ट ...न्द ४२9 ...ु ६१४

दुर सरो सुलिम 559 माथा 9

दूरसंचि लाइनि 792 नगु (डिग्रिचि 2

दुस्ह वियोग 740 नगु सिंगि 808

दुहुक अभिमत दे अभिमत दुहुक 76

दुहुक सज्जन चि 460 त 172

दू गोटा लोगे 576 गोर 4

दूर दुरागम 787 नगु (लाना, 0

दूर सिनेह दे दुर सत्रो नेह

दूरहि इतिम 547 पा 61 नगु सिंगि 374

दृढ दे दिढ

देखाने कमलमुखि 674 चि 8

देखाने दूखन्हि 544 माथा 54 1 चरि 8

देस देखिलो 581 गोर 9

दोला पर जमाई 550 माथा 66

दिन माहर 232 ने 154

धन अरथ 450 त 58 पी 46

धवल अम्बरे दे सखि हे 527

धरणि मले 35 राम 37

धिक विध कर जे 718 नगु (सिंगि 519

नअन दे नयन

नऊमि दसा 472 ਨ 187

नऊमि दसा दे 831 ਨਸ਼ 644

नकारक बालेति 30 ਨਾਸ 91

न जानल दे के जन 471

ननयी सहप दे सरोबर 2 8

नन्दक नन्दन 508 ਨਾਲ 4

नन्दन बने ८३ ਆਯਾ ४

नबि अनुरागोंने ४ ५ ਨਸ਼ ८82

नब अउबन दे कि अगे 337

नब पेखबन ४ ४ ਨਹੁ ८ ५

नब रतिपति दे नब पिनुपति 6

नब पेखु ८ ८ ...

नब हरि मिलक ... ਨੇ ८५

न पूड़ा नर ८१ ਨਾਮ ५

नमित अलके दे नमित 278

नयनके अन ८५ ਨੇ 59

नयनके कजर २५३ ਨੇ ... 8

नयनक नीर ५५ ਨਾਲ ५ ਤੇ ४८

नयन निरोधि 599 ਧ

नरि बह नयनक १४6 ਨੇ ८6

नरि किछु पुछलक ३१7 ਨੇ ४7

नवार हो से 220 ਨੇ 141

नर्सिंग कालेज 19 ਨਾਮ 20

नादिंग छोलडिंग २३9 ਨੇ 162

नादायण देवा ५७३ ਗੋਪ ३

निज मन्दिर सजो 4८१ ਨ 97

निते मत्रे जाओ ७६5 ਨਯੁ ਦਿਨ 38

निधन को जओ ३8० ਨ 64

निधिछ नितम्ब ८४2 ਆਯਾ 49

निमोचन्धु ३ ४ ८ ... ਜਨੁ ८

निसि निसिचर भय भीत ४ ਨਾਮ ३ ८ ९...

निसि निसिचर डेरा ६४ ਨੇ ८४

नीन्दे अरल दे सागरि २७5

नील कलेवर ८४ ... ਜਨੁ ਦਿਨ ४

नूपुर रराजा ४६ ਨਾਮ ८ ८ ५

नैहर आव ६९० ਨਿਆਮਤ

नोनुअ दे नोनुअ 282

पड़रि मत्रे ६८4 ਪਿ ८८ ਸਯੁ 1

पङ्कज वैरि 779 लगु ए 14
पक्षी तुलिअ 69 ले 83 लाटा 7
पञ्चबदन हर 45 ले 55
पञ्चालन पुर 569 हरे 3 भाषा 5
पठल पुरुख 647 ओ 13
पवन सुआ 64 राम 64
परक पेअसि 282 ले 307
परक चित्त सिंहि 331 ले 81
परनह परदेस 48 ले 59
परनह पुरु 567 हरे 1 भाषा 149
परदेस गअन 46 ले 8
परसे बुझअ 371 ले 5
परिअन पुरुख 41 - 4
परिहर ए 870 लगु 114
पहिअ पसार 8 ले 68 भाषा 1
पहिल बदरि 736 लगु 5
पहिल बरसा मोर
पहिलहि अभिस 71 राम 74
पहिलहि कएलह हु दे पथमहि 315
पहिलाहे चोरिए 318 ले 248
पहिलाहे पएसए कए 187 ले 105
पहिलहि परस पयोधर 133 ले 41
पहिलहि पेमक ते 47 राम 49 ले 104
पहिलाहे रङ्ग 850 पण्डित अखनी 98
पहिलाहे राधा कान्ह 812 लगु 160
पहिलहि सरस दे पहिलहि परस 133
पहिलि दिदीते 469 ले 184
पहिलुकि परिचय 734 ले 156 ले 62
पहुक बधन 446 ले 154
पहु नअी उचरि 53 राम 55
पहुक तिअर 141 ले 53 लाल 56
पाअस रचले 610 ए 12 लाए 35
पाए अहु 47 राम 44
पाछक चिन्ता 65 राम 65
पाहुर अमरु 323 ले 22
पाहुर अएल 684 चित्रलेख 2 ए ओ 88
पिअ बिहरिए अनि 129 लगु चित्रे 69
पिअ गेल मधुपुर 827 लगु 613
पिअ जबे 842 लगु 806
पिअ परवस 224 राम 3

चिमा मोर 565 कि 79
चिमा रसपेसल 279 ते 63
चिमा सत्रो कहव 478 ते 94
चीन पयोधर 334 ते भाषा 33 आन्त्र 7
चीमल आङ 757 अनु हर 26
पुनु चलि भाइसँ 488 ते 4
पुर परिजन 116 ते 9
पुरल पुरपरि दे पुर परिजन 2
पुरुख अमर 8 राम 82
पुरुख जत 17 ते 10
पुरुख पेम दे पुरुख जत 125
पुरुषे पेम तुअ 641 कि 44
पुरोमो अदासथ 370 ? 94
प्रथम एकादश ? कि ?? ते ?
प्रथमक आदरे 438 ते ??
प्रथम कैथल लोग 118 ?? ?, आधा 44
प्रथम जौवन छिनि ??? ते ??? ते ??
प्रथम टरमे 374 ते 15
प्रथम पहर 388 ? ??
प्रथम पेम हरि ? ते 24

प्रथम भाएस भूमि 13 राम 15
प्रथम मास हस 659 कि 20
प्रथम समागम के 321 ते 25 ते 58
प्रथम समागम मुखल 162 ते 8 ते 43
प्रथम समागम भेल 660 कि 7
प्रथम सिरीकल दे प्रथम जौवन 203
प्रथमहि भनक 151 ते 63 ते 42
प्रथमहि मधुमत 424 ते 19 कि ?
प्रथमाहे कामतह नयनक 195 ते 4
प्रथमहि कामतह हृदयक 113 ते 243
प्रथमहि कनल लोह 297 ते 224
प्रथमहि किदि सम ?? ते ?? ते ??
प्रथमहि मनि मुनि ?? कि ?
प्रथमाहे लोह 276 ते 48
प्रथमहि रहस 241 ते ?? ते ?? आधा ?
प्रथमहि सनेहर ?? ? ??
प्रथमहि सिनेह दे प्रथमहि लोह 226
प्रथमहि सुन्दरि ?? ? ते 4
प्रथमहि हाथ पयोधर 91 राम 94
प्रथमहि हृदय वृक्ष भीखल ?48 ते ??

फिरि फिरि भ्रमरा 724 नमः शिवाय 724

फुटल कुसुम नव 836 नमः 726

फुल एक डारी ना 725 नमः शिवाय 611

फूजल सिंदुर 490 ले 209

फूजलि कबरी दे अबनत आनन 256

बएस कनए 505 ले 240

बचन अमिअ 123 ले 90

बचनक रचने 291 ले 2

बचन रचने दे कतन बचन

बड़ जन करए 636 दिए 42

बड़ कौसल नुअ 384 ले 69

बड़ सुपुरुख बोलि दे सुरुजा अलि

बाँह जुड़ पाँह 135 ले 44

बादि बखाड़ 727 नमः शिवाय 643

बड़े मनोरथे 9 राम 9

बदन कमिलि दे कमिलि बदन

बदन चाँदह लोर 43 ले राम 1

बदन झाँपाबा 77 ले 94

बदर सरिस 43 राम 45

बदन सरोरुह 44 ले 44

बदल सोहाउनि दे अकुच

बर दौरह 674 शिवाय 130 3 ले 2

बरख दी आठस 39 साक 41

बरिसए लागल 252 ले 177

बरिस सटल 77 राम 78

बसन हरइते दे हरइते बरुन

बसन्त रजनि 37 ले 46 ले 270 आए 15

बहिर रोवायी 578 गोर 6

बाइक कमान 97 राम 94

बाइक नयन सर 537 आषा 49

बाट बिकट 400 ले 95

बाट मुअटाम 150 ले 61 87

बाहरि दिआरि 257 ले 182

बाहिक पानि दे काटि

बाहुए बिकट 526 शिव 41 आषा 54

बाम्हन होए 23 राम 24 ले 40

बाम नयन बर दे बाइक नयन सर

बामा नयन फुरक 49 राम 5

बामा बयन नयन 162 ले 45

बारि बिलासिनि 387 ले 74

बारिश आजिबि	55	से 2
बारिश सिरा	2 4	से
बाला कल	56	राज 57
बालि बिलासिनि	143	से 3
बालुम सिठुर	770	लगु (पर 7
बिआह चलला	864	बैनी 248 में 20
बिकच कमल	6	राम 61
बिकट अंत	5 4	राम 15
बिकिलए गलिहुं	346	न 8
बिकि दे बिकिलए		
बिछिने देखनि	548	भाषा 62
बिछलित बिकुर	822	लगु 585
बिछलित बसन	539	भाषा 7
बिट ए देखी	522	राम 28
बिदीअस	714	लगु सिरि 2
बिधिअस नुर	2 1	से 53
बिनु दीखे	726	लगु सिरि 67
बिमल कमलमुखि	426	न 127
बिरचले अल	25	राम 26
बिसरल गुरु	597	गोर 25

बिहि मोर परसल	61	गि
बीच भटलिहुं	553	भाषा 79
बुझहि न पारल	429	न 131
बुझहि न पारलि	147	से 57
बुड़िहल भाषव	549	भाषा 63
बुढबा बड़ रहगरसिआ	711	से 186
बुढहु बरस हर	764	लगु (हर 37
बुता हे अये	596	गोर 24
बेरा एक जिब दे आवे न		
बेरि बेरि आह	761	लगु हर 3
बोलसि बोल	64	से 77
बोल कजरबनु	790	भाग 228
भअइले भअर	457	न 4
भरल भवन लेजु	654	विद्यापति 244
भल मेल सहिक	337	न 6 वि 24
भल हर भल	745	लगु 182, 6
भाइगल चाह चि	708	से 47
भाइगल कपोल दे हमे धनि		
भाविहि भल भए	730	लगु सिरि, 703

मोला भड़ुवा खाड़ने	865	बेनी 243
मोहि आवि॰ग	225	ले 99
मोहि लेना	279	ले 204
मड़गल चिलहिअ	749	नगु (हर ११
मत्रे सुधि पुरुष	0	ने 8 ने 183 नाल 54
मधुकर एक कु	62	राम 62
मधुपुर गैल भल		
मधुपुर मोहल	724	गु क्रिष्टो 662
मधु रजनी	230	ले ६२
मधु रिनु	825	नगु ७०6
मधुरम वचन	425	ने 126
मन जनमा	6.6	७ 2
मन परयम	65८	पि ११
मनमिले ग चले	4 0	ने ...
मन्थर गमन	58८	और 0
मलय पवन	465	ले 17...
मलयानिले साद्र	462	ने 174
मलिन कुसुम	443	ने ..८ ...8
माइ है बालुम	783	...गु (...ना) ५
माघ मास सिपि	513	...ग ... 8

माटि मलि	754	नगु क्रिर ८८
माधव चढल		
माधव अब न	636	पि 0
माधव इ सहि	643	पि ५1
माधव एखन दूरि	710	ले
माधव कठिन दै हिमकर		
माधव कत तोर	742	नगु क्रिपि
माधव कत परबो	839	नगु 786
माधव करिअ सु	456	ने 195 पि 7
माधव कि कहब मोहि	661	पि ८4
माधव कि कहब मोर	645	पि ५1
माधव कि कहब सुन्दरि	6 9	पि 14
माधव चलल	4 ८	ने 166
माधव जइते देखलि पथ	६2	पि 1८
माधव जइते देखलि पथ	6..5	पि ४
माधव जानल	496	ने 217 प्रभा 14, पि ८
माधव तेजि गेल	703	से 128
माधव तोहे धनु	646	पि ५५
माधव देखलहुँ तुअ	622 क्रिपि)	पि 17
माधव देखलि हि	663	पि 76

माधव देखलि भजै 780 नचु (ढ) 17

माधव वचन 635 वि 41

माधव बहुत मिनती 847 नचु 837

माधव बुझल तुअगुन 654 वि 63

माधव बुझल तोहर 75 नचु विदि 345

माधव मन जनु 683 विदीस 25 मे 31

माधव माधव होइ 650 वि 54 मे 79

माधव मास 309 ने 237

माधव सय विधि 704 मे 29

माधव सिरिस 631 वि 29 मे 86

माधव सुमुखि 455 ने 64

माधव हमर 649 वि 58 मे 22

माधवे भाए 794 ने 1 वि 1 मे

माना परिहर हे 509 रामा 6

मानिक पेसाहल 607 प ह मानव 31

मानिनि आब 642 वि 50

मानिनि मान अबहु 416 ने 16

मानिनि मान मोन 20 राम 1

मालति अधु 193 ने 12

मालति मत 716 नचु विदी 392

मास असाढ 735 नचु विदी 729

मुइल निअरोलह 589 गौर 17

मुख अनोहर दै पीन पयोधर

मृगमटपडक 389 ल 7 राम 46 भाषा 70

मेदुर मुदैर 545 भाषा 59

मोर सिरधन 758 नचु (हर) 37

मोर घउरा देखल 727 ने 208

मोरा मन मनमथे 556 भा 88 र 10

मोरा रे आहनमा 500 ल 24

मोरा रे अहेरमा 74 नचु (ह 4

मोरा रे आहेरमा देखल 73 नचु 11 5

मोरा रे आहेरमा चलि 768 नचु (ह 2

मोरे अनिलय 1 भ 1

मोहन अधुर आस 627 वि 68

मोहि तेजि 647 वि 6 मे 100

रमसनि हरि 12 ने 39

रजनि अन्धर 411 ने 240 ल 44 र 45

रजनि सगमोने 0 ने 215

रसिकक मरदम 244 ने 169 ल 60

राजकाज 57 अंक 5
राजा अड़ियेहै 526 राजा 16 आंखा 45
राजा अधिक 359 ते 57 आंखा 18
राजा नारि बढ़ाउलि 378 ते 6
राजा देह 562 आंखा 00
राहु तरासे दै की कान्हु
राहु भेष भए 401 ते 99
रितुपति राति 826 नगु 511
रिपु पँचसर 3 4 कै 244
रुसलि अबली 571 हरि 6 आंखा 54
रे नरनाह 672 प्रियंवद 19
रोपल मग्रे 601 पं 3
रोपलह पहु 520 राजा 24
लता तरुअर 464 [illegible]
लपये पार 594 [illegible]
लम्बित अलके 276 [illegible]
ललित लता 484 [illegible]
लहु कथ बोललह दै घाट
लहु लहु सञ्चर दै चान्द
लाखहु लता 4 [illegible]

643

तिखद इनैस 656 गि 67
लुधुघले लंगले 1 राम 1
लोचन अरुन 638 गि 44 औ 51
लोचन चपल 340 ते 0
लोचन धाए दै हरि हरि
लोचन लोर 489 ते 208 आंखा 4
लोतुत्र घटन 280 ते 205
सखि उतरे दै कि आरे
सखि कि पुछसि 844 नगु 814
सखि हे भल जानलु [illegible] राजा 35
सखि हे कि लए चुलाएब
सखि हे बालमु 545 राजा 5
सखि हे भइल 424 [illegible]
सखि हे आर कि [illegible]
सखि समाहर [illegible] ते 64
सखि सिरी रतनि 58 राम 40
सजनी अघट ते 43 [illegible]
सजनी के कह अनसोच 533 नगु 864
सजनी भल कए पे 494 नगु 3
सजल नलिनि 108 ते 15

647

सपने आएल सखि	527	राग. 40
सपने देखल पिअ	738	नचु (सिंधि) 800
सपने देखल हमं	791	नचु (विविध) 11
सपने देखल हरि उप.	57	राम. 58; ने 239; राग.8, भाषा 165
सपने देखल हरि मेलहुँ	57	राम. 58
सपनेहु न पुरले दै. सपनेहु मनक		
सपनेहु मनक पु.	263	ने.187; त.25
सबे परिहरि	442	त.147
सबे सबतहु	200	ने.119
सयन रचाबहि	223	ने. 145
सरदक चान्द	103	ने.10
सरदक ससधर मुख दै. माधब जानल		
सरदक ससधर समं	412	त. 112, राम. 32
सरस बसन्त	613	गि. 6, सिंधी से. पृ.3
सरसिज बिनु	832	नचु. 652
सरूप कथा	156	ने. 68
सरोबर घाट	216	ने.137
सरोबर मज्जि	486	त.204; मै.94
ससन परस	507	राग.3

सहज पसन मुख	358	त.36
सहज सितल	85	राम. 86
सहज सुन्दर	7	राम.7
सहजहि आनन अछल	218	ने. 139
सहजहि आनन सुन्दर		
सहजहि तनु	302	ने.230
सहजे सुन्दरि दै. मृगमद पङ्क		
सहस रमनि सत्रो. दै. नयनक क		
साओन जलधर	प.33;	प.33; नाना.21
साकर सुध	246	ने.171
साजनि अकथ	373	त.54
साजनि तैसन	602	प.4
साजनि निदुहि	784	नचु (नाना) 7
साजनि से दिन	608	नाना. 7; प.10
साँझक बेरी	506	राग.1
साँझहि मित्र	319	ने.249; भाषा.83
साँझहि सुन्दर	322	ने. 252
सात बहिनि हमे	694	मै. 38
सामर पुरुस	461	त. 173; भाषा.17
सामर सुन्दर ऐ	272	ने. 196

सामरि है झामरि	273	ने. 197; त. 57
सारङ्ग रुचि अम्बर	211	ने. 132
सासु जरातुरि	771	नगु (पर) 8
साहर मऊजर	474	त.190
साहर सऊरभ	483	त. 201
सिंघ सङ्कर हे	768	नगु (हर) 43
सिंघ हे अलि अनुगति	607	ए.35
सिंघ हे सेबए अए	760	नगु (हर) 30
सिंघ हो उतरब पार	857	बेणी. 238
सिरजह जानि	591	गोर.19
सिरिहि पुरल दै. रामा अधिक		
सिसिर	733	नगु (मिथि) 722
सुकृतिक बाट	595	गोर.23
सुख जनमान्तर	109	ने.16
सुखे न सुनसि	140	ने. 49
सुजन अरजि कत	696	मै. 48
सुजन बचन खोटि	174	ने. 91
सुजन बचन हे	130	ने. 37
सुतलि छलहुँ	782	नगु (नाना) 5

सुध्यमुखि को विधि	798	नगु. 20
सुन सुन माधव	494	त. 213
सुन सुन सुन्दरि	289	ने. 215
सुन सुन हे सखि बचन	811	नगु. 132
सुनिऐन्हि हर	675	भिगीस. 1/32; मै. 28
सुनि सिरिखण्ड तरु	295	ने. 222; त. 145
सुन्दरि कह कह न	618	वि. 13
सुन्दरि गरुअ लोर	360	त. 38
सुन्दरि चलल्हि	628	वि.26,भिगीस,मै.10
सुन्दरि जनो तोहि	566	भाषा.129
सुन्दरि बिरह सयन	648	वि. 57; मै. 100
सुन्दरि सुफल दै. आसाढे मन्दिर		
सुन्दरि हे तोहि	666	वि. 80
सुपुरुख पेम	838	नगु. 763
सुपुरुख भासा थो.	153	ने. 65
सुरत परिश्रम दै. सुरत लिखित		
सुरत समर्पि	634	राग.84; वि.37
सुरत सिथिल तन	217	ने. 138
सुरभि निकुञ्ज वेदि	84	राम. 85
सुरभि समय भल	501	त.225

सुरसरि सेवि	783	नगु (गंगा) 2
सुरुज सिन्दुर बिन्दु	312	नै. 241; त. 48; राम. 25
सूखल सर	21	राम 22
सूल सड़केत	131	नै. 38
से अति नागर दे. से बरनागर		
से अति नागर नये दे. तजे रस नागरि		
सेअोल सामि	139	नै. 48
सेवए अएलाहु दे. हर है		
से बरनागर	191	नै. 109
से भल जे	449	त. 157; अ. 38
सेहे कान्ह सेह हम	717	नगु (मिथि) 472
सेहे परदेस	118	नै. 25; भाषा. 141
सैसव जौबन दरसन भेल	797	नगु. 4
सैसव जौबन दुहु दल	795	नगु. 4
सैसव जौबन दुहु पथ		
सोलह सहस	204	नै. 123
सौरभ लोभे	292	नै. 216
स्याम बरन	695	मै.48
हठ न करह दे. अवला		
हठे न हलब मोर	382	त.67

हमर पसार दे. पहिल परसर		
हमर मन्दिर	848	नगु. 845
हमराकें	691	मिगी स. 3/9; मै. 48
हमरा घर नहि	772	नगु (घर) 10
हम सजो रुसल	755	नगु (हर) 23; मै. 185
हम हसि हेरल	713	नगु (मिथि) 61
हमरे बचनै	129	नै.36
हमे अबला अगेअनि	671	मिगीस. 1/28
हमे अबला लोहें	369	त.49
हमे एकसरि	243	नै. 168
हमे जुबती	168	नै. 82
हमे जोगिनि एकसरि	679	मै. 36; मिगीस 1.35
हमे धनि	126	नै. 33
हमे धनि सापिनि	835	नगु. 712
हमे नहि आजु	674	मिगीस. 1/31; मै. 27
हरइते बसल	52	राम. 54; नै. 58
हरख सहित दे. सपना एक		
हर जनि बिसरब	858	वेनी.240
हर पितु तनय	781	नगु (प) 17
हर हे सेवए	572	हर ; भाषा...

हरि गेल मधुपुर	699	मै. 100
हरि धरु	719	नगु (मिथि) 563; मै.98
...हरिनि हताहनि	59	राम. 59
हरि पति बैरि	777	नगु (घ) 10
हरि पतिहित	262	ने. 186
हरि बिसरल	303	मै. 231
हरि रब सुनि	181	ने. 98
हरि रिपु अनुज	63	राम. 63
हरि रिपु तनय	781	नगु. (पहे.) 17
हरि रिपु बरद	120	ने. 27
हरि रिपु रिपु	233	ने. 155
हरि रिपु रिपु सुत	298	ने. 226
हरि सम आनन	775	नगु (घ) 5
हरि हरि हरि	470	त. 185; भाषा. 130
हसि निहारल	3	राम. 3; ने. 210
हथिक दसन	261	ने. 185-क
हाथि धोळ	592	गोर.20
हासक चानुरिम	538	भाषा.25
...हिनि बाला	56	राम. 57A
हासे बिलासिनि	277	ने. 202

हिमकर हेरि	240	ने. 165
हिम सम चान्दन	171	ने. 86
हृदयक कपट	172	ने. 89
हृदयक हार	278	ने. 203
हृदय कुसुम सम	221	ने. 143
हृदय तोहर	12	राम.12; ने.1; त.33.
हे नरनाह	672	शिगीस. 1/29
हेमलता हिम	563	भाषा.102
हेरितहि दीठि	355	त.31
हेरि हेरि माधुर	546	भाषा.60; रागम.
हे हर जानि न मेल	686	मै. 183; शिगीस. 2/32
हे हरि हे हरि	633	शि. 35